अनंत काल से अनंत काल तक

बाइबल के इतिहास और भविष्यवाणी के बारे में एक शाब्दिक दृष्टिकोण

जॉन आर. एकोब डीडी द्वारा

द हेराल्ड ऑफ होप के लिए

छठा संस्करण, मार्च 2021

"यह मसीहियों के लिए पहले से पूरी हुई भविष्यवाणियों के प्रकाश में पूरे न हुए
भविष्यवाणी की व्याख्या करने का उचित समय है।
यथार्थ रूप से यहूदियों पर शापों को पारित किया गया था:
तो वैसी ही आशीष भी होगा।
बिखराव यथार्थ था: तो ऐसा ही इकठ्ठा होना भी होगा।
सिय्योन का ढाया जाना यथार्थ था: ऐसा ही उसे निर्मित करना भी होगा।
इस्राएल का तिरस्कार यथार्थ था: वैसे ही पुनर्स्थापना भी होगी।
जे.सी. राइल - भविष्यवाणी, पृष्ठ 65.
(1867 में ज़ायोनी आंदोलन शुरू होने से पहले 1881 में लिखा गया)

अनंत काल से अनंत काल तक

द्वारा

जॉन आर. एकोब डीडी

प्रकाशक
द हेराल्ड ऑफ़ होप पत्रिका
www.heraldofhope.org.au
www.bibleprophecy.net.au
कॉपीराइट © यूहन्ना आर इकोब 2015

छठा संस्करण - दिसंबर 2021

नोट: यह पुस्तक विश्वासियों को परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने और सुसमाचार प्रचार के लिए एक उपकरण के रूप में सहायता करने के लिए तैयार की गई है।
चार्ट बनाने में सटीकता के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है, हालांकि
अगर किसी पाठक को कुछ गलती मिलती है तो लेखक को सलाह लेने में प्रसन्नता होगी। ईमेल : editor@heraldofhope.org.au
पवित्रशास्त्र के सभी आयतें बाइबल के हिंदी बीएसआई बाइबल से हैं

अनुक्रमणिका

परिचय 1
आदम से निर्गमन तक 2
बाढ़ से पहले दीर्घायु 3
बाढ़ का कालक्रम 4
विश्व इतिहास का विहंगम दृश्य 5
अय्यूब किस समय जीवित था? 6
ईश्वरीय जाति का अलग किया जाना 7
एक अनंत अब्राहम की वाचा 8
व्यवस्था का युग 9
सात युग 10
सत्य के वचन को सही ढंग से विभाजित करना 11
यहूदियों और अरबों की वंशावली 12
जातियों के परिवार 13
बाढ़ के बाद परिवारों और राष्ट्रों का स्थान 14
अंतिम दिनों में ब्रिटेन और अमेरिका 15
परमेश्वर की वाचा के लोग इस्राएल 16
पुरानी वाचा नई की छाया 17
पितृसत्ता का कालक्रम 18
इस्राएल - यहोवा के याज़कर्याह 19
कनान की भूमि पर विजय 20
निर्गमन से दाऊद तक 21
शीलो के बाद सन्दक और तम्बू 22
दाऊद से अमस्याह 23
अमस्याह से मनश्शे तक 24
आमोन से मलाकी 25
यशायाह 7:8 की 65-वर्ष की भविष्यवाणी 26
नीनवे का न्याय - 612 ईसा पूर्व 27
सोर का न्याय – 586 ईसा पूर्व & 332 ईसा पूर्व 28
मिस्र का न्याय और आशीष 29
एदोम का न्याय - 550 ईसा पूर्व 30
दानिय्येल की पुस्तक 31
अन्यजातियों का समय - लूका 21:24 32
दानिय्येल 9:24-27 की 70 "सप्ताह" की भविष्यवाणी 33
नबूकदनेस्सर 34
बेबीलोन का न्याय - 538 ई.पू 35
बेबीलोन की बंधुआई के बाद 36
फारस - इसका उदय, पतन और भविष्य 37
एज्रा और नहेमायाह की पृष्ठभूमि 38
कुस्रू की कहानी 39
कैंबिसस का सह-प्रतिनिधि और शासन 40
एस्तेर ने कैंबिसस से शादी की, न कि क्षयर्ष से 41
पर्सेपोलिस के महल का जलना 42
सिकंदर का यूनानी साम्राज्य 43
सिकंदर के बाद यूनानी युग 44
सिकंदर से हेरोदेस तक 45
अन्ताकिया से हेरोदेस तक मैकाबीन युद्ध 46
रोमी साम्राज्य - अन्यजातियों का युग 47
यहेजकेल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 48
यहेजकेल की भविष्यवाणी 49
वह युद्ध जो इस्राएल को पश्चाताप की ओर ले जाता है 50
1,000 वर्ष का सहस्त्राब्दी साम्राज्य 51
सहस्राब्दी राज्य में आराधना 52
बारह छोटे भविष्यद्वक्ता 53
योएल की यहोवा के दिन के विषय में भविष्यवाणी 54
यहूदी पर्वों का भविष्यसूचक महत्व 55
यहोवा के बारह पर्व 56
मसीह का जन्म कब हुआ था? 57
हे यरूशलेम, यरूशलेम (ईसवी 66 से 70) 58
तिरस्कार में बीच प्रभु की सेवकाई 59
फसह का सप्ताह 60
तीन दिन और तीन रातें और
इस्राएल का अंत के दिनों में घेरा जाना 61
मसीह का पुनरुत्थान 62
पुराने और नए नियम में कब्र से परे 63
जैतून पहाडी प्रवचन 64
राज्य कब प्रकट होगा? लूका 17 65
रहस्यमयी कलीसिया 66
जीवन के लिए पहला पुनरुत्थान 67
मसीहियत के सात चरण 68
सात कलीसियाओं में कलीसिया के इतिहास की
भविष्यवाणी 69
महाक्लेश से पहले स्वर्गारोहण 70
प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को समझना 71
महाक्लेश में घटनाओं का क्रम ..... 72 और 73
महाक्लेश में युद्ध और भूकंप 74
धर्मत्यागी मसीहियत - रहस्यमयी बेबीलोन 75
नया स्वर्ग और नई पृथ्वी 76
भविष्यवाणी की एक झलक 77
हम स्वर्गारोहण के कितने निकट हैं? 78
आंतरिक पिछला कवर: मैं कैसे तैयार हो सकता हूं?
बाहरी पिछला कवर:

संपर्क विवरण - हेराल्ड की सदस्यता
आशा पत्रिका, और वेब पर मुफ्त डाउनलोड
साइट www.heraldofhope.org.au

परिचय

बाइबल दुनिया की सबसे पुरानी किताब है और बाकी सभी किताबों से अलग है। सदियों से, बाइबल ने उच्च आलोचकों, और मसीही जगत के भीतर से उदार धर्मशास्त्रियों, और दुनिया के वैज्ञानिक वर्ग के भीतर से नास्तिक दार्शनिकों और विकासवादियों के हमलों का सामना किया है।

हर बार जब बाइबल पर गलती होने का आरोप लगाया गया है, तो भविष्य में, पवित्र अभिलेख के शाब्दिक प्रतिपादन का समर्थन करने और पुष्टि करने के प्रमाण सामने आए हैं।

पुरातत्वविद् की कुदाल और सच्चे विज्ञान ने मनुष्य को ज्ञात इस सबसे प्राचीन साहित्यिक कृति की सटीकता की लगातार गवाही दी है।

यह आश्चर्यजनक तथ्य है कि इतनी प्राचीनतम पुस्तक बड़ी संख्या में और हर भाषा में लगातार छपती रहती है। अधिकांश अन्य पुस्तकें साहित्यिक गुमनामी में लुप्त होने से पहले एक पीढ़ी तक चल जाती हैं; कई अन्य पुस्तकों को धूल पड़ने के लिए अभिलेखीय बुकशेल्फ़ में भेजे जाने से पहले एक बार पढ़ा जाता है, जबकि बाइबल को प्रतिदिन बहुत से लोग पढ़ते हैं जो इसके प्रत्येक शब्द पर विचार करते हैं।

लाखों लोग बाइबल की व्याख्या सुनने या नियमित बाइबल अध्ययन समूहों में भाग लेने के लिए साप्ताहिक सभाओं में भाग लेते हैं जहाँ इसके पदों को कंठस्थ किया जाता है, इसके उपदेशों का सम्मान किया जाता है, और इसकी आज्ञाओं का पालन किया जाता है।

झूठे धर्मों ने बाइबल से उधार लिया या विश्वसनीयता की झलक पाने के उद्देश्य से इसकी शैली की नकल करने की कोशिश की है, जबकि कई राष्ट्रों ने पवित्रशास्त्र में बताए गए धार्मिक मानकों पर अपने कानून बनाए हैं।

एक बार यह कहा गया, कि सुसमाचारक डब्ल्यू.पी.निकोलसन पूरे आयरलैंड में सबसे अधिक प्रिय और सबसे अधिक अप्रिय उपदेशक थे, वैसे ही यह भी कहा जा सकता है कि बाइबल पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली और सबसे ज्यादा नफरत की जाने वाली किताब रही है।

बाइबल में प्रकट किए गए सत्य को नकारने की बजाय, महान पुरुषों को उनकी स्वेच्छा से काठ पर जला दिया गया, जंगली जानवरों द्वारा फाड़ा गया, या तलवार से काट दिया गया।

बाइबल के अद्वितीय चरित्र का रहस्य इसके दैवीय लेखकत्व में निहित है, हालांकि मानव पात्रों ने, जिन्होंने पवित्र पाठ को लिखा, वे विद्वता के पुरुषों से भिन्न थे
जिनके विषय में कहा गया कि वे *"अनपढ़ और साधारण"* (प्रेरितों के काम 4:13) मनुष्य थे, इसकी 66 पुस्तकों में कोई विरोधाभास नहीं है; इसकी नैतिकता त्रुटिहीन है, इसका इतिहास विश्वसनीय है, और इसकी भविष्यवाणी कभी भी अपने शाब्दिक पूर्ति में विफल नहीं होती है।

बाइबल कोई मनुष्यों के वचन नहीं हैं: बल्कि यह जीवित परमेश्वर के वचन हैं और पवित्र आत्मा इसका लेखक है।

अनंत काल से अनंत काल तक मानव इतिहास में परमेश्वर के हाथ का पता लगाने की कोशिश करता है, अनादिकाल से लेकर अनंतकाल तक, जैसा कि बाइबल में दर्ज किया गया है।

आदम से लेकर निर्गमन तक

एक थियोलॉजिकल कॉलेज के व्याख्याता ने अपने छात्रों से कहा कि उत्पत्ति के शुरुआती अध्यायों को शाब्दिक रूप से नहीं लिया जाना चाहिए; कि अदन की वाटिका केवल एक प्रतीकात्मक पूर्वी कहानी थी जिसका उद्देश्य हमें यह स्पष्टीकरण देना था कि कैसे पाप संसार में आया। तब एक युवा छात्र ने प्रतिक्रिया दी:

> "सर", उसने कहा, "यदि अदन की वाटिका यथार्थ में नहीं है; और यदि भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल यथार्थ न हों; यदि सर्प यथार्थ नहीं है या कैन के माथे का निशान यथार्थ नहीं है; तब तोआदम और हव्वा भी यथार्थ नहीं थे और न ही आप और मैं!"

उस उप प्राचार्य ने अपना सिर पीछे की ओर घुमाया और हँसने लगे लेकिन कोई जवाब नहीं था।

बाइबल के इतिहास से अधिक सटीक इतिहास और कहीं नहीं है क्योंकि बाइबल ईश्वरीय रूप से प्रेरित है और इसके लेखक स्वयं परमेश्वर हैं। प्राचीन दुनिया के अन्य इतिहास उन लोगों के द्वारा दर्ज किया गया हैं, जो समय के आरम्भ में, सच्चे और जीवित परमेश्वर से दूर हो गए और सांसारिक वस्तुओं की पूजा करने लगे थे।

नूह के दिनों में वैश्विक जलप्रलय से पहले, मानव रक्त-धारा को भ्रष्ट करने के लिए शैतान ने मानव जाति में घुसपैठ की। परमेश्वर के भौतिक पुत्रों (गिरे हुए स्वर्गदूतों) ने मनुष्यों की बेटियों के साथ संभोग किया और दानवों की एक जाति को जन्म दिया। यह बाढ़ से पहले और बाढ़ के बाद हुआ था। सांसारिक ऐतिहासिक रिकॉर्ड जैसे कि एरेक के राजा द्वारा लिखा गया *एपिक ऑफ गिलगामिश,* जो बाढ़ के कुछ सदियों बाद लिखे गए थे, इसमें इस तथ्य के पर्याप्त प्रमाण हैं। इस *महाकाव्य* ने दावा किया कि गिलगामिश दो -तिहाई ईश्वर, एक तिहाई आदमी और एक आदमी के दुगुने आकार का था। प्राचीन शहर नीनवे और बेबीलोन में पाए गए 22,000 दस्तावेजों के महान पुस्तकालय के कई दस्तावेज बाइबल के रिकॉर्ड के सभी प्रमुख तत्वों की पुष्टि करते हैं। यहां तक कि बाढ़ से पहले की 10 पीढ़ियों की लंबी उम्र की भी पुष्टि हुई है।

जलप्रलय के बाद, हाम वंश के निम्रोद जैसे लोगों ने जीवित ईश्वर की अवहेलना की और बहुदेववाद फला-फूला। बाबेल की मीनार का निर्माण सूरज, चाँद और तारे आदि आकाशीय पिंडों की उपासना के लिए एक स्थान प्रदान करने के लिए किया गया था। यहूदी तल्मूड कहता है कि, अब्राम के पिता तेरह, मूर्तियों की पूजा करते थे और जब अब्राम इन आकाशीय पिंडों की पूजा करने से मुड़ा, तो अपनी सुरक्षा के लिए वह शेम भाग गया।

शेम के वंश से निकले अश्शूर ने शिनार देश से निकलकर नीनवे में उत्तर की ओर 400 किलोमीटर से अधिक की दूरी पर एक और सभ्यता का निर्माण किया; शायद विरोध में।

उस बड़े धोखे से सच्चाई को बचाने के लिए, परमेश्वर ने अब्राम को ऊर से बुलाया और उसे कनान देश दिया। अब्राम के वंश के बिना मानवजाति को छुड़ाने वाला कोई उद्धारकर्ता नहीं होता। इसलिए इस्राएल, परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में, मानव जाति के लिए परमेश्वर की योजना के केंद्र में है और वह हमें आश्वासन देता है कि केवल *"यदि आकाश को मापा जाए"* या सूर्य, चंद्रमा और सितारों का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा, तभी *"इस्राएल का वंश मेरी दृष्टि में सदा के लिए एक जाति ठहरने की अपेक्षा मिट सकेगा"* (यिर्मयाह 31:35-36)।

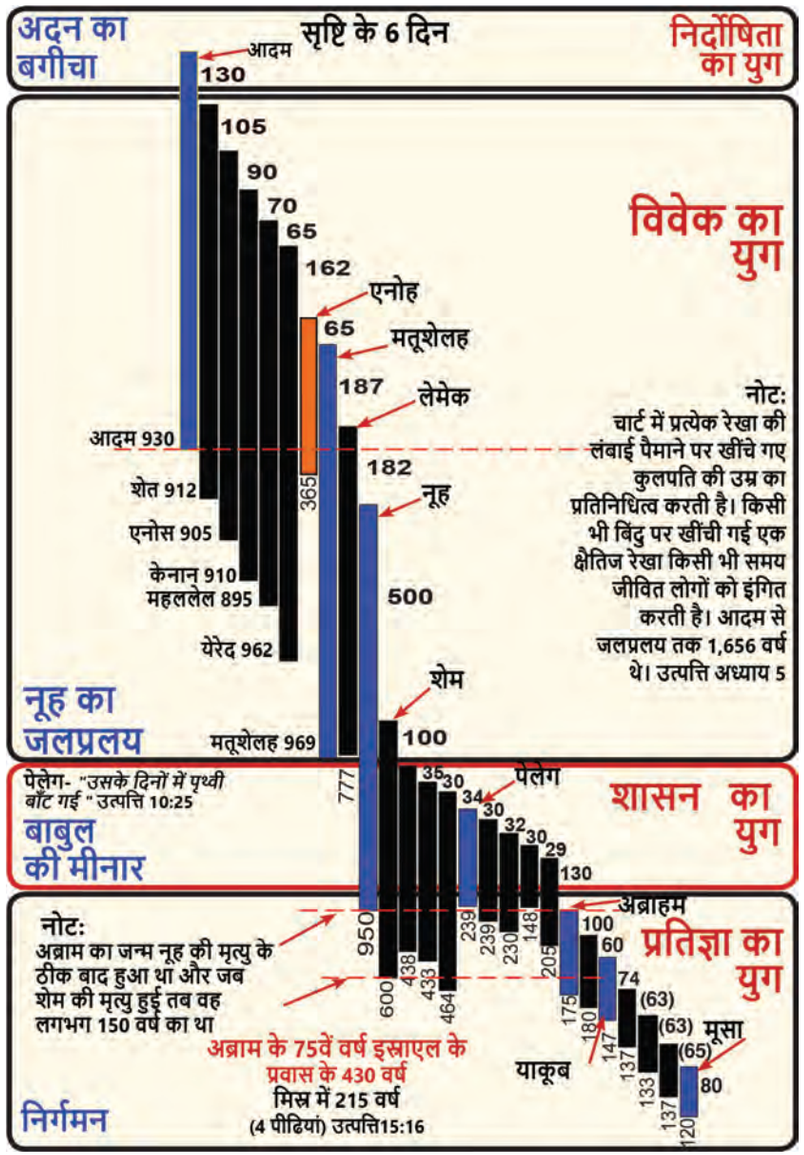

बाढ़ से पहले दीर्घायु

जॉन इकोब

बाढ़ से पहले के लोगों की उम्र ने कुछ लोगों को हैरान कर दिया है और यह सुझाव दिया गया है कि उनके वर्ष हमारे वर्षों से काफी कम हो सकते थे। मतूशेलह 969 वर्ष जीवित रहा जबकि आज ऑस्ट्रेलिया में औसत आयु 80 वर्ष है; एंटीडिलुवियन की उम्र का केवल बारहवाँ हिस्सा।

यदि एंटेडिलुवियन वर्ष छोटे होते और वे वास्तव में हमारे जैसा ही जीवन काल जीते तो हर वर्ष एक महीना लंबा होता और गर्मी और सर्दी हर महीने होती।

पृथ्वी को सूर्य के चारों ओर 584 मिलियन मील (940 मिलियन किमी) की यात्रा 12 गुना तेज करने की आवश्यकता होती।

पृथ्वी सूर्य के चारों ओर 67,000 मील प्रति घंटे की गति से यात्रा कर रही है और इसे 12x67,000 = 804,000 मील प्रति घंटे तक बढ़ाना होता। बाढ़ के बाद इसे एक परिवर्तनीय दर पर धीमा होने की आवश्यकता पड़ती जब तक कि दीर्घायु लगभग 80 वर्ष तक में कम न हो जाए। इसलिए बाइबल पर विश्वास करना बहुत आसान है कि लोग जलप्रलय से पहले लंबे समय तक जीवित रहते थे।

एंटेडिलुवियन के महान युग का समर्थन इस तथ्य से होता है कि बाढ़ के बाद की **अवधि एक ढलानी पैमाने पर कम हो गई ;** पहले लगभग 450 वर्ष और फिर 239 वर्ष और निर्गमन के समय इसे घटाकर 120 वर्ष कर दिया गया, यह सुझाव देते हुए कि बाढ़ के समय परिवर्तन हुए जिसने मानव और पशु दोनों का जीवन आयु छोटा कर दिया। ये परिवर्तन पर्यावरणीय, वंशानुगत या दोनों हो सकते हैं।

इस बात के प्रमाण हैं कि बाढ़ से पहले पृथ्वी को गामा विकिरण से अधिक सुरक्षा मिली थी जो जीवित कोशिकाओं को मारते हैं और सुरक्षात्मक ओजोन परत को नुकसान पहुंचाते हैं। जल का एक आवरण (बादल) बाढ़ से पहले मौजूद था (उत्प.1:7) और ऐसा प्रतीत होता है कि जब बाढ़ आई तो उस आवरण को हटा दिया गया जब *"आकाश के झरोखें खोल दी गईं"*।

इस प्रकार जीवन काल में कमी के मद्देनज़र बाढ़ के बाद उस संरक्षण को कम कर दिया गया था।

अन्य प्राचीन अभिलेख

केवल बाइबल ही ऐसा दस्तावेज नहीं है जो यह संकेत देता है कि लोग जलप्रलय से पहले बहुत लंबे जीवन जीते थे; प्राचीन कसदियों के अभिलेख भी बाइबल से सहमत हैं कि आदम से लेकर जलप्रलय तक *10 पीढ़ियाँ* थीं और यहाँ तक कि प्रत्येक राजा के नाम भी दिए गए हैं।

प्रत्येक एंटेडिलुवियन राजा के शासनकाल की लंबाई हालांकि वर्षों में नहीं दी गई है, लेकिन ***"सारी"*** **नामक एक इकाई** में है, जिसे पुरातत्वविद् ने माना कि इसका मूल्य 3,600 वर्ष था और जब सारियों की संख्या से उसे गुणा किया गया तो आदम से लेकर बाढ़ तक कुल 432,000 वर्ष हुए!

बाद में एक "सारी" की लंबाई केवल 181/2 वर्ष ही पाई गई। जब इस पैमाने को कसदियों के रिकॉर्ड में दिए गए दस राजाओं में से प्रत्येक की उम्र पर लागू किया गया था, तो आदम से लेकर बाढ़ तक की कुल अवधि केवल 2,220 वर्ष थी; जो कि 1,656 वर्षों के बाइबल के आंकड़े से अभी भी अधिक है, लेकिन इस तथ्य का समर्थन करते हैं कि एंटीडिलुवियन बहुत लंबे जीवन जीते थे।

उल्लेखनीय है कि:

i) दोनों रिकॉर्ड पहले मनुष्य की सृष्टि का समर्थन करते हैं।
ii) दोनों रिकॉर्ड इस बात से सहमत हैं कि पृथ्वी एक वैश्विक बाढ़ से नष्ट हो गई थी।
iii) दोनों रिकॉर्ड इस बात से सहमत हैं कि पहले आदमी से लेकर बाढ़ तक 10 पीढ़ियाँ थीं।
iv) दोनों रिकॉर्ड इस बात से सहमत हैं कि एंटीडिलुवियन एक काफी लम्बी आयु तक जीवित रहते थे।

बाइबल प्राचीन कुलपति	प्रत्येक कुलपति के सबसे बड़े पुत्र के जन्म का वर्ष के अनुसार			कलडीन एंटिडिल्वियन राजाओं	सारी		
	हिब्रू पंचग्रंथ	सामरी	सेप्टआगिंट		18 1/2 वर्ष में माना जाता है	सारी में उनके शासनकाल	3,600 वर्षों का माना जाता है
आदम	130	130	230	अलोरस	185	10	36,000
शेत	105	105	205	अलापारस	55.5	3	10,000
एनोस	90	90	190	अल्मेलों	240.5	13	46,800
केनान	70	70	170	अम्मेनोन	222	12	43,200
महललेल	65	65	165	अमेगलरस	333	18	64,800
यारेद	162	62	162	दाओनुस	185	10	36.000
हनोक	65	60	165	एडोरांचस	333	18	64,800
मतूशेलह	187	67	167	एम्म्पसिनस	185	10	36,000
लेमेक	182	53	188	ओटियार्टेस	148	8	28,800
जलप्रलय के समय नूह की आयु	600	600	600	ज़िसुथ्रस	333	18	64,800
कुल	**1,656**	**1,302**	**2,242**		**2,220**	**120**	**432,000**

जैसे कि कोई अपेक्षा कर सकता है, एक वैश्विक बाढ़ के बाद पूरी मानव जाति **उस बाढ़ से पूरी तरह अवगत होगी ।** माता-पिता कई पीढ़ियों तक अपने बच्चों को इसके बारे में बताते रहे होंगे। बाढ़ के बाद शेम 500 साल तक एक चश्मदीद गवाही देने के लिए जीवित रहा। मृत्यु के समय अब्राहाम 150 वर्ष का था और जब शेम की मृत्यु हुई तब याकूब 40 वर्ष का था।

दो अन्य प्राचीन अभिलेख आदम की सृष्टि से लेकर बाढ़ तक के इतिहास की अवधि का वर्णन करते हैं; ये हिब्रू पाठ के **अनुवाद** थे और दोनों सहमत हैं कि आदम से लेकर बाढ़ तक 10 पीढ़ियाँ थीं, लेकिन कुछ एंटीडिलुवियन पितृसत्ताओं के लिए उनकी अलग-अलग उम्र है। फिर भी वे प्रमुख बातों पर सहमत हैं।

भ्रष्ट सामरी पेंटाटेच के पास आदम से लेकर बाढ़ तक केवल 1,302 वर्ष हैं और सेप्टआजेंट के रूप में ज्ञात हिब्रू लेखों से 278 बीसी में ग्रीक भाषा के अनुवाद में, आदम से बाढ़ तक 2,242 वर्ष बताई गई है। हमें याद रखना चाहिए कि ये दोनों अभिलेख केवल अनुवाद हैं जिन्हें त्रुटियों का सामना करना पड़ा है और **मूल हिब्रू ही ईश्वरीय प्रेरित सटीक अभिलेख है।**

बाढ़ का कालक्रम

बाइबल की बाढ़ एक विश्व-विघटनकारी घटना थी। वैश्विक जनसंख्या काफी बढ़ गई थी। *"मनुष्य पृथ्वी पर बढ़ने लगे"* (उत्प. 6:1); उनकी संख्या कितनी थी हम नहीं जानते, लेकिन बड़ी लंबी उम्र और दस पीढ़ियों के साथ वे कई लाखों में हो सकते थे।

बाढ़ से पहले दुनिया का भूगोल अलग था। हमें चार नदियों के बारे में बताया गया है, पीसन, गीहोन, हिद्देकेल और फरात। पहले दो अब मौजूद नहीं हैं लेकिन हिद्देकेल वही टाइग्रस नदी है और फरात सर्वविदित है।
यह आश्चर्य की बात नहीं है कि दो नदियों की पहचान नहीं की जा सकती क्योंकि पृथ्वी की स्थलाकृति बदल गई थी। महासागर अब पृथ्वी की सतह के 70% हिस्से पर फैला हुआ है इसलिए पृथ्वी पर बाढ़ लाने के लिए महासागरों को शामिल किया गया होगा।

आज पृथ्वी का लगभग 97 प्रतिशत जल महासागरों में पाया जाता है। छोटे प्रतिशत में से जो समुद्र में नहीं है, उसमें से केवल दो प्रतिशत हिमनदों और बर्फ के रूप में मौजूद है। पृथ्वी पर कुल जल का केवल एक प्रतिशत से भी कम ताजा पानी है। हमारे वायुमंडल में जल का एक छोटा सा अंश जलवाष्प के रूप में मौजूद है।

पृथ्वी का धरातल बहुत पतला है; जहाँ महाद्वीपों पर इसकी मोटाई 30 किमी से लेकर महासागरों के नीचे केवल 5 किमी तक है। धरातल पिघले हुए मैग्मा पर तैर रहा है और खंडित है। यह चन्द्रमा के गति के साथ ही उठता और गिरता है, ठीक वैसे ही जैसे चंद्रमा के आकर्षण के कारण ज्वार-भाटा उठता और गिरता है।

जलप्रलय से पहले पृथ्वी को कोहरे से सींचा जाता था (उत्पत्ति 2:6) और इस बात के प्रमाण हैं कि बादल की एक छतरी ने "ग्लासहाउस" का प्रभाव पैदा करते हुए पृथ्वी को घेर रखा था। 40 दिनों की बारिश के साथ बाढ़ शुरू हुई जब वह आवरण गिर गया और जिस दिन उसने *"गहरे (महासागरों) के फाटकों... को तोड़ दिया (टूटा हुआ)"* (उत्पत्ति 7:11)।

इस बात के प्रमाण हैं कि अतीत में, पृथ्वी के चुंबकीय ध्रुव उलट गए थे, जिससे वैश्विक उथल-पुथल हुई। सृष्टि वैज्ञानिक इस उथल-पुथल को नूह के जलप्रलय के समय रखते हैं।

दुनिया अतीत में जलमग्न हो चुकी है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता है और जीवाश्म अवशेष इसकी गवाही देते हैं।

भारतीय प्लेट कभी हिंद महासागर में हुआ करता था और हिमालय पर्वत बनाने के लिए चीन की प्लेट पर चढ़ गया जो बाढ़ से पहले मौजूद नहीं था। बाढ़ से पहले अरारत पर्वत सबसे ऊंचा पर्वत था और यह तथ्य कि अंटार्कटिका में आइस कैप अरारत की ऊँचाई के बराबर है, इसे साबित करता है। आइस कैप को बर्फ द्वारा जमा नहीं किया जा सकता था क्योंकि अंटार्कटिक पृथ्वी पर सबसे शुष्क महाद्वीप है। जैसे-जैसे बाढ़ कम होती गई, हमारे महासागरों की गहरी खाइयों ने पानी को ग्रहण करने के लिए अपने आप को खोल दिया था।

क्या परमेश्वर ने बाढ़ लाने के लिए चुंबकीय ध्रुवों को उलट दिया था? यह संभव है लेकिन हम जानते हैं कि उन्होंने सृष्टि के चौथे दिन ऋतुओं को बनाने के लिए ध्रुवों को 23.5 डिग्री तक घुमाया था।

नूह ने जानवरों को कैसे खिलाया? नूह ने अपनी जरूरतों के लिए और जलप्रलय के बाद तक के लिये शाकाहारी जानवरों के लिए पर्याप्त भोजन ले लिया था। कुछ जानवरों ने हाइबरनेट (सुप्तावस्था) किया हो सकता है (उत्पत्ति 6:11;9:3)।

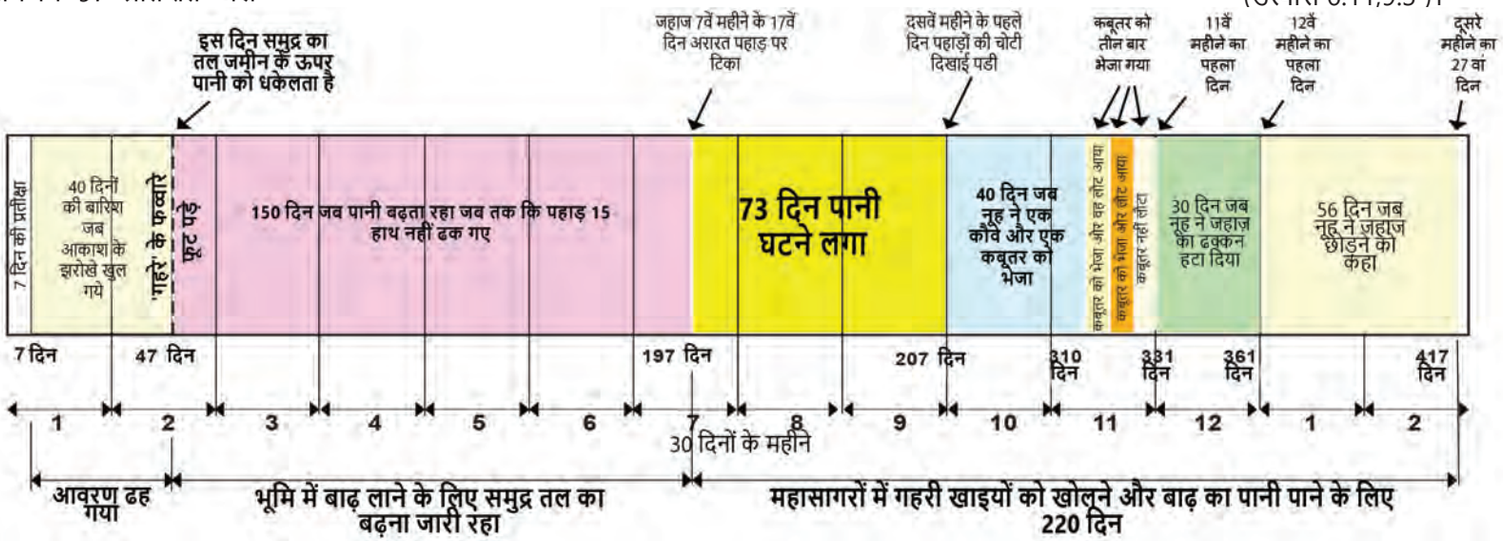

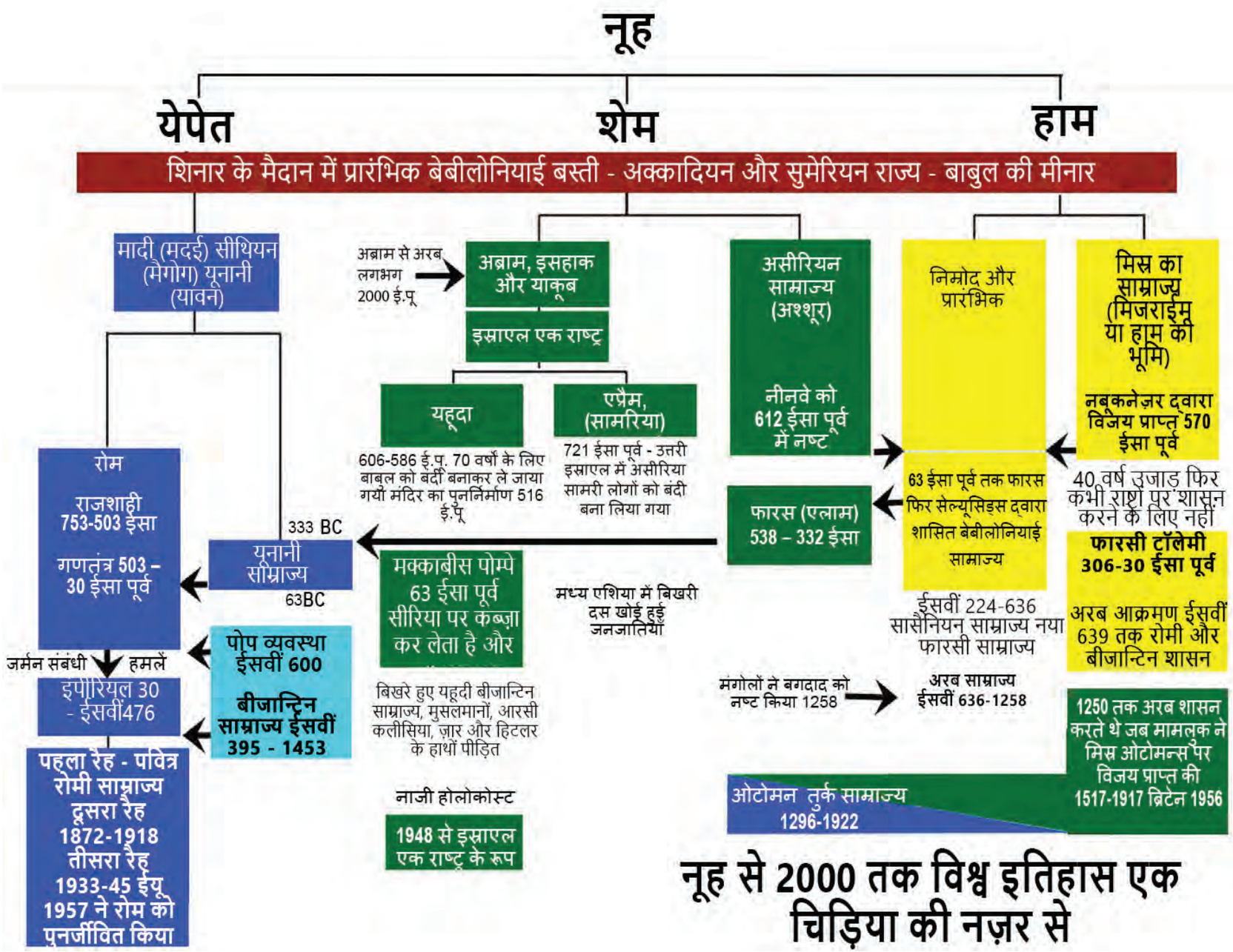

नूह से 2000 तक विश्व इतिहास एक चिड़िया की नज़र से

अय्यूब की किताब

यहोवा ने दिया और उसने ले लिया; मुझे पता है कि यह सच है,
लेकिन कहना मुश्किल है। परमेश्वर क्यों जोड़ेंगे, और फिर घटाएँगे?
यह सब गलत लगता है लेकिन फिर भी एक सच्चाई है।

अय्यूब ने अपने बेटे-बेटियों को भी खो दिया;
तेज हवा चलने से उसका घर ढह गया।
उसकी भेड़ें और चरवाहे आग में जल गए;
उन्होंने जो जलाया उससे नहीं, बल्कि आकाश से।

शबा के लोगों ने उसके सारे बैल छीन लिए;
इससे पहले कि उसकी फसल बोयी या फलती।
सभी वीर दास मारे गए थे;
उनके शरीर गड्ढे में पड़े हैं।

फिर उत्तर दिशा से कसदी आए
ऊँटों को चुराना उनका उद्देश्य था;
इसलिए अय्यूब के पास अब कुछ नहीं बचा
सिवा अपने दोस्तों को छोड़कर जिनके साथ उसने बातें की।

उसकी पत्नी के पास जो कुछ था उससे वह वंचित हो गई,
वह सिर्फ दुखी नहीं रह सकती थी।
वह अय्यूब की ओर मुडी जिसका स्वास्थ्य बिगड़ गया था,
और उसे राख के बिस्तर पर छोड़ दिया।

परमेश्वर अय्यूब से और क्या ले सकता था
उसके विश्वास की परीक्षा लेने, उसके सच्चे प्रेम को सिद्ध करने के लिये?
लेकिन तब भी जब उनकी पत्नी ने आरोप लगाया,
अपने परमेश्वर को कोसने से बिलकुल मना कर दिया।

परमेश्वर ने इस महापुरुष से वह सब छीन लिया
जो कुछ उसने दिया, जो उसकी योजना थी;
उसे साबित करने के लिए जो यह सह नहीं पा रहा था
कि अय्यूब अपने दुर्लभ विश्वास के कारण आशीषित हुआ।

यहाँ तक कि संघर्ष के बीच में भी
अपने दोस्तों और पत्नी द्वारा तिरस्कृत होने पर भी
यह व्यक्ति उस दिन का इंतज़ार कर रहा था
जब मसीह श्वेत वस्त्र पहनकर आएंगे।

तब परमेश्वर ने जो परीक्षा भेजी है वह छोटी लगेगी
जब कब्र में उसे परमेश्वर की पुकार सुनाई देगी
तब उसका शरीर फिर से शुद्ध हो जाएगा
और बाद के दिनों में वह ऐसा ही दिखेगा।

हम जानते हैं कि अय्यूब ने परीक्षा में जय पाई
और इस दुनिया में फिर से वह आशीषित हुआ;
उन्होंने उन लोगों के लिए प्रार्थना की जिन्होंने विरोध में बातें की
और बड़े आनंद के साथ चैन से रहा।

मैं जानता हूँ कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है;
उसने ले लिया, लेकिन अब वह देता है
जितना मैं खो सकता था उससे कहीं ज्यादा मिला;
परमेश्वर की योजना को बदलने की, मैं हिम्मत नहीं कर सकता।

अय्यूब की पुस्तक परमेश्वर और शैतान के बीच एक संघर्ष को दिखाती है जिसकी स्वर्ग तक पहुँच है और वह ऐसा तब तक करता रहेगा जब तक कि महान क्लेश नहीं होगा जब मीकाईल उसे पृथ्वी पर गिरा नहीं देगा (प्रका 12:9-12)। शैतान लगातार परमेश्वर के सामने विश्वासियों पर आरोप लगाता है और उनकी सेवा को निष्प्रभावी करने का प्रयास करता है।

अय्यूब ने कभी भी अपने दुःख के लिए शैतान को जिम्मेदार नहीं ठहराया, बल्कि अपने "दोस्तों" के आरोपों को देखा, साथ ही बच्चों द्वारा उसके चेहरे पर थूके जाने, युवकों द्वारा शारीरिक हमलों को अनुभव किया (अध्याय 30:1-12), इनकी परमेश्वर द्वारा अनुमति दी गई थी। वह अपने आरोप लगाने वालों से भ्रमित था, लेकिन उसने संकल्प लिया कि *"यद्यपि वह मुझे मार भी डाले फिर भी मैं उस पर भरोसा करूँगा"* और अंततः वह *"सोने की तरह"* शुद्ध होकर निकला।" हमारे लिए सबक यह है कि परीक्षाओं की अनुमति परमेश्वर हमारी भलाई और उसकी महिमा के लिए दी है (रोमियों 8:28)।

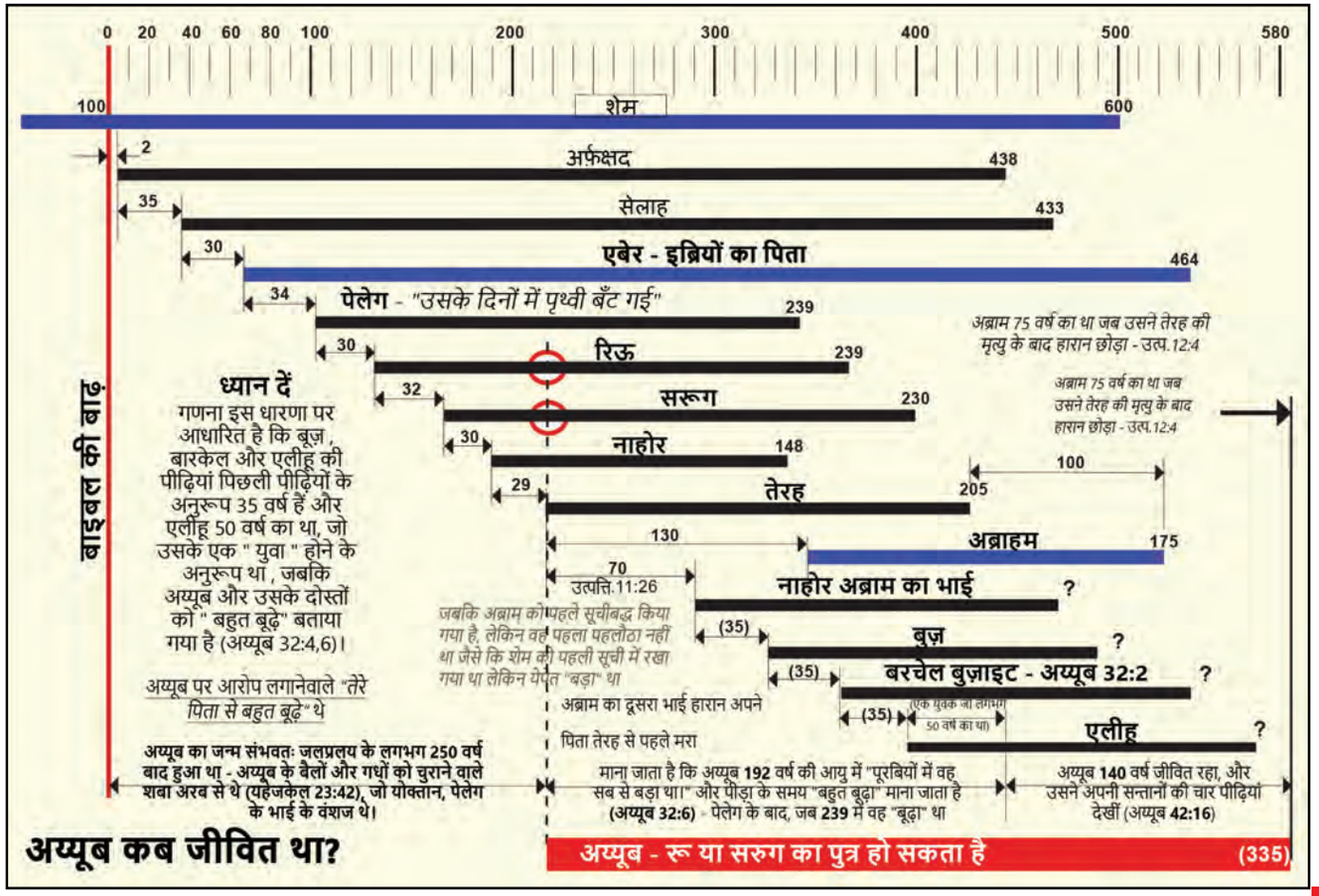

ईश्वरीय जाति को अलग किया जाना

निम्रोद द्वारा निर्मित बेबीलोन की मीनार एक **धार्मिक इमारत** थी जो आकाशगण: जैसे सूर्य, चंद्रमा और तारे आदि का निरीक्षण करने और उनकी पूजा के लिए समर्पित थी। *बार्न्स की कमेंटरी* के अनुसार , निम्रोद नाम विदेशी मूल का है और इसका अर्थ है *"हम विद्रोह करेंगे"।* यह शायद भाषाओं के भ्रम के बाद लिया गया था।

निम्रोद *"यहोवा के सामने"* एक शक्तिशाली शिकारी था । इस अभिव्यक्ति का अर्थ है कि वह प्रभु के सामने निर्लज्ज, निर्भीक और खुले विद्रोह में जीता रहा। जिस तरह समलैंगिक खुलेआम, बेशर्मी से अपने अशुद्ध व्यवहार का अभ्यास करने के लिए एकांत से "बाहर" आते हैं , उसी तरह निम्रोद ने अपने विद्रोह को नहीं छिपाया, बल्कि खुले तौर पर घोषित किया कि वह यहोवा का विरोधी था।

निम्रोद ने कहा, *"आओ, हम अपना नाम करें* ***ऐसा न हो कि हम को सारी पृथ्वी पर फैलना पड़े...।"*** (उत्प.11:4)। जब परमेश्वर ने देखा कि निम्रोद क्या कर रहा था, तो उसने कहा, "लोग एक ही दल के हैं" और "अब जितना वे करने का यत्न करेंगे, उस में से कुछ उनके लिये अनहोना न होगा" (उत्पत्ति 11:6)।

आज विश्व की 54 प्रतिशत जनसंख्या शहरी क्षेत्रों में रहती है, और यह अनुपात 2050 तक बढ़कर 66 प्रतिशत होने की उम्मीद है। सन 1800 में, केवल 3% शहरों में रहते थे! परमेश्वर ने उनकी भाषा को भ्रमित करके उन्हें तितर-बितर कर दिया!

निम्रोद ने पूरी मानव जाति को *शिनार के मैदान* में केंद्रित करने की कोशिश की, अशूर, **शेम की पीढी का एक बेटा,** 450 किमी उत्तर में जाकर शहरों का एक समूह स्थापित किया जो

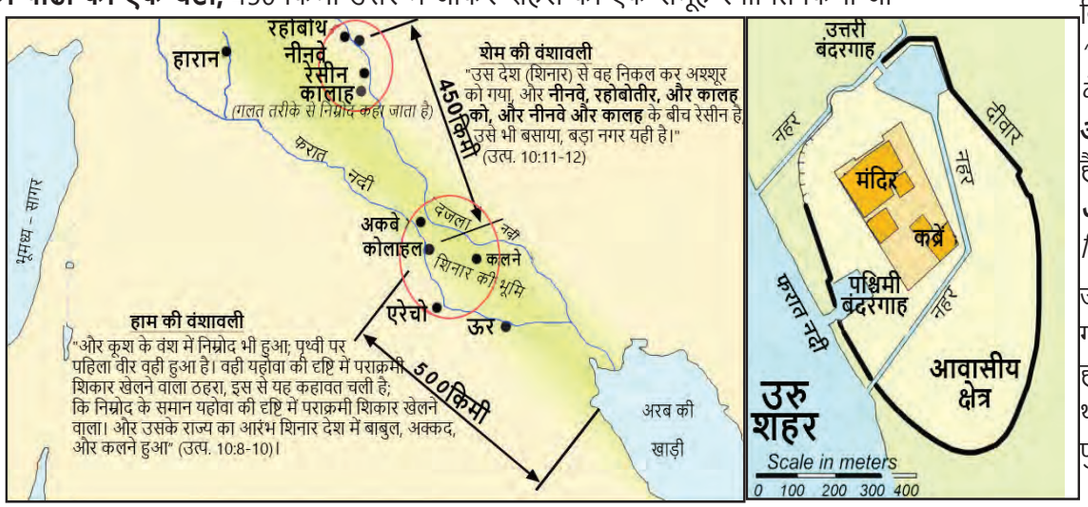

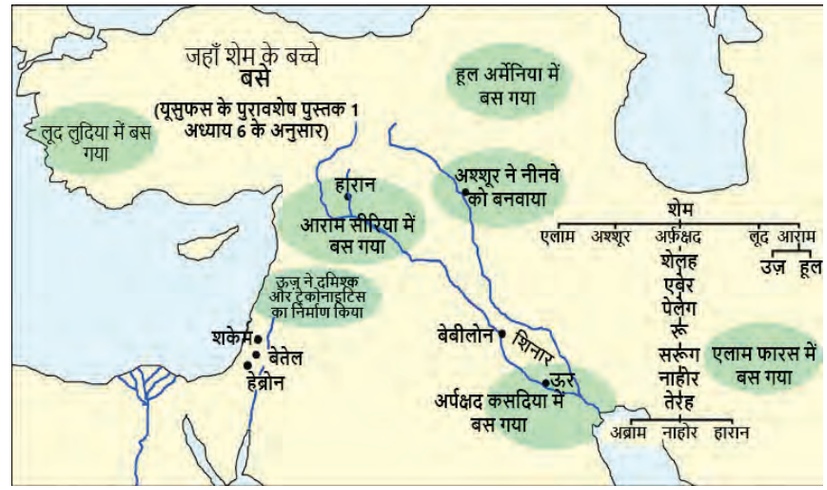

नीनवे को घेरे हुए था। यह निम्रोद और उसकी मूर्तिपूजा का विरूद्ध विरोध था। नीनवे में अपने प्रारंभिक दिनों में परमेश्वर का ज्ञान ही **योना के दिनों में शहर को पश्चाताप के लिए** प्रेरित करने का कारण हो सकता है। आधुनिक संस्करण ग़लती से कहते हैं कि निम्रोद ने नीनवे का निर्माण किया था। द सेप्टआजेंट, द बुक ऑफ जुबलीज़, जोसेफस और जिनेवा बाइबल सभी सहमत हैं कि अश्शूर ने नीनवे का निर्माण किया था।

ऊर में तेरह और अब्राम

तेरह , अब्राम का पिता, अश्शूर के साथ नीनवे नहीं गया, बल्कि ऊर में रहा, जो कसदियों की राजधानी थी। ऊर में खुदाई से एक बड़े मूर्तिपूजक मंदिर के साथ एक शहर का पता चला है और हम जानते हैं कि तेरह एक मूर्तिपूजक था। यहोशू ने इस्राएल से कहा:

"प्राचीन काल में अब्राहम और नाहोर का पिता तेरह आदि, तुम्हारे पुरखा परात महानद के उस पार रहते हुए ***दूसरे देवताओं की उपासना करते थे"*** (यहोश 24:2)।

अब्राम अपने पिता की मूर्तिपूजा के खिलाफ खड़ा हुआ होगा और तल्मूड कहता है कि वह सुरक्षा के लिए शेम भाग गया। परमेश्वर ने अब्राम से कहा, ***"अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर*** *उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा"* (उत्प.12:1-3)।

जब अब्राम ने अन्ततः परमेश्वर की आज्ञा मानी, तब वह तेरह को अपने साथ हारान में ले गया, और तब तक वहीं रहा, जब तक कि कनान को जाने से पहले तेरह मर नहीं गया। हारान की मृत्यु के बाद तेरह ऊर में रह नहीं पा रहा था। अब्राहम अपने भाइयों में छोटा था लेकिन हारान की मृत्यु के बाद उसने 'पहलौठे' की भूमिका निभाई; उसने हारान के पुत्र लूत की देखभाल की।

एक अनंत अब्राहम की वाचा

कनान देश को अब्राम और उसके वंश के लिए एक अनंत अधिकार के रूप में देने का जो वादा किया गया उसे **शाब्दिक रूप** से लिया जाना चाहिए ; अब्राहम की वाचा को केवल आत्मिक रूप देने का कोई भी प्रयास पवित्रशास्त्र के पाठ के साथ घोर अन्याय करता है।

i) उत्पत्ति 12:2 में, अब्राम के 75 वर्ष के होने से पहले, परमेश्वर ने उसे एक **नए देश में ले जाने** और उसे एक ***"महान राष्ट्र"*** बनाने का वादा किया था

ii) जब 75 वर्ष का अब्राम शकेम में आया और परमेश्वर ने उसे फिर से आश्वासन दिया, *" मैं यह देश तेरे वंश को दूँगा"* (उत्प.12:7)।

iii) जब अब्राम मिस्र से बेतेल की वेदी पर लौटा, तो परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह **सारी भूमि** जिसे वह उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में देख सकता है, उसे ***"और तेरे वंश को सदा के लिए"*** दिया जाएगा (उत्पत्ति 13:15); अब्राम का वंश इतना बढ़ जाएगा कि उनकी गिनती नहीं की जा सकेगी।

iv) लगभग 10 वर्ष बाद, जब अब्राम लगभग 85 वर्ष का था, परमेश्वर ने उसे आश्वस्त किया कि वह **परमेश्वर के वादों के वारिस** का पिता होगा और एक बलिदान के द्वारा एक वाचा बाँधी जो यह दर्शाता है कि उस देश की **सीमा परात से लेकर मिस्र के महानद तक** होगी जब उसे कहा, ***"मैं यह देश तेरे वंश को दूँगा ।"*** (उत्पत्ति 15:18)।

v) जब अब्राम 99 वर्ष का था, तब परमेश्वर ने उसका नाम बदलकर अब्राहम कर दिया, जिसका अर्थ है *"अनेक राष्ट्रों का पिता"* और उसके वंश को ***"कनान की सारी भूमि, अनन्त अधिकार** के लिए दे दिया"* (उत्प.17:8)। इस्राएल में प्रत्येक बालक का खतना परमेश्वर और अब्राहम के वंश के बीच ***"सनातन वाचा** के लिए"* वाचा के प्रतीक के रूप में दिया गया था (उत्प 17:13)।

vi) फिलीस्तीनी वाचा में कहा गया है कि यदि इस्राएल अवज्ञाकारी है तो वे तितर-बितर हो जाएँगे लेकिन यदि वे पश्चाताप करते हैं तो उन्हें देश वापस फेर दी जायेगी। सारा इस्राएल उद्धार पाएगा (रोमियो 11:26-29)।

vii) जब अब्राहम लगभग 115 वर्ष का था तब वह इसहाक को मोरिया पहाड़ों में से एक (सिय्योन पर्वत) पर ले गया जहाँ उसे बालक को एक वेदी पर बलि के रूप में चढ़ाने के लिए कहा गया। अब्राहम ने आज्ञा का पालन किया लेकिन परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया और एक मेढ़े को, जो एक झाड़ी में फंसा हुआ था, इसहाक के स्थान पर बलि चढ़ाने के लिये दिया। परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता की परीक्षा **परमेश्वर की ओर से एक शपथ** लेकर आई कि वह अब्राहम के वंश को बढ़ाएगा, कि वे अपने शत्रुओं पर विजयी होंगे, और कि *"और **पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी**"* (उत्पत्ति 22:17-18)।

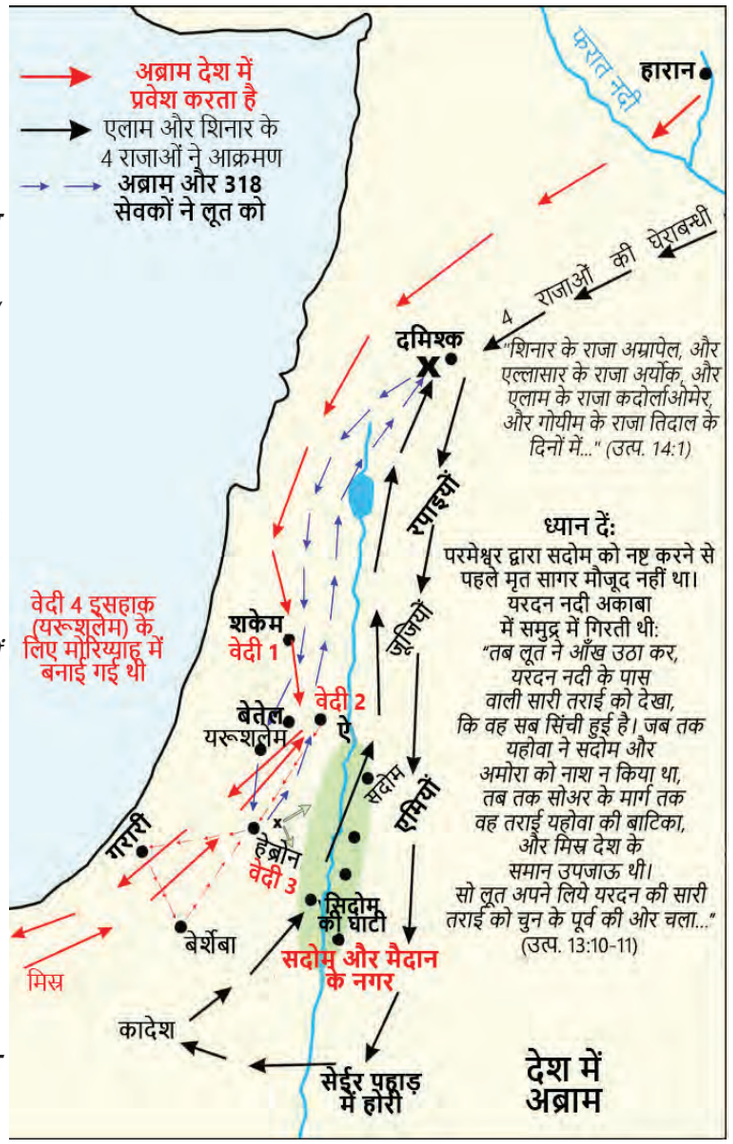

इन **वादों, शपथों, और वाचाओं** को ध्यान में रखते हुए उस देश पर इस्राएल के अधिकार और सभी राष्ट्रों के लिए उसके आशीष का माध्यम बनने से इनकार करना किसी घोर अविश्वास से कम नहीं हो सकता है। पवित्रशास्त्र में कहीं भी इन वादों का परित्याग नहीं किया गया है। इसहाक (उत्प. 26:3-4) और याकूब (उत्प. 35:9-12) के प्रति इन प्रतिज्ञाओं की पुष्टि की गई है और ये ***"सनातन"*** और ***"हमेशा के लिए"*** हैं । हम उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब इस्राएल **प्रभु की ओर मुड़ेगा और फिलिस्तीनी वाचा (व्यवस्था 28-30)** की शर्तों के तहत , उसके शत्रुओं के फाटकों को मसीह के सहस्राब्दी राज्य में सभी राष्ट्रों के आशीष के लिए अपने कब्जे में लेंगे।

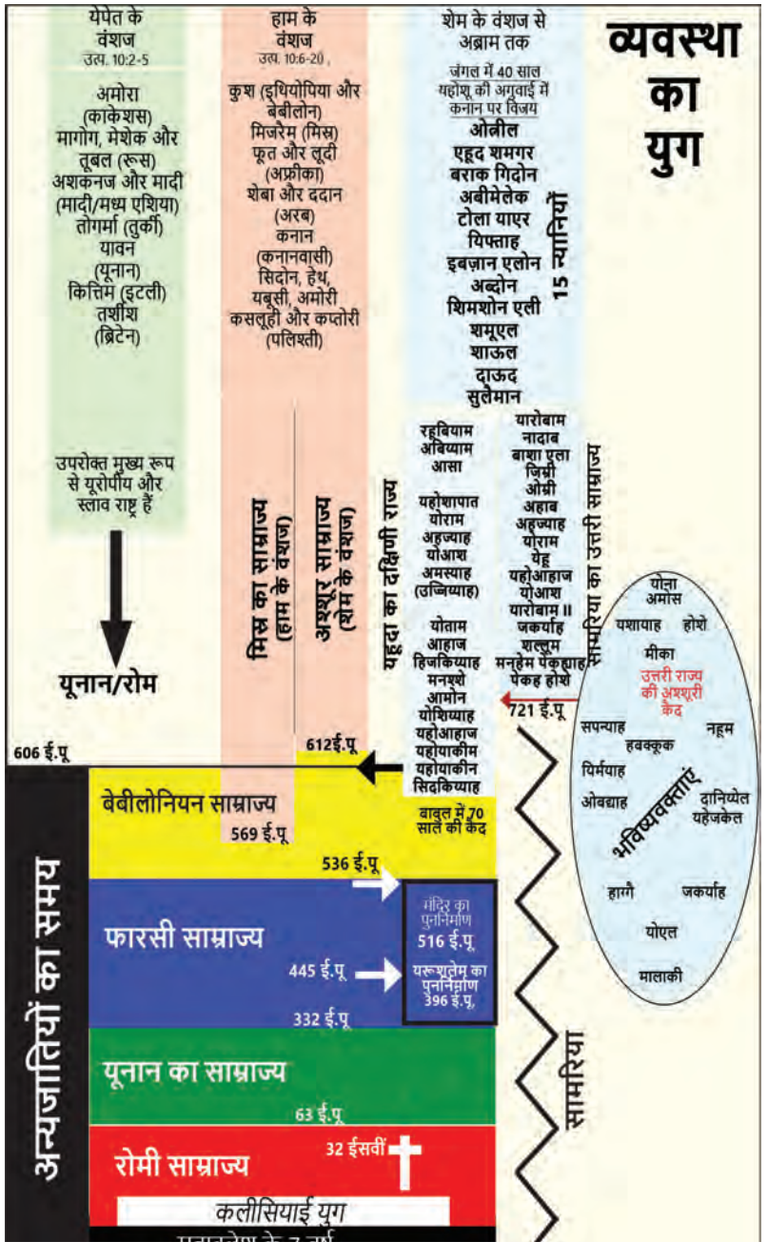

व्यवस्था का युग

जब इस्राएल मिस्र से बाहर आया तो एक नया प्रशासन शुरू हुआ क्योंकि परमेश्वर ने उस राष्ट्र को ऐसी व्यवस्थाएँ दी जो जीवन के हर क्षेत्र पर प्रभाव डालते थे; वहाँ दैवीय रूप से नियुक्त याजकों द्वारा किए गए बलिदान और भेंट, आहार और स्वच्छता व्यवस्था, नैतिक और सामाजिक व्यवस्था थे; ऐसी व्यवस्थाएँ थी जो युद्ध, भूमि अधिकार और वित्त से संबंधित थे। मिस्र से पलायन बदल गया

मिस्र से पलायन ने इस्राएलियों को गुलामों में से एक संगठित और जिम्मेदार राष्ट्र में बदल दिया, लेकिन इसमें राष्ट्रीय स्वतंत्रता के अलावा और भी बहुत कुछ था।

सिनाई पर्वत पर मूसा को दी गई व्यवस्थाएं परमेश्वर द्वारा दिए गए थे और इसका उद्देश्य प्रत्येक इस्राएली को परमेश्वर के उद्धार की योजना की ओर इंगित करना था जो सदियों के बाद प्रकट होगी। पाप के लिए बलिदानों ने प्रत्येक व्यक्ति को सिखाया कि परमेश्वर पवित्र है और पाप की मजदूरी मृत्यु है। बलिदानों ने स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया कि क्षमा केवल दूसरे की मृत्यु के द्वारा प्राप्त की जा सकती है और याजकों की मध्यस्थता ने सिखाया कि पापियों को परमेश्वर के सामने एक मध्यस्थ और एक पवित्र अधिवक्ता की आवश्यकता होती है।

परमेश्वर की सभी व्यवस्थाएं न्यायपूर्ण और

अच्छे थे और आज्ञाकारिता उन सभी के लिए आशीष लेकर आई जिन्होंने आज्ञा का पालन किया।

व्यवस्था उस एक व्यक्ति की ओर भी इशारा करती है जो आराधानालय के अनुष्ठानों में देखे गए *"प्रकार"* या छाया को पूरा करने के लिए स्वर्ग से आएगा। पौलुस ने लिखा:

"इसलिये व्यवस्था मसीह तक पहुँचाने के लिए हमारी शिक्षक हुई है, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें" (गलातियों 3:24)।

व्यवस्था का युग बीत गया जब मसीह प्रकट हुआ और पिता के पास उठाया गया। यीशु ने कहा:

"व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक रहे...आकाश और पृथ्वी का टल जाना व्यवस्था के एक बिन्द के मिट जाने से सहज है।" (लूका 16:16-17)।

व्यवस्था भविष्यवाणी की तस्वीर है और हर एक बिंदु और शीर्षक अवश्य पूरा होगा।

यूहन्ना पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं में से अंतिम था और उसने घोषणा की कि यीशु *"परमेश्वर का मेमना है जो जगत के पाप उठा ले जाता है"* (यूहन्ना 1:29)।

यूहन्ना ने यह भी संकेत दिया कि पुराने नियम के संत केवल *"दूल्हे के मित्र"* थे (यूहन्ना 3:29) (मसीह के) लेकिन नए नियम के संत मसीह की "*दुल्हन*" हैं। सारी व्यवस्था मसीह में पूरी होती है, जिसका अब उन सभी के साथ एक नया संबंध है जो उस पर विश्वास करते हैं।

मसीह हमारा बलिदान है, जो कि हमारा महान महायाजक, और पिता के पास हमारा वकील है और उसने अपने पवित्र आत्मा को उन सभी के अंदर दिया है जो उस पर विश्वास करते हैं ताकि व्यवस्था की धार्मिकता हम में पूरी हो सके।

समय के सात युग

इतिहास में सात स्पष्ट रूप से परिभाषित अवधियाँ हैं जब परमेश्वर ने मानव जाति के साथ अलग अलग तरह से व्यवहार किया। इन अवधियों को युग या काल कहा जाता है। हालाँकि, परमेश्वर के उद्धार का मार्ग कभी नहीं बदला है। इब्रानियों की पत्री के 11वें अध्याय में संकेत के अनुसार उद्धार केवल अनुग्रह से, विश्वास के द्वारा ही हुआ है। मसीह के पृथ्वी पर आने से पहले, पशु बलि ने लोगों को याद दिलाया कि प्रायश्चित केवल एक विकल्प के लहू बहाने के द्वारा ही संभव था, लेकिन पशु बलि केवल मसीह के सिद्ध बलिदान की छायामात्र थी। समय की परिपूर्णता में, परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह, एक कुंवारी से जन्म लेने के लिए स्वर्ग से आया, दुनिया के पापों के लिए परमेश्वर के मेमना के रूप में मर गया, और मृतकों में से जी उठा। हर युग में उद्धार केवल विश्वास से ही था, लेकिन व्यवहार बदल गया। वे सात युग इस प्रकार हैं:

1) निर्दोषिता का युग जब आदम और हव्वा अदन की वाटिका में निष्पाप रूप से रहते थे।

2) विवेक का युग आदम ने जब पाप किया और अच्छे और बुरे का ज्ञान प्राप्त किया।

3) सरकार का युग जल प्रलय के बाद जब परमेश्वर ने राष्ट्रों को अपनी व्यवस्था का संचालन करने का अधिकार सौंपा।

4) प्रतिज्ञा का युग, या कुलपतियों का युग, अब्राहम से निर्गमन तक।

5) व्यवस्था का युग निर्गमन से लेकर जब इस्राएल एक राष्ट्र बन गया, तब से पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया की स्थापना तक।

6) रहस्यमय कलीसिया का युग, पिन्तेकुस्त से सात साल के महाक्लेश से पहले कलीसिया के उठा लिये जाने तक।

7) मसीह के राज्य का युग, पृथ्वी पर महाक्लेश के तुरंत बाद मसीह की वापसी से, 1,000 वर्षों के लिए, अनन्त राज्य और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी तक।

मानव जाति के प्रति परमेश्वर का प्रशासन बदलता गया लेकिन प्रत्येक प्रशासन में मनुष्य असफल साबित हुआ और उसे न्याय की आवश्यकता थी।

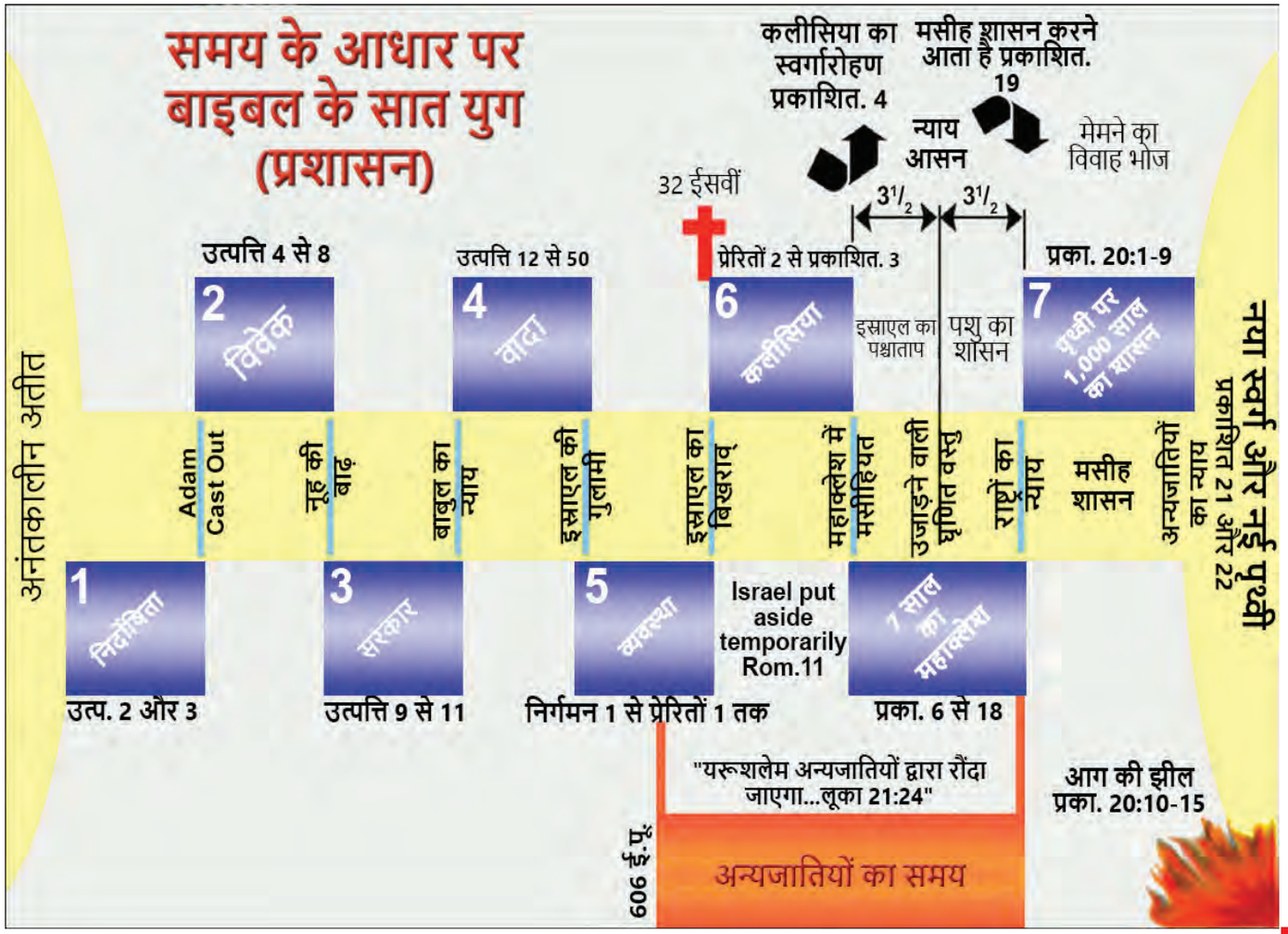

सत्य के वचन को सही ढंग से काम में लाना

पौलुस ने लिखा: *"अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो। परन्तु अशुद्ध बकवाद से बचा रह"* (2 तीमुथियुस 2:15-16)।

पवित्रशास्त्र के भीतर अलग अलग विभाजन हैं जिन्हें हमें पहचानने की आवश्यकता है। समय का विभाजन हैं जैसा कि सात विभिन्न युगों में देखा गया है और लोगों के तीन वर्ग हैं जिनके साथ परमेश्वर व्यवहार करता है: यहूदी, अन्यजाति, और कलीसिया।

समय की शुरुआत से ही परमेश्वर ने अन्यजातियों के राष्ट्रों के साथ व्यवहार किया, लेकिन जब उसने अब्राम को कसदियों के ऊर से बुलाया, तो हिब्रू राष्ट्र दुनिया में सत्य का भंडारगृह बन गया।

जब इस्राएल ने अपने राजा को अस्वीकार कर दिया, तब वह राष्ट्र अस्थायी रूप से अंधा हो गया था, जबकि परमेश्वर अन्यजातियों में से मसीह के लिए एक दुल्हन को बुलाता है; अर्थात् कलीसिया।

इस युग के अंत में, मसीह, स्वर्गीय दूल्हा, अपनी दुल्हन को बुलाएगा और कलीसिया को स्वर्ग में उठा लिया जाएगा। मेम्ने का विवाह स्वर्ग में होगा जबकि परमेश्वर इस्राएल के साथ सात वर्ष तक पृथ्वी पर व्यवहार करता है।

महाक्लेश के सात वर्षों के दौरान इस्राएल पश्चाताप करेगा और मसीह यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन से 1,000 वर्षों तक राज्य करेगा।

1,000 वर्ष के अंत में पृथ्वी को आग से पुनर्निर्मित किया जाएगा और एक नया स्वर्ग और नई पृथ्वी होगी।

कलीसिया नए यरूशलेम में निवास करेगी जो स्वर्ग से उतरेगा, इस्राएल उस अनन्त शहर के चारों ओर निवास करेगा, और बचाए गए अन्यजाति नई पृथ्वी पर राज करेंगे। 12 प्रेरितों के नाम नगर की नेवों में हैं, और इस्राएल के 12 गोत्रों के नाम उसके 12 फाटकों पर हैं।

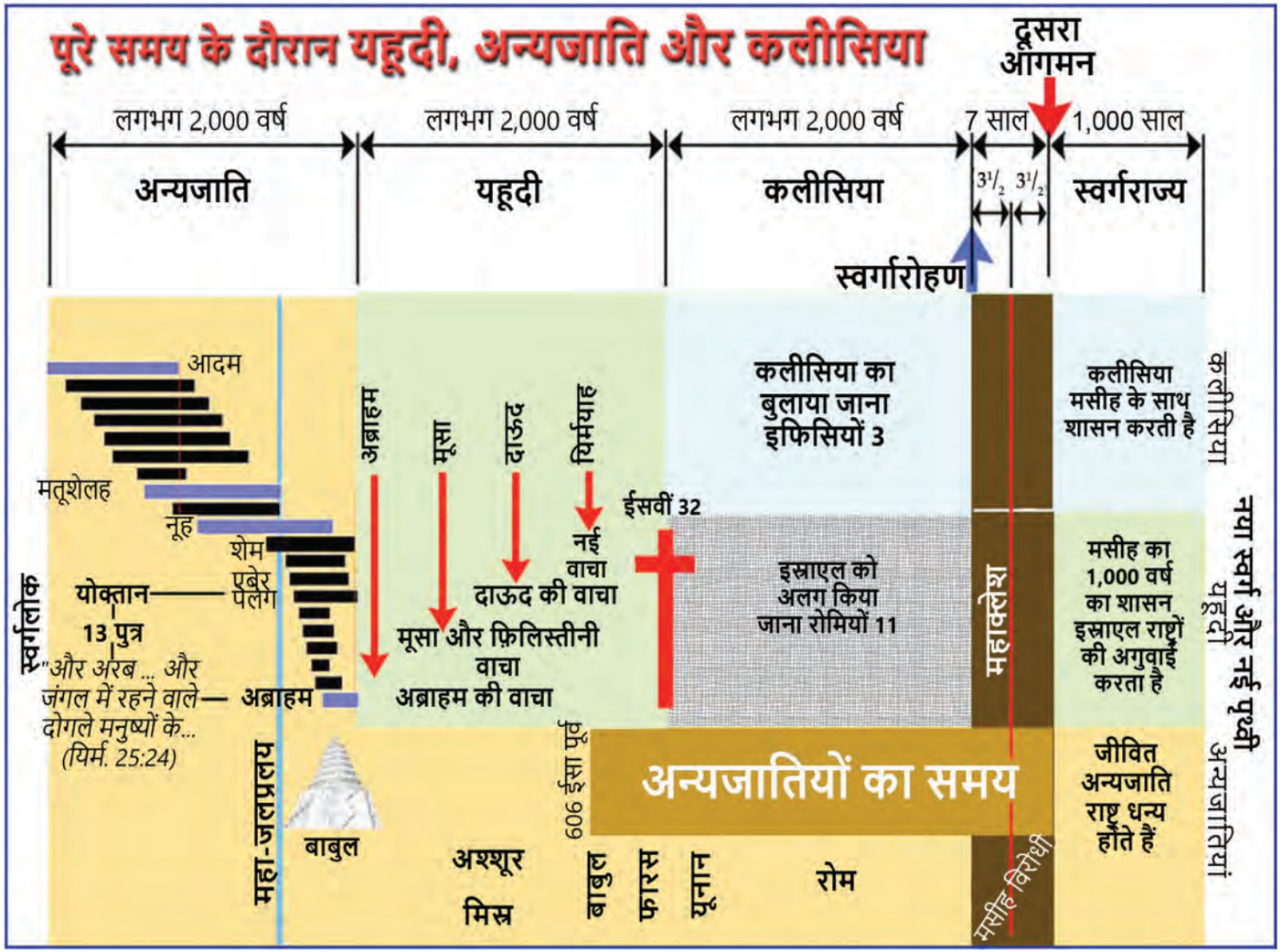

अरबों और यहूदियों की वंशावली

नूह के तीन बेटे थे, शेम, हाम और येपेत। येपेत सबसे बड़ा था और हाम सबसे छोटा। हाम का एक बेटा कनान था जो दुष्ट था और जिसे परमेश्वर ने शाप दिया था। कनान के वंशज कनान देश में बसे हुए थे, जिसे परमेश्वर ने अब्राहम को अनन्त अधिकार के लिए दिया था।

नूह के दूसरे पुत्र शेम के वंशज, कम से कम अपने शुरुआती दिनों में, ईश्वरीय वंश थे। शेम के पुत्रों में से एक अश्शूर, शिनार के मैदान से दूर चले गए जब निम्रोद ने बाबेल के अपने मूर्तिपूजक मीनार का निर्माण किया। एबेर इब्रियों का पिता था जिसे परमेश्वर ने पृथ्वी पर सत्य को संरक्षित करने के लिए चुना था।

एबेर के दो पुत्र थे, योक्तान और पेलेग। योक्तान के 13 बेटे थे जो अरब के राजकुमार बन गए और अरब प्रायद्वीप पर कब्जा कर लिया, जबकि पेलेग ने उस वंश को जन्म दिया जिसमें से अब्राम निकला। अब्राहम यहूदी जाति का पिता था और उसके कुछ बेटे अरब लोगों के साथ घुलमिल गए थे।

पेलेग के दिन महत्वपूर्ण थे क्योंकि *"उसके दिनों में पृथ्वी बंट गई"* (परमेश्वर द्वारा)।इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह उस समय से संबंधित है जब परमेश्वर ने बाबेल की मीनार को पूरा होने से रोकने के लिए भाषाओं का भ्रम भेजा था। यह वह समय था जब अश्शूर ने प्रस्थान किया और नीनवे को बेबीलोन के उत्तर में दजला नदी पर 450 किमी दूर बनाया।

शेम को *"एबेर के सभी बच्चों के पिता" के रूप में वर्णित किया गया है* (उत्प.10:21) और अब्राहम को *"इब्रानी "* (उत्प.14:13) कहा जाता है। मिस्र में यूसुफ और इस्राएल के बच्चों को *"इब्रियों"* के रूप में संदर्भित किया गया था।

आदम से लेकर निम्रोद तक पूरी पृथ्वी पर केवल एक ही भाषा थी, जो संभवतः हिब्रू रही होगी। परमेश्वर ने कहा है कि अंत के दिनों में

*"उन पर अपने क्रोध की आग पूरी रीति से भड़काऊं; क्योंकि सारी पृथ्वी मेरी जलन की आग से भस्म हो जाएगी॥ और **उस** समय मैं देश-देश के लोगों से एक नई और शुद्ध भाषा बुलवाऊँगा, कि वे सब के सब यहोवा से प्रार्थना करें, और एक मन से कन्धे से कन्धा मिलाए हुए उसकी सेवा करें।* (सप. 3:8-9)।हिब्रू भाषा को एलीएजेर बेन येहुदा द्वारा पुनर्जीवित किया गया था जिनकी मृत्यु 1922 में हुई थी।

कतूरा से जन्मे अब्राहम की सन्तान को *"पूर्वी देश"* भेज दिया गया (उत्प.25:6) और वे योक्तान के पुत्रों के साथ मिल गये ; यह इसलिए था क्योंकि परमेश्वर ने कहा था, *"इसहाक में तेरा वंश कहलाया जाएगा "* (उत्प 21:12)।

याकूब को अब्राहम से वादा किया गया देश दिया गया और एसाव ने सेईर पहाड़ में होरियों को विस्थापित कर दिया जो मृत सागर के दक्षिण-पूर्व में एदोम की भूमि बन गई।

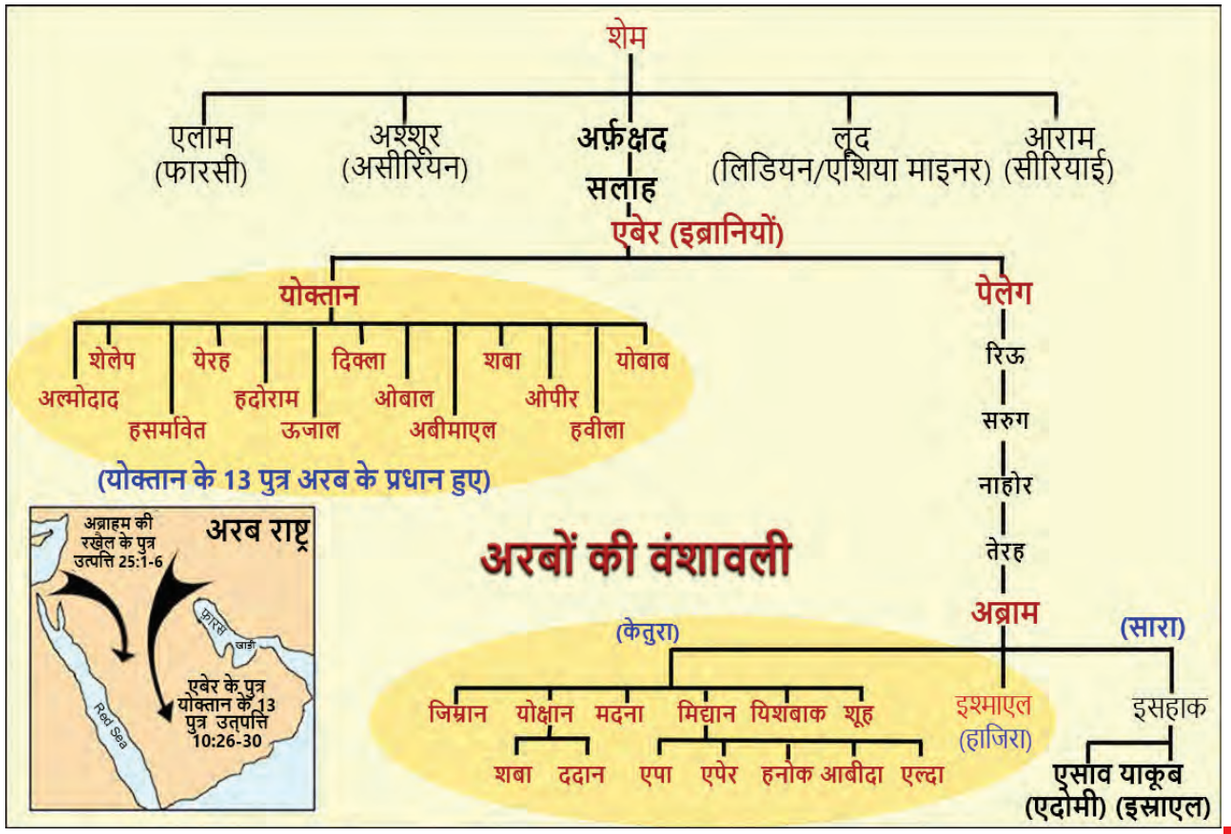

राष्ट्रों के परिवार

समस्त मानवजाति तीन कुलों से उत्पन्न हुई: येपेत, शेम और हाम की सन्तानों से। बाढ़ के बाद जहाज पूर्वी तुर्की में अरारत पर्वत पर दजला और फरात नदियों के मुहाने पर ठहरा और जैसे ही पानी घट गया था, वे फरात नदी के किनारे चलते हुए शिनार के मैदान तक पहुँचे और वहाँ बस गए थे। परमेश्वर का इरादा था कि मनुष्य हर तरफ बिखर जाएँ और पृथ्वी को भर दें, लेकिन निम्रोद केंद्रीकृत करना चाहता था ताकि वह लोगों को नियंत्रित कर सके और अपनी मूर्तिपूजक बेबीलोन की मीनार के साथ लोगों को अधिक से अधिक मूर्तिपूजा में ले जा सके। जब परमेश्वर ने भाषाओं को भ्रमित किया, तो मीनार पर काम बंद हो गया और लोग अपनी विभिन्न भाषाओं के अनुसार बिखर गये। आदम से लेकर निम्रोद तक पूरी पृथ्वी पर केवल एक ही भाषा बोली जाती थी, जो संभवतः हिब्रू थी।हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि की मीनार के निर्माण में ईश्वरीय वंश के लोग निम्रोद के साथ शामिल नहीं हुए, इसलिए उनकी भाषा भ्रमित नहीं हुई होगी। भाषाओं को भ्रमित करने का उद्देश्य मीनार पर काम बंद करना था। साथ ही हम यह भी ध्यान देते हैं कि शेम के पुत्र अश्शूर ने शिनार से अपनी जाति को बाहर किया जब निम्रोद बाबेल का निर्माण कर रहा था (उत्प.10:8-12)।

ऐतिहासिक दस्तावेज़ और बाइबल के इतिहास से संकेत मिलता है कि येपेत के वंशज उत्तर में फैल गए और हाम के वंशज दक्षिण में कनान और अफ्रीका में चले गए जबकि शेम के वंशज मध्य पूर्व में बने रहे और शायद पूर्व में एशिया में विस्थापित हो गए।

"अन्यजातियों के द्वीप " यावान (यूनान) के संतानों के बीच विभाजित थे (उत्प.10:4-5)। यूनान का प्राचीन नाम इवाना था । यूनानी महान उपनिवेशवादी और समुद्री यात्रा करने वाले लोग थे।

ग्रीक उपनिवेशों ने 500 ईसा पूर्व में भूमध्यसागरीय तटरेखा को यात्रा लायक बनाया और तर्शीश यावन के पुत्रों में से एक था। ब्रिटेन को *"टिन आइल"* के रूप में जाना जाता था क्योंकि पिछले 2,500 वर्षों से यूरोप में कॉर्नवाल ही टिन का एकमात्र प्रमुख स्रोत था और *"तर्शीश के जहाज "* सूर के बाजारों में टिन लाते थे (यहेजकेल 27:12)।

जोसेफस हमें बताते हैं कि **मागोग के वंशज यूनानियों द्वारा सीथियन के रूप में जाने जाते थे** जो काला सागर के उत्तरी किनारे पर रहते थे, तोगर्मा और गोमेर पूर्वी तुर्की में बस गए थे। सदियों से ये लोग अपनी भूमि से या प्रवास के कारण इस क्षेत्र के भीतर चले गए।

हाम के पुत्र थे कुश (इथियोपिया) और मिजराईम (मिस्र हालाँकि आधुनिक मिस्रवासी इस्लामी विजय के बाद से अरब हैं)। मिस्र को *" हाम के तम्बू "* (भजन 78:51) कहा जाता है। परमेश्वर ने कहा कि कनान के वंशज येपेत और शेम के दास होंगे (उत्प.9:25-27) और इतिहास ने इस भविष्यवाणी को सच कर दिखाया है।

बाढ़ के बाद परिवारों, जनजातियों और राष्ट्रों का स्थान

जोसेफस एक यहूदी इतिहासकार थे, जो 37 ईसा पूर्व से 100 ईसवीं तक जीवित रहे और जो यहूदी विद्रोह (66 ईसवीं से ईसवीं 70 तक) को कुचलने वाले रोमन जनरल टाइटस का अनुवादक बन गए। वह अपनी पुस्तकों के लिए प्रसिद्ध है *यहूदियों की प्राचीनता* जो आदम से लेकर इतिहास के बारे में बाइबल से बताती है, और यहूदियों के युद्ध जो ग्रीसियन युग और रोमन युग में संघर्षों का वर्णन करते हैं; वह यरूशलेम के विनाश का चश्मदीद गवाह था। दोनों पुस्तकें आज उपलब्ध हैं।

बाइबल की पहली पाँच पुस्तकों को **लिखित तोराह** के रूप में जाना जाता है और मिश्ना और गेमारा के साथ सम्मिलित तल्मूड को मौखिक व्यवस्था के रूप में जाना जाता है ।
यरुशलेम तल्मूड मौखिक व्यवस्था थी जिसे 200 ईसवीं के बारे में लिखा गया था क्योंकि इतने सारे रब्बी मारे गए थे और यह डर था कि मौखिक कानून भी नष्ट हो जाएगा।

अधिक व्यापक बेबीलोन का तल्मूड 300ईसवीं और 350 ईसवीं के बीच प्रकाशित हुआ था। जोसीफस ने कई चीजें दर्ज कीं जो उसके दिनों में केवल मौखिक रूप से सिखाई जाती थीं और वह अक्सर बाइबल के इतिहास पर प्रकाश डालता है, हालांकि वह हमेशा सटीक नहीं होता है।

जोसेफस के पास कई मिस्र, बेबीलोनियाई, असीरियन और रोमन अभिलेखों तक पहुंच थी जो अब नष्ट हो गए हैं और वह इस बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है कि बाढ़ के बाद परिवार कहाँ बस गए थे।

प्राचीन पारिवारिक नामों और उन स्थानों की पहचान करने के द्वारा जिनमें वे बसे थे, हम अंत के दिनों की भविष्यवाणियों की एक स्पष्ट तस्वीर प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि पवित्रशास्त्र अक्सर उन पारिवारिक नामों का उपयोग करता है जिन्हें ग्रीसियन युग के दौरान बदल दिया गया था। उदाहरण के लिए, मागोगाइट्स यूनानियों द्वारा सीथियन के रूप में जाने जाते थे जो काला सागर के उत्तरी किनारे पर रहते थे।

पूर्वी तुर्की में बसे "तोगर्मा के घराने" और "गोमेर" के वंशज मध्य तुर्की में गलातिया के क्षेत्र में बस गए, जैसा कि हम जानते हैं। समय के साथ-साथ परिवार और कबीले पलायन कर गए या उन्हें अपनी मातृभूमि से भगा दिया गया। गोमेराइट काला सागर के पूर्वी हिस्से में फैले हुए थे जिसे हम काकेशस क्षेत्र के रूप में जानते हैं ।

यावन और उनके वंशज ग्रीस में बस गए और भूमध्यसागरीय और काला सागर के तट के आसपास कई उपनिवेश स्थापित किए। यूनानियों ने तुर्की के पश्चिमी छोर पर शहरों पर भी कब्जा कर लिया, जैसा कि हम जानते हैं, हालांकि इसे पहले एशिया के नाम से जाना जाता था। यूनानी लोग समुद्र में यात्रा करने वाले लोग थे, व्यापारी थे, और बहुत से भाड़े के सैनिक थे जो फारस और मिस्र के राजाओं की सेवा करते थे। फिरौन-होफरा (588 - 569 ईसा पूर्व) की सेना में 30,000 यूनानी सैनिक थे। बेबीलोन के कई देवताओं को यूनानियों और मिस्रियों ने अपनाया जिन्होंने अपना नाम बदल लिया। फोनीशियन भूमध्यसागर के पूर्वी तट के साथ सूर और सिडोन में रहते थे और जहाज बनाने वाले के रूप में प्रसिद्ध थे; वे दूर ब्रिटेन से व्यापार करते थे जो तर्शीश के वंशजों द्वारा बसाया गया था (यहेजकेल अध्याय 27)।

कुछ राष्ट्रों का अस्तित्व समाप्त हो गया है। पलिश्तियों, मोआबियों, अम्मोनियों और एदोमी लोगों को नष्ट कर दिया गया या तितर-बितर कर दिया गया और अन्य राष्ट्रों में समाहित कर लिया गया।कुछ लोगों ने अपनी राष्ट्रीय पहचान खो दी क्योंकि 7वीं शताब्दी में इस्लाम का प्रसार हुआ।

अंतिम दिनों में ब्रिटेन और अमेरिका का पता लगाना

अक्सर लोग पूछते हैं कि ब्रिटेन और अमेरिका अंतिम दिनों में कहाँ हैं। प्राचीन काल में तर्शीश की पहचान करके इस प्रश्न का उत्तर दिया जा सकता है।

ब्रिटेन के दक्षिण-पश्चिम सिरे पर कॉर्नवाल में व्यापक टिन खदानों के कारण प्राचीन काल में ब्रिटेन को "टिन द्वीप" या " कैसिटराइड्स " के रूप में जाना जाता था। अन्य खनिजों का खनन पास के वेल्स में किया गया था।

ट्रॉय शहर से जुड़े कई मिथक हैं और एक यह है कि एक समय में 30 से अधिक नावों में ट्रोजन अपने हमलावरों से बच निकले और भूमध्यसागरीय तट रेखा के आसपास रवाना हुए और अंततः ब्रिटेन में पहुँच गए।

पवित्रशास्त्र प्राचीन समय में " तर्शीश के जहाजों " और *"तर्शीश के व्यापारियों "* के बारे में बहुत कुछ कहता है और इंगित करता है कि तर्शीश के जहाज मसीह के आगमन से पहले महाक्लेश में पीड़ित होंगे (यशा.2:16)। बाइबल अंत के दिनों में " तर्शीश के व्यापारी और उसके जवान सिंह" (यहेज.38:13) को " शेबा और ददान " (अरब) के साथ जोड़ती है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि यावन ग्रीस में बस गए और यूनानी भूमध्य सागर के चारों ओर फैल गये। हेरोडोटस जिसे "प्राचीन इतिहास के पिता" के रूप में जाना जाता था और उसने लगभग 450ईसा पूर्व लिखा था, उसने तर्शीश को जिब्राल्टर जलडमरूमध्य के दोनों ओर हरक्यूलिस के स्तंभों से परे रखा था।

यहेजकेल कहता है कि तर्शीश के जहाज सोर के बाजारों में सभी प्रकार की धातुएँ लाते थे :

"अपनी सब प्रकार की सम्पत्ति की बहुतायत के कारण तर्शीशी लोग तेरे व्यापारी थे; उन्होंने चान्दी, लोहा, राँगा और सीसा देकर तेरा माल मोल लिया" (यहेजकेल 27:12)।

कई बाइबल मानचित्र स्पेन को तर्शीश के स्थान के रूप में दिखाते हैं लेकिन स्पेन *"अन्यजातियों का द्वीप "* नहीं है और कभी भी व्यापक टिन निक्षेप नहीं था। स्पेन में तांबा था और ब्रिटेन के *"टिन ट्रेल"* ने उन्हें कांस्य बनाने के लिए ब्रिटेन के टिन को ताँबे के साथ मिलाने में सक्षम बनाया।

टार्टेसस का पौराणिक शहर कभी नहीं पाया गया और स्पेन में खनन शहर जिसे थार्सिस कहा जाता है, 19 वीं शताब्दी से पहले अस्तित्व में नहीं था जब एक ब्रिटिश खनन कंपनी ने वहाँ खुदानों का संचालन शुरू किया था।थार्सिस एक स्पेनिश शब्द नहीं है और यह अधिक संभावना है कि ब्रिटिश खनन कंपनी ने इस शहर का नाम ब्रिटेन के नाम पर रखा। इस विषय की पूर्ण जानकारी हेराल्ड ऑफ़ हॉप पर पाया जा सकता है

वेबसाइट: www.heraldofhope.org.au/resources/articles

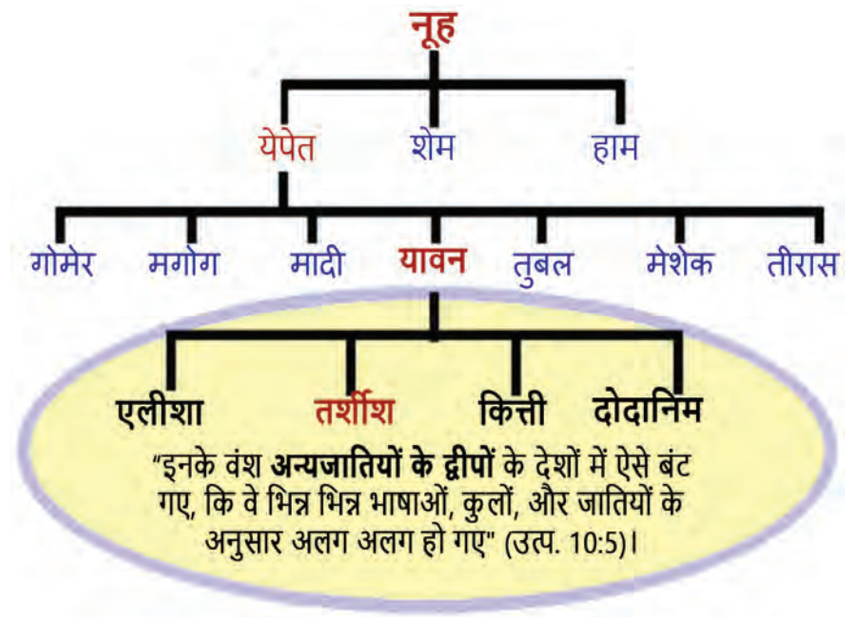

परमेश्वर की वाचा के लोग – इस्राएल

परमेश्वर एक वाचा-पालन करने वाला परमेश्वर है और अपने वचन को अटल बनाने के लिए अपरिवर्तनीय वादों से खुद को बाँधता है। पवित्रशास्त्र में दर्ज छह वाचाएं इस प्रकार हैं:

1) नूह की वाचा पवित्रशास्त्र की इन वाचाओं में से पहली है । इसे बाढ़ के तुरंत बाद मानव जाति के साथ बांधी गई थी। परमेश्वर ने सारी मानवजाति के साथ एक "सनातन वाचा" बाँधी कि वह फिर कभी भी एक वैश्विक बाढ़ से दुनिया को नष्ट नहीं करेगा। मेघधनुष हमें उसके वादे की याद दिलाने के लिए एक प्रतीक के रूप में दिया गया था।

2) अब्राहम की वाचा तब बनाई गई जब परमेश्वर ने अब्राम को कसदियों के ऊर से बुलाया और यह हमेशा के लिए उसके वंश तक बढ़ता गया। अब्राहम के वाचा के तहत, कनान की भूमि फरात से मिस्र की नदी तक, अब्राहम और उसके वंश के लिए एक चिरस्थायी अधिकार के रूप में दी गई थी।

अब्राहम की वाचा एक बिना शर्त वाचा थी, अर्थात यह अब्राहम या उसके वंश द्वारा पूरी की गई शर्तों पर निर्भर नहीं थी। इस आधार पर भूमि परमेश्वर की है, जिस ने इस्राएल को उस पर कब्ज़ा करने का अधिकार दिया है।

परमेश्वर ने अब्राम से कहा: "जितनी भूमि तुझे दिखाई देती है, उस सब को मैं तुझे और तेरे वंश को युग युग के लिए दूँगा" (उत्पत्ति 13:15)। इस वाचा के तहत एक विशेष संबंध स्थापित किया गया है: परमेश्वर उन लोगों को आशीष देगा जो अब्राहम और उसके वंश को आशीष देते हैं, और जो अब्राहम और उसके वंश को शाप देते हैं उन्हें शाप देते हैं।

3) मिस्र से बच निकलने के लिए लाल सागर से गुजरने के कुछ ही समय बाद इस्राएल राष्ट्र के साथ सीनै वाचा बांधी गई थी। यह एक सशर्त वाचा थी और परमेश्वर ने आशीष देने की प्रतिज्ञा की थी यदि वे प्रभु की वाणी का पालन करते थे (निर्गमन 24:1-8) । याजकीय सेवा, बलि, पर्व और बहुत से नियम निर्धारित किए गए थे । पीनहास के साथ याजकीय वाचा इस वाचा का विस्तार है (गिनती 25:12-13) ।

4) फिलीस्तीनी वाचा, इस्राएल द्वारा वादा किए गए देश में प्रवेश करने से ठीक पहले स्थापित की गई थी (व्यवस्था 28 से 30) । यह एक सशर्त वाचा है और उन शर्तों को निर्धारित करती है जिनके तहत इस्राएल अब्राहम की वाचा के तहत उन्हें दी गई भूमि का आनंद ले सकता है। यह तीन बातें बताता है:

i) यदि इस्राएल यहोवा की आज्ञा माने, तो वे देश में आशीष पाएंगे; उनके शत्रु उनके सामने से भाग जायेंगे; भूमि फलदायी होगी और वे बढ़ते रहेंगे (व्यवस्था 28:1-13) ।

ii) यदि इस्राएल यहोवा से दूर हो जाता है, तो परमेश्वर व्यवस्था के सब शापों को उन पर ला देता, और वे देश में से तितर-बितर हो जाएंगे । बेबीलोनियों और रोमियों द्वारा दो प्रस्थान भविष्यसूचक रूप से वाचा में निहित हैं (व्यवस्थाविवरण 28:36 और 52)।

iii) यदि इस्राएल के राष्ट्रों में तितर-बितर हो जाने के बाद, लोग यहोवा की ओर फिरे, तो परमेश्वर उन्हें "उन सब जातियों में से, जिन में तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे तित्तर बित्तर करेगा" वहाँ से इकट्ठा करेगा (व्यवस्थाविवरण 30:3)। इस्राएल को देश में लौटा दिया जाएगा और उसके शत्रुओं पर शाप आ जाएगा।

5) दाऊद की वाचा दाऊद के साथ तब बाँधी गई जब उसे इस्राएल के राजा का अभिषेक इस प्रतिज्ञा के साथ किया गया था कि उसके सिंहासन पर बैठने के लिए किसी व्यक्ति की कभी कमी नहीं होगी। यद्यपि सिदकिय्याह (यहेज. 21:25-27) के साथ सिंहासन समाप्त हो गया, दाऊद की वंशावली को मसीह के आने तक संरक्षित रखा गया था (मत्ती अध्याय 1 और लूका अध्याय 3) और दूसरे आगमन पर राज्य करने के लिए उसके लिए पुनर्स्थापित किया जाएगा (प्रेरितों के काम 15: 13-18)।

6) जब इस्राएल अंतिम दिनों में यहोवा की ओर फिरेगा, तब मसीह के बलिदान पर आधारित नई वाचा इस्राएल के साथ बान्धी जाएगी। कलीसिया "जैतून के पेड़ की जड़ और उसकी चर्बी" में भाग लेती है (इस्राएल) (रोमियो 11:17)। हम वाचा की आत्मिक आशीषों का आनंद लेते हैं लेकिन इस्राएल भौतिक आशीषों का भी आनंद लेगा।

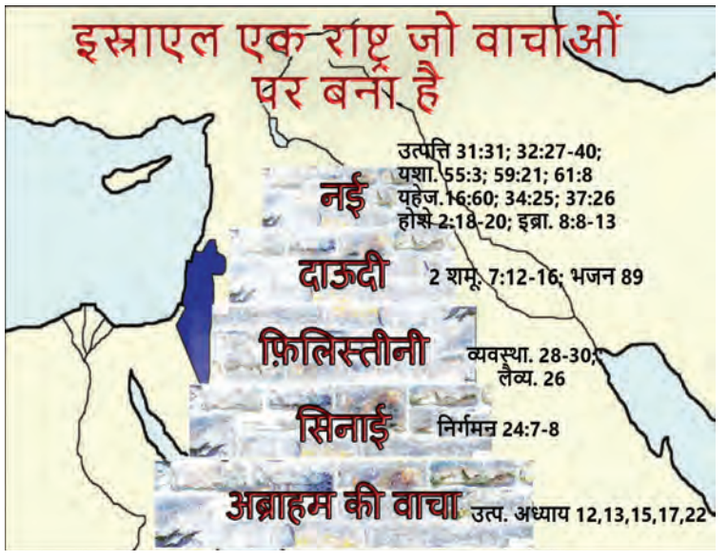

पुरानी वाचा नई वाचा की एक छाया

इतिहास अपने आप को दोहराता है क्योंकि इतिहास में परमेश्वर काम कर रहा है। पुराने नियम में हुई घटनाएँ भविष्य की घटनाओं की छाया हैं। यह पुराने नियम के स्वरूप में स्पष्ट रूप से देखा जाता है, जहाँ उदाहरण के लिए, यूसुफ का जीवन एक 'प्रकार' या भविष्य की घटनाओं की छाया था।यूसुफ के भाइयों ने उससे बैर रखा; उसके पिता ने उससे प्रेम किया; अपके पिता के द्वारा अपनी प्रजा इस्राएल के लिए भेजा गया; विश्वासघात किया गया और उसके भाइयों ने अन्यजातियों को बेच दिया; कालकोठरी से उठकर सिंहासन पर बैठाया गया; अन्यजातियों से सात वर्ष तक बड़ी फसल इकट्ठी की, इस दौरान उसने एक अन्यजाति की दुल्हिन से विवाह किया। विश्वव्यापी कमी के दूसरे वर्ष में, उन्हें अपने भाइयों के साथ संगति में बहाल किया गया और उसने अपने भाइयों को कमी के बीच संरक्षित किया।

यूसुफ के पूरे जीवन ने प्रभु यीशु और उसके अपने लोगों इस्राएल के साथ उसके रिश्ते का पूर्वाभास दिया: यीशु को पिता द्वारा भेजा गया था, उसके भाइयों ने अस्वीकार कर दिया था; चाँदी के 30 टुकड़ों के लिए बेचा गया; दफनाया गया और सिंहासन पर बैठने के लिए उठाया गया जहाँ वह अब एक फसल इकट्ठा कर रहा है जो कि उसकी गैर-यहूदी दुल्हन है, कलीसिया, जिसे एशिया के सात कलीसियाओं में भविष्यवाणी के रूप में देखा जाता है। वैश्विक महाक्लेश के सात वर्षों में, मसीह को अपने भाइयों के साथ पुनर्स्थापित किया जाएगा और सहस्राब्दी राज्य में उन पर शासन करेगा। इब्रानियों की पुस्तक के अध्याय 10 और पद 1 में हम पढ़ते हैं:

"क्योंकि व्यवस्था जिसमें आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिए उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आनेवालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकती।"

इसी तरह, इस्राएल का इतिहास दोहराया गया है और दोहराया जाएगा। उन्होंने फसह के मेम्ने को घात किया; मूसा द्वारा लाल समुद्र में उनको बपतिस्मा दिया (दफनाया गया) (1 कुर.10:2); परमेश्वर के साथ वाचा का सम्बन्ध बना, जो 49 दिनों के बाद सीनै पर आग के साथ उतरा; अगले 40 वर्षों में यहोशू के नेतृत्व में बड़े संघर्ष की अवधि तक अवज्ञा में भटकते रहे, जिसके बाद उन्होंने यहोवा और राजा दाऊद की सेवा की, जबकि अन्यजातियों ने दाऊद के सिंहासन के सामने दंडवत की। यह इस्राएल की छाया है जिस ने मसीह अर्थात् फसह के मेम्ने को मार डाला; वह दफनाया गया और फिर से जी उठा और पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा को आग के जीभ की तरह भेजा ।अवज्ञाकारी इस्राएल (भजन 78) 2,000 वर्षों से भटक रहा है। कलीसिया के उठा लिए जाने के बाद, इस्राएल को मसीहा के लिए पुनर्स्थापित किया जाएगा और महाक्लेश में संरक्षित रखा जाएगा (जकर्याह.12:6; प्रकाशित. 12)। मसीह वापस आएगा और अन्यजाति दाऊद के सिंहासन के सामने दंडवत करेंगे (लूका 1:32-33)।

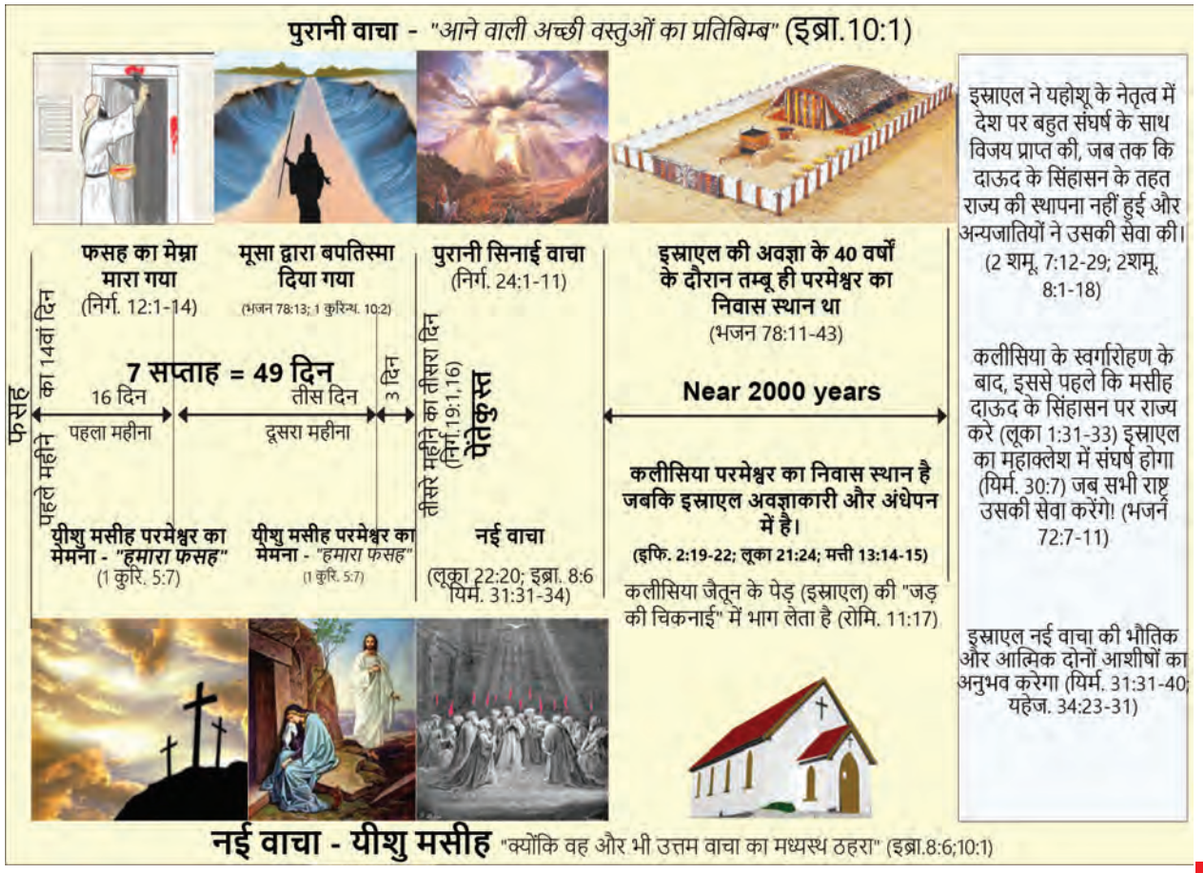

कुलपिताओं का कालक्रम

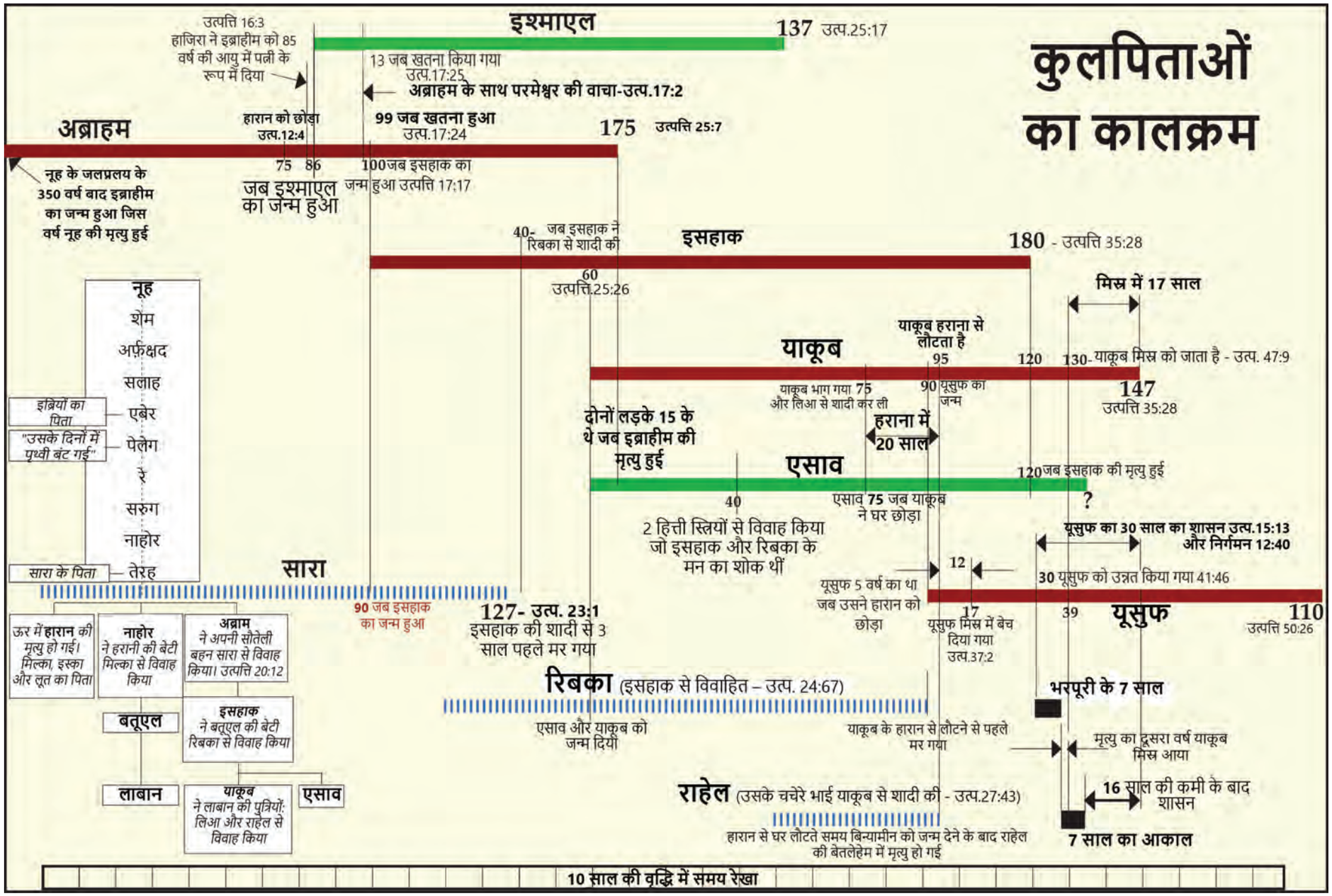

इस्राएल - यहोवा के याजक

अब्राहम की वाचा के तहत, अब्राहम के वंश को वह माध्यम होना था जिसके द्वारा परमेश्वर सभी राष्ट्रों को आशीष देगा। व्यवस्था के युग में इस्राएल एक याजकीय जाति बन गया जिसके पास सदा के लिए हारून का याजकपद था। वहां कोई अन्यजाति भविष्यद्वक्ता या याजक नहीं हैं (रोमियों 3:1-2)। परिवर्तित अन्यजाति इस्राएल में *"अजनबी"* बन गए (2 इतिहास 2:17)।

महायाजक पद पीनहास के पुत्रों के हाथ में गया। यह एली के दिनों में ईतामार के वंशजों द्वारा कब्जा कर लिया गया था, लेकिन दाऊद द्वारा इसे वापस बहाल किया गया जब उसने सादोक को महायाजक नियुक्त किया।

सहस्त्राब्दी में सादोक के वंशज मन्दिर के याजक होंगे; सारी जाति *"यहोवा के याजक कहलाएगी"* और *"लोग तुम्हें हमारे परमेश्वर के सेवक कहेंगे"* (यशायाह 61:6)। यशायाह 66:19; यशायाह 2:1-4 को भी देखें।

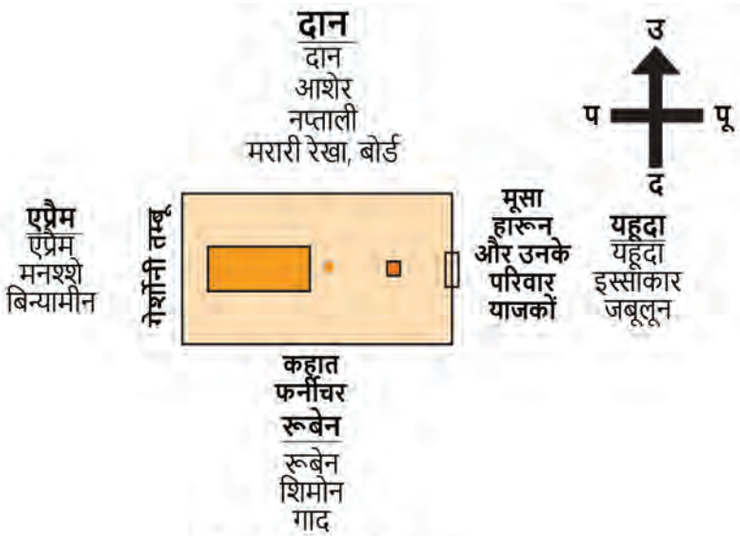

शिविर का क्रम

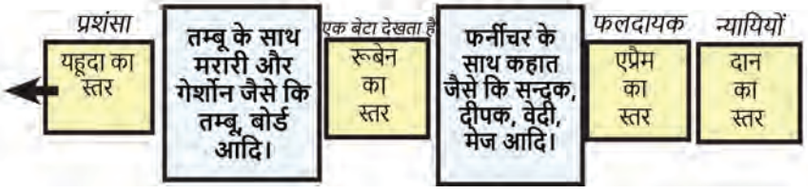

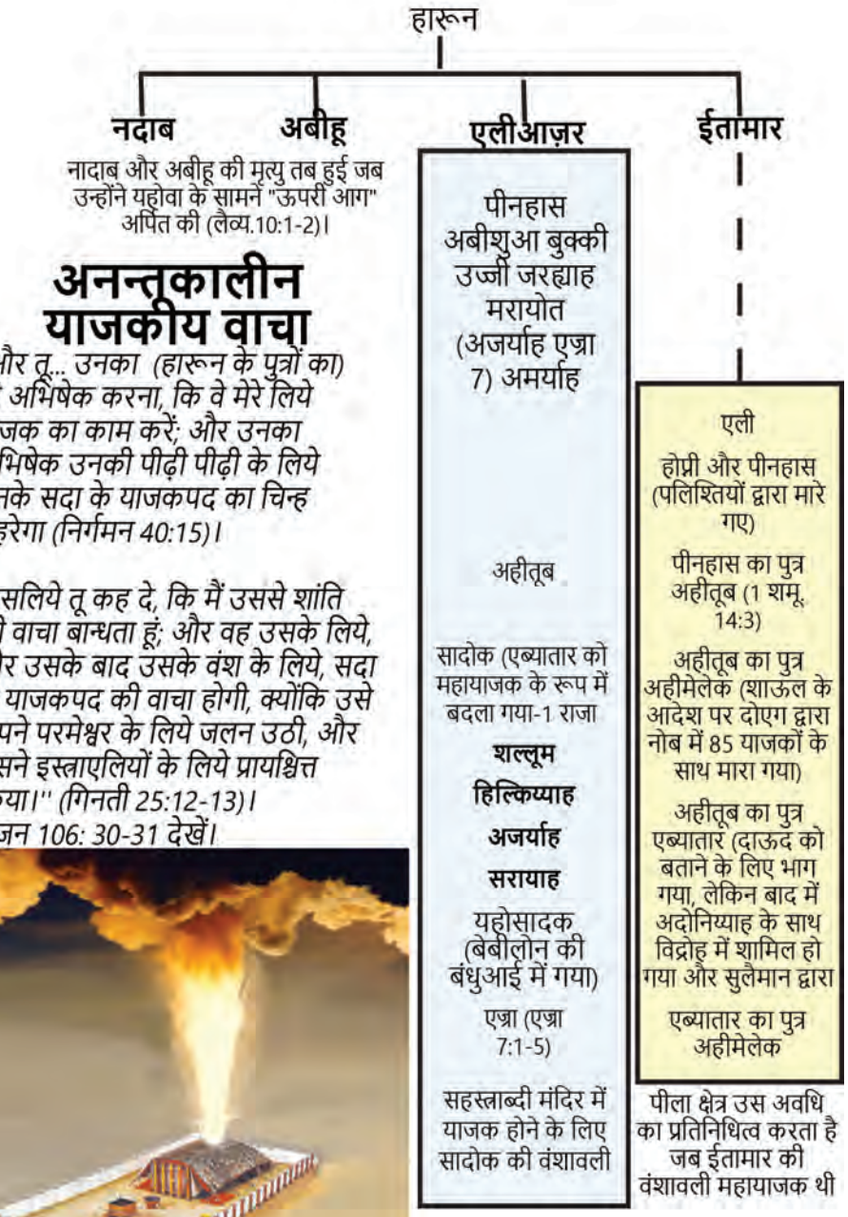

अनन्तकालीन याजकीय वाचा

"और तू... उनका (हारून के पुत्रों का) भी अभिषेक करना, कि वे मेरे लिये याजक का काम करें; और उनका अभिषेक उनकी पीढ़ी पीढ़ी के लिये उनके सदा के याजकपद का चिन्ह ठहरेगा (निर्गमन 40:15)।

"इसलिये तू कह दे, कि मैं उससे शांति की वाचा बान्धता हूं; और वह उसके लिये, और उसके बाद उसके वंश के लिये, सदा के याजकपद की वाचा होगी, क्योंकि उसे अपने परमेश्वर के लिये जलन उठी, और उसने इस्राएलियों के लिये प्रायश्चित्त किया।" (गिनती 25:12-13)।

भजन 106: 30-31 देखें।

कनान देश पर विजय

कनान की विजय आसान नहीं थी। यरदन नदी पार करने के बाद इस्राएल ने यरीहो में एक बड़ी जीत का दावा किया, लेकिन फिर ऐ में असफल रहे जब आकान ने यरीहो की लूट में से शापित चीजों को ले लिया। इस्राएल को यह सीखना था कि पाप परमेश्वर की आशीष में बाधक है।

तब धूर्त गिबोनियों ने इस्राएल से वाचा बान्धी, और जब एमोरियों के पाँचो राजाओं ने गिबोनियों पर चढ़ाई की, तब इस्राएल उनकी रक्षा करने को विवश हुआ। इसने एक सफल दक्षिणी अभियान का नेतृत्व किया जिसमें उन्होंने अनाक के पुत्रों, दानवों को हराया। जब परमेश्वर इस्राएल के लिए लड़ रहा था तब सूर्य लगभग पूरे दिन अपने स्थान पर स्थिर रहा।

जब हासोर के राजा याबीन ने, गलील के उत्तर में, इस्राएल से लड़ने के लिए एक विशाल सेना तैयार की, तब यहोशू ने उन्हें मेरोम के जल पर उन पर एकदम धावा किया और उनका पीछा हेर्मोन पर्वत तक किया; इसने एक सफल उत्तरी अभियान का नेतृत्व किया ।

कुल मिलाकर, देश की विजय में यहोशू द्वारा 31 राजा मारे गए थे, हालांकि, जब वह मर गया, तो अभी भी बहुत सी भूमि थी जिस पर कब्ज़ा करना था और दक्षिणी तट के साथ पलिश्तियों के पाँच शासक उनके लिए एक निरंतर समस्या थे।

लेबनान के उत्तरी तट के साथ फोनीशियन भी बने रहे। फिर भी, यहोशू को सभी गोत्रों को भूमि आवंटित करने का आदेश दिया गया था।

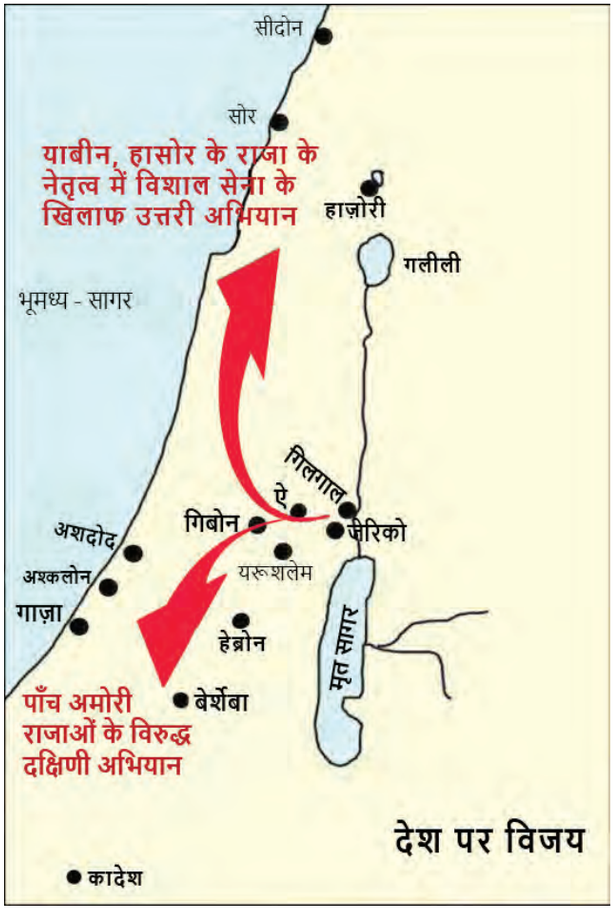

और उन्हें नियत समय में अपने हिस्से पर कब्जा करना था। हम पढ़ते हैं: *"और यहोशू के जीवन भर, और जो वृद्ध लोग यहोशू के मरने के बाद जीवित रहे और जानते थे कि यहोवा ने इस्राएल के लिये कैसे कैसे काम किए थे, उनके भी जीवन भर इस्राएली यहोवा ही की सेवा करते रहे।"* (यहोशू 24:31), परन्तु इन लोगों के मरने के बाद राष्ट्र एक लंबी अवधि में प्रवेश कर गया जब न्यायियों ने शासन किया। प्रत्येक न्यायियों की मृत्यु के बाद राष्ट्र मूर्तिपूजा में डूबता गया और परमेश्वर ने अन्यजातियों को उन पर अत्याचार करने की अनुमति दी जब तक कि इस्राएल ने यहोवा की दोहाई नहीं दी और तब एक अन्य न्यायी उन्हें छुड़ाने के लिए खड़ा हुआ।

बाद में शमूएल के दिनों में जब दाऊद को राजा के रूप में अभिषेक किया गया उसके समय में अंततः सारा देश उनके कब्जे में आया।

देश में प्रवेश करने में 40 साल की देरी हो चुकी थी जब कनान में 40 दिनों के बाद 12 जासूस लौटे और हालांकि उन्होंने देश के बारे में एक सकारात्मक रिपोर्ट दी, लेकिन 12 में से 10 ने परमेश्वर पर विश्वास करने से इनकार कर दिया, और इसलिए इस्राएल अविश्वास के कारण जंगल में 40 साल तक भटकता रहा .

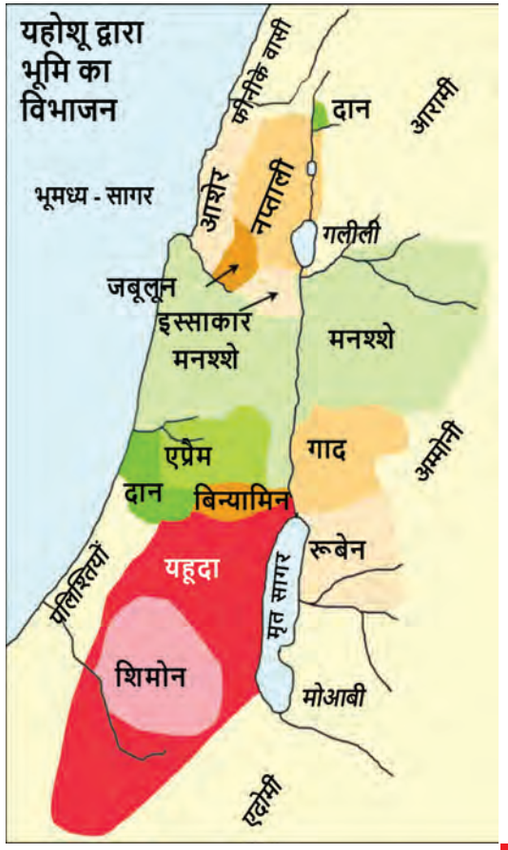

निर्गमन से सुलैमान तक
(न्यायियों की समयावधि)

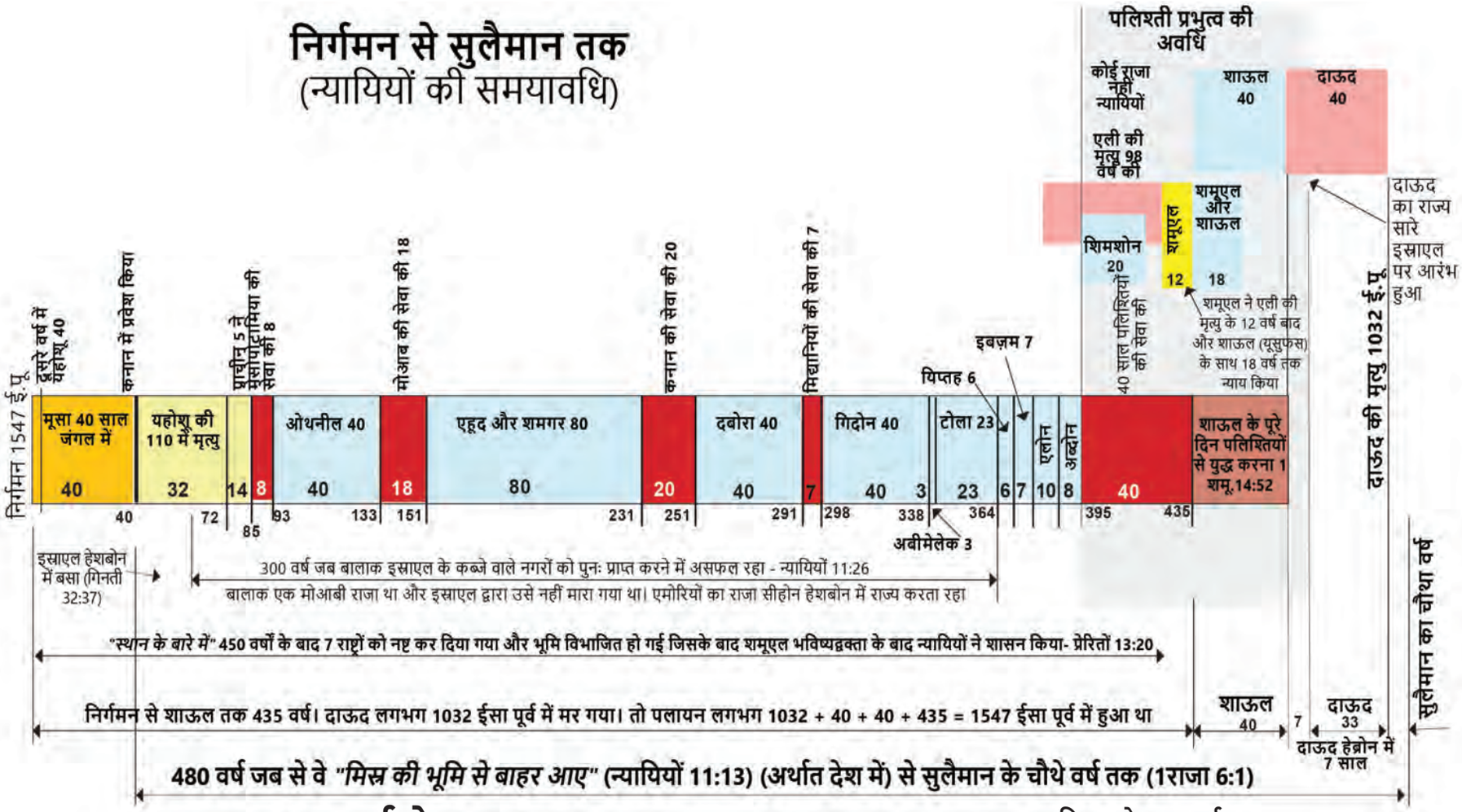

महत्वपूर्ण लेख:

इस अवधि के लिए कुछ समग्र तिथियों को ठीक-ठीक निश्चित करना कठिन है। प्रत्येक न्यायाधीश या राजा का शासन सम्मिलित रूप से दिया गया है। इसी प्रकार यहूदियों ने उन्हें व्यक्त किया है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक न्यायी या राजा ने वास्तविक समय में लगभग दो वर्ष कम तक राज्य किया हो सकता है। हमने वर्षों को ऐसे दिया है जैसे राज्य पूरे वर्ष के थे। स्पष्ट रूप से शिमशोन, एली और शमूएल के दिनों में अति व्याप्ति हुई जब पलिश्तियों का प्रभुत्व था। जहां कोई विशिष्ट समय अवधि नहीं दी गई है, उदाहरण के रूप में, जब बालाक की मृत्यु हुई, तो एक उचित अनुमान लगाया गया है।

यिप्तह के 300 वर्ष

10+14+8+40+18+80+20+40+7+40+23 = 300 साल

सुलैमान के 480 वर्ष

32+14+8+40+18+80 +20+40+7+40+3+23+6+7+10+8+40+40+40+4 = 480 वर्ष

पौलुस के लगभग 450 साल

40+32+14+8+40+18+80+20+40+7+40+3+23+6+7+10+8+40 = 436 साल

या " 450 साल का अंतराल"

सन्दूक और तम्बू का इतिहास

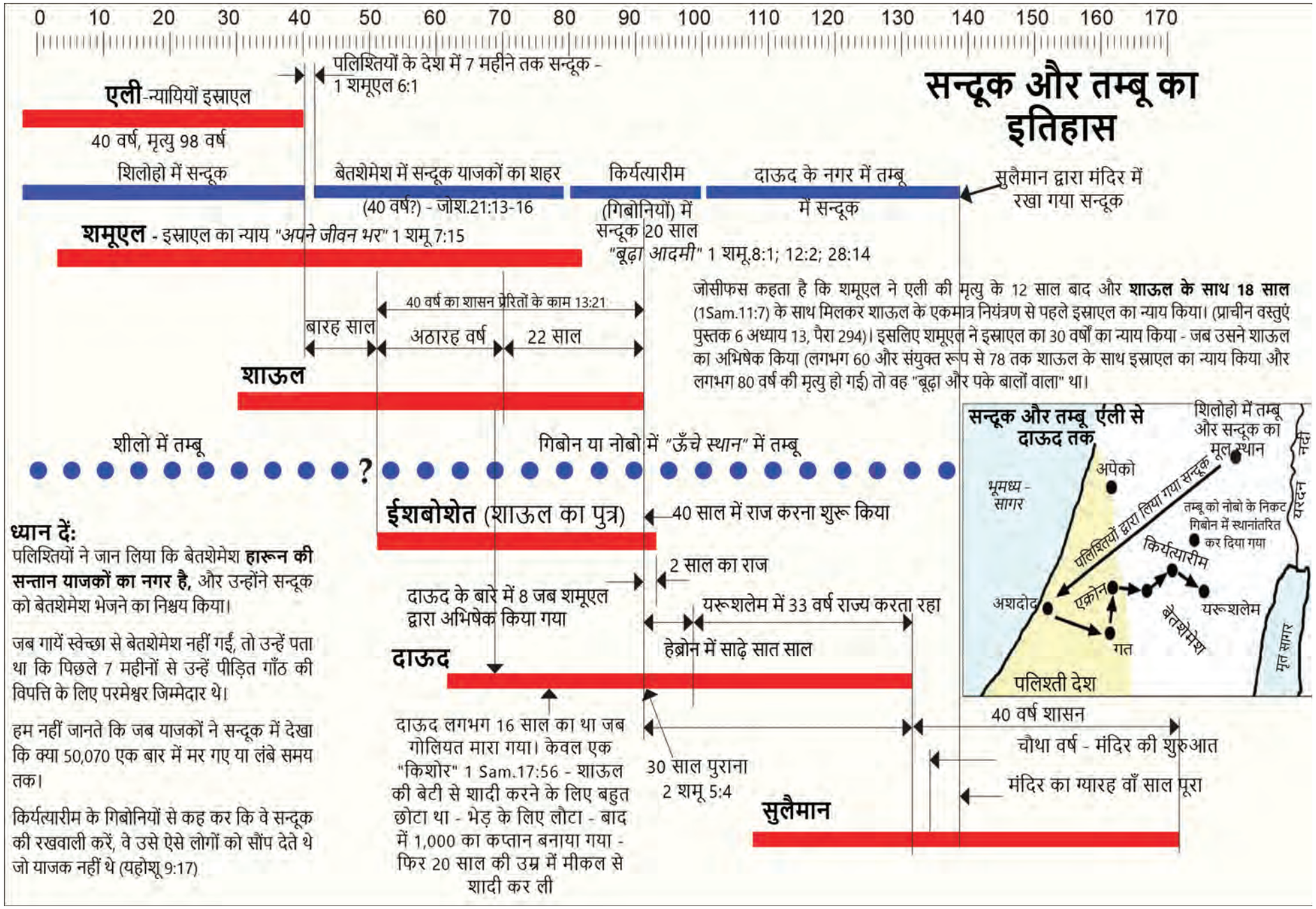

जोसीफस कहता है कि शमूएल ने एली की मृत्यु के 12 साल बाद और **शाऊल के साथ 18 साल** (1Sam.11:7) के साथ मिलकर शाऊल के एकमात्र नियंत्रण से पहले इस्राएल का न्याय किया। (प्राचीन वस्तुएं पुस्तक 6 अध्याय 13, पैरा 294)। इसलिए शमूएल ने इस्राएल का 30 वर्षों का न्याय किया - जब उसने शाऊल का अभिषेक किया (लगभग 60 और संयुक्त रूप से 78 तक शाऊल के साथ इस्राएल का न्याय किया और लगभग 80 वर्ष की मृत्यु हो गई) तो वह "बूढ़ा और पके बालों वाला" था।

ध्यान दें:

पलिश्तियों ने जान लिया कि बेतशेमेश **हारून की सन्तान याजकों का नगर है,** और उन्होंने सन्दूक को बेतशेमेश भेजने का निश्चय किया।

जब गायें स्वेच्छा से बेतशेमेश नहीं गईं, तो उन्हें पता था कि पिछले 7 महीनों से उन्हें पीड़ित गाँठ की विपत्ति के लिए परमेश्वर जिम्मेदार थे।

हम नहीं जानते कि जब याजकों ने सन्दूक में देखा कि क्या 50,070 एक बार में मर गए या लंबे समय तक।

किर्यत्यारीम के गिबोनियों से कह कर कि वे सन्दूक की रखवाली करें, वे उसे ऐसे लोगों को सौंप देते थे जो याजक नहीं थे (यहोशू 9:17)

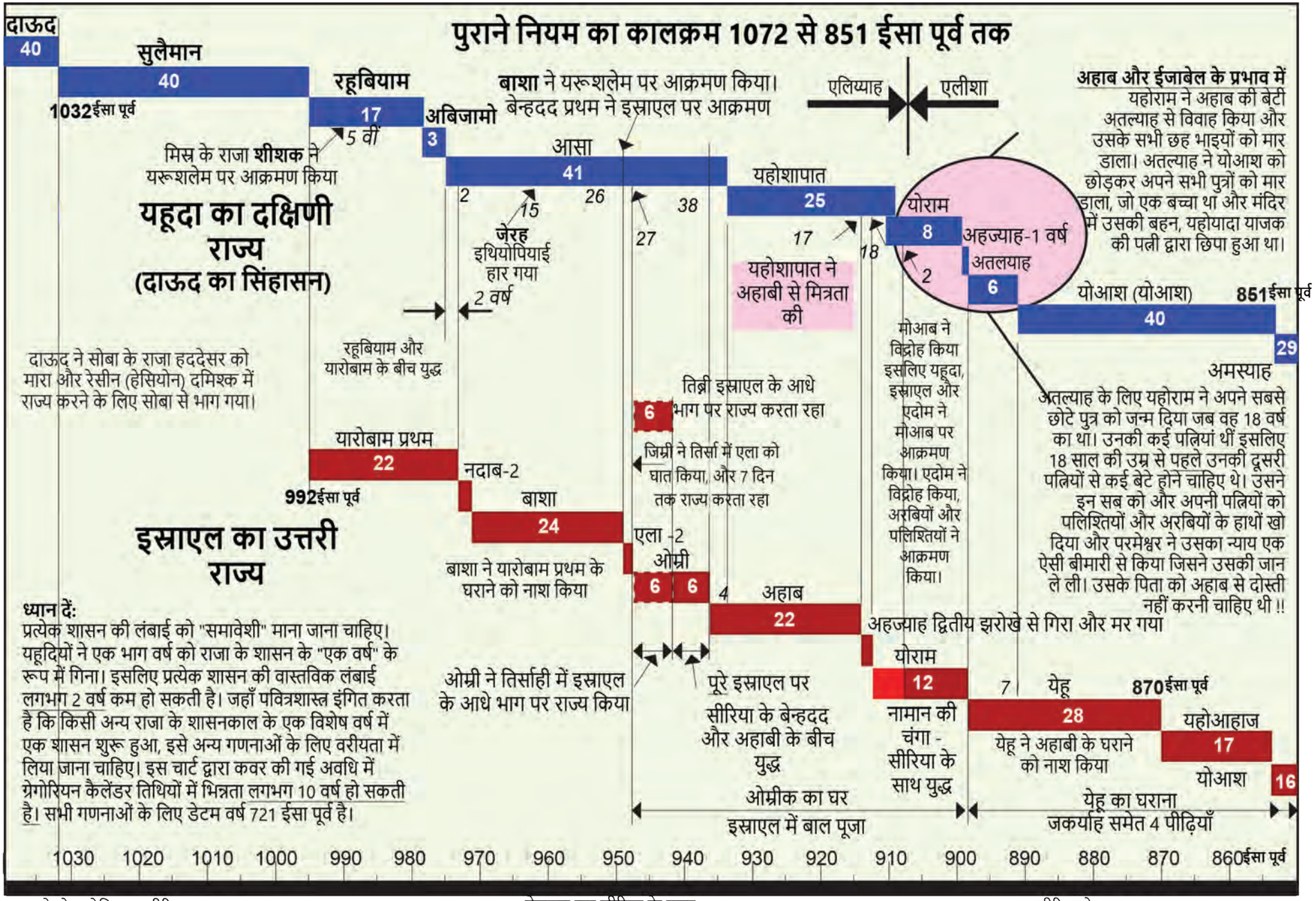

रेज़ोन (हेज़ियन) सीरिया का राजा

बेन्हदद एल सीरिया के राजा

सीरिया के हजाएल राजा

853 से 643 ईसा पूर्व तक पुराने नियम का कालक्रम

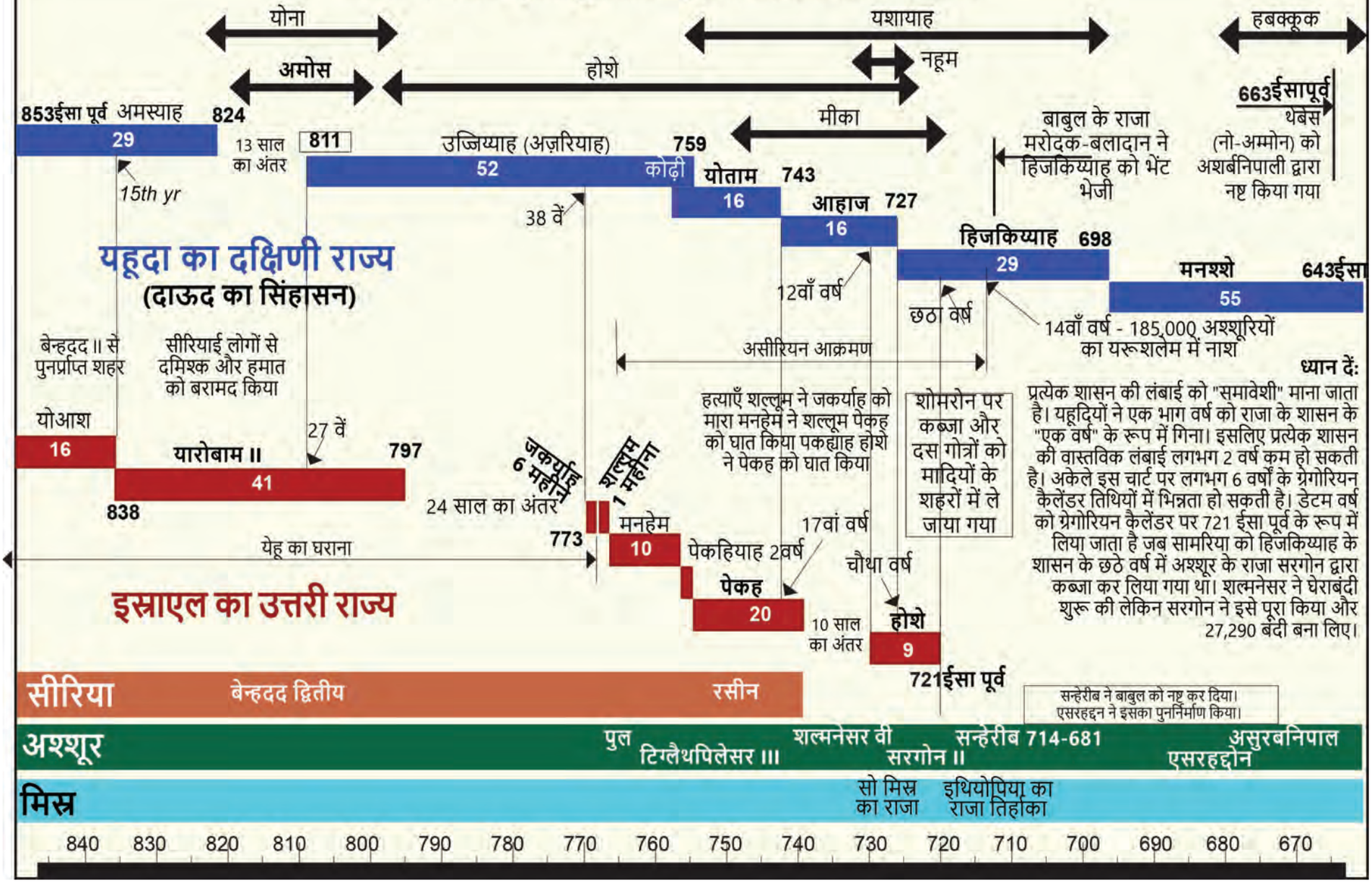

पुराने नियम का कालक्रम 641 से 400 ईसा पूर्व तक

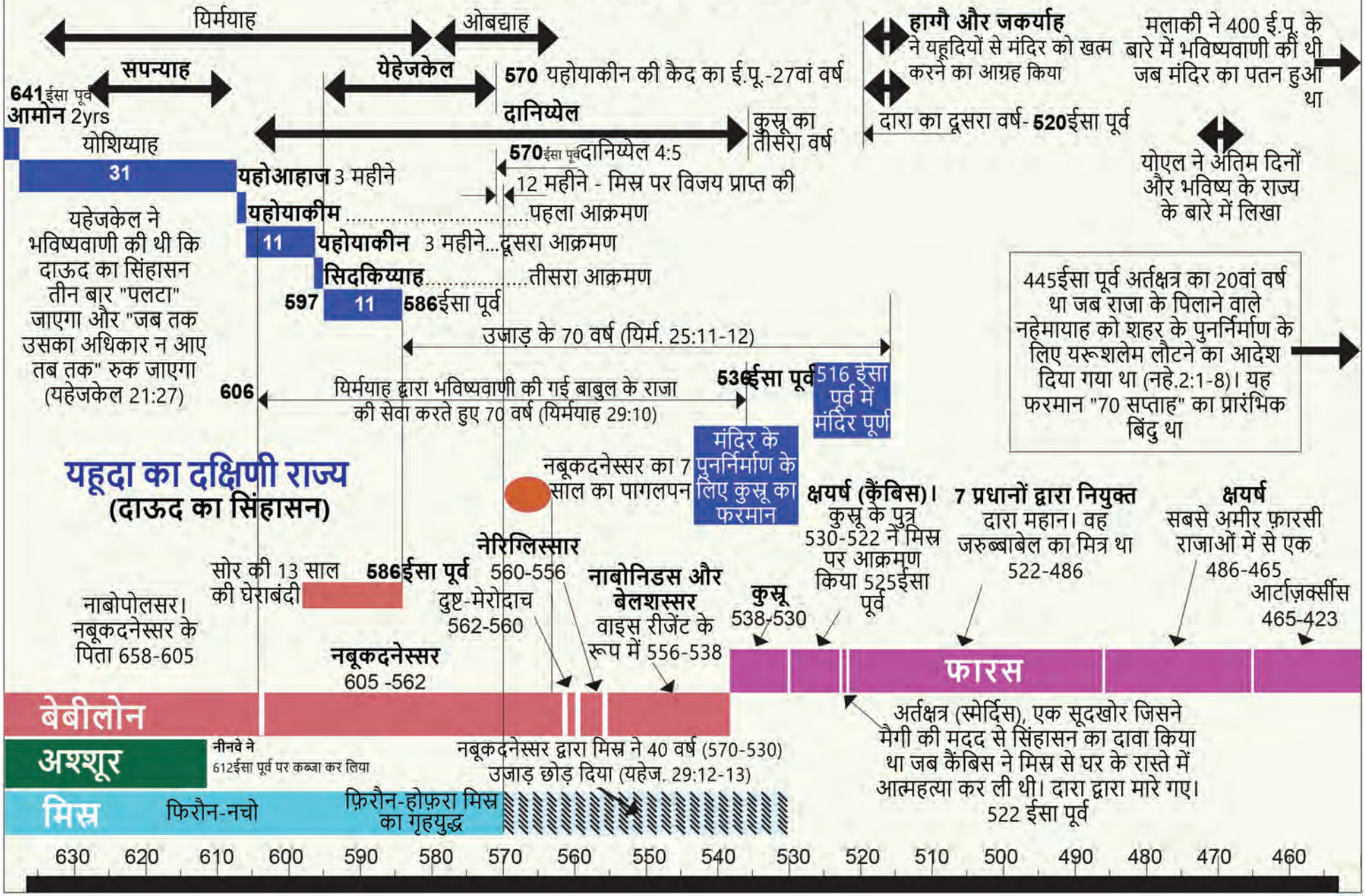

यशायाह की 65 साल की भविष्यवाणी 7:8

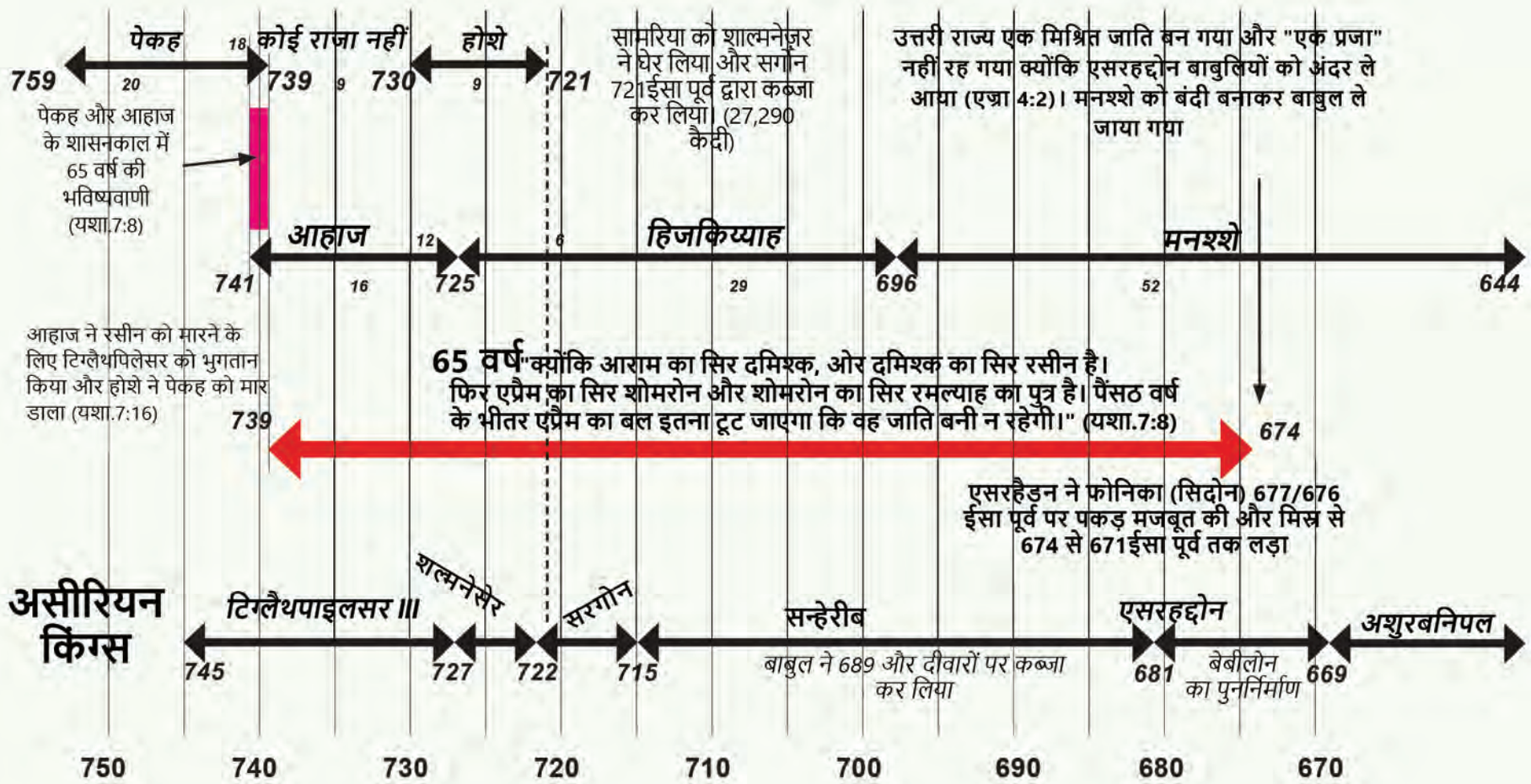

नीनवे का न्याय – 612 ईसा पूर्व

निम्रोद ने, जो हाम के वंश का था, बाबेल का गुम्मट बनाया तो शेम के वंश से अश्शूर ने शिनार के मैदान को छोड़ दिया (उत्प.10:11) और नीनवे का निर्माण आस-पास के शहरों के साथ किया, जो बताता है कि वह निम्रोद की मूर्तिपूजा से नहीं जुड़ना चाहता था और नीनवे के लोग मूल रूप से जीवित परमेश्वर की आराधना करते थे।

लगभग 830 ईसा पूर्व योना ने नीनवे में अश्शूरियों को चेतावनी दी कि परमेश्वर शहर को नष्ट कर देगा लेकिन उन्होंने पश्चाताप किया और बच गए।

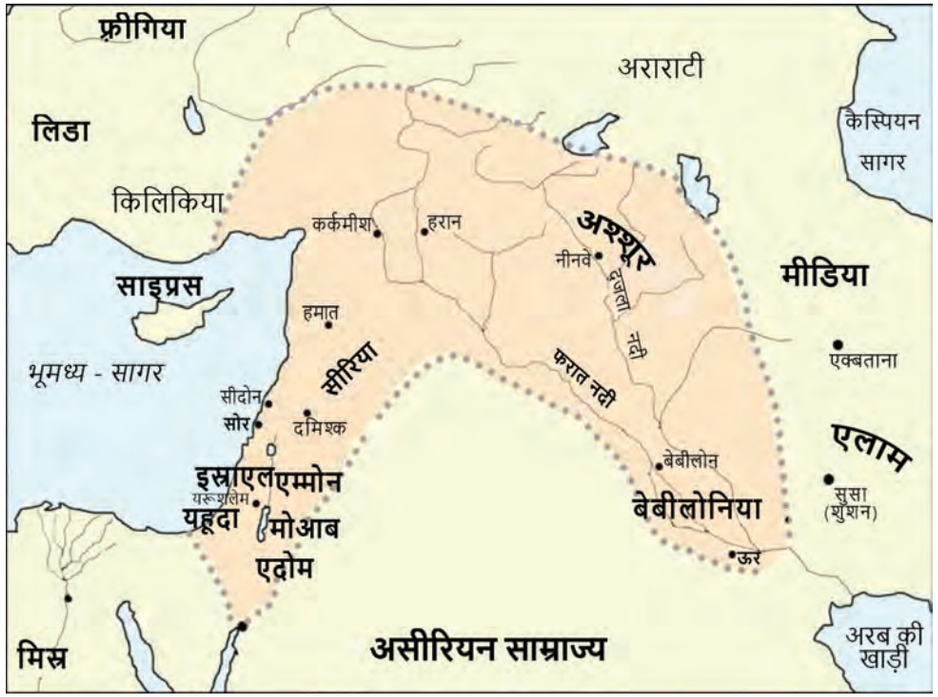

650 ईसा पूर्व और 612ईसा पूर्व के बीच नहूम ने नीनवे के पूर्ण विनाश की भविष्यवाणी की और परमेश्वर ने मादियों और बाबुलियों को उनका न्याय करने के लिए खड़ा किया। अश्शूरियों की क्रूरता और हिंसा, जादू टोना, और सन्हेरीब की निन्दा (नहूम 1:11-13) जब वह यरूशलेम आया, वे न्याय के कारणों के रूप में दिया गया है।

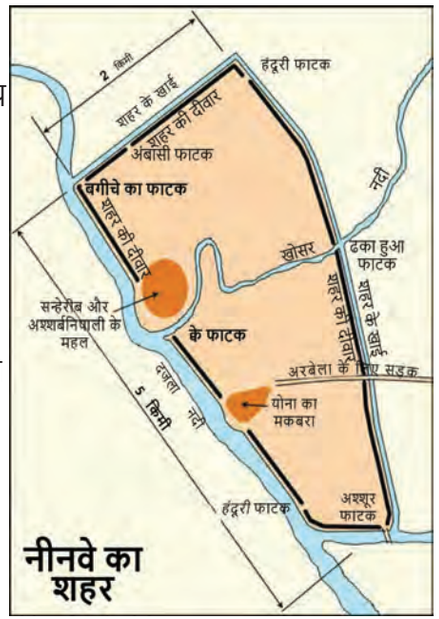

612 ईसा पूर्व में *नीनवे के पतन का वर्णन नबूकदनेस्सर के पिता,* नाबोपोलसर के तीसरे बेबीलोनियन क्रॉनिकल में किया गया है। शहर को घेर लिया गया और भारी बारिश के बाद, नीनवे में बाढ़ आ गई; दजला नदी के किनारे की बीस फ़र्लांग की दीवार ढह गई।

इस समय के राजा अशर्बनिपाल के भाई सिंसरिस्कुन थे। जब दीवार ढह गया तब राजा को एक प्राचीन भविष्यवाणी याद आई कि "नीनवे को तब तक नहीं लिया जा सकता जब तक कि नदी शहर के लिए दुश्मन नहीं बन जाती।" राजा ने अपनी रखेलियों और किन्नरों को महल में इकट्ठा किया, एक बड़ा अंतिम संस्कार ढेर बनाया, और उसे उन पर जला दिया। नहुम ने लिखा, *"महल भंग हो जाएगा"* (नहूम 2:6)। जब महल को जला दिया गया तो अशर्बनिपाल के महान पुस्तकालय को दफन कर दिया गया। इसमें 22,000 मूल्यवान अभिलेख शामिल थे जिनमें से कई में बाइबल की बाढ़ और इतिहास के एंटेडिलुवियन काल को दर्ज किया गया था। विनाश इतना पूर्ण था कि 300 साल बाद सिकंदर महान बिना इस एहसास के ही उस पर से गुजर गया कि नीनवे उसके पैरों तले था। परमेश्वर ने कहा था कि नीनवे *"हँसी का कारण"* बन जाएगा (नहूम 3:6); यह आज पुरातत्वविदों के लिए है।

रानी के बारे में कोई उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन नहूम कहता है कि *"हज्जाब को बंदी बना लिया जाएगा ... उसकी दासियां उससे ले ली जाएंगी ... नीनवे पानी के एक पूल की तरह पुराना है: फिर भी वे भाग जाएंगे। खड़े रहो, खड़े रहो, क्या वे रोएंगे; परन्तु कोई पीछे मुड़कर न देखेगा "* (नहूम 2:6-8)।

अश्शूर के राजाओं ने सिंहों के शिकार के खेल के लिए सिंहों को पाला और नहूम ने लिखा: *"तलवार जवान सिंहों को खा जाएगी"* (नहूम 2:13)।

सोर का न्याय – 586 ईसा पूर्व और 332 ईसा पूर्व

*"यहोवा यों कहता है, सोर के तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण मैं उसका दण्ड न छोड़ूँगा; क्योंकि उन्होंने सब लोगों को बंदी बना कर के एदोम के वश में कर दिया और भाई की सी वाचा का स्मरण न किया। इसलिये **मैं सोर की शहरपनाह पर आग लगाऊँगा,** और उस से उसके भवन भी भस्म हो जाएंगे"* (आमोस 1:9-10)।

यशायाह (लगभग 700 ईसा पूर्व) ने सोर को *"राजकीय शहर के रूप में वर्णित किया, जिसके व्यापारी राजकुमार हैं, जिनके तस्कर पृथ्वी के सम्माननीय हैं"* (यशा 23:8) लेकिन उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की कि वह नष्ट हो जाएगा और 70 के लिए व्यापार करने में असमर्थ होगा। *"सोर **सत्तर वर्ष भुला दिया जाएगा ...** सत्तर वर्ष के अंत में सूर वेश्या के रूप में गाएगा"* (यशायाह 23:15)। इस भविष्यवाणी को नबूकदनेस्सर ने पूरा किया, जिसने जोसीफस के अनुसार, अपने शासनकाल के 7वें वर्ष में घेराबंदी शुरू की और 13 साल बाद 586 ईसा पूर्व में तटीय शहर को नष्ट कर दिया; उसी वर्ष जब यरूशलेम में मन्दिर को जला दिया गया था।

सोर की घेराबंदी के दौरान, सोरियाँ अपने सभी खजाने के साथ एक किलोमीटर दूर एक द्वीप पर चले गए, हालाँकि, वे 70 वर्षों तक एक महान व्यापारिक

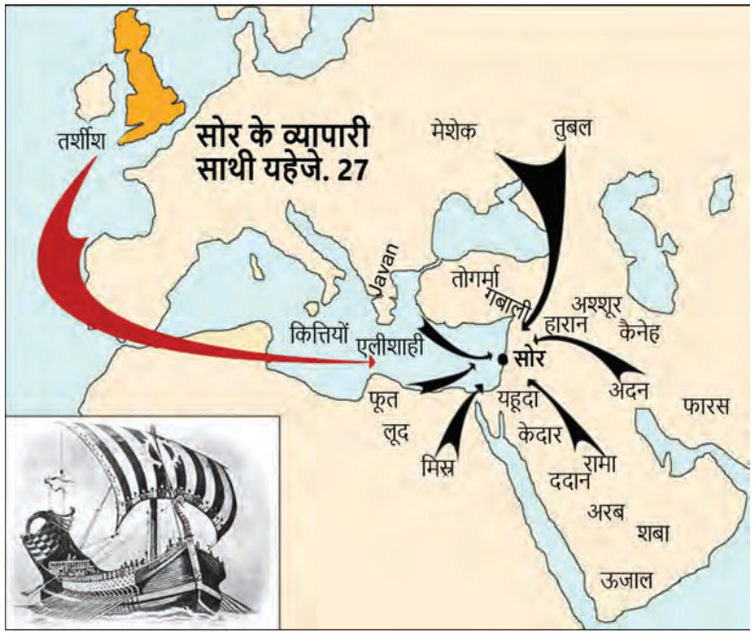

बंदरगाह नहीं रहे, जबकि बाबुल ने शासन किया। जैसा कि यशायाह ने भविष्यवाणी की थी, शहर फारसी युग में पुनर्जीवित हुआ। यहेजकेल ने बाद में लिखा:

"बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने सोर के घेरने में अपनी सेना से बड़ा परिश्रम कराया... तौभी उसको सोर से न तो इस बड़े परिश्रम की मज़दूरी कुछ मिली और न उसकी सेना को। इस कारण परमेश्वर यहोवा यों कहता हे, देख, मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को मिस्र देश दूँगा; और वह उसकी भीड़ को ले जाएगा, और उसकी धन सम्पत्ति को लूटकर अपना कर लेगा; सो यही मजदूरी उसकी सेना को मिलेगी।' (यहेजकेल 29:18-19)

सोर ने फिर से 70 साल के बाद पर्शिया काल में (516 ईसा पूर्व) कार्य शुरू किया, जैसा कि यशायाह द्वारा पूर्वबताया गया था, कि जरुब्बाबेल के दिनों में मंदिर सेवा के लिए सामग्री की आपूर्ति की जायेगी: *"क्योंकि उसके व्यापार की प्राप्ति उन्हीं के काम में आएगी जो यहोवा के साम्हने रहा करेंगे, कि उन को भरपूर भोजन और चमकीला वस्त्र मिले"* (यशा.23:15-18)।

नबूकदनेस्सर ने 570 ईसा पूर्व में मिस्र को नष्ट कर दिया और यहेजेकल 29:12 की भविष्यवाणी के अनुसार 40 वर्षों के लिए इसे उजाड़ छोड़ दिया। यहेजकेल की भविष्यवाणी 26:3-5 की पूर्ति के रूप में 332ईसा पूर्व में सिकंदर महान द्वारा सोर के द्वीप शहर को नष्ट कर दिया गया था:

"इस कारण परमेश्वर यहोवा कहता है, हे सोर, देख, मैं तेरे विरुद्ध हूँ; और ऐसा करूंगा कि बहुत सी जातियां तेरे विरुद्ध ऐसी उठेंगी जैसे समुद्र की लहरें उठती हैं। और वे सोर की शहरपनाह को गिराएँगी, और उसके गुम्मटों को तोड़ डालेंगी; और मैं उस पर से उसकी मिट्टी खुरच कर उसे नंगी चट्टान कर दूँगा। वह समुद्र के बीच का जाल फैलाने ही का स्थान हो जाएगा"

सिकंदर ने नबूकदनेस्सर द्वारा छोड़े गए तटीय शहर के खंडहरों को समुद्र में बिखेर दिया ताकि द्वीप पर एक स्मारक का निर्माण किया जा सके और द्वीप शहर को नष्ट कर दिया जा सके।

मिस्र का न्याय और आशीष – 606 ईसा पूर्व, 570 ईसा पूर्व और अंतिम दिनों में

मिस्र के तीन न्यायों की भविष्यवाणी बाइबल में चार भविष्यवक्ताओं द्वारा की गई है; यिर्मयाह, यहेजकेल, दानिय्येल और यशायाह। वे हैं:

1) नबूकदनेस्सर ने फिरौन- नेको की सेना को फरात नदी के किनारे करकेमिश में नष्ट कर दिया, जो यहोयाकीम (606 ईसा पूर्व) (यिर्मयाह 46:1-12) के शासनकाल के चौथे वर्ष में हुआ था ।

2) 570 ईसा पूर्व में नबूकदनेस्सर द्वारा मिस्र की भूमि के विनाश की भविष्यवाणी यिर्मयाह (यिर्मयाह 46:13-26) और यहेजकेल (यहेजकेल 29-32) द्वारा की गई थी ।

3) मसीह विरोधी द्वारा अंतिम दिनों में मिस्र का विनाश जैसा कि यशायाह (यशा.19) और दानिय्येल द्वारा बताया गया है (दानिय्येल 11:40-43)।

योशिय्याह को तब मारा गया जब उसने फिरौन-नेको के साथ "दखल" किया, जिसकी सेना उत्तर की ओर अश्शूरियों की मदद करने के लिए यात्रा कर रही थी, जिन्होंने नीनवे के पतन के बाद हारान और फिर कर्केमिश को अपनी राजधानी बनाया था। यिर्मयाह ने फिरौन-नेको पर परमेश्वर के न्याय की भविष्यवाणी की जो कर्कमिश में पराजित हुआ था।

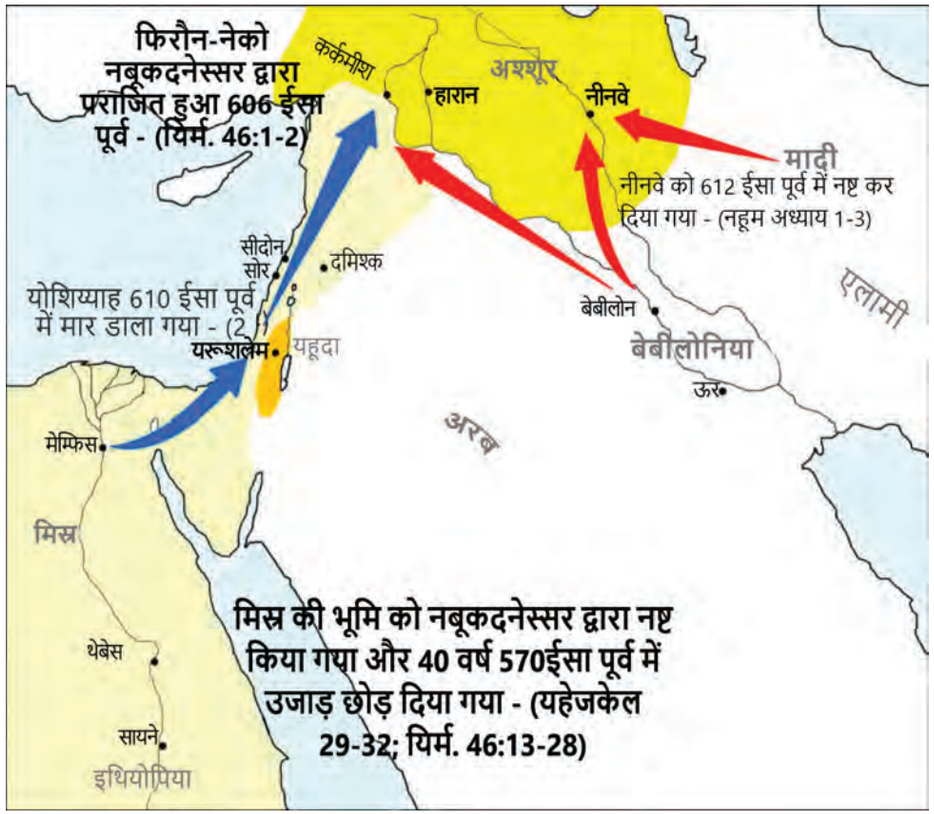

नबूकदनेस्सर ने मिस्रियों का मिस्र की सीमा तक पीछा किया और दानिय्येल को यरूशलेम से घर के रास्ते (606 ईसा पूर्व) से दूर ले गया। 570 ई.पू. में जब दानिय्येल ने काटे हुए पेड़ के सपने की व्याख्या की (दानिय्येल 4), नबूकदनेस्सर ने मिस्र की भूमि को नष्ट कर दिया, जो फिरौन- होफ्रा और उसके सेनापति, अमासिस (यिर्म.44:30) के बीच गृह युद्ध से कमजोर हो गई थी। नबूकदनेस्सर को उनकी सेना के लिए मजदूरी के रूप में मिस्र की लूट को देने के लिए परमेश्वर ने फिरौन की "बांह तोड़ दी" (गृहयुद्ध के माध्यम से), जो कि 13 साल (599-586ईसा पूर्व) के लिए सोर को घेरने में की गई सेवा के लिए थी (यहेजकेल 29:18; 30:21)।

मिस्र को मसीह विरोधी के द्वारा क्लेशकाल की शुरुआत में नष्ट कर दिया जाएगा (दानिय्येल 11:42) लेकिन कई यहूदी गवाह (144,000 रेव.7) के माध्यम से प्रभु की ओर मुड़ेंगे। उस समय मिस्री "हर एक अपने भाई से लड़ेंगे" (यशायाह 19:2) जैसे वे आज हैं। इस्राएल में रूसी/इस्लामी सेना के नष्ट होने के बाद (यहेजकेल 38/39) कई मुसलमान मसीह की ओर मुड़ेंगे और मिस्र से और अश्शूर से यरूशलेम तक एक राजमार्ग बनाया जाएगा (यशायाह 19:23-25)।

"अन्त के समय दक्खिन देश का राजा उसको सींग मारने लगेगा; परन्तु उत्तर देश का राजा (मसीह-विरोधी) उस पर बवण्डर की नाईं बहुत से रथ-सवार और जहाज ले कर चढ़ाई करेगा... वह शिरोमणि देश में भी आएगा। और बहुत से देश उजड़ जाएंगे ...मिस्र देश भी न बचेगा। दनिय्येल 11:40-42 (यशा 19 देखें)

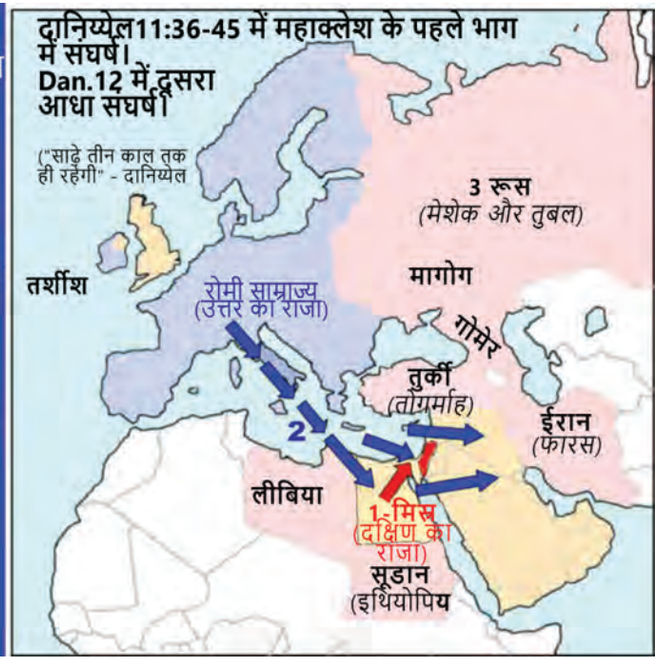

एदोम का न्याय – 550 ईसा पूर्व

एदोमी एसाव की सन्तान थे, और वे इस्राएल से सदा बैर रखते थे। परमेश्वर ने उन्हें सेईर पर्वत का देश दिया, और उन्होंने वहाँ रहने वाले होरी लोगों को विस्थापित कर दिया। जब इस्राएली मिस्र से निकल आए, तब एदोमियों ने उन्हें अपने देश में से होकर जाने न दिया।

586 ईसा पूर्व में जब बेबीलोनियों द्वारा यरूशलेम को नष्ट कर दिया गया था, तो एदोमी शहर में तोड़फोड़ करने में बेबीलोनियों में शामिल हो गए थे। बाबुल में यहूदी बंदियों ने कहा:

"हे यहोवा, यरूशलेम के दिन को एदोमियों के विरुद्ध स्मरण कर, कि वे क्योंकर कहते थे, ढाओ! उसको नेव से ढा दो।" (भज .137 :7)। एस्ड्रास की गैर-विहित पहली पुस्तक में कहा गया है कि *"जब यहूदिया को कसदियों द्वारा उजाड़ दिया गया था, तब एदोमियों ने (मंदिर) जला दिया था "* (1 एस्ड्रास 4:45)।

एदोम के खिलाफ ओबद्याह की भविष्यवाणी तब पूरी हुई जब अरब लोगों ने एदोमियों को यहूदिया में लगभग 550 ईसा पूर्व खदेड़ दिया और इसे इदुमिया के नाम से जाना जाने लगा । जब यहूदी फ़ारसी काल में लौटे, तो एदोमियों को शहरों को यहूदियों को वापस सौंपने के लिए बनाया गया था, फिर मैकाबीज़ के दिनों में, एदोमियों को यहूदी धर्म में परिवर्तित होने के लिए मजबूर किया गया था। हेरोदेस एक इदुमियन था।

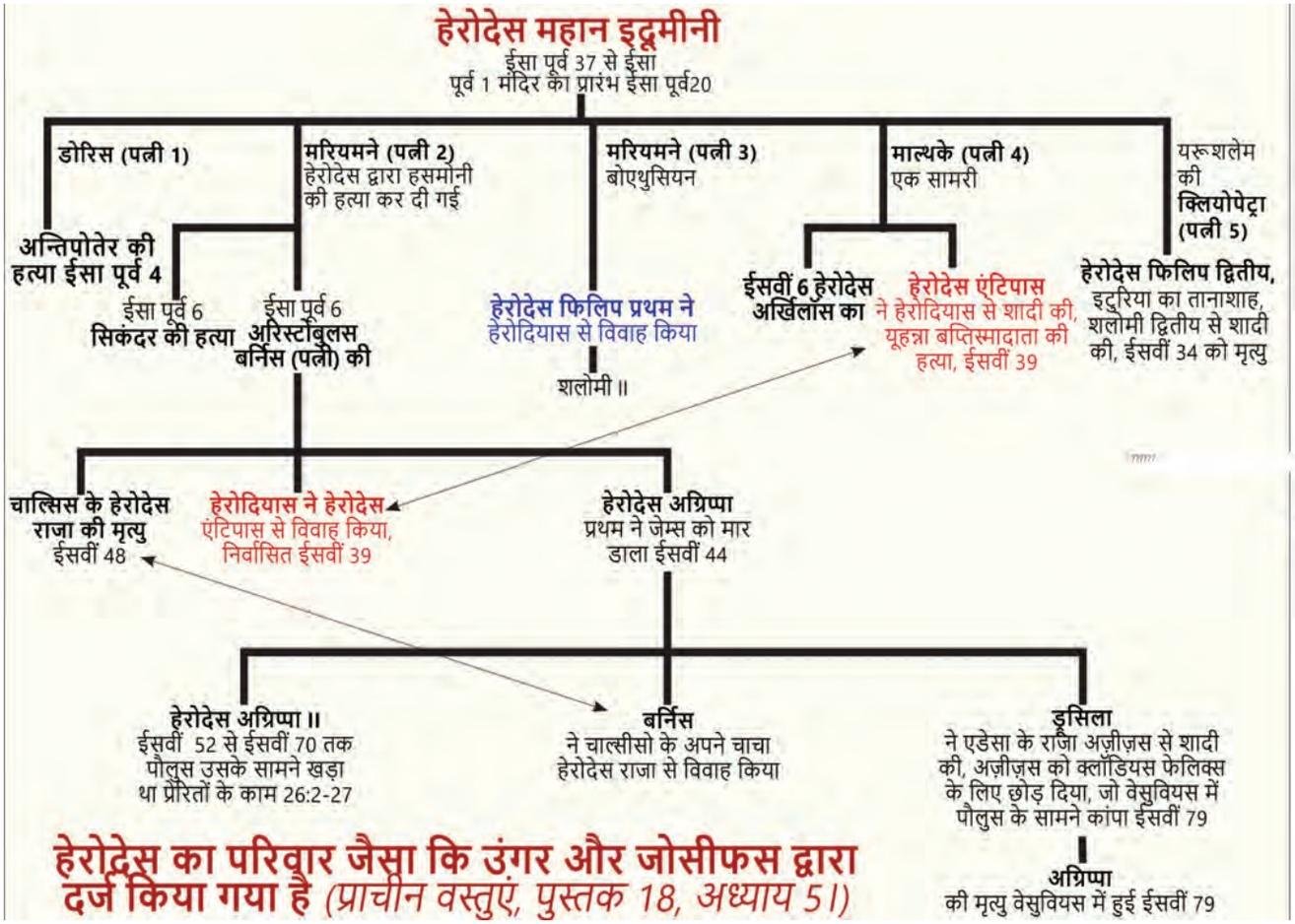

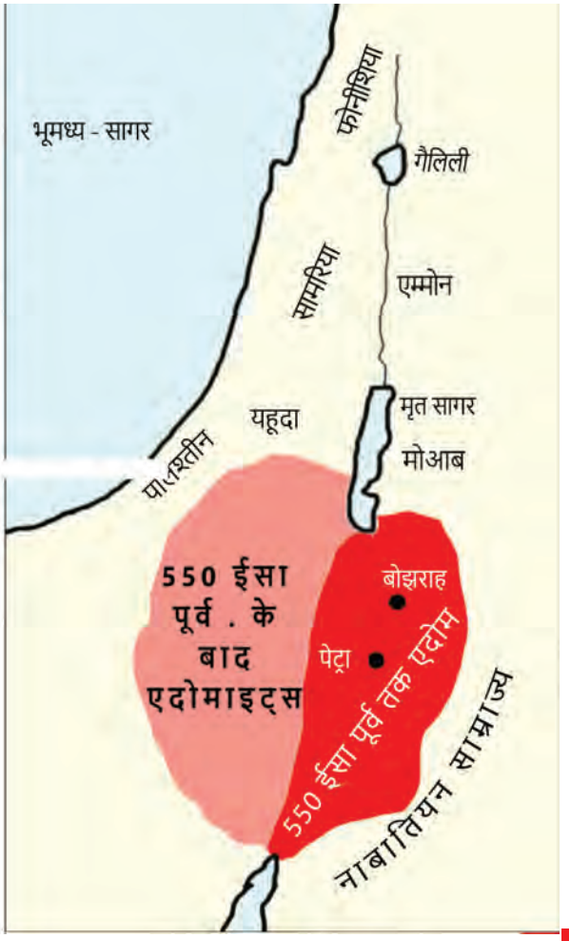

दानिय्येल की पुस्तक

दनिय्येल ने बेबीलोन में भविष्यवाणी की थी, और जबकि अन्य भविष्यवक्ता काफी हद तक इस्राएल से संबंधित थे, दानिय्येल की भविष्यवाणियां बड़े पैमाने पर *"अन्यजातियों के समय"* में गैर-यहूदी राष्ट्रों से संबंधित थीं। यीशु ने कहा कि *"जब तक अन्यजातियों का समय पूरा न हो,* ***तब तक यरूशलेम अन्यजातियों से रौंदा जाएगा"*** (लूका 21:24)। 606 ईसा पूर्व में जब बेबीलोनियों ने शहर पर कब्जा कर लिया तो यरूशलेम को अन्यजातियों द्वारा कुचलना शुरू कर दिया गया था। दानिय्येल की भविष्यवाणी से हम जान पाते हैं कि *"अन्यजातियों के समय"* का अंतिम बिंदु यीशु मसीह का राज्य करने के लिए वापसी होगा। यरूशलेम और परमेश्वर के लोगों इस्राएल को रौंदने वाला अंतिम अन्यजाति राजा, एक रोमन राजकुमार होगा जिसे *"पशु", "पाप का पुरुष", "दुष्ट", "उत्तर का हाकिम"* और *"मसीह-विरोधी"* कहा जाएगा ।

दानिय्येल के समय की घटनाओं का वर्णन करने वाले छह अध्याय हैं और मसीह के शासन से पहले यरूशलेम के अन्यजातियों के कब्जे के कुछ पहलू से संबंधित भविष्यवाणी के छह अध्याय हैं।

अध्याय 2 और 7 प्रथम विश्व साम्राज्य, बेबीलोन से लेकर अंतिम चरण तक अन्यजातियों के इतिहास की पूरी रूपरेखा प्रदान करते हैं; चौथी अन्यजाति विश्व शक्ति, रोम। अध्याय 2 में नबूकदनेस्सर अन्यजातियों की राजनीतिक शक्ति को एक शानदार मूर्ति के रूप में देखता है लेकिन अध्याय 7 में दानिय्येल जंगली जानवरों के समान साम्राज्यों को देखता है।

अध्याय 8 सिकंदर महान से लेकर एंटिओकस एपिफेन्स तक ग्रीसियन साम्राज्य का वर्णन करता है। सिकंदर की मृत्यु के बाद राज्य चार भागों में विभाजित हो गया और एंटिओकस इस्राएल के उत्तर में सेल्यूसिड राजा बन गया (175-164ईसा पूर्व)। अन्ताकिया ने मिस्र से युद्ध किया और यरूशलेम के मन्दिर को अशुद्ध कर दिया। 165ईसा पूर्व में मैकाबीज़ द्वारा मंदिर का शुद्धिकरण किया गया। एंटिओकस भविष्य के मसीह विरोधी के "प्रकार" के रूप में खड़ा है।

अध्याय 9 बाइबल की सभी भविष्यवाणियों और विशेष रूप से

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की कुंजी प्रदान करता है। इस्राएल के लिए परमेश्वर का संपूर्ण कार्यक्रम 70 "सप्ताह" (सात) भविष्यवाणी में उल्लिखित है जो यहूदियों और यरूशलेम पर 490 भविष्यवाणी के वर्षों को निर्धारित करता है जब तक कि राष्ट्र शुद्ध और मसीह के राज्य में आशीष नहीं पा जाता। पाम संडे के दिन इस्राएल के राजा के रूप में मसीह के आगमन की भविष्यवाणी 69 "सप्ताहों" या 483 भविष्यसूचक वर्षों के अंत में की गई है। 69वें और 70वें "सप्ताह" के बीच एक लंबे अंतराल का संकेत दिया गया है। 70वां "सप्ताह" महाक्लेश है।

अध्याय 11 और 12 फ़ारसी युग से ज़ेरेक्स के लिए शुरू होने वाली एक भविष्यवाणी है, जिसने 480 ईसा पूर्व में, यूनानियों को नाराज किया और सिकंदर (334-323 ईसा पूर्व) को फारसी साम्राज्य को उखाड़ फेंकने का कारण दिया। सिकंदर के बाद ग्रीसीयन साम्राज्य के चार हिस्सों के दौरान इतिहास का वर्णन आश्चर्यजनक विस्तार से एंटिओकस एपिफेन्स के अध्याय 11:4 से 35 में किया गया है जब भविष्यवाणी अंत के दिनों में मसीह विरोधी और उसकी गतिविधियों के लिए आगे बढ़ती है।

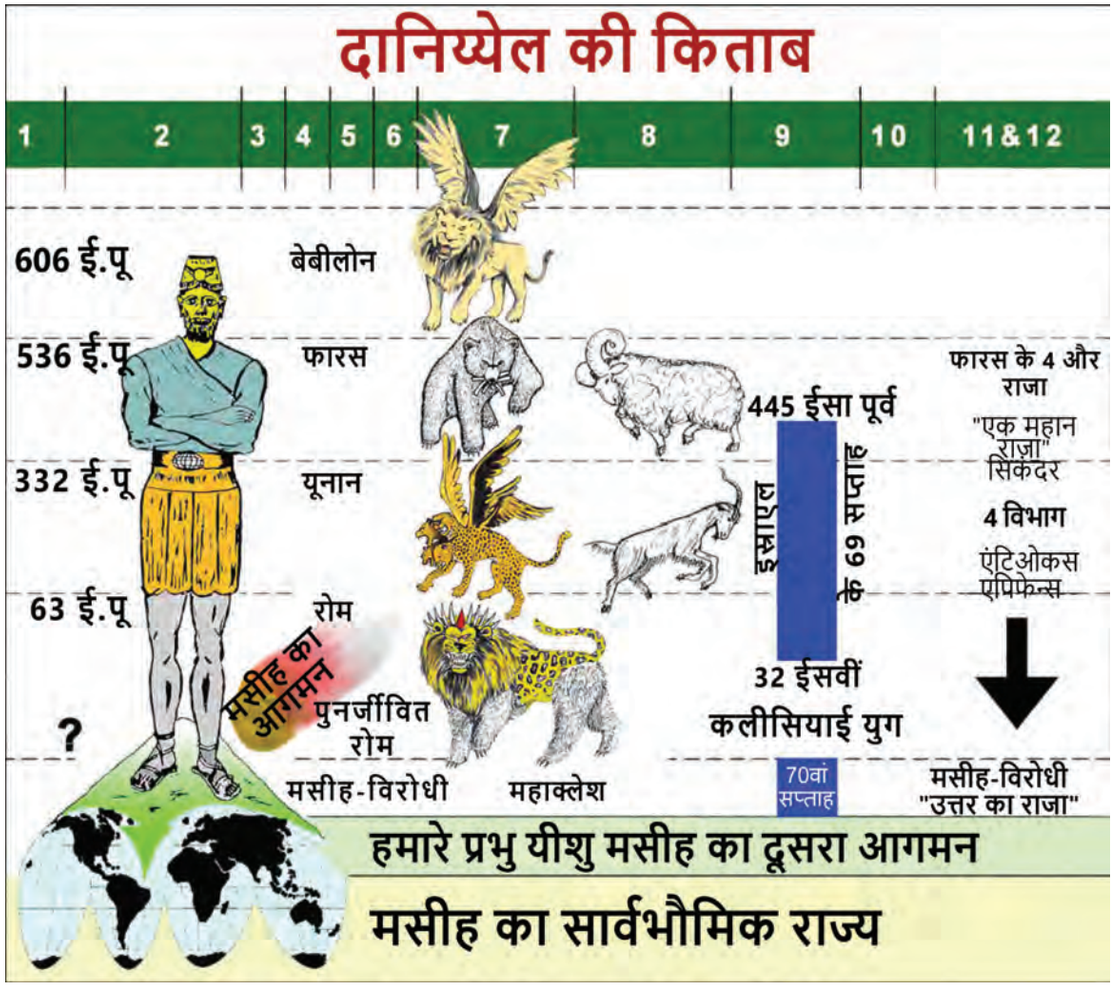

अन्यजातियों का समय - लूका 21:24

नबुकदनेस्सर ने एक सपना देखा था, लेकिन वह याद नहीं कर सका कि वह क्या था, इसलिए उसने बुद्धिमान पुरुषों को बुलाया, जिन्होंने सपनों की व्याख्या करने में सक्षम होने का दावा किया था, और मांग की कि वे सपने को याद करें और इसकी व्याख्या करें। बुद्धिमान पुरुष और जादूगर यह नहीं बता पाए कि सपना क्या था, लेकिन परमेश्वर ने उस सपने और उसकी व्याख्या को दानिय्येल पर प्रकट किया (दानिय्येल अध्याय 2)।

नबूकनेस्सर ने एक मूरत देखी थी, जिसका सिर सोने का, कंधा चाँदी का, पेट और जाँघ पीतल का और टाँगें लोहे की थीं। पैर और पैर की दस उँगलियों का एक हिस्सा लोहा और दूसरा हिस्सा मिट्टी का था।

जब दानिय्येल ने देखा, तो उसने देखा कि एक पत्थर स्वर्ग से उतर रहा है, जो मूर्ति के पैरों पर गिरा, और वह पत्थर एक बड़ा पहाड़ बन गया, जिसने पूरी पृथ्वी को भर दिया।

दानिय्येल को दी गई व्याख्या यह थी कि मसीह के स्वर्ग से आने से पहले पृथ्वी पर चार राज्य होंगे और जो अपने राज्य को स्थापित करेगा जो हमेशा के लिए रहेगा ।

सोने का सिर नबूकनेज़र का बेबीलोनियाई साम्राज्य था जिसे मादी - फ़ारसी साम्राज्य द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा जिसे ग्रीसियन साम्राज्य द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा और अंत में चौथा साम्राज्य रोम होगा, जिसके अंतिम चरण में 10 विभाग होंगे जिसे 10 पैर की उंगलियों के प्रतीक के रूप में दिखाया गया।

ये चार राज्य यरूशलेम को तब तक रौंदते रहेंगे जब तक कि मसीह वापस नहीं आ जाता (लूका 21:24)।

लगभग 50 साल के बाद, बाबुल पर बेलशस्सर के राज्य के पहले वर्ष में , दानिय्येल ने चार जंगली जानवरों का सपना देखा (दानिय्येल अध्याय 7)। पहला **उकाब के पंखों वाले सिंह** के समान था और यह बाबुल का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि शेर का प्रतीक बाबुल में आम था जहाँ ईशर गेट के अंदर जुलूस के रास्ते में चमकदार ईंटों के बने 120 शेर हैं।

दूसरा जानवर **भालू की तरह था जिसके मुंह में तीन पसलियां थीं**। पसलियों ने भालू से कहा *"उठो, बहुत माँस खाओ "*। भालू फारसी साम्राज्य था और तीन पसलियाँ बेबीलोन, मादी और फारस थीं जिन्होंने राज्य बनाया था।

तीसरा जानवर **चार पंखों और चार सिर वाले चीते की तरह था** जो ग्रीस के साम्राज्य का प्रतिनिधित्व करता था जो सिकंदर की मृत्यु के बाद चार भागों में विभाजित हो गया था।

चौथा जानवर रोम का प्रतिनिधित्व करता था और 10 सींग 10 राजाओं का प्रतिनिधित्व करते थे जो एक पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य (यूरोपियन यूनियन) **के माध्यम से अंतिम दिनों में उत्पन्न होंगे।**

10 सींगों में से जो छोटा सींग उत्पन्न होता है, वह अंतिम राजा, मसीही विरोधी है, जिसे दूसरे आगमन पर मसीह द्वारा नष्ट कर दिया जाएगा।

सत्तर "सप्ताह" की भविष्यवाणी दानिय्येल 9:24-27। अंतिम-दिनों की भविष्यवाणी की कुंजी

"तेरे लोगों (इस्राएल) और तेरे पवित्र नगर (यरूशलेम) के लिये सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो, और पापों को अन्त और अधर्म का प्रायश्चित्त किया जाए, और युगयुग की धार्मिकता प्रगट हो; और दर्शन की बात पर और भविष्यवाणी पर छाप दी जाए, और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए।" (दानिय्येल 9:24)।

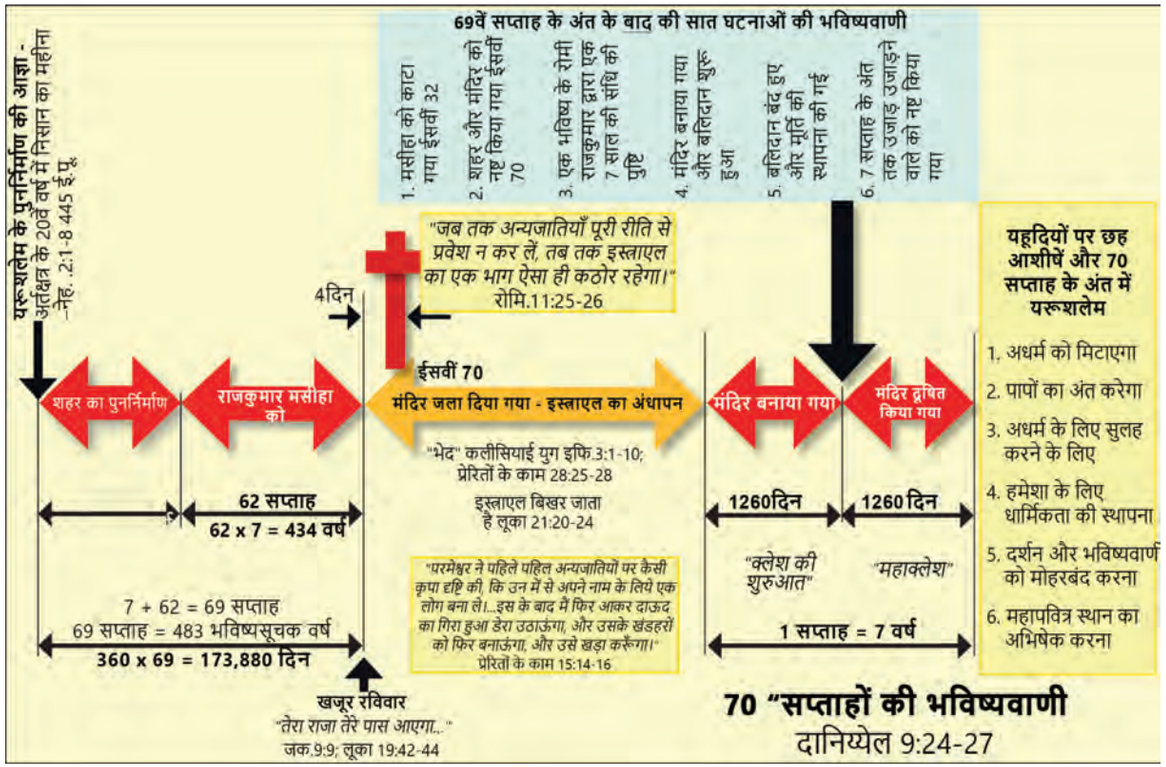

यह अद्‌त भविष्यवाणी उसके लोगों इस्राएल और यरूशलेम के लिए परमेश्वर की योजना को परिभाषित करती है। हम ठीक-ठीक जानते हैं कि भविष्यवाणी कब शुरू होगी: *"यरूशलेम के फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से ले कर अभिषिक्त प्रधान के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे।* (दानिय्येल 9:25)।

जैसा कि पृष्ठ 26 पर चार्ट में दिखाया गया है 536 ई.पू. में कुस्रू की राजाज्ञा में यहूदियों को मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए बाबुल से लौटने की अनुमति दी गई थी, लेकिन अर्तक्षत्र के 20वें वर्ष में निसान (फसह का महीना) महीने में अर्तक्षत्र की राजाज्ञा, वह फरमान था जिसने यहूदियों को यरूशलेम शहर के पुनर्निर्माण की अनुमति दी थी। उस तारीख से मसीहा अभिषिक्त प्रधान तक 7 + 62 (सात) = 69 (सात) = 483 वर्ष होगा।

सभी बाइबल भविष्यवाणी एक 360-दिवसीय वर्ष को मानती है जैसा कि उत्पत्ति 7:11 और 8:3-4,13-14 में दिखाया गया है जहाँ पाँच महीने 150 दिन कहा गया है।

अन्यत्र 31/2 वर्ष = 42 महीने = 1260 दिन (प्रका. 11:2,3; 12:6,14; 13:5)।

यहूदी पर्वों ने चंद्र कैलेंडर का अनुसरण किया जो ग्रेगोरियन सौर कैलेंडर से अलग है , और सर रॉबर्ट एंडरसन क्यूसी ने अपनी पुस्तक द कमिंग प्रिंस में दिखाया है कि 445ईसा पूर्व में फसह से लेकर 32 ईसवीं तक 173,880 दिन थे और जिस दिन यीशु ने खुद को इस्राएल के सामने उसके राजा के रूप में प्रस्तुत किया था वह फसह के ठीक पहले का खजूर संडे था।

यीशु ने यहूदियों से कहा: "क्या ही भला होता, कि तू; हाँ, तू ही, इसी दिन में कुशल की बातें जानता, परन्तु अब वे तेरी आँखों से छिप गई हैं" (लूका 19:41)।

भविष्यवाणी में कहा गया है कि इस घटना के बाद मसीहा को "काटा" जाएगा: खजूर संडे के बाद गुरुवार को मसीह को सूली पर चढ़ाया गया था।

तब "नगर और आराधानालय" को नष्ट कर दिया जाएगा, जिसे हम जानते हैं कि 70 ईसवीं में हुआ था। इसलिए 69वें और 70वें "सप्ताह" के बीच एक अंतर था।

अंत में, एक रोमी प्रधान "एक 'सप्ताह' के लिए बहुतों के साथ वाचा की पुष्टि करेगा" (दनिय्येल 9:27) और ऐसा कभी नहीं हुआ है । इसलिए यह भविष्य की बात है। पिछले सात वर्षों के आधे भाग में यह रोमी प्रधान घृणा (मूर्तिपूजा) फैलाने के लिए " बलिदान और भेंट को रोक देगा (दनिय्येल 9:27)। यह पुराने नियम के बलिदानों को समाप्त करने के लिए मसीह का बलिदान नहीं हो सकता: इसका उद्देश्य " घृणा फैलाने के लिए" है।

स्पष्ट अर्थ यह है कि जिस मंदिर को 70 ईसवीं में रोमियों ने नष्ट कर दिया था, उसे इस वाचा के तहत फिर से बनाया जाना चाहिए ताकि यहूदियों द्वारा बलिदानों को फिर से चढ़ाया जा सके।

भविष्य का रोमी "प्रधान" निस्संदेह मसीह-विरोधी है, जिसके बारे में पौलुस ने कहा था कि वह "परमेश्वर के मन्दिर में बैठ कर अपने आप को प्रकट करेगा कि वह परमेश्वर है" (2 थिस्स. 2:4)। वही वह "छोटा सींग" (दानि. 7:20) है, जो पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य का अंतिम शासक होगा। मत्ती 24:15 में यीशु ने भविष्य के रूप में इसका उल्लेख किया है।

जब मसीह वापस आएगा, तो मसीह-विरोधी को नष्ट कर दिया जाएगा और यहूदी और यरुशलेम राज्य के प्रति किये गए छह वादों के आशीषों का अनुभव करेंगे ।

नबूकदनेस्सर

नबूकदनेस्सर बाबुल के राजा नबोपोलस्सर का पुत्र था, जिसने मादियों के साथ मिलकर 612 ईसा पूर्व में नीनवे शहर पर कब्जा कर लिया था। 610 ईसा पूर्व में मिस्र के राजा फिरौन- नेको ने अपनी सेना को उत्तर में ले गया और जब योशिय्याह ने उसे रोकने की कोशिश की, तो वह मारा गया। फिरौन -नेको मिस्र के लिए सीरिया को सुरक्षित करने के लिए फरात नदी के उत्तर की ओर बढ़ता रहा, लेकिन नबूकदनेस्सर ने उसके खिलाफ अपने पिता की सेनाओं का नेतृत्व किया और यहोयाकीम के चौथे वर्ष में उसकी सेना को नष्ट कर डाला। (606 ईसा पूर्व) कर्शेमिश में। उसी वर्ष नबूकदनेस्सर यरूशलेम से बंधुओं को ले गया और अपने पिता की मृत्यु के बाद उसके सिंहासन को लेने के लिए बाबुल लौट आया। 606 ईसा पूर्व में दानिय्येल को बेबीलोन ले जाया गया। 597 और 586 ईसा पूर्व में नबूकदनेस्सर दो बार और लौटा। 597 ईसा पूर्व में राजा यहोयाकीन और यहेजकेल को बाबुल ले जाया गया। 586 ईसा पूर्व में शहर और मंदिर को जला दिया गया था।

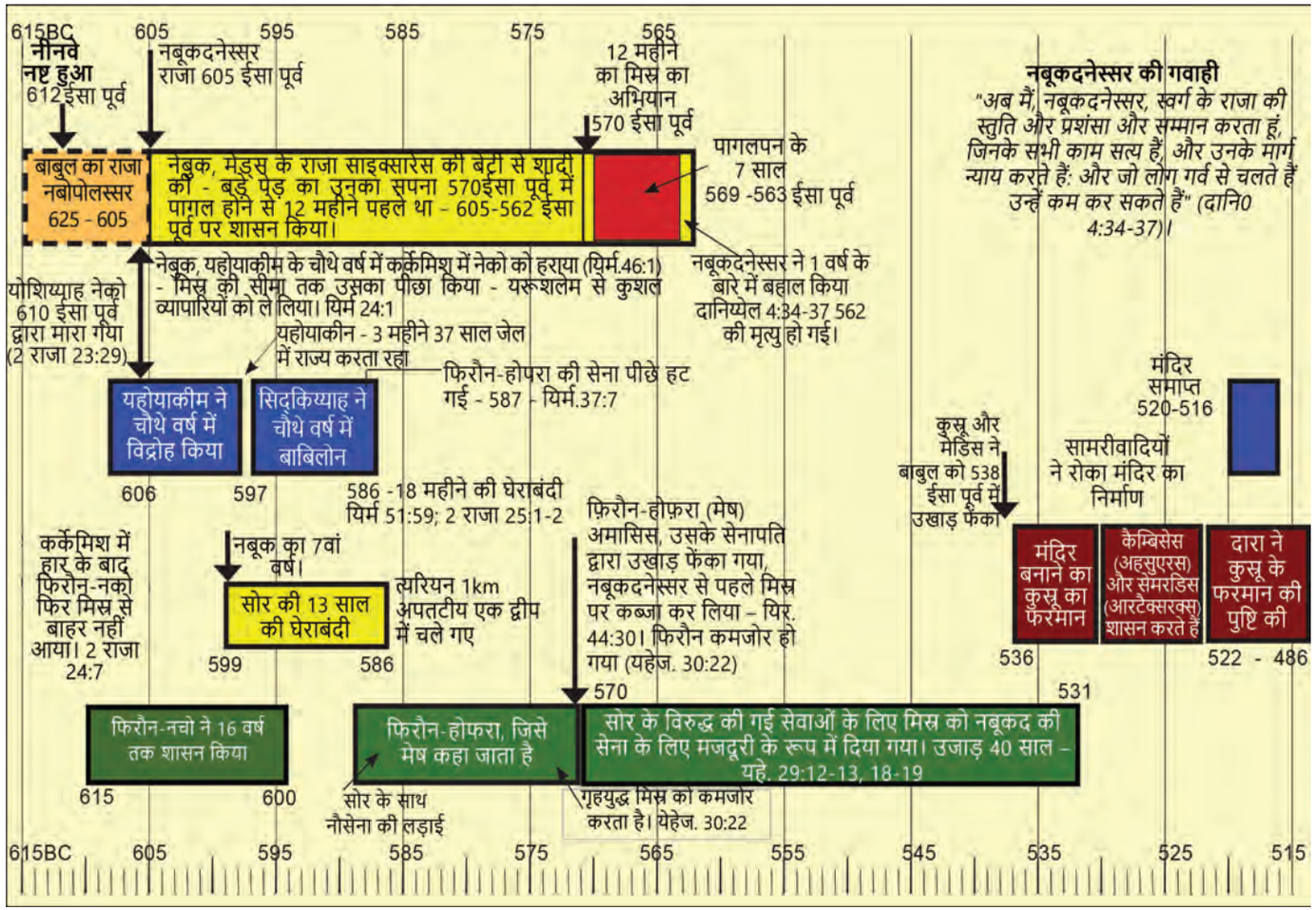

जोसीफस बताता है कि नबूकदनेस्सर ने अपने शासनकाल के 7वें वर्ष (599 ईसा पूर्व) में तटीय शहर सोर की 13 साल की घेराबंदी शुरू की। जब उन्होंने अंततः तटीय शहर पर कब्जा कर लिया तो उन्होंने पाया कि सभी खजाने को एक किलोमीटर दूर एक द्वीप में स्थानांतरित कर दिया गया था। परमेश्वर ने उसे मिस्र के सभी खजाने को उसके सैनिकों के लिए मजदूरी के रूप में देने का वादा किया था (यहेजकेल 29:18-19) उस सेवा के लिए जो उसने सोर के खिलाफ परमेश्वर को दी थी। यह 570 ईसा पूर्व में उस समय पूरा हुआ जब मिस्र फिरौन - होफ्रा और उसके जनरल, अमासिस के बीच गृह युद्ध से कमजोर हो गया था ।

नबूकदनेस्सर का बड़ा पेड़ काटे जाने का सपना जिसे दानिय्येल ने दानिय्येल अध्याय 4 में अनुवाद किया था, मिस्र के अभियान से **पहले** दिया गया था। जब नबूकदनेस्सर 12 महीने बाद मिस्र से लौटा, तो उसने उस महान राज्य पर अहंकार किया, जिसे उसने स्थापित किया था। उसके कारण उस समय वह पागलपन से गुजरा और 7 साल तक एक जंगली जानवर की तरह रहा। 7 वर्षों के बाद उसे बहाल किया गया और केवल एक वर्ष के लिए राज्य किया जिसके दौरान उसने परमेश्वर की महिमा की।

नबूकदनेस्सर के बाद एविल-मेरोदक, फिर नेरिग्लिसार, फिर नबोनिडस द्वारा, जो नबूकदनेस्सर का दामाद था, और जो अपने बेटे, बेलशस्सर के साथ **सह- राजकीय पद के रूप में राज्य करता था।** बेलशस्सर तब मारा गया जब बाबुल को मादियों ने घेर लिया और मादी एवं फारसियों ने बेबीलोन साम्राज्य को उखाड़ फेंका।

बेबीलोन का न्याय – 538 ईसा पूर्व

बाबुल का शहर प्राचीन दुनिया के आश्चर्यों में से एक था और नबूकदनेस्सर के दिनों में अपनी महिमा के चरम पर पहुंच गया था। निम्रोद इसके संस्थापक थे और जब उसने बाबेल की मीनार का निर्माण शुरू किया तो परमेश्वर ने भाषाओं को भ्रमित किया और लोगों को बिखेर दिया। बाबुल वह केंद्र था जहाँ से मूर्तिपूजा पूरी दुनिया में फैली थी। बाबुल के देवताओं को अलग-अलग जातियों में अलग-अलग नामों से जाना जाता था लेकिन वे एक ही देवता थे। जब परमेश्वर के लोग, इस्राएल, बाबुल के देवताओं की ओर मुड़े, तो परमेश्वर ने नबूकदनेस्सर को उन्हें 70 वर्ष तक बाबुल में बंधुआई में ले जाने की अनुमति दी, जहाँ बाबुल वासियों द्वारा उनका मज़ाक उड़ाया गया था जैसा कि भजन 137:3 में दर्शाया गया है, जहाँ हम पढ़ते हैं: *" क्योंकि जो हम को बन्धुए करके ले गए थे, उन्होंने वहाँ हम से गीत गवाना चाहा, और हमारे रूलाने वालों ने हम से आनन्द चाह कर कहा, सिय्योन के गीतों में से हमारे लिये कोई गीत गाओ" ।*

यह भजन निम्नलिखित के साथ समाप्त होता है:
"हे बेबीलोन तू जो उजड़ने वाली है, क्या ही धन्य वह होगा, जो तुझ से ऐसा बर्ताव करेगा जैसा तू ने हम से किया है! क्या ही धन्य वह होगा, जो तेरे बच्चों को पकड़ कर, चट्टान पर पटक देगा!" (भजन 137:8-9)।

यशायाह ने बाबुल के पूरी तरह उजाड़ने की भविष्यवाणी की थी:

*"और बेबीलोन जो सब राज्यों का शिरोमणि है, और जिसकी शोभा पर कसदी लोग फूलते हैं, **वह ऐसा हो जाएगा जैसे सदोम और अमोरा, जब परमेश्वर ने उन्हें उलट दिया था। वह फिर कभी न बसेगा और युग युग तक उस में कोई वास न करेगा;** अरबी लोग भी उस में डेरा खड़ा न करेंगे," और न चरवाहे उस में अपने पशु बैठाएँगे। वहां जंगली जन्तु बैठेंगे...वनपशु वहीं पड़े रहेंगे" (यशा.13:19-21)।*

कुछ लोग सिखाते हैं कि अंतिम दिनों में बाबुल को फिर से बनाया और नष्ट किया जाएगा लेकिन बाइबल बहुत स्पष्ट है कि बाबुल का **पुनर्निर्माण फिर कभी नहीं किया जाएगा। यिर्मयाह** ने बाबुल के विनाश की अपनी भविष्यवाणी में लिखा और संकेत दिया कि यह मादी ही होंगे जो बाबुल को नष्ट कर देंगे। उसने लिखा: *" तीरों को पैना करो! ढालें थामे रहो! **क्योंकि यहोवा ने मादी राजाओं के मन को उभारा है,** उसने बाबुल को नाश करने की कल्पना की है, क्योंकि यहोवा अर्थात उसके मन्दिर का यही बदला है... मैं उसके हाकिमों, पण्डितों, अधिपतियों, रईसों, **और शूरवीरों को ऐसा मतवाला करूँगा कि वे सदा की नींद में पड़ेंगे और** फिर न जागेंगे, सेनाओं के यहोवा, जिसका नाम राजाधिराज है, उसकी यही वाणी है सेनाओं का यहोवा यों भी कहता है, बाबुल की चौड़ी शहरपनाह नेव से ढाई जाएगी, और उसके ऊँचे फाटक आग लगाकर जलाए जाएँगे। और उस में राज्य राज्य के लोगों का परिश्रम व्यर्थ ठहरेगा, और जातियों का परिश्रम आग का कौर हो जाएगा और वे थक जाएँगे।* (यिर्म. 51:10-11, 56-58)।

शहर पर अचानक कब्जा कर लिया गया था जब मादी दारा ने नदी के फाटकों के माध्यम से प्रवेश किया था, जिसे खुला छोड़ दिया गया था, जबकि शासक और अधिकारी एक भोज में डूबे हुए थे, जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी। इसके अलावा, जब इस्राएल के हाकिमों में से एक सरायाह, राजा सिदकिय्याह के साथ अपने शासन के चौथे वर्ष में बेबीलोन की यात्रा पर गया, तो यिर्मयाह ने उसे बाबुल के विनाश की भविष्यवाणी की एक पुस्तक दी और उसे बेबीलोन पहुँचने पर उसे पढ़ने के लिए कहा।
पुस्तक को पढ़ने के बाद, सरायाह को उस पर एक पत्थर बाँधकर फरात नदी में डालना था और कहना था: *"यों ही बाबुल डूब जाएगा **और मैं उस पर ऐसी विपत्ति डालूँगा कि वह फिर कभी न उठेगा"*** (यिर्मयाह 51:64)।

सिकंदर महान ने 332 ईसा पूर्व में बाबुल का पुनर्निर्माण करने का इरादा किया और शुरू होने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई; सद्दाम हुसैन ने बाबुल के पुनर्निर्माण की योजना बनाई और उसे फांसी दे दी गई; जिस महल को उसने शुरू किया था वह कभी पूरा नहीं हुआ और यूहीं पडा है। इस स्थान को एक पुरातात्विक खजाने के रूप में पुनर्विकास किया जाना है ।

महाक्लेश के अंत में *"भेद- बड़ा बाबुल"* (प्रकाशित अध्याय 17 और 18) की आग से अचानक विनाश की भविष्यवाणी रोम के पोप को संदर्भित करती है क्योंकि वह *"सात पहाड़ियों"* पर बैठी हुई है, जो यीशु के लिए *"शहीद हुओं के लहू"* का गुनाहगार है और मसीह विरोधी के साथ जुड़ा हुआ है जो एक **रोमन हाकिम है** ।जब वह इसे जलायेगी तो वह समुद्र से दिखाई देगी जबकि बाबुल समुद्र से सैकड़ों किलोमीटर दूर है। रोम अब समुद्र तट तक फैला है।

न ही यह मक्का है जैसा कि कुछ सिखाते हैं, क्योंकि यह समुद्र से 80 किमी दूर घाटी में स्थित है।

सद्दाम हुसैन का परित्यक्त महल

बेबीलोन की कैद के बाद

यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की थी कि यहूदियों को बेबीलोन में 70 वर्षों तक बंदी बनाकर रखा जाएगा (यिर्मयाह 25:11-12; 29:10) जिसके बाद वे अपने देश में लौट आएंगे। यहोवा की यह वाणी है , *"इसलिये सुनो, मैं उत्तर में रहने वाले सब कुलों को बुलाऊँगा, और अपने दास बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर को बुलवा भेजूँगा; और उन सभों को इस देश और इसके निवासियों के विरुद्ध और इसके आस पास की सब जातियों के विरुद्ध भी ले आऊँगा; सारी जातियों का यह देश उजाड़ ही उजाड़ होगा, और ये सब जातियां सत्तर वर्ष तक बेबीलोन के राजा के आधीन रहेंगी।जब सत्तर वर्ष बीत चुकें, तब मैं बेबीलोन के राजा और उस जाति के लोगों और कसदियों के देश के सब निवासियों अधर्म का दण्ड दूंगा, यहोवा की यह वाणी है; और उस देश को सदा के लिये उजाड़ दूँगा। "* (यिर्मयाह 25:9-12)।

लगभग 700 ईसा पूर्व यशायाह ने भविष्यवाणी की थी कि फारसी साम्राज्य के पहले राजा के रूप में साइरस, बंदी यहूदियों को स्वतंत्र करेगा और उन्हें अपनी भूमि पर लौटने और **मंदिर का पुनर्निर्माण करने की अनुमति देगा (यशा 44:28; 45:1-5)।** साइरस की राजाज्ञा 536 ईसा पूर्व में दिया गया था जो 606 ईसा पूर्व में बेबीलोन के पहले आक्रमण के 70 साल बाद था।

536 ईसा पूर्व में ज़रुब्बाबेल मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए यहूदियों को बेबीलोन से वापस यरूशलेम ले आया लेकिन मंदिर पर काम वहाँ के निवासियों द्वारा बाधित किया गया था और निर्माण 516 ईसा पूर्व में दारा महान के शासनकाल में पूरा हुआ; 586 ईसा पूर्व में इसके विनाश के 70 साल बाद जब मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया, तब तक यरूशलेम शहर तब तक खंडहर बना रहा जब तक कि नहेमायाह क्षयर्ष राजा के 20वें वर्ष में निसान महीने में वापस नहीं आया, जैसा कि नहेम्याह अध्याय 2 में वर्णित है।

क्षयर्ष राजा का यह दूसरा आदेश बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दानिय्येल अध्याय 9 पद 24 से 27 में दर्ज सत्तर **"सप्ताहों" की भविष्यवाणी की आरंभिक तिथि है** और 445 ईसा पूर्व से इस्राएल के लिए परमेश्वर की योजना का वर्णन करता है जब राष्ट्र सहस्राब्दी राज्य में आशीषित होगा। क्षयर्ष ने 465 ईसा पूर्व में अपना शासन शुरू किया और 20 वाँ वर्ष इसलिए 445 ईसा पूर्व था जो "सत्तर सप्ताह" के लिए प्रारंभ तिथि तय करता है।

जब दानिय्येल ने महसूस किया कि यिर्मयाह द्वारा पूर्व में बताया गया 70 वर्ष जल्द ही पूरा होने वाला था, तो उसने प्रभु से अपने लोगों और **"पवित्र नगर", यरूशलेम** के लिए परमेश्वर की भविष्य की योजनाओं को जानने की याचना की ।

कुस्रू के आदेश ने यहूदियों को इस्राएल के परमेश्वर के लिए एक "घर" बनाने की अनुमति दी, लेकिन अर्तक्षत्र के आदेश ने उन्हें यरूशलेम के "नगर" के पुनर्निर्माण की अनुमति दी। जब नहेमायाह यरूशलेम पहुँचा तो सामरियों ने निर्माण करने वालों को परेशान किया, इसलिए 50 दिनों के भीतर उन्होंने सुरक्षा देने के लिए पर्याप्त दीवार खड़ी कर दी। फिर वे दीवार के अंदर निर्माण करने के लिए आगे बढ़े।

70 "सप्ताहों" की भविष्यवाणी की शुरुआत की तारीख को कुस्रू के आदेश (536 ईसा पूर्व) और अर्तक्षत्र (458 ईसा पूर्व) के 7वें वर्ष में एज्रा की वापसी के साथ दुविधा पैदा करता है। हालाँकि, भविष्यवाणी स्पष्ट रूप से कहती है कि सत्तर "सप्ताह" (सात) ***"यरूशलेम के फिर बसाने** की आज्ञा के निकलने से ले कर"* शुरू होते हैं *(दानिय्येल 9:25)।*

न तो जरुब्बाबेल और न ही एज्रा ने **यरूशलेम का पुनर्निर्मा**ण किया , लेकिन नहेमायाह ने किया और इसलिए दूसरा आदेश से दानिय्येल की भविष्यवाणी शुरू होता है। क्षयर्ष राजा के 20वें वर्ष से खजूर रविवार तक 69 x 7 = 483 भविष्यसूचक वर्ष हैं। 69वें "सप्ताह" के बाद एक लंबा अंतराल है जब तक कि एक रोमी प्रधान अंतिम सात वर्षों के लिए अंतिम दिनों में इस्राएल के साथ एक वाचा नहीं बाँध लेता।

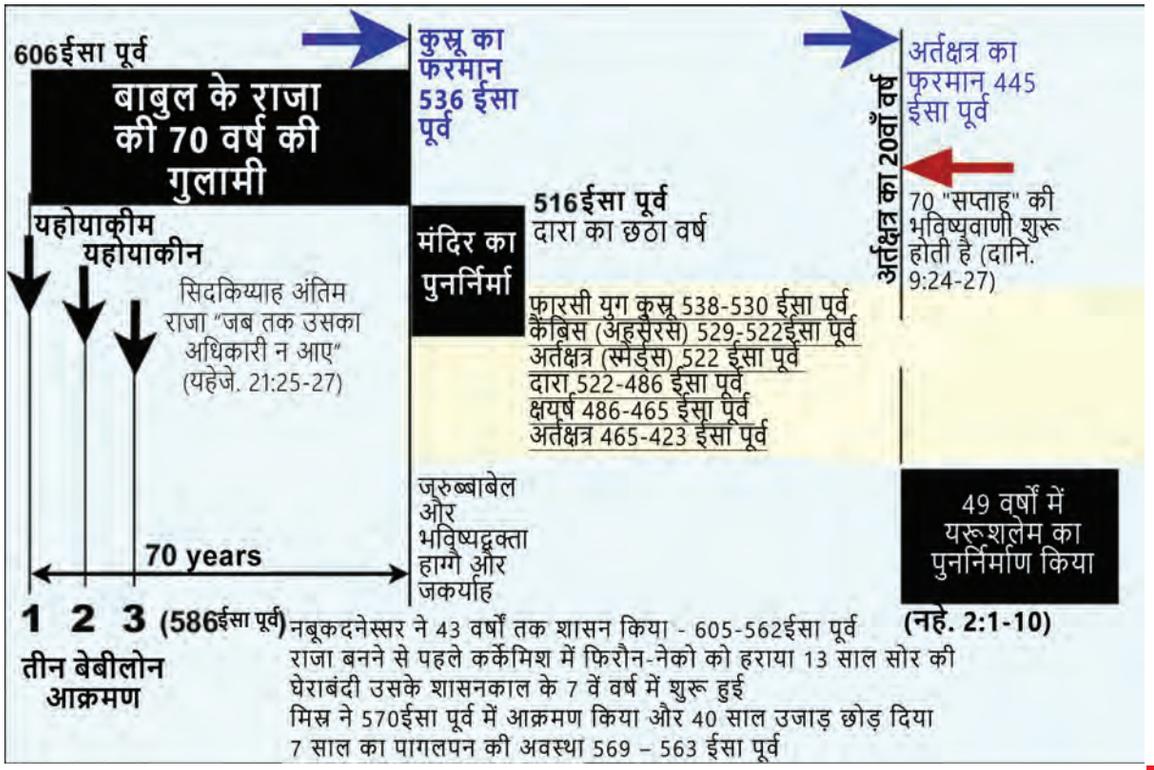

फारस - इसका उदय, पतन और भविष्य

यशायाह ने (700ईसा पूर्व में) मादियों और फारसियों द्वारा 539ईसा पूर्व में बेबीलोन के विनाश की भविष्यवाणी की थी और यहाँ तक कि फारस के राजा, **कुस्रू को**, इसे पूरा करने में परमेश्वर के साधन के रूप में नाम भी बताया (यशायाह 44:28; 45:1-4)। 70 वर्षों तक इस्राएल को ताड़ना देने के लिए बेबीलोन का उपयोग परमेश्वर द्वारा किया गया था, लेकिन मूर्तिपूजक बेबीलोनियों ने इस्राएल के परमेश्वर का मज़ाक उड़ाया था (भजन 137:1-4) और परमेश्वर ने जो अनुमति दी थी उससे आगे निकल गए थे (ज़कर्याह 1:15) और इसलिए परमेश्वर ने कुस्रू को बेबीलोन का न्याय करने के लिए खड़ा किया।

ग्रीक इतिहासकार हेरोडोटस (450 ईसा पूर्व) ने पहले राजा, डियोसेस के साथ शुरुआत करते हुए मादी के राजाओं के इतिहास को दर्ज किया , जिन्होंने 705 ईसा पूर्व के लगभग असीरिया के खिलाफ विद्रोह किया था और जिसके पोते, साइक्सारेस 612 ईसा पूर्व में नीनवे को जीतने के लिए नबूकनेज़र के पिता नेबोपोलसर के साथ शामिल हुआ। स्याक्सारेस के पुत्र, अस्त्यगेस ने लिदिया के राजा की बेटी अलयात्स से शादी की, लेकिन उनके कोई पुत्र नहीं था। उनकी बेटी मँडेन ने एक फारसी राजकुमार, कैंबिस से शादी की, और उनके द्वारा कुस्रू का जन्म हुआ। अस्तेयज ने एक सपना देखा था जिसका अर्थ यह था कि मँडेन का पुत्र एशिया को उससे छीनकर ले जाएगा और इसलिए उसने कुस्रू को उसके जन्म के तुरंत बाद मार डालने का आदेश दिया।

लेकिन हार्पागस, एस्टीजेस का अधिकारी, साइरस को नहीं मार सका और उसे राजा के चरवाहे, मित्रादेट्स को दे दिया, जिसकी पत्नी को एक मृत बच्चा पैदा हुआ था जिसे कुस्रू के स्थान पर दफनाया दिया गया। 10 वर्ष की आयु में, कुस्रू की पहचान अस्त्येज द्वारा की गई और हार्पागस ने स्वीकार किया कि उसने साइरस को नहीं मारा था। कुस्रू को फारस में उसके माता-पिता के पास भेजा गया, लेकिन जब वह बड़ा हो गया, तो हार्पागस ने उसे एक संदेश भेजा कि अगर वह एक सेना तैयार करेगा और विद्रोह करेगा, तो मादी सेना उसके सामने

आत्मसमर्पण कर देगी। कुस्रू ने मादियों पर आक्रमण किया, अस्तेयज पर कब्जा कर लिया गया, और कुस्रू मादी -फारसी साम्राज्य का राजा बन गया, जो यशायाह की भविष्यवाणी की पूर्ति के रूप में फारसी और मादी दोनों का वंशज था।

कुस्रू यहूदियों के अनुकूल था और यशायाह की भविष्यवाणी की पूर्ति के रूप में बंदी यहूदियों को 536 ईसा पूर्व में मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए भूमि पर लौटने दिया (यशायाह 45:13)।

बेबीलोन के युग के दौरान, एलाम (फारस) बेबीलोन के नियंत्रण में आ गया था जैसा कि यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की थी कि ऐसा होगा (यिर्मयाह 49:35):
"देख, मैं एलाम के धनुष को जो उनके पराक्रम का मुख्य कारण है, तोड़ूँगा...मैं एलाम को उनके शत्रुओं (बेबीलोन) और उनके प्राण के खोजियों के सामने विस्मित करूँगा" (यिर्मयाह 49:35-37)।

हालाँकि, 538 ईसा पूर्व में मादियों और फारसियों द्वारा बेबीलोन को उखाड़ फेंकने के साथ ही, परमेश्वर ने कहा कि वह एलाम (फारस) में अपना सिंहासन स्थापित करेगा (यिर्मयाह 49:38)।
*"और **मैं एलाम में अपना सिंहासन रख** कर उनके (बेबीलोन) राजा और हाकिमों को नष्ट करूँगा, यहोवा की यही वाणी है"* (यिर्मयाह 49:38)।

दनिय्येल कुस्रू राजा के अधीन प्रधान मंत्री था। एलाम में शूशन उसकी राजधानियों में से एक था। दारा ने मंदिर के पुनर्निर्माण को पूरा करने के लिए कुस्रू (520ईसा पूर्व) के राजाज्ञा की पुष्टि की। **एस्तेर** क्षयर्ष (कैंबिस) की रानी थी और मोर्दकै प्रधान मंत्री था और यहूदियों ने उन सभी को नष्ट करने की अनुमति पाई जो उन्हें नुकसान पहुंचाते। 445 ईसा पूर्व में अर्तक्षत्र (लोंगिमैनस) ने यहूदिया में नहेमायाह को हाकिम बनाया और यरूशलेम का पुनर्निर्माण किया गया। अंत के दिनों में, ईरान (फारस) को आशीष दी जाएगी: *"परन्तु यहोवा की यह भी वाणी है, कि अन्त के दिनों में मैं एलाम को बंधुआई से लौटा ले आऊँगा।"* (यिर्मयाह 49:39)। अन्य धर्मग्रंथ इस्लामिक राष्ट्रों के महाक्लेश में परमेश्वर की ओर मुड़ने की बात करते हैं। उदाहरण के लिए, मिस्र और असीरिया (इराक) (यशायाह 19:18-25)।

एज्रा और नहेमायाह की पृष्ठभूमि

बेबीलोन की बंधुआई के 70 वर्षों के बाद, जरुब्बाबेल को कुस्रू द्वारा यरूशलेम में *"परमेश्वर के भवन"* को लौटने और पुनर्निर्माण करने के लिए अधिकृत किया गया था। जब यह आदेश सुनाया गया, तब 49,697 यहूदी उसके साथ हो लिए, और बड़ी संख्या में वे घोड़े, खच्चर, ऊँट और गदहे ले गए। इसके अतिरिक्त, लगभग US$1.5 मिलियन मूल्य की चाँदी और US$5.3 मिलियन मूल्य का सोना दान किया गया था (एज्रा 2:64-69)।

मंदिर का निर्माण 530 ईसा पूर्व में कुस्रू की मृत्यु तक जारी रहा, लेकिन जब उनके बेटे कैम्बिस (क्षयर्ष) (एज्रा 4:6) ने शासन करना शुरू किया तो सामरियों ने राजा पर आरोप लगाए और मंदिर पर काम बंद करने का आदेश दिया गया।

जोसीफस के अनुसार, जरुब्बाबेल फिर फारस में अपने मित्र दारा के पास सुसा लौट आया, और एक अंगरक्षक के रूप में कार्यरत रहा। दारा ने प्रतिज्ञा की थी कि यदि वह कभी राजा बनेगा तो वह यरूशलेम के मन्दिर को फिर से बनाने का आदेश देगा। जरुब्बाबेल को तीन अंगरक्षकों में से पहला स्थान दिया गया क्योंकि वह ज्ञान में उत्कृष्ट था।

कैम्बिस द्वारा मिस्र के साथ युद्ध के बाद घर के रास्ते में दमिश्क में आत्महत्या करने के बाद, स्मर्डिस नामक एक सूदखोर ने खुद को अर्तक्षत्र (एज्रा 4: 7) कहा और मंत्री के सहयोग से सिंहासन पर कब्जा कर लिया।

दारा ने स्मर्डिस और उस मंत्री को मार डाला और फारस पर शासन करने वाले सात परिवारों के प्रमुखों द्वारा राजा का ताज उसे पहनाया गया (एस्तेर 1:14)। स्मर्डिस को उखाड़ फेंकने में ज़रुब्बाबेल की महत्वपूर्ण भूमिका रही होगी ।

इस बीच हाग्गै और जकर्याह भविष्यवक्ताओं ने लोगों से मंदिर का निर्माण जारी रखने का आग्रह किया और जब यह दारा की जानकारी में आया तो उसने अपने शासन के दूसरे वर्ष में कुस्रू के आदेश की पुष्टि की।
जरुब्बाबेल लौट आया और मंदिर राजा दारा (516 ईसा पूर्व) के शासन के 6वें वर्ष में पूरा हो गया (एज्रा 6:15)।
जकर्याह पुष्टि करता है कि यह जरुब्बाबेल ही था जिसने मंदिर को पूरा किया था और इस कारण वह यरूशलेम लौट आया होगा (ज़कर्याह 4:9)।

सत्तर साल बाद 445 ईसा पूर्व में, ***नहेमायाह*** को राजा अर्तक्षत्र (लोंगिमैनस) से यरूशलेम शहर (नहेमायाह 2:8) के पुनर्निर्माण के लिए एक आदेश प्राप्त हुआ जो अभी भी निर्जन क्षेत्र था (नहेमायाह 7:4)। यह आदेश दानिय्येल की 70 "सप्ताहों" की भविष्यवाणी की शुरुआत की तारीख थी (दानिय्येल 9:24-27) और अर्तक्षत्र के 20वें वर्ष में अबीब महीने से इसकी शुरुआत होती है। अर्तक्षत्र के 32वें वर्ष में, नहेमायाह 12 वर्षों के बाद फारस लौट आया (नहेमायाह 5:14; 13:6)। अर्तक्षत्र के मरने के लगभग 10 वर्ष बाद वह यरूशलेम लौटा (नहेमायाह 13:7) यह देखने के लिए कि यहूदियों ने अन्यजातियों के साथ विवाह किया था, उनके बच्चे हिब्रू नहीं बोल सकते थे, अम्मोनी तोबियाह को मंदिर में एक कमरा दिया गया था और कुछ यहूदी विश्रामदिन का पालन नहीं करते थे। नहेमायाह ने गलतियों को सुधारने के लिए कड़ा कदम उठाया। जोसीफस का कहना है कि नहेमायाह की मृत्यु वृद्धावस्था में हुई थी, जो कि भविष्यवक्ता मलाकी द्वारा पुराने नियम को समाप्त करने से कुछ वर्ष पहले की बात है।

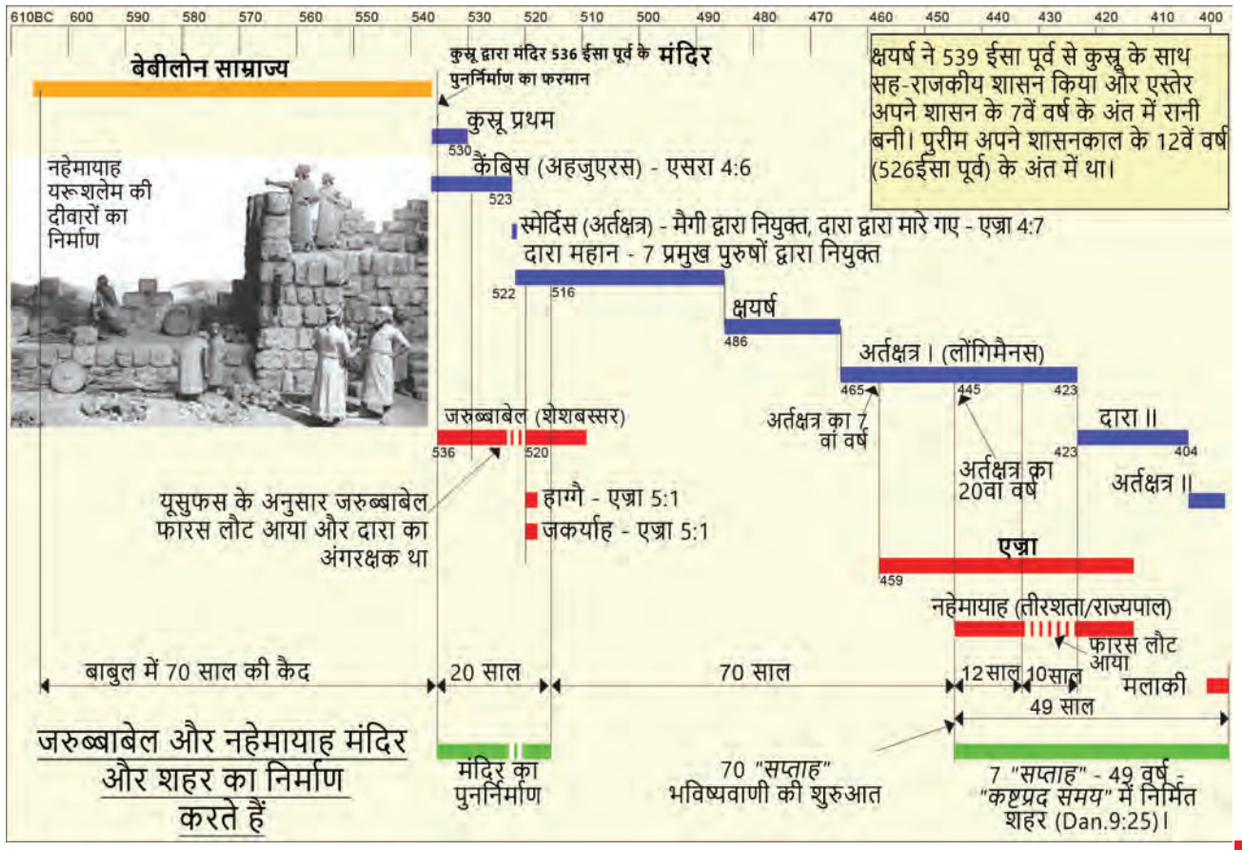

कुस्रू की कहानी

यशायाह ने 150 साल पहले भविष्यवाणी की थी कि कुस्रू बेबीलोन को उखाड़ फेंकेगा और जिस तरह से शहर पर कब्ज़ा किया जाएगा, उसके बारे में पूरी तरह से यशायाह द्वारा अध्याय 44:26 से लेकर अध्याय 47 तक अपनी भविष्यवाणी में वर्णित है।

परमेश्वर ने कुस्रू के नाम की घोषणा उसके जन्म से पहले की थी

"और अपने दास के वचन को पूरा करता और अपने दूतों की युक्ति को सफल करता हूं; जो यरूशलेम के विषय कहता है, वह फिर बसाई जाएगी और यहूदा के नगरों के विषय, वे फिर बनाए जाएंगे और मैं उनके खण्डहरों को सुधारूंगा; जो गहिरे जल से कहता है, तू सूख जा, मैं तेरी नदियों को सुखाऊँगा; जो कुस्रू के विषय में कहता है, "वह मेरा ठहराया हुआ चरवाहा है और मेरी इच्छा पूरी करेगा;" यरूशलेम के विषय कहता है, "वह बसाई जाएगी" और मन्दिर के विषय कि "तेरी नेव डाली जाएगी|" यहोवा अपने अभिषिक्त कुस्रू के विषय यों कहता है, मैं ने उस के दाहिने हाथ को इसलिये थाम लिया है कि उसके सामने जातियों को दबा दूँ और राजाओं की कमर ढीली करूँ, ***उसके सामने फाटकों को ऐसा खोल दूँ*** *कि वे फाटक बन्द न किए जाएँ। मैं तेरे आगे आगे चलूँगा और ऊँची ऊँची भूमि को चौरस करूँगा, मैं पीतल के किवाड़ों को तोड़ डालूँगा और लोहे के बेड़ों को टुकड़े टुकड़े कर दूँगा। मैं तुझ को अन्धकार में छिपा हुआ और गुप्त स्थानों में गड़ा हुआ धन दूँगा, जिस से*

तू जाने कि मैं इस्राएल का परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुझे नाम लेकर बुलाता है। अपने दास याकूब और अपने चुने हुए इस्राएल के निमित्त मैंने नाम ले कर तुझे बुलाया है; यद्यिप तू मुझे नहीं जानता, तौभी मैं ने तुझे पदवी दी है। अपने दास याकूब और अपने चुने हुए इस्राएल के निमित्त मैं ने तुझे तेरे नाम से पुकारा है, तौभी तू ने मुझे नहीं जाना, तौभी मैं ने तेरा नाम लिया है।" (यशा.44:26 से 45:4)। बेबीलोन का न्याय उसकी मूर्तियों का एक न्याय था जिसने दुनिया को भर दिया था और फारसियों ने इन मंदिरों और बेबीलोनियों की मूर्तियों को नष्ट कर दिया था, और मंदिरों में संग्रहीत बड़े धन को पर्सेपोलिस ले गये।

यशायाह ने इसका वर्णन इस प्रकार किया:

"बेल देवता झुक गया, नबो देवता नब गया है, उनकी प्रतिमाएँ पशुओं वरन घरेलू पशुओं पर लदी हैं; जिन वस्तुओं को तुम उठाए फिरते थे, वे अब भारी बोझ हो गईं और थकित पशुओं पर लदी हैं। वे नब गए, वे एक संग झुक गए, वे उस भार को छुड़ा नहीं सके, और आप भी बँधुआई में चले गए हैं" (यशायाह 46:1-2)।

ब्रिटिश संग्रहालय में रखी कुस्रू की हस्तलिपि बंदी लोगों को रिहा करने और उन्हें अपनी भूमि पर लौटने के लिए प्रोत्साहित करने की कुस्रू की नीति को रिकॉर्ड करता है, जैसे उसने 70 साल की बेबीलोन की कैद के बाद ज़रूबबेल के नेतृत्व में यहूदियों को वापस भेजा था।

पसर्गदाई में कुस्रू का मकबरा

कैंबिस के सह-मंत्रालय और शासन

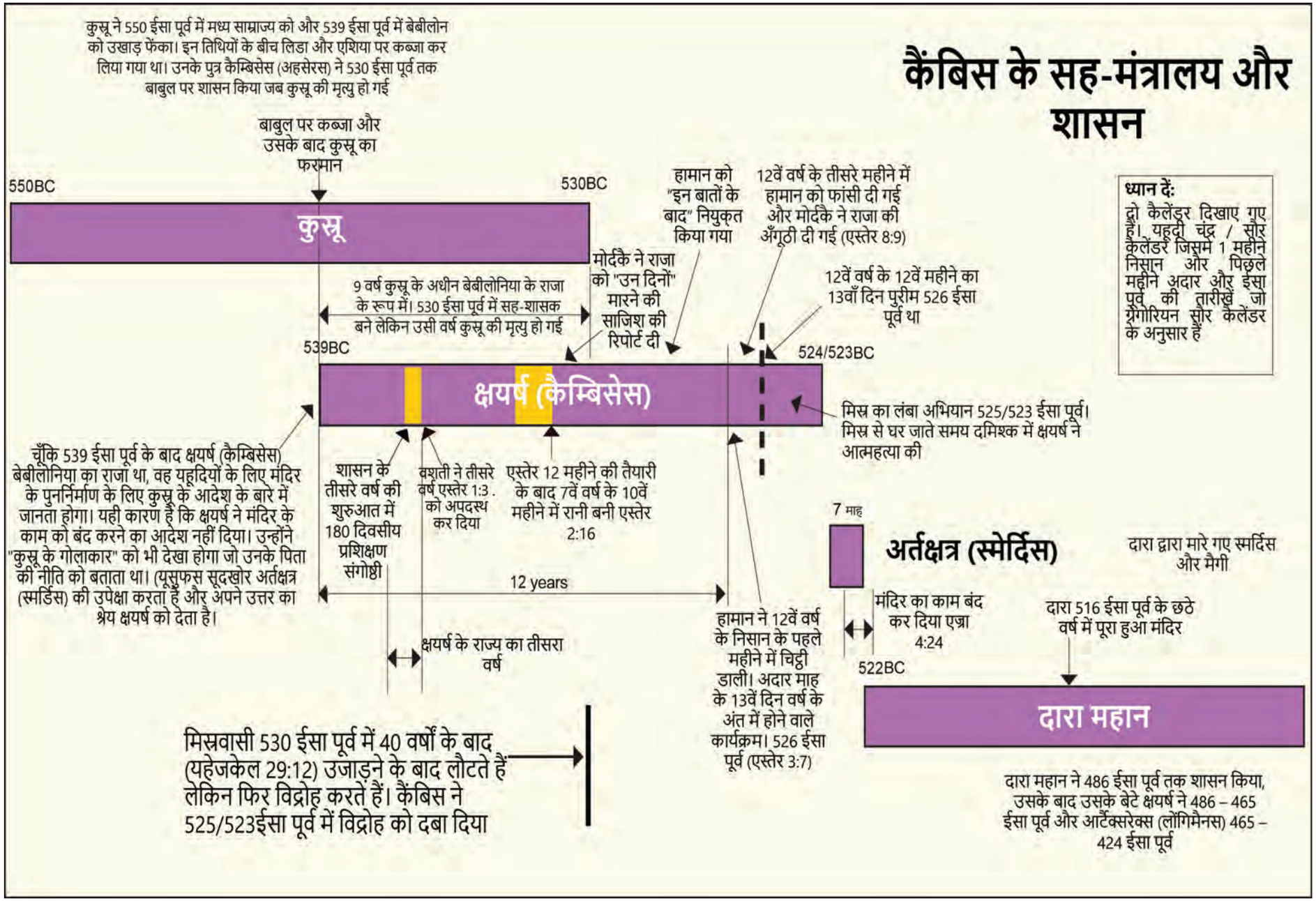

चार्ट यह दिखाने के लिए है कि एस्तेर ने कैंबिस से शादी की और क्षयर्ष या अर्तक्षत्र से नहीं

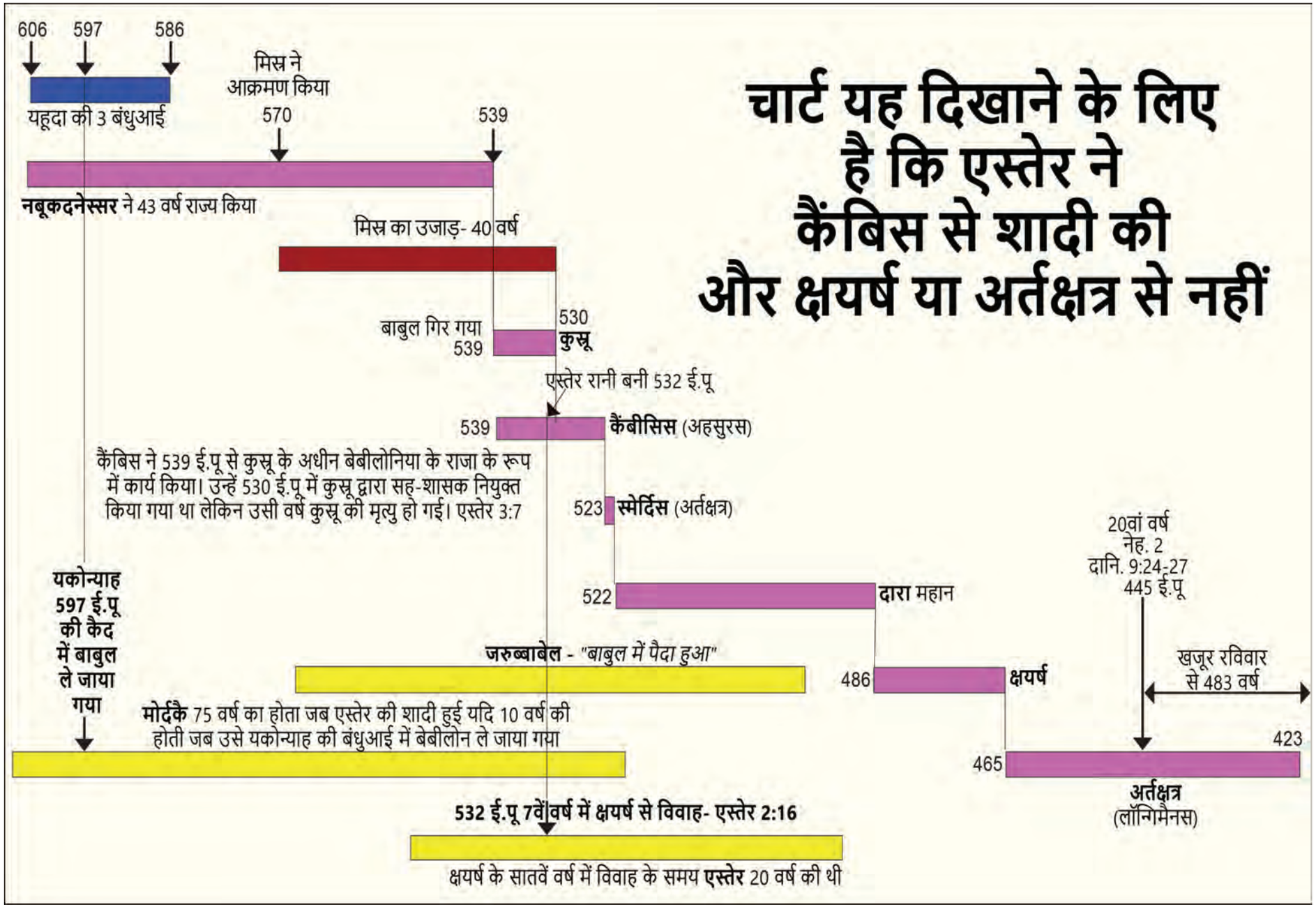

पर्सेपोलिस के महल का जलना

(इतिहासकार डियोडोरस सिकुलस के अनुसार (90-21 ईसा पूर्व)

पेर्सेपोलिस के लिए जो फारस की राजधानी थी, उसे सिकंदर ने मैसेडोनिया के लोगों के लिए एशिया के शहरों के बीच अपने सबसे बड़े दुश्मन के रूप में वर्णित किया,और उसने शाही महल को छोड़कर, बाकी सब लूटने के लिए सैनिकों को दे दिया। यह सूर्य के नीचे सबसे धनी शहर था और निजी घर लंबे समय से हर तरह की धन संपत्ति से भरे हुए थे। मैसेडोनिया के लोग इसमें घुस गए, सभी पुरुषों को मार डाला और घरों को लूट लिया, जो कि असंख्य थे और फर्नीचर और हर तरह की कीमती वस्तुओं से भरे हुए थे। यहाँ से बहुत सी चाँदी ले जाया गया और सोने की भी कमी नहीं थी, साथ ही कई महंगे कपड़े, बैंगनी या सोने के साथ कशीदाकारी, ये सभी विजेताओं के लिए पुरस्कार के रूप में दिए गए।

...जहाँ तक महिलाओं का सवाल था, वे बंदियों के समूह के रूप में गुलाम बनाकर उनके गहनों के साथ उन्हें जबरन घसीटते हुए ले गए। जैसा कि पर्सेपोलिस ने समृद्धि में अन्य सभी शहरों को पछाड़ दिया था, इसलिए अब वह दुर्भाग्य में भी उनसे आगे निकल गई।

सिकंदर गढ़ तक गया और वहाँ रखे खजानों पर कब्जा कर लिया। वे फारसियों के पहले राजा, कुस्रू से लेकर उस समय तक के राजस्व के संचय के साथ, सोने और चाँदी से भरे हुए थे। चाँदी के हिसाब से सोना की गणना करें तो वहाँ 2500 टन सोना पाया गया। सिकंदर युद्ध के खर्च के लिए अपने साथ धन का कुछ हिस्सा लेना चाहता था और बाकी को सूसा में कड़ी सुरक्षा के तहत जमा करना चाहता था। बेबीलोन, मेसोपोटामिया और सुसा से, उसने खच्चरों की भीड़, आंशिक रूप से लदे हुए और आंशिक रूप से बिना लदे जानवरों के साथ-साथ 3,000 ऊँटों को भेजा, और इन के साथ उसने सभी खजाने को चुने हुए स्थानों पर पहुँचा दिया। वह स्थानीय लोगों के प्रति काफी क्रूर था और उन पर भरोसा नहीं करता था, और पर्सेपोलिस को पूरी तरह से नष्ट करना चाहता था।

सिकंदर ने अपनी जीत का जश्न मनाने के लिए खेलों का आयोजन किया; उसने देवताओं को भव्य बलि चढ़ाए और अपने मित्रों का भरपूर मनोरंजन किया। एक दिन जब उसके साथी भोज कर रहे थे, और नशा बढ़ता जा रहा था जैसे-जैसे शराब उंडेला जा रहा था, तब एक हिंसक पागलपन ने इन शराबी लोगों को जकड लिया। उपस्थित महिलाओं में से एक, मैसेडोनियन कमांडर टॉलेमी के एथेनियन प्रेमिका, थायस ने घोषणा की कि उनके जुलूस में शामिल होना और शाही महल में आग लगाना एशिया में सिकंदर की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी, जिससे महिलाओं के हाथों को एक पल में नष्ट करने की अनुमति मिल जाएगी जो फारसियों का गौरव रहा है। ये शब्द उन युवकों से बोले गए थे जो शराब के कारण पूरी तरह से अपने होश से बाहर थे, और किसी ने, जैसा कि अपेक्षित था, जुलूस और लाइट मशालों का नेतृत्व करने के लिए चिल्लाया, उन्हें और ग्रीक अभयारण्य के खिलाफ किए गए अपराधों को दंडित करने के लिए प्रोत्साहित किया। अन्य लोग रोने में शामिल हो गए और कहा कि

पर्सेपोलिस में दारा और क्षयर्ष कामहल

केवल सिकंदर ही इस कार्य के योग्य था। इन बातों से राजा बाकियों से उत्साहित हो गया। मशालों की एक मात्रा को जल्दी से एकत्र किया गया, और चूँकि महिला संगीतकारों को भोज में आमंत्रित किया गया था, यह गायन और बाँसुरी की आवाज़ के कारण था, जो राजा ने उन्हें समारोह में थायस के साथ समारोह का संचालन करने के लिए प्रेरित किया। राजा के बाद वह पहली स्त्री थी जिसने अपनी जलती हुई मशाल को महल में फेंका। जैसा कि अन्य लोगों ने उनके उदाहरण का अनुसरण किया, तो शाही महल का पूरा क्षेत्र जल्दी ही आग की लपटों में घिर गया।

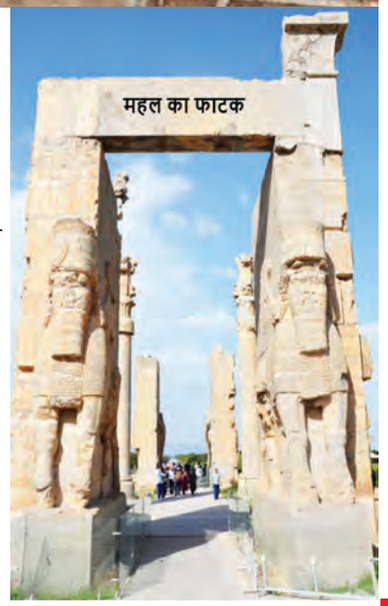

महल का फाटक

सिकंदर महान का यूनानी साम्राज्य

दानिय्येल ने दारा मादी के शासनकाल के दौरान भविष्यवाणी की थी, जबकि कुस्रू राजा था, कि *"देख, फारस के राज्य में अब तीन और राजा उठेंगे; और चौथा राजा उन सभों से अधिक धनी होगा; और जब वह धन के कारण सामर्थी होगा, तब सब लोगों को यूनान के राज्य के विरुद्ध उभारेगा।"* (दानि. 11:2)। कुस्रू के बाद के चार राजा इस प्रकार थे:
(1) कैम्बिसेस (अहासुरस 530 – 522 ईसा पूर्व), (2) स्मर्डिस (अर्तक्षत्र, 522 ईसा पूर्व), (3) दारा महान (522 - 486 ईसा पूर्व), और (4) एस्तेर का पति क्षयर्ष (486 - 465 ईसा पूर्व), जिसने 480 ईसा पूर्व में ग्रीस के खिलाफ एक विशाल सेना का नेतृत्व किया और अगस्त 480 ईसा पूर्व में यूनानियों को हराया। हालांकि, उसी वर्ष सितंबर में, यूनानियों ने सलामिस में एक निर्णायक नौसैनिक युद्ध जीता और क्षयर्ष अपनी अधिकांश सेना के साथ पीछे हटा।

यूनान पर यह फारसी हमला था, जिसने 334 ईसा पूर्व में, मैसेडोनिया के राजा फिलिप के बेटे सिकंदर को उकसाया, ताकि वह 30,000 पैदल सैनिकों और 5,000 घुड़सवारों के बल के साथ फ़ारसी सेना को ग्रैनिकस नदी पर फारसियों को हराने के लिए एशिया को पार कर सके। दारा III ने एक और सेना इकट्ठी की लेकिन इस्सुस में हार गया जहां दारा अपनी पत्नियों को पीछे छोड़कर भाग खडा हुआ। सिकंदर दक्षिण में सोर के द्वीप शहर की ओर बढ़ता रहा, जिसे उसने घेर लिया था, तटीय शहर से मलबे को हटा दिया, जिसे नबूकदनेस्सर ने 586 ईसा पूर्व में यशायाह 23: 1-18 की पूर्ति के रूप में समुद्र में नष्ट कर दिया था। सिकंदर ने एक किलोमीटर अपतटीय द्वीप शहर के लिए एक पुल का निर्माण किया।

सोर के गिरने के बाद (यहेजकेल 26:14) सिकंदर ने गाज़ा पर कब्जा कर लिया और सोर की घेराबंदी के दौरान अपने सैनिकों के लिए आपूर्ति प्रदान नहीं करने के लिए यरूशलेम पर प्रतिशोध लेने का दृढ़ संकल्प किया । यरूशलेम पहुँचने पर उसकी भेंट महायाजक और याजकों से हुई। जोसीफस ने लिखा है कि सिकंदर अपने सफेद घोड़े से उतरा और महायाजक जदुआ के सामने झुका और कहा,

> "मैंने इस व्यक्ति को एक सपने में देखा, इसी आदत में, जब मैं मैसेडोनिया में डियोस में था, जिसने मुझे देर न करने, परन्तु हियाव से समुद्र पार करने को कहा, क्योंकि वह मेरी सेना का संचालन करेगा, और मुझे फारसियों पर प्रभुत्व देगा... और उस दर्शन को याद करते हुए ... मुझे विश्वास है कि मैं इस सेना को दैवीय अगुवाई के तहत लाता हूं, और इसके साथ दारा पर विजय प्राप्त करूँगा, और फारसियों की शक्ति को नष्ट कर दूँगा" (*अन्तिक्वुइतिएस* पुस्तक 11, अध्याय 8, गद्य. 334-335)।

सिकंदर को दानिय्येल की पुस्तक की भविष्यवाणियाँ दिखाई गईं और वह यहूदियों पर विशेष कृपादृष्टि दिखाते हुए मंदिर में बलिदान चढ़ाने लगा।

मिस्र ने सिकंदर की आधीनता स्वीकार कर ली और उसने ज़ीउस अम्मोन के मंदिर का दौरा किया जहां पुजारियों ने घोषणा की कि वह एक देवता था।

दारा पर अंतिम विजय गौगामेला में हुई जिसके बाद सिकंदर ने मध्य एशिया से होते हुए भारत की ओर प्रस्थान किया, जहाँ उसने राजा पोरस को हराया , जो हाथियों पर एक सेना के साथ उसके विरूद्ध लड़ने आया था। वह बेबीलोन लौट आया जहाँ 323 ईसा पूर्व में अरब में प्रस्थान करने की योजना बनाने से कुछ हफ्ते पहले एक शराबी भोज के बाद उसकी मृत्यु हो गई।

उसकी मृत्यु के बाद, उसके राज्य को उसके चार सेनापतियों के बीच विभाजित किया गया था और *"उसके वंश को नहीं"* (दान.11:4) जो दानिय्येल 7 की भविष्यवाणी को पूरा करता है जो यूनानी साम्राज्य को 4 पंखों और चार सिर वाले चीते के रूप में चित्रित करता है। दानिय्येल की दान. 11:5-35 की भविष्यवाणी का ध्यान इस्राएल के उत्तर में सेल्यूसिड्स और मिस्र में टॉलेमी के बीच संघर्ष पर है। यह एंटिओकस एपिफेन्स के साथ समाप्त होता है जिनकी मृत्यु 163 ईसा पूर्व में हुई और जो एक प्रकार के मसीह-विरोधी का एक प्रकार हैं।

सिकंदर के युद्ध के बाद यूनानी युग...

सेल्यूसिड राजा और टॉलेमी के बीच संघर्षों के बारे में एक आश्चर्यजनक विवरण की भविष्यवाणी की गई है । दान. 11:5 कहता है कि उत्तर का पहला राजा (सेल्यूकस निकेटर) का एशिया से भारत तक एक बड़ा प्रभुत्व होगा और *"वर्षों के अंत में"* या *"वर्षों के बाद"* वह दक्षिण के राजा (फिलाडेल्फ़स) उत्तर के राजा (थियस) से मिलेगा और अपनी बेटी (बेरेनिस) को "एक शान्ति की वाचा बाँधने के लिए" देगा (11:6) । थियस को अपनी पूर्व पत्नी लाओडिस को हटाना था और उसके पुत्रों को सिंहासन के किसी भी दावे को त्यागना पडा। जब फिलाडेल्फ़स की मृत्यु हुई, थियस ने लौदीस को वापस स्वीकार कर लिया और उसने बेरेनिस को उसके नवजात बेटे के साथ बाहर निकाल दिया (*"परन्तु उसका बाहुबल बना न रहेगा*) । लौदीस ने बेरेनिस, उसके बेटे और उसके अंगरक्षक (*"उसने उसे मजबूत किया"*) को थियस को जहर देने से पहले मार डाला था (*"और न वह राजा और न उसका नाम रहेगा"*) और सेल्यूकस कैलिनस ने शासन किया।

फिलाडेल्फ़स ने मिस्र में यहूदियों पर कृपादृष्टि के थी और शास्त्रों का यूनानी में अनुवाद करने के लिए 72 यहूदी बुजुर्गों को भुगतान किया था। उसने अपनी सेना में 120,000 सहित सभी यहूदी दासों को मुक्त कराया। उसने महायाजक एलीआजर और मन्दिर को बड़ी-बड़ी भेंटें दीं।

बेरेनिस के भाई (*"उसकी जड़ों में से एक डाल"*), टॉलेमी यूर्जेटस ने उत्तरी राज्य को दजला नदी तक पहुँचा दिया और बंदी, विशाल लूट और **देवता**ओं को वापस लौटा ले आया (11:7-8)। वह मिस्र लौट आया और सेल्यूकस कॉलिनस से भी अधिक *"वर्षों तक बना "* रहा (लगभग 4 वर्ष अधिक)।

कैलिनस (सेराउनस और एंटिओकस महान) के पुत्रों में बड़ा झगडा हो गया, लेकिन सेराउनस की मृत्यु तब हो गई जब वह संभवतः फ्रीगिया में युद्ध में अपने घोड़े से गिर गया । तब "एक" पुत्र, 18 वर्षीय एंटिओकस महान, ने एक बड़ी सेना इकट्ठी की और टॉलेमी फिलोपेटर के विरूद्ध आया, जो उससे गाज़ा के दक्षिण में **राफिया** में 70,000 पैदल सेना और 5,000 घुड़सवार सेना के साथ मिला। एंटिओकस ने 10,300 लोगों को खो दिया और 4,000 को बंदी बना लिया गया।

टॉलेमी फिलोपेटर मिस्र लौट आया और उसका *"दिल फूल उठा"* । उसकी जीवन शैली ने उसके लोगों को नाराज कर दिया और उन्होंने विद्रोह कर दिया।

एंटिओकस महान ने फारस और भारत में अपने उत्तरी राज्य को सुरक्षित करने में वर्षों बिताए जहाँ उसने एक महान सेना इकट्ठी की और 198 ईसा पूर्व में "कुछ वर्षों" (14 वर्ष) के बाद, बहुत ही युवा टॉलेमी एपिफेन्स के खिलाफ आया।

टॉलेमी फिलोपेटर की मृत्यु हो गई थी। टॉलेमी एपिफेन्स ने एंटिओकस महान के खिलाफ अपना जनरल स्कोपस को भेजा लेकिन वह हार गया और अपने 10,000 लोगों के साथ सिडोन भाग गया और उसे वहाँ घेर लिया गया। टॉलेमी ने स्कोपस को बचाने के लिए अपने तीन सर्वश्रेष्ठ जनरलों को उत्तम सैनिकों के साथ भेजा लेकिन वे असफल रहे और मिस्र लौट आए। भोजन ख़त्म होने पर स्कोपस ने आत्मसमर्पण कर दिया।

इस समय रोम पश्चिम से धमकी दे रहा था और इसलिए एंटिओकस महान ने अपनी बेटी क्लियोपेट्रा को युवा टॉलेमी एपिफेन्स को पत्नी के रूप में इस उम्मीद में दिया कि वह उसका समर्थन करेगी "परन्तु वह स्थिर न रहेगी, न उस राजा की होगी" (11:17)। एंटिओकस महान ने टॉलेमी को वापस सीरिया और मिस्र के बीच के उन सभी भूमियों का दहेज भी दिया, जिन पर उसने अभी-अभी विजय प्राप्त की थी, जबकि वह रोमियों से चुनौती का सामना करने के लिए एजियन सागर में "द्वीपों" में गया था। पूरे एशिया पर विजय प्राप्त करने के बाद उसने हेलस्पोंट को पार किया और 192 ईसा पूर्व तक वह कुरिन्थ के उत्तर में ग्रीस में स्थापित हो चुका था। 191 ईसा पूर्व में थर्मोप्लाय (ग्रीस) में एंटिओकस की हार हुई और वह एशिया में इफिसुस को पीछे हट गया। 190 ईसा पूर्व में रोमन राजकुमार स्किपियो ने मैग्नेशिया में एंटिओकस को हराया और उसे हर साल रोम को 1,000 टन चाँदी का भुगतान करने का आदेश दिया गया। वह 3 साल बाद फारस के एलीमाइस में एक मंदिर को लूटते हुए मारा गया और उसके बेटे सेल्यूकस फिलोपेटर ने शासन शुरू किया। वह *"कर वसूलने वाला"* था और यरूशलेम में मंदिर को लूटने के असफल प्रयास के कुछ दिनों बाद , *"वह क्रोध वा युद्ध किए बिना"* जहर देकर मार डाला गया (11:20)। सेल्यूकस फिलोपेटर के भाई एंटिओकस एपिफेन्स ने तब गद्दी संभाली और मैकाबीज़ के खिलाफ लड़ाई जारी रखी।

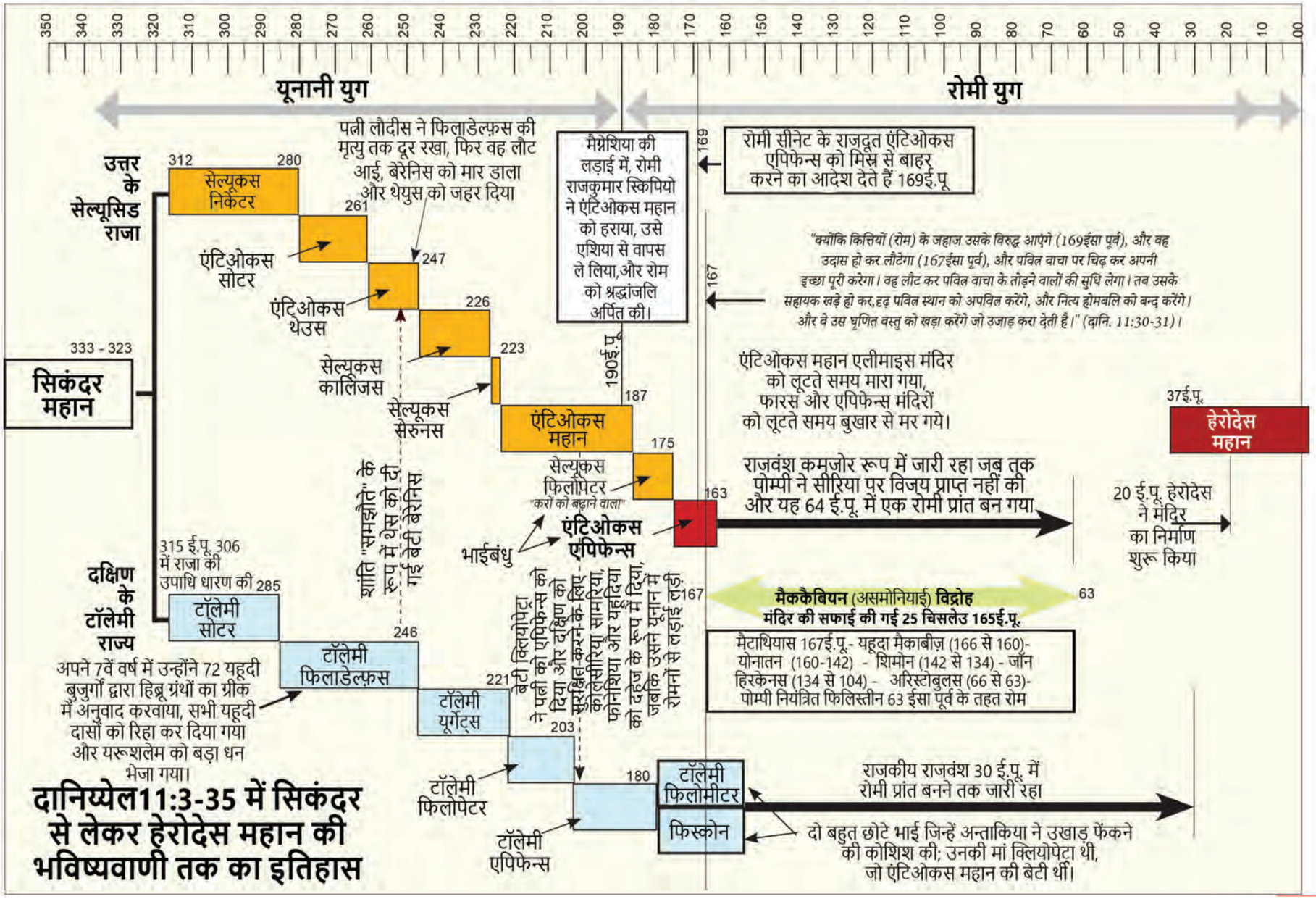
350 340 330 320 310 300 290 280 270 260 250 240 230 220 210 200 190 180 170 160 150 140 130 120 110 100 90 80 70 60 50 40 30 20 10 00
यूनानी युग
रोमी युग
उत्तर के सेल्यूसिड राजा
सिकंदर महान
333 - 323
312
सेल्यूकस निकेटर
280
261
एंटिओकस सोटर
247
एंटिओकस थेउस
226
सेल्यूकस कालिंजस
223
सेल्यूकस सेरुनस
187
एंटिओकस महान
175
सेल्यूकस फिलोपेटर
"करों को बढ़ाने वाला"
भाईबंधु
एंटिओकस एपिफेन्स
163
दक्षिण के टॉलेमी राज्य
315 ई.पू. 306 में राजा की उपाधि धारण की
285
टॉलेमी सोटर
246
टॉलेमी फिलाडेल्फ़स
221
टॉलेमी यूर्गेट्स
203
टॉलेमी फिलोपेटर
180
टॉलेमी एपिफेन्स
टॉलेमी फिलोमीटर
फिस्कोन
शांति "समझौते" के रूप में थेस को दी गई बेटी बेरेनिस
बेटी क्लियोपेट्रा ने पत्नी को एपिफेन्स को दिया और दक्षिण को सुरक्षित करने के लिए - कोलेसीरिया सामरिया, फोनेशिया और यहूदिया को दहेज के रूप में दिया, जबकि उसने यूनान में रोमनों से लड़ाई लड़ी
पत्नी लौदीस ने फिलाडेल्फ़स की मृत्यु तक दूर रखा, फिर वह लौट आई, बेरेनिस को मार डाला और थेयुस को जहर दिया
मैग्नेशिया की लड़ाई में, रोमी राजकुमार स्किपियो ने एंटिओकस महान को हराया, उसे एशिया से वापस ले लिया,और रोम को श्रद्धांजलि अर्पित की।
190ई.पू.
169
रोमी सीनेट के राजदूत एंटिओकस एपिफेन्स को मिस्र से बाहर करने का आदेश देते हैं 169ई.पू
167
"क्योंकि कित्तियों (रोम) के जहाज उसके विरुद्ध आएंगे (169ईसा पूर्व), और वह उदास हो कर लौटेगा (167ईसा पूर्व), और पवित्र वाचा पर चिढ़ कर अपनी इच्छा पूरी करेगा। वह लौट कर पवित्र वाचा के तोड़ने वालों की सुधि लेगा। तब उसके सहायक खड़े हो कर,दृढ़ पवित्र स्थान को अपवित्र करेंगे, और नित्य होमबलि को बन्द करेंगे। और वे उस घृणित वस्तु को खड़ा करेंगे जो उजाड़ करा देती है।" (दानि. 11:30-31)।
एंटिओकस महान एलीमाइस मंदिर को लूटते समय मारा गया, फारस और एपिफेन्स मंदिरों को लूटते समय बुखार से मर गये।
37ई.पू.
हेरोदेस महान
राजवंश कमजोर रूप में जारी रहा जब तक पोम्पी ने सीरिया पर विजय प्राप्त नहीं की और यह 64 ई.पू. में एक रोमी प्रांत बन गया
20 ई.पू. हेरोदेस ने मंदिर का निर्माण शुरू किया
मैककैबियन (असमोनियाई) विद्रोह
मंदिर की सफाई की गई 25 चिसलेउ 165ई.पू.
63
मैटाथियास 167ई.पू.- यहूदा मैकाबीज़ (166 से 160)- योनातन (160-142) - शिमोन (142 से 134) - जॉन हिरकेनस (134 से 104) - अरिस्टोबुलस (66 से 63)- पोम्पी नियंत्रित फिलिस्तीन 63 ईसा पूर्व के तहत रोम
अपने 7वें वर्ष में उन्होंने 72 यहूदी बुजुर्गों द्वारा हिब्रू ग्रंथों का ग्रीक में अनुवाद करवाया, सभी यहूदी दासों को रिहा कर दिया गया और यरूशलेम को बड़ा धन भेजा गया।
राजकीय राजवंश 30 ई.पू. में रोमी प्रांत बनने तक जारी रहा
दो बहुत छोटे भाई जिन्हें अन्ताकिया ने उखाड़ फेंकने की कोशिश की; उनकी मां क्लियोपेट्रा थी, जो एंटिओकस महान की बेटी थी।
दानिय्येल11:3-35 में सिकंदर से लेकर हेरोदेस महान की भविष्यवाणी तक का इतिहास

एंटिओकस एपिफेन्स से हेरोदेस तक मैकाबीन युद्ध – 167 ईसा पूर्व से 40 ईसा पूर्व।

सेल्यूसिड राजा एंटिओकस एपिफेन्स के दिनों में, अस्मोनियन (मैकाबीन) परिवार के नेतृत्व में स्वतंत्रता के लिए एक यहूदी आंदोलन शुरू हुआ, जिसका मुखिया मथाथियास नाम का एक याजक था जिसके पाँच बेटे थे। मथाथियास मंदिर में याजक सेवा से सेवानिवृत्त होकर यरूशलेम के पास मोदिन के छोटे से शहर में रहते थे।

एंटिओकस एपिफेन्स ने यरूशलेम में मंदिर को लूट लिया और होमबलि की वेदी पर एक मूर्ति खड़ी कर दी। उसने वेदी पर सूअर की बलि दी, मंदिर में सूअर का सूप छिड़का, और माँग की कि उसके राज्य के सभी लोग उसके देवता की पूजा करें। व्यवस्था की प्रतियाँ जला दी गईं और खतना प्रतिबंधित कर दिया गया। मथाथियास ने मूर्तिपूजक देवता को बलि चढ़ाने से इनकार कर दिया और जब उसने देखा कि एक यहूदी बलिदान के लिए आगे बढ़ रहा है, तो उसे मार डाला, और उस वेदी को तोड़ दिया। इस घटना ने असम्मोनियों के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत की जो हेरोदेस महान के समय में रोमन युग तक चला; 167 ईसा पूर्व से 40 ईसा पूर्व की अवधि तक जब हेरोदेस ने शासन करना शुरू किया।

जब मथाथियास की मृत्यु हुई तो उसके तीसरे पुत्र यहूदा मैकाबियस ने सैन्य नेतृत्व संभाला। यहूदी विद्रोह मुख्य रूप से मंदिर की आराधना में अन्यजातियों के हस्तक्षेप और व्यवस्था के अनुसार जीने के अधिकार की प्रतिक्रिया थी। एंटिओकस ने मिस्र पर तीन आक्रमण किए और एक अवसर पर जब वह सीरिया लौट रहा था तो उसने 40,000 यहूदियों को मार डाला और 40,000 को बंदी बना लिया ।

163 ईसा पूर्व में फारस में मंदिरों को लूटने के लिए जाने के दौरान एंटिओकस ने यहूदी विद्रोह को खत्म करने के लिए लुसियास को भेजा। यह सुनने के बाद कि लुसियास , यहूदिया में यहूदा मैकाबीस से हार गया था, वह बीमार पड़ गया और पछतावे से भरा हुआ कह कर मर गया कि,

"अब मैं उन बुराइयों को स्मरण करता हूं जो मैं ने यरूशलेम में की थीं... और देखो, मैं बड़े शोक के साथ एक पराए देश में नाश हुआ जाता हूं" (1 मैकाबीस 6:12-13)।

163 ईसा पूर्व में लिसियास ने यहूदा की अनुपस्थिति में यरूशलेम को घेर लिया और कई यहूदियों ने शांति के लिए मुकदमा दायर किया। निकानोर के नेतृत्व में एक सेना को यहूदा और उसकी सेना को नष्ट करने के लिए भेजा गया था, लेकिन निकानोर को 161 ईसा पूर्व में दो निर्णायक युद्धों में कैपरास्लामा और अदासा में पराजित किया गया था, लेकिन बैकाइड्स ने अपने आदमियों की केवल एक छोटी सी कंपनी के साथ यहूदा को पकड़ लिया और 161 ईसा पूर्व में एलीसा में युद्ध में उसकी मृत्यु हो गई। .

मथाथियास का सबसे छोटा बेटा जोनाथन ने नेतृत्व संभाला और 144 ईसा पूर्व तक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए लड़ाई जारी रखी, जब तक कि वह ट्राइफॉन द्वारा पकड़ा नहीं गया और बाद में उसे मार डाला गया।

मथाथियास का अंतिम जीवित पुत्र साइमन ने 143 ईसा पूर्व में रोम के पक्ष को प्राप्त करने के लिए यहूदियों की स्वतंत्रता पर समझौता कर लिया, जो यूनान के राज्य के पतन के साथ ही प्रमुख विश्व शक्ति बन रही थी। 135 ईसा पूर्व में साइमन और उसके दो बेटों की हत्या कर दी गई।

यूहन्ना हिरकेनस राष्ट्र का नेतृत्व करने वाला अगला अगुवा था लेकिन इसके तुरंत बाद, यहूदिया पर फिर से एक सेल्यूसिड राजा द्वारा आक्रमण किया गया और यरूशलेम को घेर लिया गया। यहूदियों ने आत्मसमर्पण कर दिया और छुटकारे के पैसे देने पर सहमत हुए लेकिन बाद में सेल्यूसिड जुए को हटा दिया। हिरकेनस ने दाऊद की कब्र खोली और अपनी सेना के लिए भाड़े के सैनिकों को रखने में सक्षम हुआ। उसने और उसके पुत्रों ने सिकंदर महान के दिनों में गरिज़िम पहाड़ पर बने सामरी मंदिर को नष्ट कर दिया।
बाद में हेरोदेस महान ने इसे फिर से बनवाया। इस प्रकार यहूदी अपनी स्वतंत्रता को बनाए रखने में सक्षम हुए जब तक कि **रोमन जनरल पोम्पी ने 63 ईसा पूर्व में यरूशलेम पर कब्जा नहीं कर लिया।**

एक इदुमाई (एदोमी) हेरोदेस को 47 ई.पू. में मार्क एंटनी द्वारा गलील का राज्यपाल बनाया गया। और रोमी महासभा उसे 40 ईसा पूर्व में यहूदिया का राजा बनाने के लिए राजी हुए। अंतिम अस्मोनियाई अगुवा, एंटिगोनस ने हेरोदेस को तीन साल तक गद्दी से दूर रखा लेकिन हेरोदेस ने अंततः राजा के रूप में अपने अधिकार का दावा किया और 37 ईसा पूर्व में यरूशलेम पर कब्जा कर लिया। रोमियों द्वारा एंटिगोनस का सिर कलम कर दिया गया था। जोसेफस कहते हैं:
"असमोनियों की सरकार की स्थापना के 126 वर्ष बाद वह समाप्त हो गई "(*यहूदियों की पुरावशेष पुस्तक* XIV, Ch.XVI)।

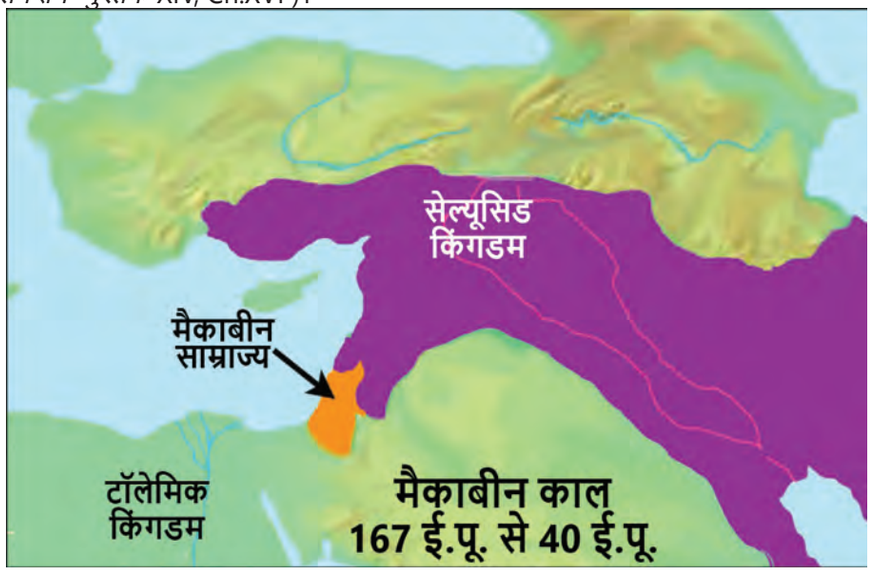

रोमी साम्राज्य - अन्यजातियों के समय का अंतिम चरण

"अन्यजातियों के समय" में चौथा और अंतिम राज्य रोमी साम्राज्य है और मसीह-विरोधी अंतिम रोमी हाकिम है। ऐतिहासिक रूप से, पिछले 2,000 वर्षों से रोम का अस्तित्व कभी समाप्त नहीं हुआ है; उसने केवल अपना रूप बदल लिया है।

रोमी साम्राज्य राजनीतिक और धार्मिक दोनों है। जिस तरह नबूकदनेस्सर ने सभी लोगों को नियंत्रित करने के लिए अपनी सोने की मूर्ति का इस्तेमाल किया, उसी तरह रोम ने अपने लोगों को नियंत्रित करने के लिए मौत की पीड़ा की पूजा का इस्तेमाल किया। जब कॉन्स्टेंटाइन ने रोमी साम्राज्य को *"ईसाई"* घोषित किया, तो यह केवल राजनीतिक कारणों से था क्योंकि यह अनुमान लगाया गया था कि भूमध्य सागर के आसपास 70 लाख ईसाई थे। फिर भी ईसाई जगत भ्रष्ट हो गया और *"भेद - बड़ा बेबीलोन पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता"* बन गया (प्रका.17:5)। बेबीलोन की मूर्तिपूजा ने रोमी कलीसिया में प्रवेश किया और जब रोम पर जर्मन जनजातियों ने कब्जा कर लिया, तो पोप ने शारलेमेन, फ्रैंक्स के राजा को (जर्मन), पवित्र रोमी साम्राज्य के सम्राट का ताज पहनाया (800 ईसवीं)।

पोप ने अपनी धर्मनिरपेक्ष बाजू के माध्यम से शासन किया: पृथ्वी के राजा जो पोप के अधीन थे ।

पवित्रशास्त्र इंगित करता है कि रोमी साम्राज्य विघटन के एक चरण से गुजरेगा और इसकी तुलना लोहे और आंशिक मिट्टी से की गई है; *"आंशिक रूप से मजबूत और आंशिक रूप से निर्बल होगा"* जैसा कि नबूकनेज़र की मूर्ति में देखा गया है (दान. 2:42)।

मसीह के स्वर्ग से आने से पहले रोमी साम्राज्य के अंतिम चरण में अध्याय 2 में मूर्ति के दस पंजों द्वारा और अध्याय 7 में चौथे जानवर पर दस सींगों के प्रतीक के रूप में दस विभाजन होंगे।

"उन दस सींगों का अर्थ यह है, कि उस राज्य में से दस राजा उठेंगे, और उनके बाद उन पहिलों से भिन्न एक और राजा उठेगा, जो तीन राजाओं को गिरा देगा... और समयों और व्यवस्था के बदल देने की आशा करेगा, वरन साढ़े तीन काल तक वे सब उसके वश में कर दिए जाएंगे। " (साढ़े तीन वर्ष) (दानि. 7:24-25)।

"छोटा सींग" (दानि. 7:8) जो उठता है, वह मसीह-विरोधी व्यक्ति है जिसका 7 साल के क्लेश के अंतिम 42 महीनों के लिए संपूर्ण वैश्विक नियंत्रण होगा (प्रका. 13:5)। परन्तु मसीह "महाक्लेश के तुरन्त बाद" आएगा (मत्ती 24:29) और वह यरूशलेम से 1,000 वर्षों तक राज्य करेगा।

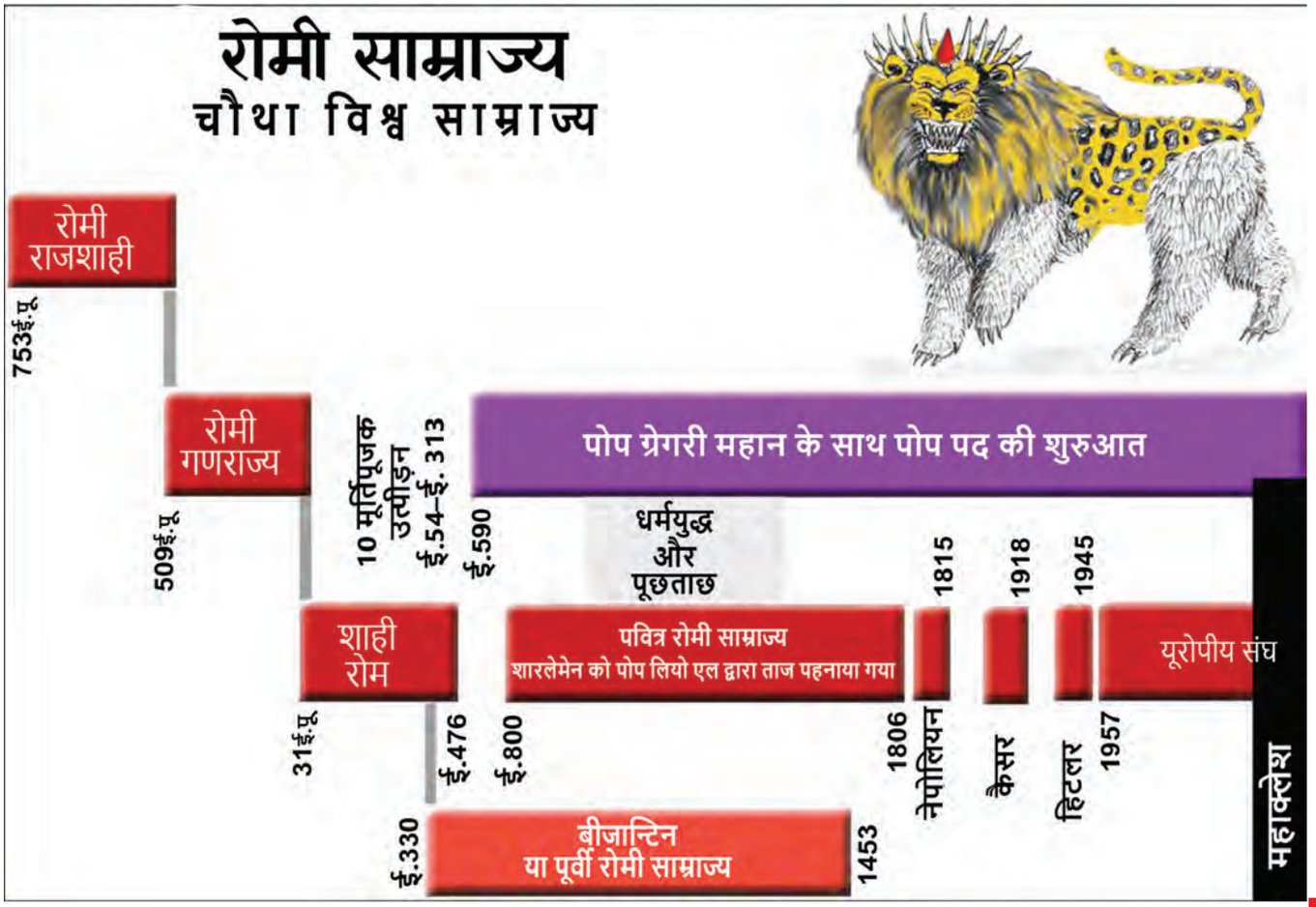

यहेजकेल का परिचय

ऐतिहासिक संदर्भ की स्पष्ट समझ रखने के लिए बाइबल की पुस्तकों का अध्ययन करने का बड़ा महत्व है। भविष्यवाणियों को उस समय घटित होने वाली घटनाओं के प्रकाश में समझने की आवश्यकता है। बहुत बार भविष्यवाणियाँ जो इतिहास में पहले ही पूरी हो चुकी हैं, भविष्य पर लागू की गई हैं। उस समय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को अच्छी तरह समझने से ऐसी गलतियों से बचा जा सकता है।

यहेजकेल एक युवा याजक था जिसे बेबीलोन में बंदी बना लिया गया था जब नबूकदनेस्सर दूसरी बार यरूशलेम आया था जब दुष्ट राजा यहोयाकीम मारा गया था और उसके पुत्र यहोयाकीन को बंदी बनाकर बेबीलोन ले जाया गया था।

यहोयाकीन को ले जाने के बाद, उसके चाचा सिदकिय्याह को राजा बनाया गया और उसने बेबीलोन को कर दिया। अपने चौथे वर्ष में, सिदकिय्याह ने बेबीलोन का दौरा किया (यिर्म.51:59) लेकिन यरूशलेम लौटने के बाद उसने झूठे भविष्यवक्ताओं की बात सुनी, जिन्होंने यह कहते हुए यहोवा के वचन को बोलने का दावा किया कि दो साल के भीतर बेबीलोन नष्ट हो जाएगा और बेबीलोन के सभी बंधुएँ लौट आयेंगे।

यिर्मयाह ने देश में भविष्यवाणी की थी जबकि यहेजकेल ने बेबीलोन में भविष्यवाणी की थी और लोगों को बेबीलोन के राजा का विरोध न करने के लिए कहा गया था क्योंकि परमेश्वर ने ठान लिया था कि बेबीलोन साम्राज्य 70 वर्षों तक जारी रहेगा (यिर्मयाह 25:11-12; 29:10) और अभी भी नबूकदनेस्सर द्वारा यहूदिया पर तीसरा आक्रमण होगा, जो शहर और मंदिर को नष्ट कर देगा; कई मारे जाएँगे या बंदी बना लिए जाएँगे; राजा सिदकिय्याह को अंधा कर दिया जाएगा और उसे बेबीलोन ले जाया जाएगा जहां जेल में उसकी मृत्यु हो जायेगी।

भविष्यवाणी शुरू करने से पहले यहेजकेल को परमेश्वर ने चेतावनी दी थी, कि यहूदी उसकी नहीं सुनेंगे या उसके संदेश पर ध्यान नहीं देंगे (यहेजकेल 2 और 3 देखें)।

हर बार जब यहोवा का वचन यहेजकेल के पास पहुंचा, तो इसकी तारीख यहोयाकीन की बंधुआई से ली गई थी; वह दूसरी गुलामी (593 ईसा पूर्व) के 5वँ वर्ष में शुरू हुआ और 25वँ वर्ष (575 ईसा पूर्व) में मिस्र के विषय में एक संक्षिप्त भविष्यवाणी के साथ समाप्त हुआ।

अंत के दिनों में इस्राएल के विषय में अधिकांश भविष्यवाणियाँ अध्याय 34 से 39 में दी गई थीं, **यहोयाकीन की बंधुआई** के 12वें वर्ष में, जो यरूशलेम के नष्ट होने के ठीक एक वर्ष बाद थी (यहेजकेल 33:21)। बंधुआई के 25वें वर्ष में, यहेजकेल ने मसीह के भविष्य के राज्य के बारे में भविष्यवाणी की थी जिसमें मंदिर का निर्माण किया जाएगा और आराधना कैसे की जाएगी, इसके बारे में स्पष्ट रूप से बहुत कुछ बताया। दाऊद प्रधान होगा और यहोवा उपस्थित रहेगा (यहेजकेल 34:23)।

जब मसीह राज्य करेगा, तब इस्राएल के सभी गोत्रों को उनके देश में फिर से बसाया जाएगा और परमेश्वर की महिमा दिखाई देगी। यरूशलेम का नाम बदलकर *यहोवा-शम्मा* रखा जाएगा , जिसका अर्थ है, *"यहोवा वहाँ है"* (यहेजकेल 48:35)।

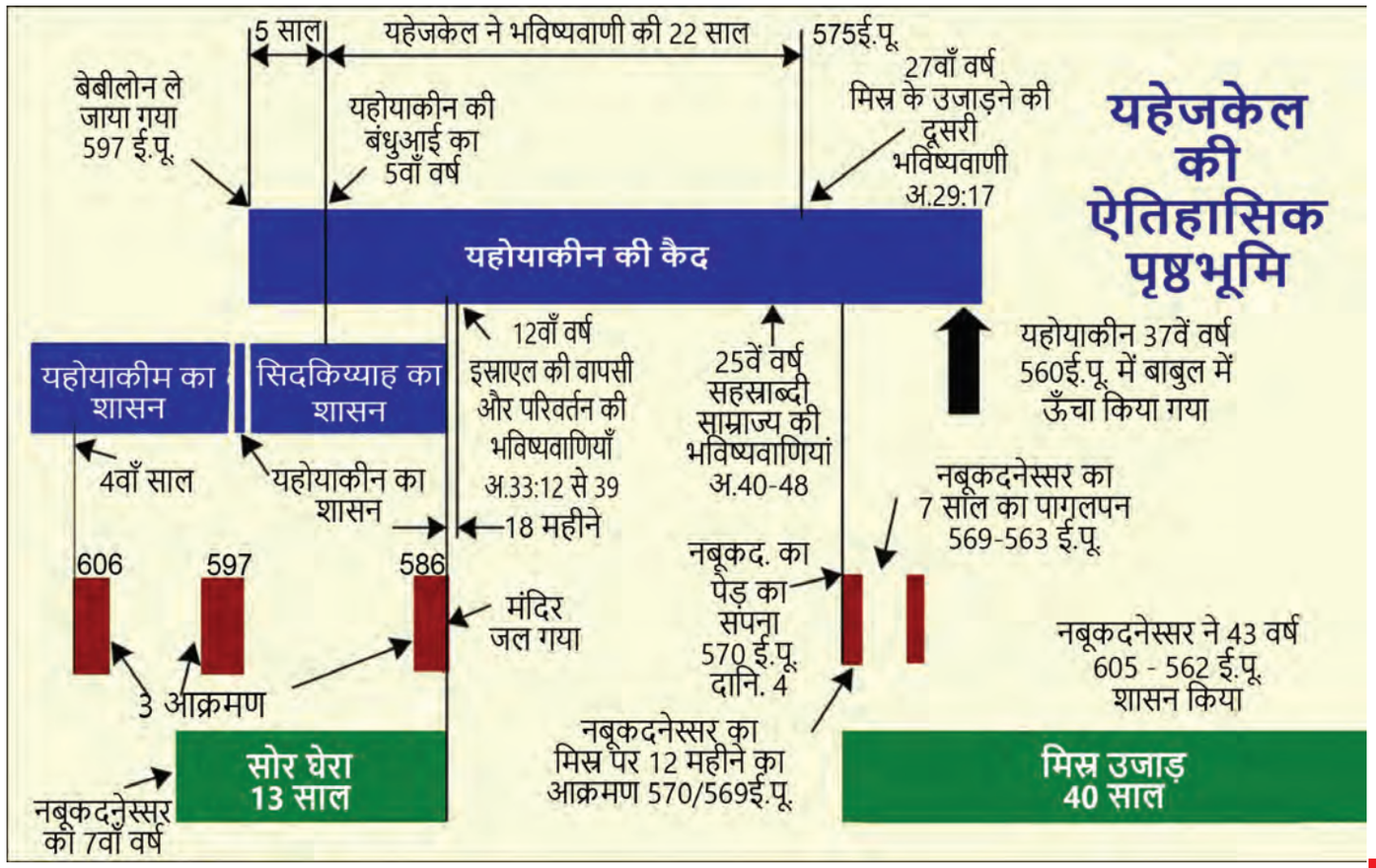

यहेजकेल की भविष्यवाणी का सारचरण

दानिय्येल ने *"अन्यजातियों के समय"* के बारे में भविष्यवाणी की थी, लेकिन यहेजकेल ने इस्राएल के विषय में भविष्यवाणी की थी (यहेज. 3:4-11)। संपूर्ण पुस्तक को इस्राएल से यहोवा की महिमा की उपस्थिति के हटाये जाने से लेकर (यहेज. 1 से 11) यहोवा की महिमा की उपस्थिति की वापसी के रूप में सारांशित किया जा सकता है (यहेज. 44:1-7)।

परमेश्वर की महिमा निवासस्थान से 586 ईसा पूर्व में चली गई थी और यरूशलेम के पूर्व में जैतून के पहाड़ से निकल गई थी। यह पूर्व से वापस आकर सहस्त्राब्दी निवासस्थान में निवास करेगी, जिसे यहेजकेल अध्याय 40 से 42 में दिए गए निर्देशों के अनुसार बनाया गया है।

अध्याय 31 से 39 अपने अविश्वास में रहते हुए ही भूमि पर इस्राएल के लौटने और प्रभु के पास उसकी वापसी के बारे में बहुत अधिक विवरण प्रदान करते हैं जब उस पर रूस (मागोग), तुर्की (तोगर्माह का घर), ईरान (फारस), लीबिया और सूडान (इथियोपिया) (यहेज़. 38 और 39) द्वारा उत्तर से आक्रमण किया जाता है।

36 वें अध्याय में उनके अविश्वास में वापसी को देखी जा सकती है जहाँ परमेश्वर कहता है:

"मैं तुम को जातियों में से ले लूँगा, और देशों में से इकट्ठा करूँगा; और तुम को तुम्हारे निज देश में पहुँचा दूँगा। मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूँगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे; और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूँगा। मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा..." ***परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है,*** *तुम जान लो कि मैं इस को तुम्हारे निमित्त नहीं करता ...लज्जित हो" (यहेजकेल 36:25 - 26,32)।*

सूखी हड्डियों की घाटी का दर्शन (अध्याय 37:1-14) इस्राएल की पुनर्स्थापना के तीन चरणों को इंगित करता है। जब यहेजकेल ने उन हड्डियों से भविष्यवाणी की जो *"इस्राएल का पूरा घराना"* था, तो वे 1897 में पहली ज़ायोनिस्ट कांग्रेस में एक साथ आए । जब उसने हड्डियों से भविष्यवाणी की तो उन्होंने नस और माँस धारण कर लिया, लेकिन उनका कोई आत्मिक जीवन नहीं था, ठीक उसी तरह जैसे 1948 में राष्ट्र का गठन यीशु मसीह को मसीहा और राजा के रूप में स्वीकार किए बिना किया गया था। अंत में, यहेजकेल ने उन शवों से भविष्यवाणी की, और परमेश्वर का आत्मा उनमें समा गया और वे एक बड़ी जीवित सेना के रूप में खड़ी हो गई। यह *"याकूब के क्लेश के समय"* में घटित होगा जब इस्राएल का नया जन्म होगा (यिर्म. 30:7)।

इस अद्‌त परिवर्तन का समय जब *"सारा इस्राएल बच जाएगा "* (रोमियों 11:26) महाक्लेश के **पहले भाग में होगा जब रूस अपने इस्लामी सहयोगियों के साथ देश में जाने में उनकी अगुवाई करेगा।** तब इस्राएल *"उस दिन से आगे"* यहोवा को खोजेगा (यहेज.39:22) और आक्रमणकारियों को ईश्वरीय हस्तक्षेप से नष्ट कर दिया जाएगा; प्रकाशितवाक्य अध्याय 6:12 में वर्णित ओलों, महामारी, फूट और भूकम्प के द्वारा। सेना का केवल छठा हिस्सा ही साइबेरिया (योएल 2:20) में भागकर बच पाएगा और मागोग (रूस) की भूमि को जला दिया जाएगा (यहेजकेल 39:6)।

इस्राएल को छुड़ाए गए लोगों के रूप में फिर से इकट्ठा किया जाएगा और वे देश में मसीहा की सेवा करेगा जब मसीह यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन से 1,000 वर्षों तक राज्य करता है।

"और उन से अपना मुँह फिर कभी न मोड़ लूंगा, क्योंकि मैं ने इस्राएल के घराने पर अपना आत्मा उण्डेला है, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है" (यहेजकेल 39:29)।

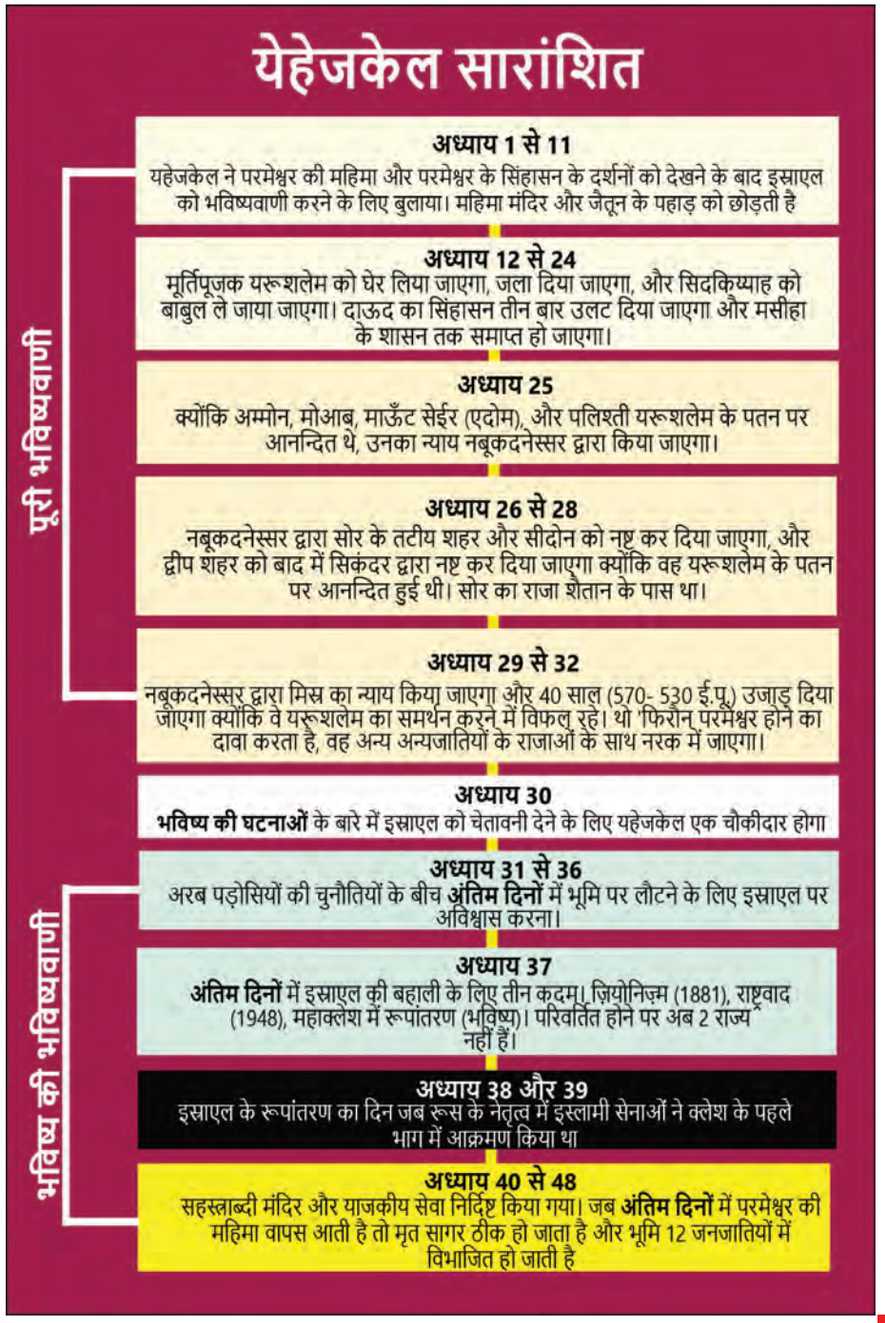

युद्ध जो इस्राएल को पश्चाताप की ओर ले आता है - यहेजकेल 38 और 39

यहेजकेल अध्याय 38 और 39 सात साल के क्लेश के पहले भाग में इस्राएल पर आक्रमण का वर्णन करते हैं जब इस्राएल यहोवा की ओर मुड़ता है। यह पहले का आधा भाग होना चाहिए, क्योंकि दूसरे हिस्से के दौरान, सभी इस्राएल *"परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं"*, और यीशु मसीह की गवाही देने में स्थिर है" (प्रकाशितवाक्य 12:17)। साथ ही, यह आक्रमण स्वर्गारोहण के बाद होना चाहिए क्योंकि, यदि यह स्वर्गारोहण से पहले होता कि *" सारा इस्राएल बच जाएगा "* (रोमियों 11:26), तो यहूदी सभी कलीसिया का हिस्सा होते और सभी का स्वर्गारोहण हो जाता। 70वें "सप्ताह" में अपनी भूमिका निभाने के लिए कोई यहूदी नहीं बचेगा जो कि इस्राएल का है।

इस आक्रमण को सहस्त्राब्दी राज्य के अंत में गोग द्वारा किए गए किसी अन्य आक्रमण के साथ भ्रमित होकर नहीं देखना चाहिए (प्रका. 20:8)। पहले आक्रमण में एक का छठा भाग बच निकलता है (यहेजकेल 39:2)

महाक्लेश के अंत में हर-मगिदोन के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए क्योंकि केवल तुर्की, ईरान, लीबिया और सूडान रूस के साथ जुड़ते हैं जबकि हर-मगिदोन में सभी राष्ट्र शामिल होते हैं (योएल 3:2)। लेकिन 1,000 वर्षों के अंत में, **कोई भी नहीं बच पाएगा।**

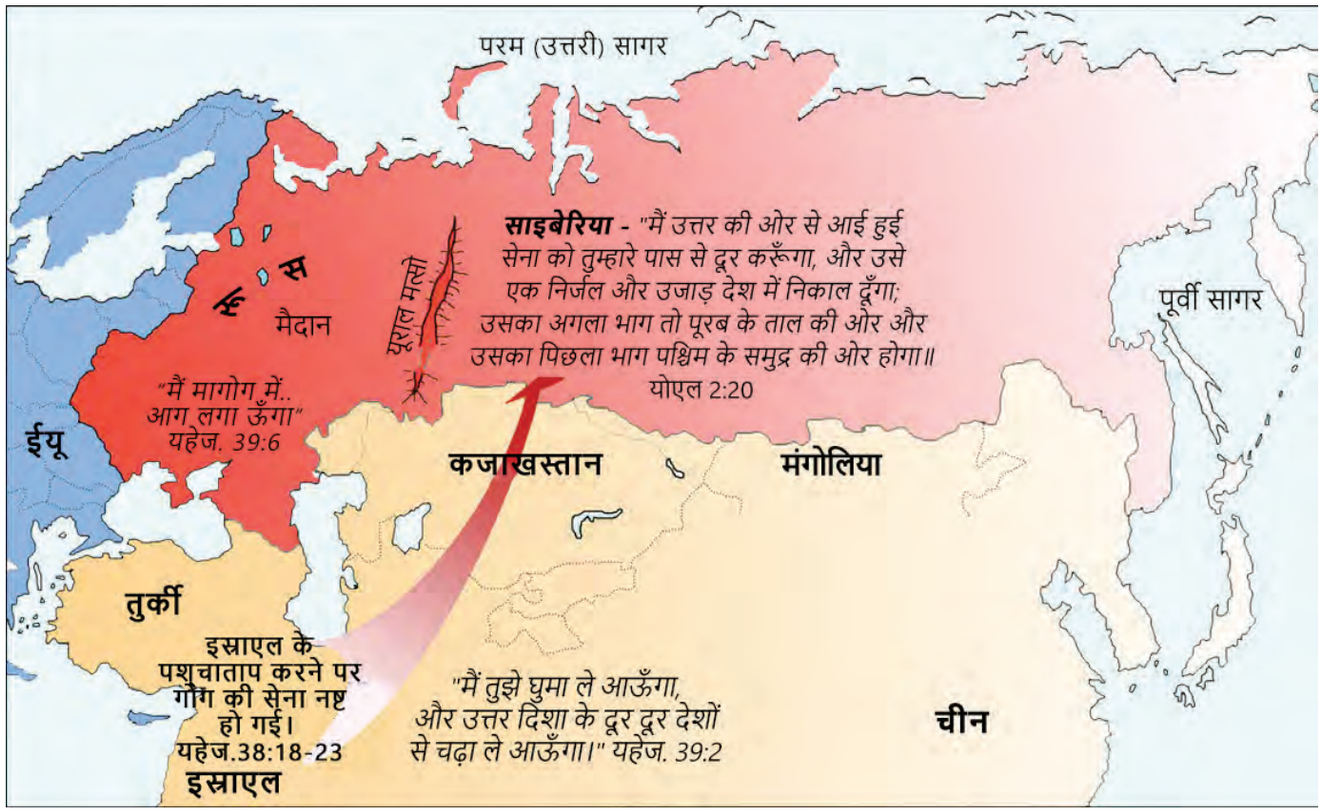

रूसी इस्लामी सेनाएं इस्राएल में कब प्रवेश करेंगी? जब इस्राएल "आखिरी दिनों" में सुरक्षित निवास कर रहा होगा (यहेजकेल 38:8)। वह वाचा जिसे बहुत से लोग मसीह-विरोधी के साथ बाँधते हैं, वही 7 वर्षों के आरम्भ में इस्राएल की सुरक्षा की गारंटी देगी (दानिय्येल 9:27)।

सेनाएँ कहाँ से आएँगी? जोसीफस कहता है कि मागोगाइट्स "यूनानियों द्वारा सीथियन कहलाए जाते थे" और हम जानते हैं कि वे काला सागर के उत्तरी तट पर रहते थे। गोग अपने *"उत्तर दिशा के दूर दूर स्थानों से आएगा"* से आता है (यहेजकेल 38:15) तोगर्मा *"उत्तर दिशा के दूर दूर देशों"* से है (यहेजकेल 38:6)।

आक्रमण को *"तर्शिश के व्यापारी अपने देश के सब जवान सिंहों समेत"* (ब्रिटेन और अमेरिका) और *"शबा और ददान"* – सऊदी अरब (यहेजकेल 38:13) द्वारा चुनौती दी जायेगी।

1,000 साल का सहस्त्राब्दी राज्य

जब मसीह वापस आएगा तो वह राजाओं के राजा के रूप में पृथ्वी पर राज्य करने के लिए आएगा (प्रका. 19:16) । जो जातियाँ महाक्लेश से बच निकली हैं, वे अलग हो जाएँगी जैसे भेड़ें बकरियों से अलग हो जाती है। भेड़ (बचाए हुए), राज्य में प्रवेश करेंगी और बकरियाँ, (मसीह-विरोधी और वे सभी जिन्होंने उसकी छाप प्राप्त की थी), *"अनन्त आग"* में डाली जाएँगी (मत्ती 25:31-46)।

सभी इस्राएलियों को देश में इकट्ठा किया जाएगा (यहेजकेल 39:28; मत्ती 24:31) जो 12 गोत्रों में विभाजित किया जाएगा और दाऊद उनके बीच प्रधान होगा (यहेज. 48:1-35)। वहाँ मसीह की उपस्थिति होगी और परमेश्वर की महिमा यरूशलेम को प्रज्वल्लित करेगी (यशायाह 60:1-3, 19-20)।

यहेजकेल अध्याय 40 से 42 में दिए गए निर्देशों के अनुसार एक सहस्राब्दी मंदिर का निर्माण किया जाएगा।

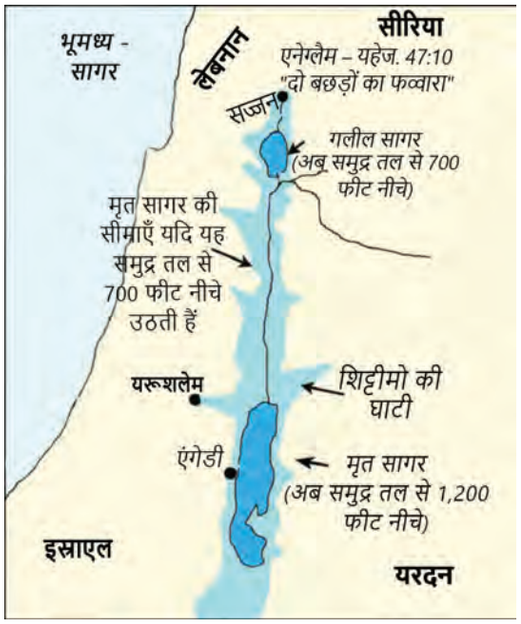

कलवरी में मसीह के बलिदान की यादगार में बलिदान चढ़ाया जाएगा । शैतान को 1,000 वर्ष के लिए बांधा जाएगा और पूरे विश्व में शांति होगी; लोग अपनी तलवारें पीट कर हल के फाल और अपने भालों को हंसिया बनाएँगे (यशायाह 2:4)।

इस्राएल की भूमि "आशीषों की वर्षा" प्राप्त करेगी (यहेजकेल 34:26); "मैदान के वृक्ष फलेंगे और भूमि अपनी उपज उपजाएगी... और वे अपने देश में निडर रहेंगे" (यहेज. 34:27)।यशायाह ने लिखा:

> *"अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाडिय़ों से अधिक ऊँचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा के समान उसकी ओर चलेंगें। और बहुत देशों के लोग आएँगे, और आपस में कहेंगे: आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएँ; **तब वह हम को अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे। क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा।*** (यशायाह 2:2-3)।

ताजे पानी का एक सोता मंदिर के नीचे से निकलकर मृत सागर में प्रवाहित होगा, जिससे उसका जल स्तर ऊपर उठ जाएगा और मछलियां मृत सागर में पकड़ी जाएंगी (यहेज 47; योएल 3:18; ज़कर्याह 14:8)

जानवरों का साम्राज्य शांति से रहेगा और अदन में लगाया गया श्राप हटा लिया जाएगा:

> *"तब भेडिय़ा भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा रहेगा, और बछड़ा और जवान सिंह और पाला पोसा हुआ बैल तीनों इकट्ठे रहेंगे, और एक छोटा लड़का उनकी अगुवाई करेगा। गाय और रीछनी मिलकर चरेंगी, और उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे; और सिंह बैल की नाईं भूसा खाया करेगा। दुध पिने बच्चा करैत के बिल पर खेलेगा, और दूध छुड़ाया हुआ लड़का नाग के बिल में हाथ डालेगा। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दु:ख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि **पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है"*** (यशायाह 11:6-9)।

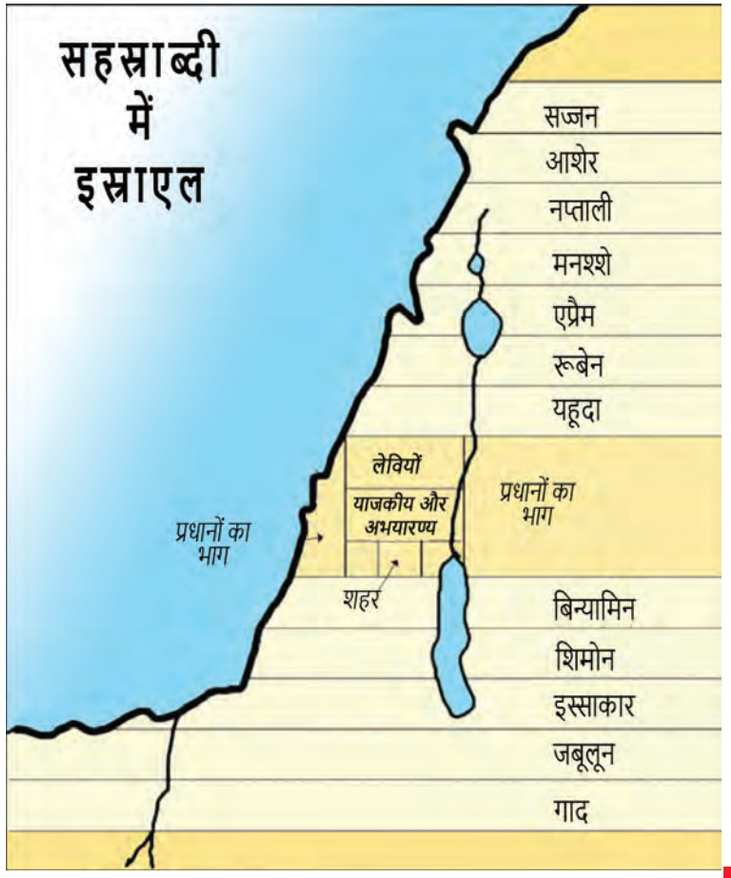

सहस्त्राब्दी राज्य में आराधना
यहेजकेल 40-48

पुराने नियम के बलिदान कभी भी "पापों को दूर नहीं कर सकते" थे (इब्रानियों 10:4) लेकिन उन्होंने मसीह के बलिदान की ओर इशारा किया। सहस्राब्दी मंदिर में मसीह के बलिदान के स्मारक के रूप में सहस्राब्दी बलिदानों को दिया जाएगा जिसके तीन भाग इस प्रकार हैं:

1. **वह घर** जिसमें एक महापवित्र स्थान, एक पवित्र स्थान और एक प्रवेश द्वार है। एक सर्पिल सीढ़ी के साथ 3 मंजिलों में 30 कमरे हैं। कई कमरे याजकों के कपड़ों को इकट्ठा रखेंगे, कपड़े बदलने के कमरे और शायद घर के उपकरण या सामग्रियों जैसे कि धूप, दीपक के लिए तेल, और अभिषेक के तेल को बनाने के लिए इस्तेमाल करेंगे।

2. एक **भीतरी आँगन** है, जहां केवल सादोक के पुत्र याजक के सन के वस्त्र और सन की जांघिया पहिने हुए सेवा कर सकते हैं। भीतरी आँगन से बाहर निकलने से पहले इन पवित्र वस्त्रों को हटा देना चाहिए। केवल सादोक का याजकीय वंश ही मन्दिर की सेवा में परमेश्वर के निकट आ सकता है। परमेश्वर ने पीनहास के साथ जो सदा की वाचा बान्धी है, उसके अनुसार दाऊद के द्वारा प्रधान याजक के रूप में सादोक को नियुक्त किया गया था। पेज 17 देखें।

याजकों को अपने करीबी परिवार के सदस्यों के अलावा अन्य लोथों को नहीं छूना चाहिए, केवल कुंवारी या याजकों की विधवाओं से ही शादी करनी चाहिए, बाल कटे हुए होने चाहिए और सेवा करते समय दाखमधु नहीं पीना चाहिए। वे पवित्र स्थान में बलिदान और समर्पित की गई चीजें खा सकते हैं।

3. **बाहरी आँगन** "लोगों का आँगन" है जो उत्तरी द्वार से प्रवेश करेंगे और दक्षिणी द्वार से निकलेंगे या दक्षिणी द्वार से प्रवेश करेंगे और उत्तरी द्वार से निकल जायेंगे। लोग भीतरी आँगन के पूर्वी द्वार के सामने आराधना करेंगे, जहाँ गायक और याजक संगीत वाद्ययंत्र के साथ मौजूद हैं। 10,000 लोगों के लिए वहाँ जगह है।

अन्य याजक जिनके पुरखे पिछले वर्षों में भटक गए थे, वे फाटकों का पहरा देने वाले होंगे, वे होमबलि पशु का वध करेंगे और "भवन के टहलुए" होंगे (यहेजकेल 44:11-14)।

आँगनों को 6 हाथ (3 मीटर) ऊँची दीवार से अलग किया गया है और आंतरिक आँगन में जमीनी स्तर बाहरी आँगन से 8 कदम (1.5 मीटर) ऊंचा है।

बाहरी प्रांगण के पूर्वी द्वार को सब्त के दिन को छोड़कर बंद रखा जाएगा जब प्रधान (दाऊद) प्रवेश करेगा और निकलेगा। इसी द्वार से परमेश्वर की महिमा लौटती है (यहेजकेल 43:2-7)।

बाहरी आँगन की परिधि के आसपास के कई कमरों के विभिन्न उपयोग हैं, जिनमें बलि देने के लिए सामग्री और उपकरणों का भंडारण, और भेंट की रोटी बनाना शामिल है। एक 50 हाथ (25 मीटर) चौड़ा खुला स्थान, बाहरी दीवार के आसपास है।

यहेजकेल ने मंदिर की चौखट के नीचे से पानी का एक सोता निकलते देखा और उसे बाहरी आँगन के माध्यम से दक्षिण की ओर की वेदी के ऊपर से बहते हुए और पूर्वी द्वार के पास से निकलकर मृत सागर में बहते हुए देखा जिससे कि मृत सागर के पानी की गहराई बढ़ती जाती है जब तक कि इसकी ऊँचाई एनग्लैम ("दो बछड़ों का फव्वारा") तक नहीं उठी जो शायद गलील के उत्तर में दान का इलाका है जहाँ यारोबाम के दो बछड़ों की मूर्ति में से एक स्थित था।

याजकों को प्रतिदिन बलि चढ़ाना था, नए चाँद के समय और फसह और झोपड़ियों के पर्वों के दौरान। जकर्याह पुष्टि करता है कि यहूदी और अन्यजाति दोनों झोपड़ियों का पर्व मनाएँगे (ज़कर्याह 14:16)।

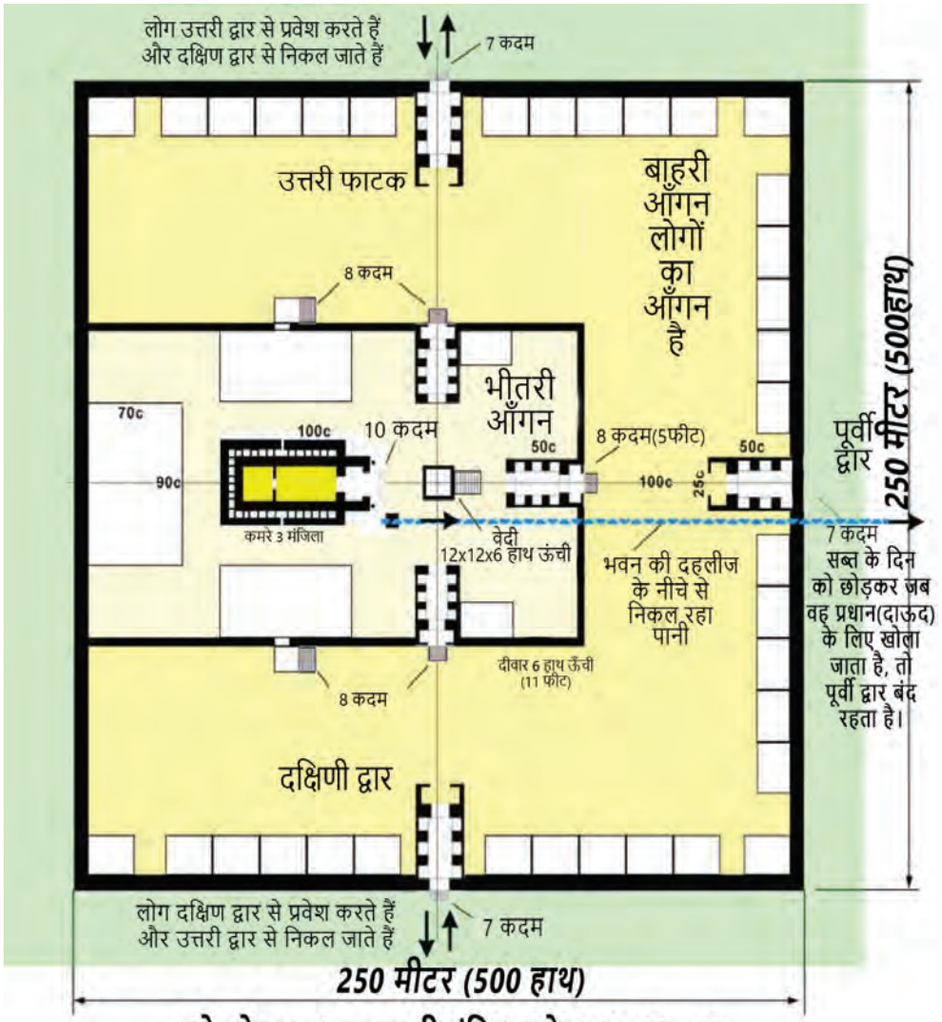

यहेजकेल का सहस्राब्दी मंदिर -यहेज. अ. 40 - 42

बारह छोटे भविष्यवक्ताएं

छोटे भविष्यवक्ताओं की अक्सर उपेक्षा की जाती है क्योंकि उनकी कई भविष्यवाणियां उनके ऐतिहासिक संदर्भ से लिए जाने पर समझ से बाहर लगती हैं। दुर्भाग्य से बाइबल में छोटे भविष्यवक्ताओं का क्रम उस क्रम में नहीं है जिस क्रम में वे लिखे गए थे।

छोटे भविष्यवक्ताओं ने मुख्य रूप से अपने दिनों में मौजूद परिस्थिति का सामना किया लेकिन बार-बार वे भविष्य के दिन के लिए पतन और धर्मत्याग की निराशा के भाव से देखते हैं जब परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर स्थापित किया जाएगा और इस्राएल के पथभ्रष्ट राष्ट्र को एक नई वाचा के अंतर्गत आशीष दिया जाएगा।

यह उल्लेखनीय है कि अन्यजाति राष्ट्र जो इस्राएल से घृणा करते हैं, वे ईश्वरीय न्याय के पात्र बन जाते हैं। जकर्याह ने लिखा कि परमेश्वर उन बाबुलवासियों से अप्रसन्न था जो परमेश्वर के ताड़ना के साधन थे क्योंकि, जब उन्होंने राष्ट्र को बंदी बना लिया, *"उन्होंने विपत्ति को बढ़ा दिया "* था (ज़कर्याह 1:15)।इस्राएल *"परमेश्वर की आँख की पुतली"* है और परमेश्वर कहता है, *"क्योंकि जो तुम को छूता है, वह मेरी आँख की पुतली ही को छूता है"* (ज़कर्याह 2:8)।

भजन संहिता 137 हमें इस बात की एक झलक देता है कि कैसे बेबीलोन वासियों ने यहूदी बंदियों का उपहास किया और सिय्योन के गीत गाते समय उनका मज़ाक उड़ाया। *"क्योंकि जो हम को बन्धुए करके ले गए थे, उन्होंने वहाँ हम से गीत गवाना चाहा, और हमारे रूलाने वालों ने हम से आनन्द चाह कर कहा, सिय्योन के गीतों में से हमारे लिये कोई गीत गाओ"* (भजन 137: 3)। और परमेश्वर को स्मरण आया कि जब यरूशलेम को लूँटा जा रहा था, तब एदोमियों ने क्या किया था; वे बेबीलोन के लोगों के साथ यह कहते हुए मिल गए, *"ढाओ! उसको नींव से ढा दो!"* (भजन 137:7)। परिणामस्वरूप, ओबद्याह ने उनके पूर्ण विनाश की भविष्यवाणी की।

छोटे भविष्यवक्ताओं में की अद्‌त भविष्यवाणियाँ, जो पूर्ण हो चुके हैं और जो भविष्य में होने वाली है, वे बाइबल की ईश्वरीय प्रेरणा की पुष्टि करती हैं। अश्शूरियों और बेबीलोनियों द्वारा सामरिया और यरूशलेम पर जो न्याय हुए, मादियों और बेबीलोनियों द्वारा नीनवे का विनाश और सेईर पर्वत से एदोमियों का निष्कासन, सभी ठीक उसी तरह से पूरे हुए हैं जैसे पवित्रशास्त्र में भविष्यवाणी की गई थी। बेबीलोन में 70 वर्षों की बन्धुवाई के बाद, क्लेश के समय में कुस्रू के आदेश के अंतर्गत मंदिर और शहर का पुनर्निर्माण किया गया था।

मसीह के पहले आगमन (मीका 5:2), यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विषय में (मलाकी 3:1) और परमेश्वर के चरवाहे की भविष्यवानियाँ हैं, जिसे चाँदी के 30 टुकड़ों में बेचा जाएगा (ज़कर्याह 11:12) और जिसके हाथों को छेदा जाएगा (ज़कर्याह 13:6)। योएल ने महाक्लेश की भविष्यवाणी की थी; रूसी/इस्लामी आक्रमण (योएल 2), हर-मगिदोन, मसीह की वापसी और राज्य की आशीष (योएल 3)। जकर्याह उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा है जब मसीह आएगा और सारी पृथ्वी का राजा होगा (ज़कर्याह 14)। छोटे भविष्यवक्ताओं में एक आत्मिक भोज है।

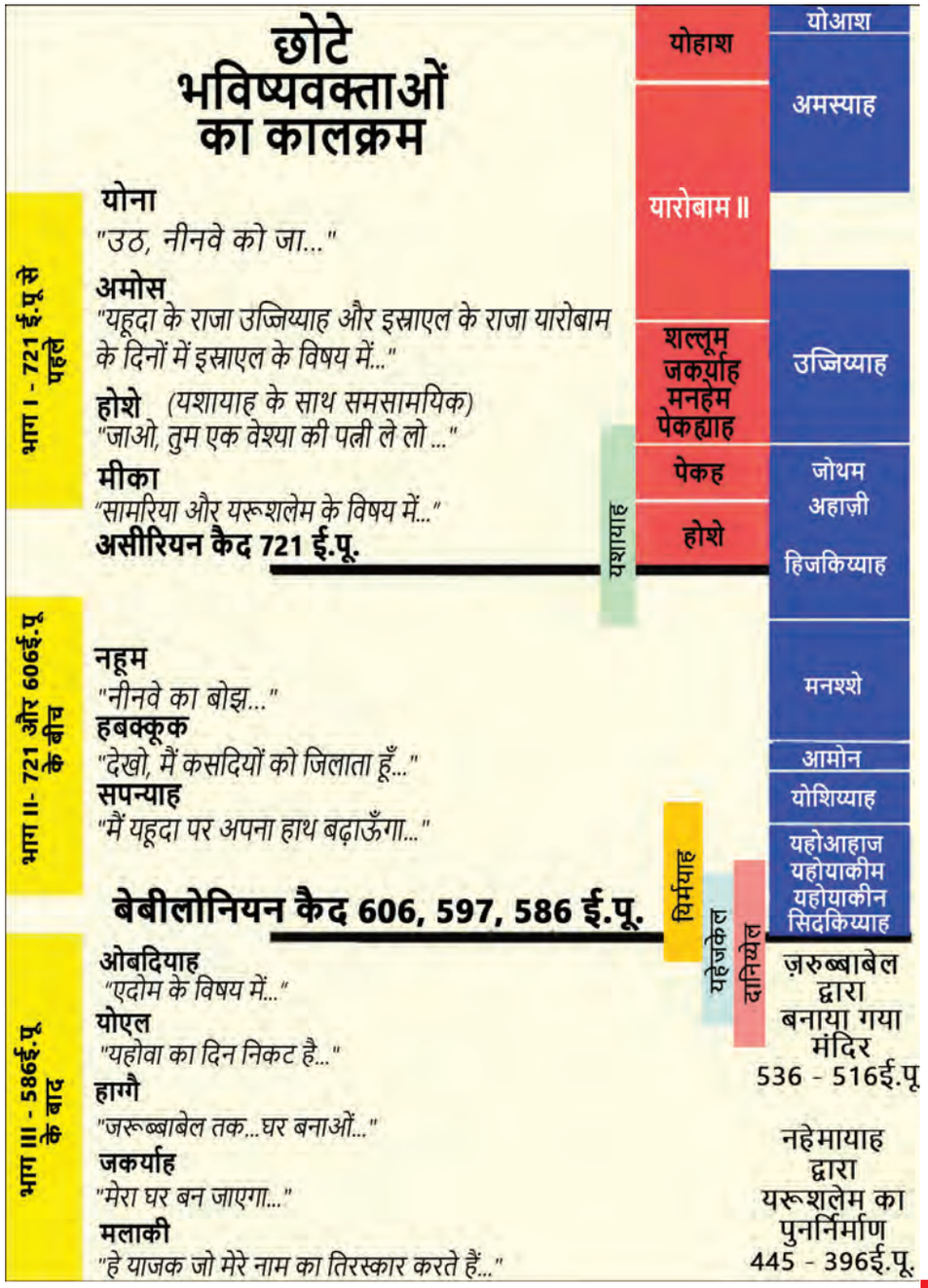

यहोवा के दिन के विषय में योएल की भविष्यवाणी

यहोवा के दिन अर्थात् महाक्लेश में क्या होगा, यह बताने के लिए योएल की भविष्यवाणी में टिड्डियों का इस्तेमाल किया गया है। वह इस्राएल की भूमि पर दो आक्रमणों का वर्णन करता है; **पहला अध्याय 2 में है और दूसरा अध्याय 3 में है।** पहला आक्रमण एक *"उत्तरी सेना"* है (योएल 2:20) लेकिन दूसरे में *"सभी राष्ट्र"* शामिल हैं (योएल 3:2)। हम जानते हैं कि रूसी/इस्लामी आक्रमण उत्तर से महाक्लेश के पहले भाग में आता है (यहेजकेल 38:15) और यह कि महाक्लेश के दूसरे हिस्से में मसीह-विरोधी *"सारे संसार के राजाओं"* (प्रकाशितवाक्य 16:14) को इकट्ठा करता है। इसलिए योएल अध्याय 2 सात साल के महाक्लेश के पहले हिस्से से संबंधित है और योएल अध्याय 3 महाक्लेश के दूसरे भाग से संबंधित है।

अध्याय 2 में युद्ध का नतीजा यह है कि हमलावर सेना के अवशेष एक दूर की भूमि में भाग जाते हैं जो *"पूर्वी सागर"* (प्रशांत महासागर) और अत्यंत उत्तरी सागर (आर्कटिक) के बीच की निर्जन भूमि है। यह साइबेरिया के अलावा और कहीं नहीं हो सकता।

उसी समय यहेजकेल हमें बताता है कि रूस (मागोग) की भूमि जला दी जाएगी (यहेजकेल 39:6)। मोनाश विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग के पूर्व डीन प्रोफेसर लांस एंडर्सबी एओ ने अपनी पुस्तक, वॉयेज ऑफ डिस्कवरी में काला सागर में 100 मिट्टी के ज्वालामुखियों के बारे में लिखा है जो समुद्र में मीथेन गैस उत्सर्जित कर रहे हैं और पानी की गहरी परतों को संतृप्त कर रहे हैं। काला सागर बहुत गहरा है लेकिन अगर निचले स्तरों के जहरीले पानी को किसी तरह से ऊपर लाया जाए तो मीथेन गैस पूरे वातावरण में फैल जाएगी।
बाइबल कहती है कि जब "उत्तरी सेना" का न्याय किया जाएगा, तो एक वैश्विक भूकंप आएगा और "समुद्र की मछलियां " तक हिल जायेगी! (यहेजकेल 38:19-20)।
यह शायद वही भूकंप है जिसका वर्णन प्रका. 6:12-17 में किया गया है। योएल भी इस भूकंप की बात करता है:

> *"उनके आगे **पृथ्वी काँप** उठती है, और आकाश थरथराता है। सूर्य और चन्द्रमा काले हो जाते हैं, और तारे नहीं झलकते"* (योएल 2:10)।

योएल इशारा करता है कि उत्तरी आक्रमण का परिणाम यह होगा कि इस्राएल लोगों को एक साथ इकट्ठा करेगा और परमेश्वर की दोहाई देगा। हमने पढ़ते हैं:

> *"तौभी यहोवा की यह वाणी है, **अभी भी सुनो, उपवास के साथ रोते-पीटते अपने पूरे मन से फिरकर मेरे पास आओ।** अपने वस्त्र नहीं, अपने मन ही को फाड़ कर" अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो; क्योंकि वह अनुग्रहकारी, दयालु, विलम्ब से क्रोध करने वाला, करूणानिधान और दु:ख देकर पछतानेहारा है"* (योएल 2:12-13)।

तब पवित्र आत्मा इस्राएल पर नई वाचा के तहत उण्डेला जाएगा जो परमेश्वर इस्राएल के साथ बाँधेगा (यिर्म. 31:31-37; योएल 2:21-29)।

योएल अध्याय 3 में वर्णित दूसरे युद्ध का परिणाम यह है कि प्रभु अपने पश्चाताप करने वाले लोगों की रक्षा करने के लिए वापस आएँगे:
"और यहोवा सिय्योन से गरजेगा, और यरूशलेम से बड़ा शब्द सुनाएगा; और आकाश और पृथ्वी थरथराएँगे। परन्तु यहोवा अपनी प्रजा के लिये शरणस्थान और इस्राएलियों के लिये गढ़ ठहरेगा" (योएल 3:16)।

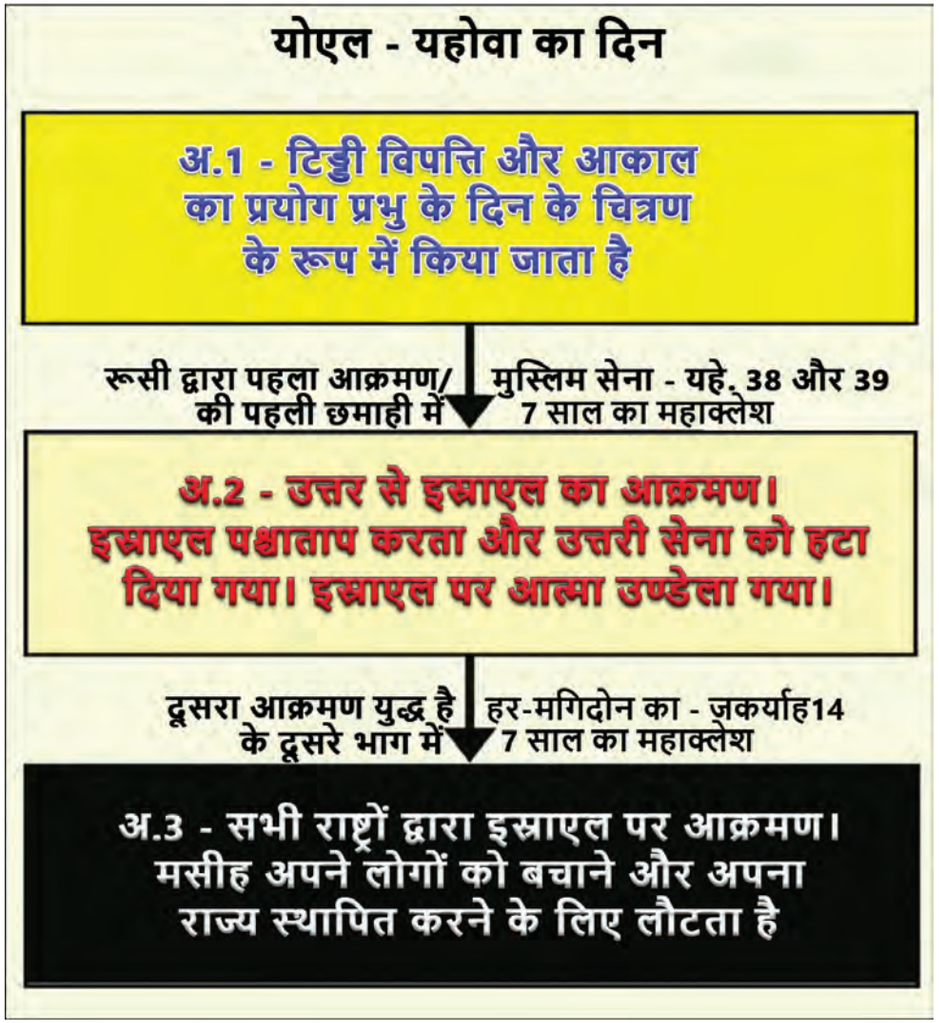

तब यहोवा यरूशलेम में अपना स्थान ग्रहण करेगा, और एक हजार वर्ष तक राज्य करेगा:

> *"परन्तु यहूदा सर्वदा और यरूशलेम पीढ़ी पीढ़ी तब बना रहेगा। क्योंकि उनका खून, जो अब तक मैं ने पवित्र नहीं ठहराया था, उसे अब पवित्र ठहराऊँगा, क्योंकि यहोवा **सिय्योन** में वास किए रहता है"* (योएल 3:20-21)।

यहोवा के सात पर्वों की भविष्यवाणी का महत्व

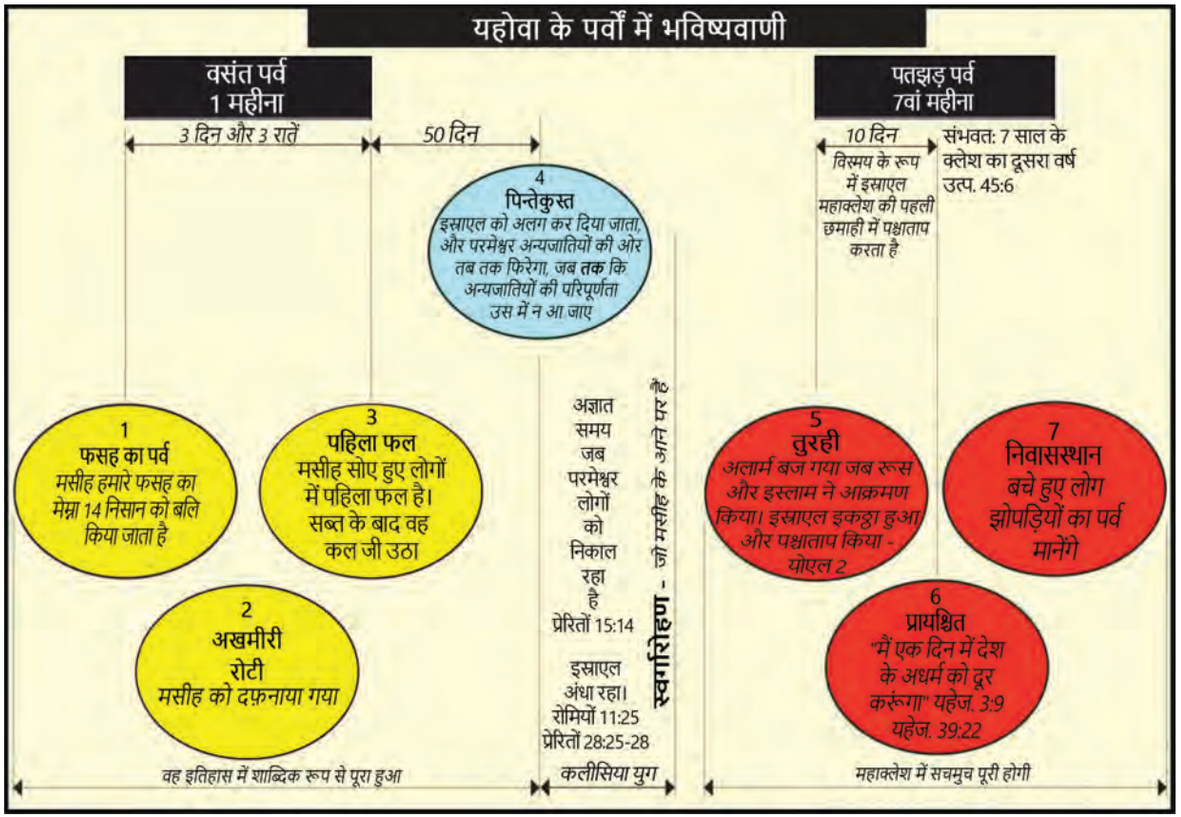

यहोवा के सात वार्षिक पर्व इस्राएल के लिए परमेश्वर की योजना की भविष्यसूचक रूपरेखा हैं और उस योजना का पहला भाग पहले ही पूरा हो चुका है।

प्रत्येक इस्राएली पुरुष को फसह, पिन्तेकुस्त (सप्ताह) और झोपड़ियों के सात दिन के पर्वों में हर साल तीन बार मंदिर में उपस्थित होना आवश्यक था। फसह और पिन्तेकुस्त के पर्व पूरे हो गए हैं: हमारा फसह मसीह हमारे लिए बलिदान किया गया है और वह मृतकों में से पहला फल है जिसने पुराने नियम के संतों को परलोक से स्वर्ग तक पहले फल के रूप में ले गया, जो सो गए (मर गए) थे। पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया परमेश्वर का गवाह बनी और इस्राएल की आँखें अंधी कर दी गई।
छठा महीना सांसारिक वर्ष का अंत था और सातवें महीने में गर्मियों में अंगूर और जैतून की फसल के इकट्ठा करने के बाद एक नया साल शुरू हुआ।

अंगूर की फसल परमेश्वर के क्रोध के रस के कुण्ड की बात करती है और कुचले हुए जैतून तेल पवित्र आत्मा की बात करता है जो इस्राएल और राज्य में बचाए गए राष्ट्रों पर उँडेला जाता है।

मूसा को चाँदी की दो तुरहियाँ बनाने की आज्ञा दी गई थी (गिनती अध्याय 10)। मण्डली को तम्बू के सामने इकट्ठा करने के लिए, और जब हमला किया जाता है तो सावधान करने के लिए तुरहियाँ बजाई जाती थी।

योएल हमें बताता है कि जब उत्तरी सेना महाक्लेश के पहले भाग में इस्राएल पर आक्रमण करेगी तो एक तुरही बजायी जायेगी (योएल 2:1,15)। इस घटना से पहले कलीसिया को उठा लिया जाना चाहिए और परमेश्वर की तुरही आकाश में एक सभा बुलाने के लिए बजाई जायेगी (1 थिस्सलु. 4:16; 1 कुरि.15:52)। तुरहियों का पर्व 10 दिनों का तैयारी से शुरू होता है जब यहूदी महीने के 10वें दिन प्रायश्चित के दिन की तैयारी में खुद को जाँचते और परखते हैं। सातवें महीने में एक बार तुरही बजाई जायेगी और जब रूसी/इस्लामी सेनाएं आक्रमण करती हैं, तब इस्राएल को पश्चाताप करने के लिए बुलाई जायेगी।

प्रायश्चित का दिन महाक्लेश के दूसरे वर्ष में इस्राएल के परिवर्तन की बात करता है, जिसके बाद झोपड़ियों के पर्व से पहले पाँच साल के महाक्लेश के बारे में बातें करता है जो सहस्राब्दी राज्य में खुशी और आशीष की बात करता है।

महीनों के नामों के विशेष अर्थ हैं जो इस्राएल और ईसाई जगत में घटित होने वाली घटनाओं के अनुरूप हैं और दो फसलें काटी जा चुकी हैं।

प्रत्येक फसल के बाद, "अजनबियों " द्वारा बीना जाता है जो बचाए गए अन्यजाति थे और इसलिए अन्यजातियों को पिन्तेकुस्त के बाद और राज्य में आशीष दी जाती है।

इस्राएल को, अनाज की फसल की तरह , भूमि पर चूर चूर किया गया और ईसवीं सन् 70 के बाद से राष्ट्रों में बिखेर दिया गया, जबकि अन्यजातियों को प्रभु के आने पर परमेश्वर के क्रोध के रस कुंड में डाल दिया जाएगा। जैतून की शाखा के रूप में इस्राएल टूट गया है, लेकिन महाक्लेश में कुचले हुए जैतून की तरह, आत्मा के उँडेले जाने का अनुभव करेगा जो कि राज्य में बचाए गए अन्यजातियों पर भी बहाया जाएगा। अदार महीने का अर्थ है "आग" और सहस्राब्दी राज्य के अंत में पृथ्वी को आग से जला दिया जाएगा जिसके बाद एक नया स्वर्ग और नई पृथ्वी होगी।

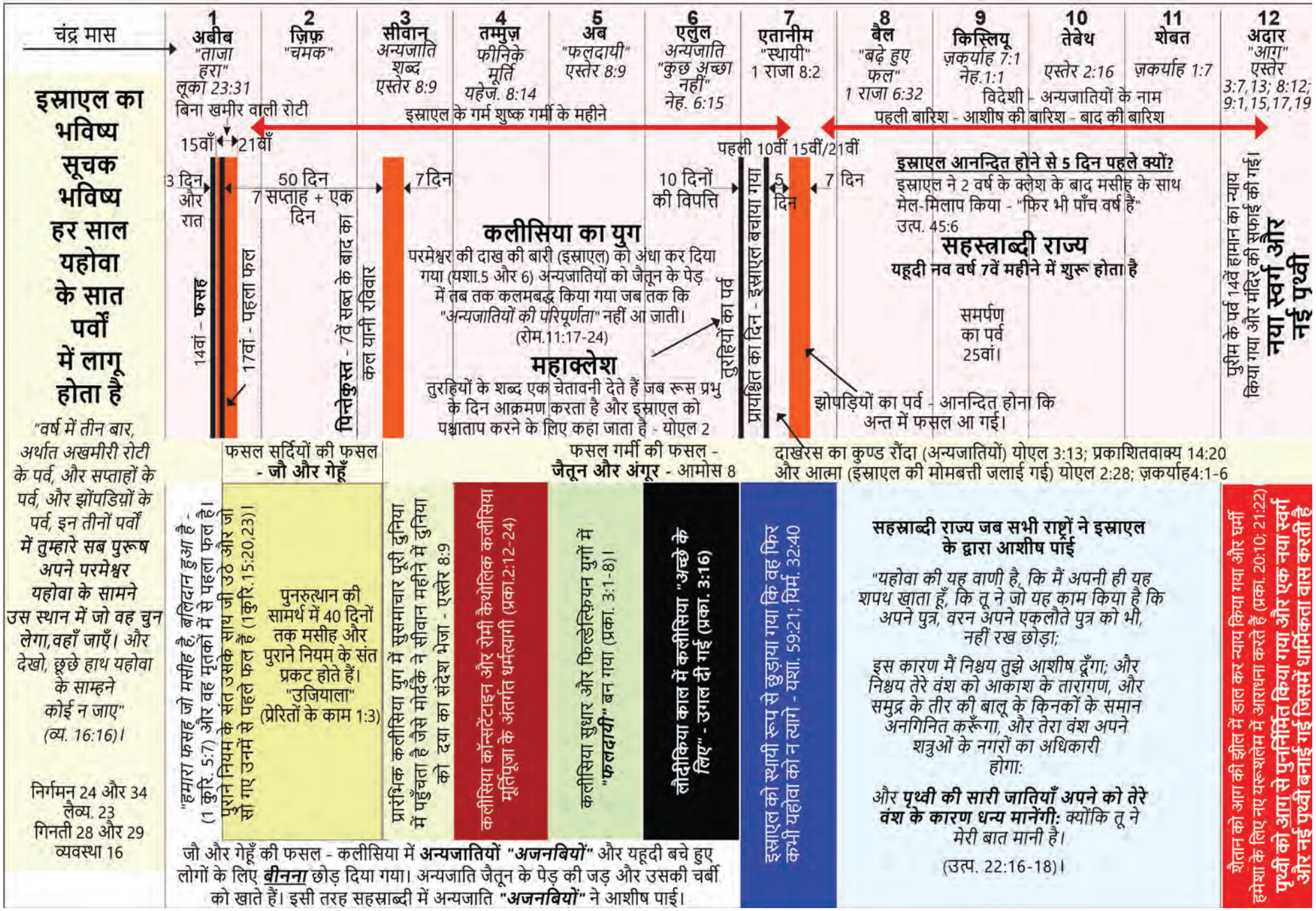
चंद्र मास
1 अबीब "ताजा हरा" लूका 23:31 बिना खमीर वाली रोटी
2 ज़िफ़ "चमक"
3 सीवान अन्यजाति शब्द एस्तेर 8:9
4 तम्मुज़ फीनिके मूर्ति यहेज़. 8:14
5 अब "फलदायी" एस्तेर 8:9
6 एलुल अन्यजाति "कुछ अच्छा नहीं" नेह. 6:15
7 एतानीम "स्थायी" 1 राजा 8:2
8 बैल "बढ़े हुए फल" 1 राजा 6:32
9 किस्लियू ज़कर्याह 7:1 नेह.1:1
10 तेबेथ एस्तेर 2:16
11 शेबत ज़कर्याह 1:7
12 अदार "आग" एस्तेर 3:7,13; 8:12; 9:1,15,17,19
इस्राएल का भविष्य सूचक भविष्य हर साल यहोवा के सात पर्वों में लागू होता है
"वर्ष में तीन बार, अर्थात अखमीरी रोटी के पर्व, और सप्ताहों के पर्व, और झोंपड़ियों के पर्व, इन तीनों पर्वों में तुम्हारे सब पुरूष अपने परमेश्वर यहोवा के सामने उस स्थान में जो वह चुन लेगा,वहाँ जाएँ। और देखो, छूछे हाथ यहोवा के साम्हने कोई न जाए" (व्य. 16:16)।
निर्गमन 24 और 34
लैव्य. 23
गिनती 28 और 29
व्यवस्था 16
इस्राएल के गर्म शुष्क गर्मी के महीने
विदेशी - अन्यजातियों के नाम
पहली बारिश - आशीष की बारिश - बाद की बारिश
15वाँ
21वाँ
पहली 10वीं 15वीं/21वीं
3 दिन और रात
50 दिन 7 सप्ताह + एक दिन
7 दिन
10 दिनों की विपत्ति
5 दिन
7 दिन
14वां - फसह
17वां - पहला फल
पिन्तेकुस्त - 7वें सब्त के बाद का कल यानी रविवार
कलीसिया का युग
परमेश्वर की दाख की बारी (इस्राएल) को अंधा कर दिया गया (यशा.5 और 6) अन्यजातियों को जैतून के पेड़ में तब तक कलमबद्ध किया गया जब तक कि "अन्यजातियों की परिपूर्णता" नहीं आ जाती। (रोम.11:17-24)
महाक्लेश
तुरहियों के शब्द एक चेतावनी देते हैं जब रूस प्रभु के दिन आक्रमण करता है और इस्राएल को पश्चाताप करने के लिए कहा जाता है - योएल 2
तुरहियों का पर्व
प्रायश्चित का दिन - इस्राएल बचाया गया
इस्राएल आनन्दित होने से 5 दिन पहले क्यों?
इस्राएल ने 2 वर्ष के क्लेश के बाद मसीह के साथ मेल-मिलाप किया - "फिर भी पाँच वर्ष हैं" उत्प. 45:6
सहस्त्राब्दी राज्य
यहूदी नव वर्ष 7वें महीने में शुरू होता है
समर्पण का पर्व 25वां।
झोपड़ियों का पर्व - आनन्दित होना कि अन्त में फसल आ गई।
पुरीम के पर्व 14वें हामान का न्याय किया गया और मंदिर की सफाई की गई।
नया स्वर्ग और नई पृथ्वी
फसल सर्दियों की फसल - जौ और गेहूँ
फसल गर्मी की फसल - जैतून और अंगूर - आमोस 8
दाखरस का कुण्ड रौंदा (अन्यजातियों) योएल 3:13; प्रकाशितवाक्य 14:20
और आत्मा (इस्राएल की मोमबत्ती जलाई गई) योएल 2:28; ज़कर्याह4:1-6
"हमारा फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है - (1 कुरि. 5:7) और वह मृतकों में से पहला फल है। पुराने नियम के संत उसके साथ जी उठे और जो सो गए उनमें से पहले फल हैं (1कुरि.15:20,23)।
पुनरुत्थान की सामर्थ में 40 दिनों तक मसीह और पुराने नियम के संत प्रकट होते हैं। "उजियाला" (प्रेरितों के काम 1:3)
प्रारंभिक कलीसिया युग में सुसमाचार पूरी दुनिया में पहुँचता है जैसे मोर्दकै ने सीवान महीने में दुनिया को दया का संदेश भेजा - एस्तेर 8:9
कलीसिया कॉन्सटेंटाइन और रोमी कैथोलिक कलीसिया मूर्तिपूजा के अंतर्गत धर्मत्यागी (प्रका.2:12-24)
कलीसिया सुधार और फिलडेल्फियन युगों में "फलदायी" बन गया (प्रका. 3:1-8)।
लौदीकिया काल में कलीसिया "अच्छे के लिए" - उगल दी गई (प्रका. 3:16)
इस्राएल को स्थायी रूप से छुड़ाया गया कि वह फिर कभी यहोवा को न त्यागे - यशा. 59:21; यिर्म. 32:40
सहस्राब्दी राज्य जब सभी राष्ट्रों ने इस्राएल के द्वारा आशीष पाई
"यहोवा की यह वाणी है, कि मैं अपनी ही यह शपथ खाता हूँ, कि तू ने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र, वरन अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा;
इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूँगा; और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूँगा, और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा:
और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी: क्योंकि तू ने मेरी बात मानी है।
(उत्प. 22:16-18)।
शैतान को आग की झील में डाल कर न्याय किया गया और धर्मी हमेशा के लिए नए यरूशलेम में आराधना करते हैं (प्रका. 20:10; 21:22)
पृथ्वी को आग से पुनर्निर्मित किया गया और एक नया स्वर्ग और नई पृथ्वी बनाई गई जिसमें धार्मिकता वास करती है
जौ और गेहूँ की फसल - कलीसिया में अन्यजातियों "अजनबियों" और यहूदी बचे हुए लोगों के लिए बीनना छोड़ दिया गया। अन्यजाति जैतून के पेड़ की जड़ और उसकी चर्बी को खाते हैं। इसी तरह सहस्राब्दी में अन्यजाति "अजनबियों" ने आशीष पाई।

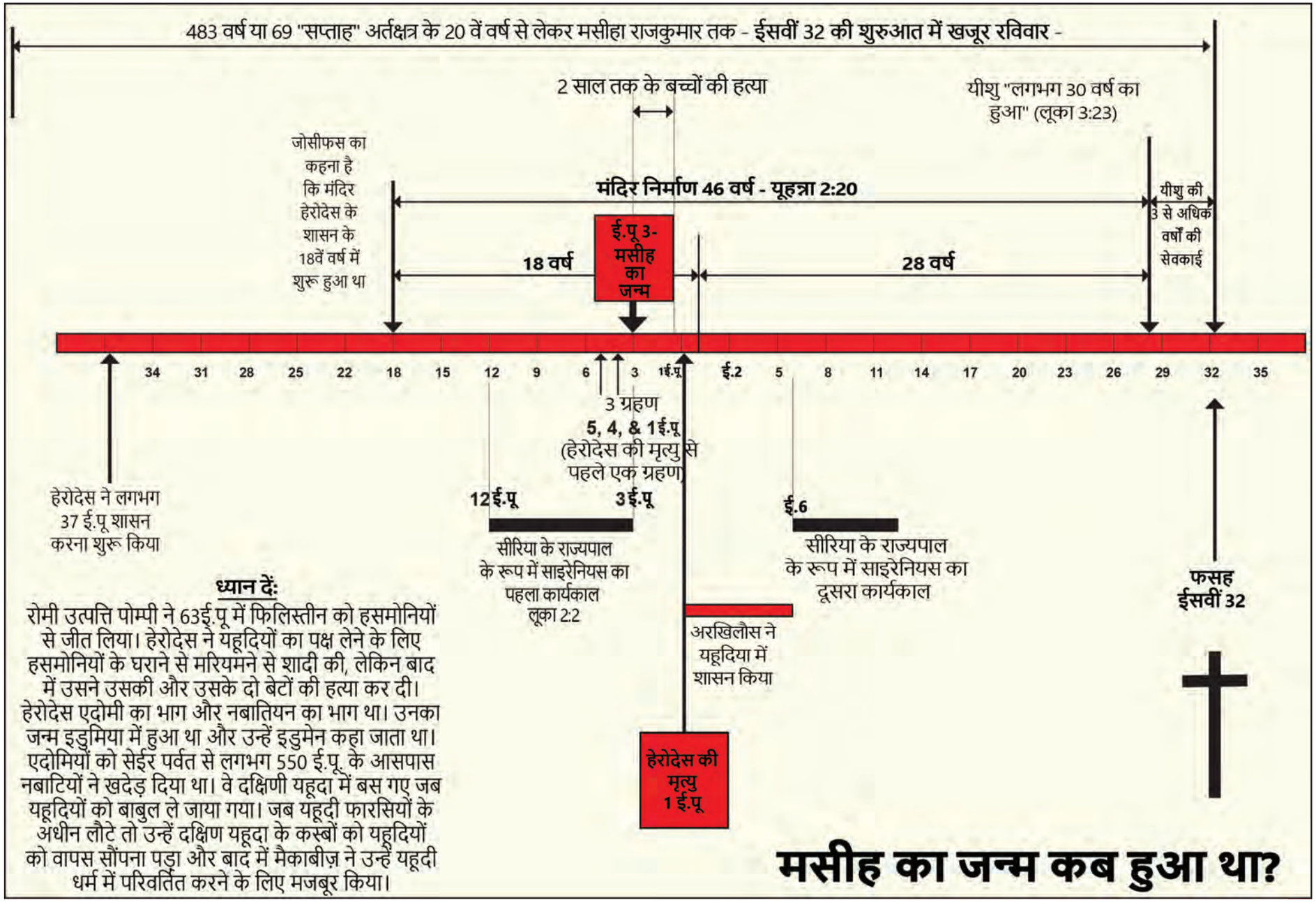
483 वर्ष या 69 "सप्ताह" अर्तक्षत्र के 20 वें वर्ष से लेकर मसीहा राजकुमार तक - ईसवीं 32 की शुरुआत में खजूर रविवार -
2 साल तक के बच्चों की हत्या
यीशु "लगभग 30 वर्ष का हुआ" (लूका 3:23)
जोसीफस का कहना है कि मंदिर हेरोदेस के शासन के 18वें वर्ष में शुरू हुआ था
मंदिर निर्माण 46 वर्ष - यूहन्ना 2:20
यीशु की 3 से अधिक वर्षों की सेवकाई
ई.पू 3- मसीह का जन्म
18 वर्ष
28 वर्ष
34 31 28 25 22 18 15 12 9 6 3 1ई.पू ई.2 5 8 11 14 17 20 23 26 29 32 35
3 ग्रहण
5, 4, & 1ई.पू
(हेरोदेस की मृत्यु से पहले एक ग्रहण)
हेरोदेस ने लगभग 37 ई.पू शासन करना शुरू किया
12ई.पू
3ई.पू
ई.6
सीरिया के राज्यपाल के रूप में साइरेनियस का पहला कार्यकाल लूका 2:2
सीरिया के राज्यपाल के रूप में साइरेनियस का दूसरा कार्यकाल
फसह ईसवीं 32
अरखिलौस ने यहूदिया में शासन किया
हेरोदेस की मृत्यु 1 ई.पू
ध्यान दें:
रोमी उत्पत्ति पोम्पी ने 63ई.पू में फिलिस्तीन को हसमोनियों से जीत लिया। हेरोदेस ने यहूदियों का पक्ष लेने के लिए हसमोनियों के घराने से मरियमने से शादी की, लेकिन बाद में उसने उसकी और उसके दो बेटों की हत्या कर दी। हेरोदेस एदोमी का भाग और नबातियन का भाग था। उनका जन्म इडुमिया में हुआ था और उन्हें इडुमेन कहा जाता था। एदोमियों को सेईर पर्वत से लगभग 550 ई.पू. के आसपास नबाटियों ने खदेड़ दिया था। वे दक्षिणी यहूदा में बस गए जब यहूदियों को बाबुल ले जाया गया। जब यहूदी फारसियों के अधीन लौटे तो उन्हें दक्षिण यहूदा के कस्बों को यहूदियों को वापस सौंपना पड़ा और बाद में मैकाबीज़ ने उन्हें यहूदी धर्म में परिवर्तित करने के लिए मजबूर किया।
मसीह का जन्म कब हुआ था?

"हे यरूशलेम, यरूशलेम... तेरा घर तेरे लिये उजाड़ पड़ा है" - लूका 13:34

मूसा ने यरुशलेम के दो बड़े विनाशों की भविष्यवाणी की थी जब उसने फिलीस्तीन की वाचा को लिखा था।
पहले, जब उनके पास एक राजा था, तब बेबीलोनियों ने 586 ईसा पूर्व (व्यवस्थाविवरण 28:36-48) में शहर को जला दिया और फिर AD70 में जब रोमियों ने यहूदी विद्रोह को दबा दिया था (व्यवस्थाविवरण 28:49-68)।

खजूर रविवार को मसीह ने ज़कर्याह 9:9 की पूर्ति में स्वयं को अपने राजा के रूप में राष्ट्र के सामने प्रस्तुत किया और तब भीड़ चिल्लाई,

"धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है। धन्य है: आकाश में होशाना"

परन्तु शासकों ने उसकी मृत्यु की साज़िश रची।

यीशु ने कहा:

*"वे तलवार के कौर हो जाएँगे, और सब देशों के लोगों में बन्दी होकर पहुँचाए जाएँगे, **और जब तक अन्यजातियों का समय पूरा न हो**, तब तक यरूशलेम अन्य जातियों से रौंदा जाएगा।" (लूका 21:24)।*

यहूदियों के युद्धों के अपने इतिहास में जोसीफस ने 70 ईसवीं में यरूशलेम के विनाश के साथ समाप्त होने वाले यहूदी विद्रोह का वर्णन किया है। यहूदियों द्वारा रोम को कर का भुगतान करने से इनकार के कारण विद्रोह शुरू हो गया था और रोमी अपने साथ सीरिया से बारह टुकड़ी सेना और सहायकों को ले लाया, लेकिन वे घात लगाकर मारे गए थे और लगभग 6,000 सैनिक मारे गए।

सम्राट नीरो ने अपने पक्ष में चार सेनाओं के साथ विद्रोह को खतम करने के लिए वेस्पासियन को जनरल नियुक्त किया। वेस्पासियन ने उत्तर में शहरों और गाँवों पर कब्जा करने के लिए युद्ध का मुकदमा चलाया और यहूदियों को दक्षिण में यरूशलेम की ओर पीछे हटा दिया गया। जोसेफस को गैलीलियन सेना का यहूदी सेनापति नियुक्त किया गया था लेकिन जोतापता की घेराबंदी के दौरान उसे पकड़ लिया गया।
कई यहूदी सेनाएँ जो यरूशलेम गई थीं, वे उत्साही (लुटेरे) थे जिन्होंने अपने ही लोगों को मार डाला और नगरों को लूट लिया। उन्होंने मंदिर स्थल पर कब्जा कर लिया और 20,000 इदुमियन (एदोमी) को यरूशलेम में यहूदियों के वध में मदद करने के लिए लाया। इदुमियनों ने अपना भेष बदलकर युद्ध किया और कई लोगों को मारने के बाद लौट गए।

साईमन के नेतृत्व में एक अन्य विद्रोही समूह ने यहूदियों को मारते हुए देश भर में तोड़फोड़ की और अंततः उन्हें उत्साहियों से लड़ने में सहायता करने के लिए यरूशलेम में आमंत्रित किया गया।एक बार शहर के अंदर पहुँचकर वे एक तीसरा समूह बन गए जिन्होंने कोई दया नहीं दिखाई, जब तक कि शहर का अधिकांश भाग अपने भंडारित भोजन के साथ जला नहीं दिया गया।

इसी बीच 9 जून 68 ईसवीं को नीरो ने आत्महत्या कर ली और साम्राज्य पर नियंत्रण पाने के लिए संघर्ष शुरू हो गया। पहले गल्बा ने नियंत्रण किया लेकिन रोम के बाजार में उसकी हत्या कर दी गई। ओथो और विटेलियस ने विरोध किया और विटेलियस के नियंत्रण पाने से पहले ओथो ने आत्महत्या कर ली।वेस्पासियन ने अपने बेटे टाइटस के हाथों फिलिस्तीन में सेना छोड़ दी और रोम लौट आया लेकिन विटेलियस को मार डाला गया और वेस्पासियन को सम्राट घोषित कर दिया गया। वेस्पासियन के फिलिस्तीन छोड़ने से पहले उसने जोसीफस को रिहा कर दिया और जोसीफस टाइटस के लिए अनुवादक बन गया।

यरूशलेम में दीवारों के भीतर गृहयुद्ध जारी रहा और जो कोई भी रोमियों से बचने की कोशिश करता था, उसे फाटकों की रखवाली करने वालों द्वारा मार दिया जाता था। शहर में बहुत बड़ा अकाल था और स्त्रियाँ अपने बच्चों को वैसे ही खा रही थीं, जैसे पवित्रशास्त्र में कहा गया था:

"तब घिर जाने और उस सकेती के समय जिस में तेरे शत्रु तुझ को डालेंगे, तू अपने निज जन्माए बेटे-बेटियों का मांस जिन्हें तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को देगा खाएगा" (व्यवस्थाविवरण 28:53)।

रोमी सैनिकों ने एंटोनिया के टॉवर तक नियंत्रण पा लिया और अंत में आब महीने के 10वें दिन आराधनालय में आग लगा दी, जो वही दिन था जब नबूकदनेस्सर ने पहले मंदिर को जला दिया था।

गुलामों की जैसे बाढ़ आ गई और यहूदियों को व्यवस्थाविवरण 28:68 की पूर्तिकरण के रूप में जहाजों में मिस्र ले जाया गया। उनकी कीमत इतनी गिर गई कि *"कोई नहीं खरीदेगा"* ।

तब से यहूदी *"सब लोगों के बीच "* बिखरे हुए हैं , जहाँ उनका *"काँपता हुआ हृदय "* है और उनका *" जीवन संदेह में लटका हुआ है "* (व्यवस्थाविवरण 28: 65-66)।
नरसंहार और होलोकॉस्ट ने फिलीस्तीनी वाचा की भविष्यवाणी को पूरा किया है और महाक्लेश के दौरान और भी बहुत कुछ आने वाला है ।

प्रभु की सेवकाई में तिरस्कार

मसीह की सेवकाई गलील में केन्द्रित थी। उसका पालन-पोषण नासरत में हुआ था, लेकिन अपनी सेवकाई की शुरुआत में उसने यरदन में यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा लिया और फिर नासरत में अपने घर लौट आया जहाँ उसने आराधनालय में प्रचार किया।

और यहूदी उसे एक खड़ी पहाड़ी से नीचे गिरा देते, और इसलिए वह कफरनहूम में रहने लगा ।यरुशलेम की एकमात्र दर्ज की गई यात्राओं में यहूदियों के पर्व में शामिल होना और अंत में दुनिया के पापों के लिए वहाँ मरना था। यरूशलेम में प्रभु की सेवकाई का सबसे बड़ा विवरण यूहन्ना ने अपने सुसमाचार में दिया है।

मत्ती ने यरूशलेम की प्रभु की अंतिम यात्रा को छोड़कर पूरी तरह से गलील में प्रभु की सेवकाई को दर्ज किया है।मत्ती अध्याय 11 और 12 में, मत्ती संकेत देता है कि राष्ट्र ने मसीह को अस्वीकार कर दिया था और उन्हें अक्षम्य पाप करने के खतरे की चेतावनी दी गई थी; अर्थात् पवित्र आत्मा की निन्दा के विषय में।**अध्याय 13 में यीशु ने कहा कि यशायाह 6:9-10** में भविष्यवाणी के अनुसार राष्ट्र को अंधा कर दिया गया था और उसने दृष्टान्तों में उन लोगों से बात करना शुरू कर दिया जिनके पास विश्वास करने वाले हृदय थे।

जब यीशु ने गलील में सुना कि यूहन्ना का सिर काट दिया गया है, तो वह निर्जन स्थानों में और अन्यजातियों के देश में चला गया; सूर और सैदा के प्रदेश में (मत्ती 15:21)। वह गलील के पूर्व में एक निर्जन स्थान में लौट गया; गेरगेसा, गदारा और फिर गलील से मगदला तक (मत्ती 15:39), समुद्र के पार बेतसैदा तक, और उत्तर में कैसरिया फिलिप्पी तक (मत्ती 16:13)।

कैसरिया फिलिप्पी से यीशु ने पतरस, याकूब और यूहन्ना को हेर्मोन पहाडी पर ले गया, शायद सर्दियों के शुरू होने से पहले नवंबर के अंत या दिसंबर की शुरुआत में, और क्रूस पर जाने से पहले उन्हें अपने दूसरे आगमन और भविष्य के **राज्य का एक दर्शन देने के लिए उनका रूपान्तरण** हुआ था (मत्ती 17:1-13)। फिर वह कफरनहूम लौट आया जहाँ उसने अपने रोमी कर का भुगतान किया (मत्ती 17:24-27) और यरदन नदी के पूर्व की ओर दक्षिण की ओर चला गया जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला बपतिस्मा देता था (मत्ती 19:1)।

"यरदन के पार" सेवकाई करते समय, भीड़ उसके पास आई और

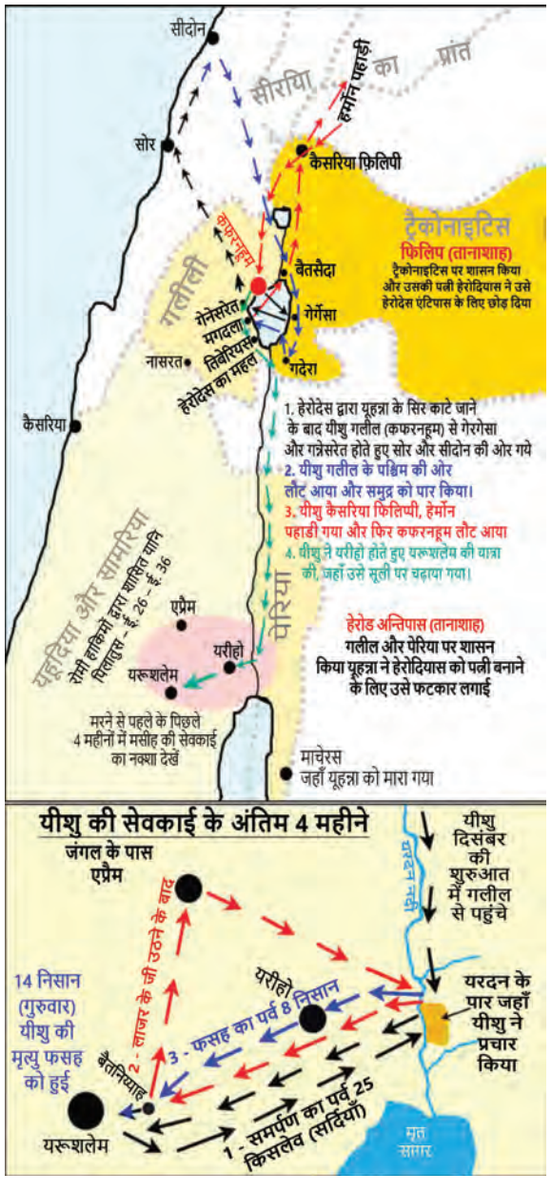

जब 25 किस्लेव (आमतौर पर दिसंबर में) समर्पण का पर्व आया तो जाड़े का समय था और प्रभु यरूशलेम की ओर गए (यूहन्ना 10:22)।

किसलेव, तेवेट, शेवत, अदार, और निसान के क्रम में यहूदी महीने थे, इसलिए प्रभु निसान के 14 वें दिन यरूशलेम में मरने से पहले लगभग 4 महीने पहले किसलेव में कुछ समय पहले से यरदन के पास यहूदिया में रहे थे। यरुशलेम के कुल 3 दौरे किये थे ।

1. **समर्पण के पर्व** पर यहूदी उस पर पथराव कर देते इसलिए वह "यरदन के पार" लौट आया (यूहन्ना 10:31)।

2. "यरदन के पार" सेवा करते समय **बैतनिय्याह में लाजर** के मित्रों से एक संदेश प्राप्त हुआ कि वह गंभीर रूप से बीमार है। जाहिर तौर पर लाज़र की मृत्यु उसके दोस्तों द्वारा बैतनिय्याह छोड़ने के एक दिन की यात्रा के तुरंत बाद हुई, और यीशु बैतनिय्याह तक एक दिन की यात्रा करने से पहले दो दिन रुके रहे। जब वह आया तो लाज़र को मरे चार दिन हो चुके थे ।

लाज़र के जी उठने से यहूदियों में घृणा उत्पन्न हो गई क्योंकि बहुत से लोगों ने मसीह पर विश्वास किया और इसलिए यीशु अपने शिष्यों को उत्तर में निर्जन स्थान के मुहाने पर **स्थित एप्रैम शहर** (यूहन्ना 11:54) में ले गया, उससे पहले कि "यरदन के पार" लौटा जहां वह सेवा कर रहा था।

3. नि**सान महीने में, जब फसह का पर्व निकट था,** तब यीशु यरीहो होते हुए यरूशलेम को गया, और फसह के छ: दिन पहले जो शुक्रवार की शाम थी, बैतनिय्याह पहुँचा, और मार्था ने उसके लिये भोज तैयार किया, और मरियम ने प्रभु का अभिषेक किया। यीशु ने सब्त के दिन विश्राम किया और खजूर रविवार को ज़कर्याह 9:9 की पूर्तिकरण में यरूशलेम की ओर यात्रा की। सोमवार को यीशु ने एक अंजीर के पेड़ को श्राप दिया और मंगलवार तक वह मुरझा गया।मंगलवार की शाम यीशु शमौन नामक कोढ़ी के घर में था और फिर से उसका अभिषेक किया गया। बुधवार को यीशु ने विश्राम किया और यहूदा ने उसे धोखा देने के लिए याजकों के साथ समझौता किया। बुधवार की शाम को अंतिम भोज का आयोजन किया गया और गुरुवार को यीशु की मृत्यु हुई जब फसह के मेमनों की बलि दी जा रही थी।

फसह का सप्ताह

रोमी और यहूदी दिन

यहूदी दिन शाम 6 बजे शुरू हुआ और 12 घंटे के दो हिस्से गिने गए, इसलिए दोपहर 6 वाँ घंटा था।
रोमी दिन मध्यरात्रि से शुरू हुआ और 12 घंटे के दो लॉट गिने गए इसलिए दोपहर 12वाँ घंटा था। दोपहर 12 बजे दिन समाप्त हुआ।
ईसवीं 90 के बाद लिखा गया यूहन्ना का सुसमाचार; ई.70 में यहूदी राष्ट्र के बिखर जाने के बाद, रोमी समय का उपयोग करता है।

गुरुवार को मसीह की मृत्यु हो गई

निसान लेवीय 23:5 के गुरुवार 14वें दिन मसीह की मृत्यु हो गई वह फसह से **6 दिन पहले** शुक्रवार को बैतनिय्याह पहुंचा (गिनती सहित) योएल 12:1. सोमवार को उसने कहा, *"दो दिनों के बाद फसह का पर्व है"* (मत्ती 26:2) यानी मंगल और बुध के बाद।

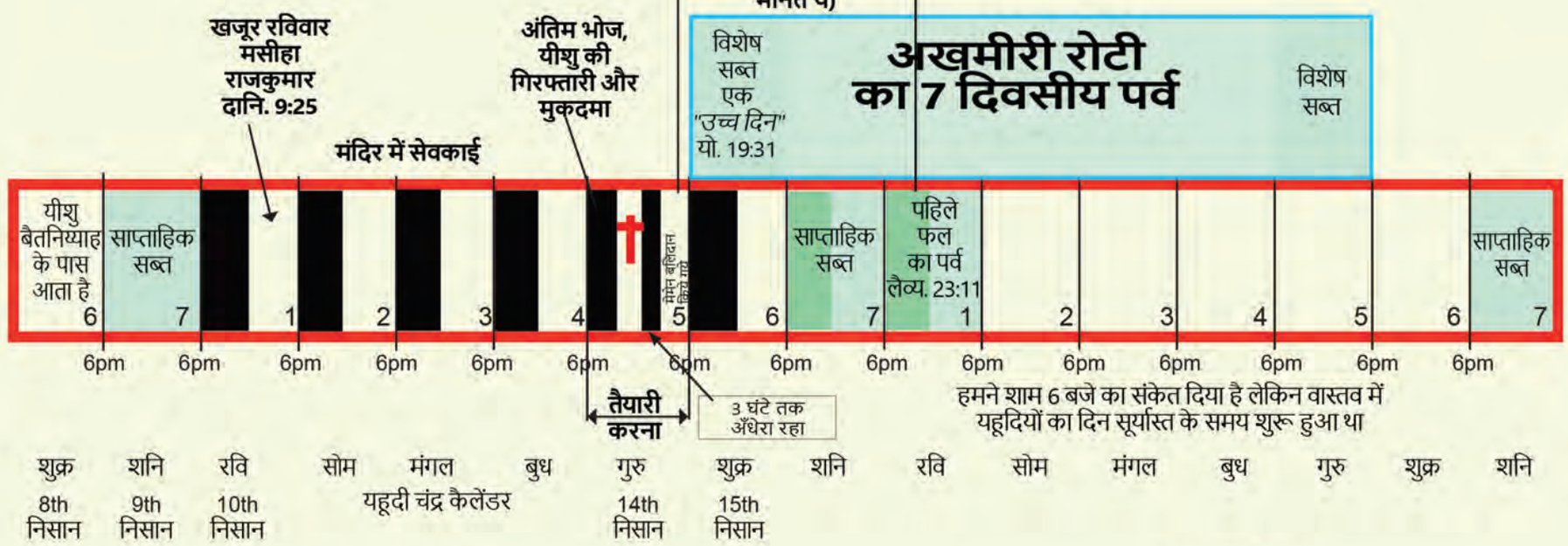

69 "सप्ताह" = 483 वर्ष
173,880 दिन सटीक

खजूर रविवार
लूका 19:42

अर्तक्षत्र के 20वें वर्ष से - 445 ई.पू. (नहे. 2:1,7-8)

ध्यान दें:
भविष्यवाणी कैलेंडर में 360 दिन/वर्ष होते हैं। यहूदियों ने **चंद्र/सौर कैलेंडर** (29/30 दिन महीने बारी-बारी से) का पालन किया। लगभग हर तीसरे वर्ष यहूदियों ने सौर कैलेंडर से सहमत होने के लिए दूसरा 12वाँ महीना जोड़ा। **ग्रेगोरियन, सौर कैलेंडर** में वर्ष में 365.24 दिन होते हैं (एक लीप वर्ष चौथा वर्ष)।

फसह का मेमना

सदूकियों ने महायाजक पद का आयोजन किया और 15 निसान पर फसह मनाया जो गुरुवार शाम 6 बजे शुरू हुआ। चूँकि उन्होंने मंदिर को नियंत्रित किया, इसलिए 14 निसान को दोपहर 3 बजे के बाद मेमनों को मार दिया गया। फरीसियों ने 14 निसान (उस वर्ष बुधवार की रात) को बिना मेमने के फसह मनाया। इस प्रकार यीशु ने बुधवार की रात को फसह मनाया और मर गया क्योंकि गुरुवार दोपहर को फसह के मेमनों को मार दिया गया था। *"मसीह हमारा फसह का पर्व हमारे लिये बलि किया गया"* (1कुरि. 5:7)।

तीन दिन और तीन रात

"क्योंकि जैसे योना तीन रात दिन जल-जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा" (मत्ती 12:40)।

प्रभु द्वारा की गई उसकी भविष्यवाणी ही एकमात्र संकेत था जो यीशु ने अविश्वासी इस्राएल को दिया कि वही परमेश्वर का मसीह है और स्वर्ग से आया है।

यदि यीशु को शुक्रवार को सूली पर चढ़ाया गया था और सप्ताह के पहले दिन सूर्योदय से पहले जी उठे थे, तो यह कहना असंभव है कि वह तीन दिन और तीन रातों के लिए कब्र में थे ।

यहूदी "समावेशी" को मानते थे जिसका अर्थ है कि दिन के एक भाग को पूरे "एक दिन" के रूप में गिना जाता था। रात का एक भाग पूरी "एक रात" के रूप में गिना जाता था।

चूँकि यीशु को सूर्यास्त से पहले 14वें निसान (गुरुवार) को दफनाया गया था, तो वह पहला दिन था । शुक्रवार दूसरा दिन और शनिवार तीसरा दिन था।

गुरुवार की रात एक रात थी ; शुक्रवार की रात दूसरी रात थी; और शनिवार की रात तीसरी रात थी, जिससे तीन दिन और तीन रातें हुईं जबकि यीशु कब्र में था।

मछली के पेट में योना के संरक्षण का चमत्कार हमें यह सिखाना था कि यीशु मरे हुओं में से जी उठेगा। यदि पुरुष विश्वास नहीं कर सकते कि योना बच गया तो वे यह भी विश्वास नहीं कर सकते कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा!

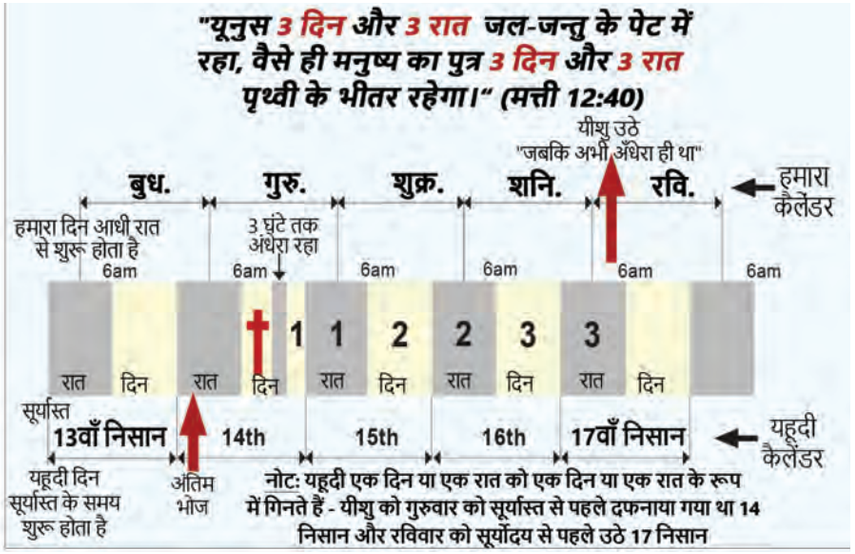

अंतिम दिनों में इस्राएल आकर्षण का केंद्र

अपने आरंभिक काल से ही इस्राएल राष्ट्रों द्वारा घृणा किया जाता रहा है। भजनहार ने लिखा: *"जाति जाति के लोग क्यों हुल्लड़ मचाते हैं, और देश देश के लोग व्यर्थ बातें क्यों सोच रहे हैं? यहोवा के और उसके अभिषिक्त के विरूद्ध पृथ्वी के राजा मिलकर, और हाकिम आपस में सम्मति करके कहते हैं, कि आओ, हम उनके बन्धन तोड़ डालें, और उनकी रस्सियों अपने ऊपर से उतार फेंके॥ वह जो स्वर्ग में विराजमान है, हँसेगा, प्रभु उन को ठट्ठों में उड़ाएगा। तब वह उन से क्रोध करके बातें करेगा, और क्रोध में कहकर उन्हें घबरा देगा, कि मैं तो अपने ठहराए हुए राजा को अपने पवित्र पर्वत सिय्योन की राजगद्दी पर बैठा चुका हूँ।"* (भजन संहिता 2:1-6)।

अन्यजातियों का क्रोध इसलिए हैं क्योंकि इस्राएल परमेश्वर की वाचा के लोग हैं जिनके द्वारा उसने अपने वचन की रक्षा की और जिसके द्वारा उसने अपने प्रिय पुत्र को भेजा। महाक्लेश के पहले भाग में, इस्राएल पर एक रूसी/इस्लामी बल (यहेजकेल 38 और 39) द्वारा हमला किया जाएगा और दूसरे भाग में "सभी राष्ट्रों" द्वारा मसीह-विरोधी के नेतृत्व में हमला किया जाएगा। पहला आक्रमण इस्राएल को पश्चाताप की ओर लाता है और दूसरा आक्रमण अन्यजातियों पर न्याय लाता है।

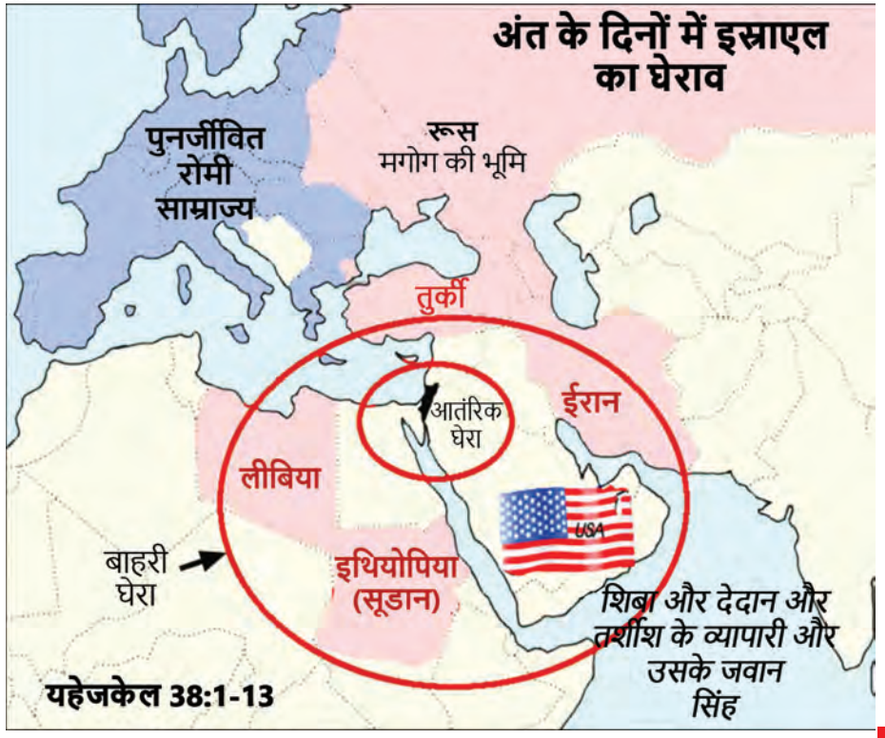

मसीह का पुनरुत्थान - *"और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है।" (रोमियों 1:4)।*

मसीह को सूली पर चढ़ाए जाने के बाद रविवार की भोर को, मरियम मगदलीनी, याकूब और जोसेस की माँ मरियम, ज़ब्दी की पत्नी शलोमी, और जोहन्ना जिसका पति हेरोदेस का भण्डारी था (लूका 24:1,10; 8:10; मत्ती 28:1; मरकुस 15:40; यूहन्ना 20:1) वे यीशु की कब्र पर उसकी देह पर लेप लगाने आये लेकिन उन्होंने पाया कि कब्र खाली थी।

जब मरियम मगदलीनी ने पत्थर को लुढ़के हुए देखा तो उसे लगा कि किसी ने शरीर को चुरा लिया है और तुरंत महिलाओं को छोड़कर और शिष्यों को जगाने और उन्हें खबर देने के लिए शहर की ओर लगभग आधा मील दौड़ी। इसी बीच अन्य स्त्रियों ने कब्र में प्रवेश किया और देखा कि एक स्वर्गदूत उसके पास बैठा है जहाँ प्रभु की देह रखी थी। स्वर्गदूत ने उनसे कहा कि वे पतरस और अन्य शिष्यों से कहें कि यीशु उन्हें गलील में दिखाई देगा (मत्ती 28:7)।

इसी बीच, मरियम मगदलीनी ने पतरस और यूहन्ना को पाया और उन्हें बताया कि कब्र खाली थी। तीनों तुरंत कब्र की ओर भागे और कब्र के कपड़ों को लपेटे हुए पाया। पतरस और यूहन्ना नगर को लौट गये, परन्तु मरियम कब्र के द्वार पर रोती हुई खड़ी रही जब यीशु अचानक प्रकट हुआ (यूहन्ना 20:13)। मरियम ने यीशु को माली समझ लिया जब तक कि उसने उसका नाम नहीं पुकारा और उससे कहा कि चेलों को जाकर बताओ कि उसने प्रभु को देखा है। इसी बीच, अन्य स्त्रियाँ नगर की ओर जा रही थीं जब यीशु उन्हें दिखाई दिया (मत्ती 28:9-10)।

बाद में उस दिन, क्लियोपास और एक अन्य शिष्य इम्माऊस के गाँव की ओर जा रहे थे जब यीशु उन्हें दिखाई दिया। जब उन्होंने अंत में उसे पहचान लिया जब उसने शाम के भोजन की रोटी तोड़ी, तो वह उनकी आँखों से ओझल हो गया और वे अन्य शिष्यों को यह बताने के लिए यरूशलेम वापस भाग गए (लूका 24:13-35)।

इसी बीच पतरस अपने ऊपरी कोठरी से निकला और जबकि अभी दूर ही था, तो यीशु उससे मिला। पतरस ऊपरी कोठरी में लौट आया और चेलों को उत्साह से बताया कि उसने प्रभु को देखा था जब वे दोनों इम्माऊस से अपनी कहानी सुनाने आए थे (लूका 24:34; 1 कुरिं.15:5)। तभी यीशु कमरे में प्रकट हुए और कहा, *"तुम्हें शांति मिले"* (लूका 24:36)।

यीशु के प्रकट होने के समय थोमा वहाँ मौजूद नहीं था और जब उसे बताया गया, तो उसने मरियम, उन स्त्रियों, पतरस, शिष्यों या क्लियोपास और अन्य शिष्य की गवाही पर विश्वास नहीं किया, जब तक कि वह स्वयं प्रभु के हाथों और बगल में घावों को अपनी आँखों से नहीं देख लेगा।

चेले उस सप्ताह यरूशलेम में ही रहे जो अखमीरी रोटी का पर्व था और अगले रविवार को यीशु फिर चेलों के सामने ऊपरी कमरे में प्रकट हुए जब थोमा मौजूद था। थोमा ने कहा, *"हे मेरे प्रभु और हे मेरे परमेश्वर"* (यूहन्ना 20:26-28)।

चेले तब 4 दिन की यात्रा पर गलील गए जहाँ यीशु ने कहा

कि वह उनसे मिलेंगे लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि वह एकदम से उनसे नहीं मिला बल्कि एक रात, जब सात शिष्यों ने वापस मछली पकड़ने को जाने का फैसला किया और कुछ भी नहीं पकड़ा। यीशु पका हुआ नाश्ता लेकर किनारे पर प्रकट हुए और नाश्ते के बाद, वह पतरस के साथ टहले और पतरस से तीन बार पूछा कि क्या वह उससे प्रेम करता है। पतरस लज्जित हुआ क्योंकि उसने प्रभु का इन्कार किया था, परन्तु उसे प्रभु की भेड़ों को चराने की ज़िम्मेदारी दी गई।

बाद में, यीशु गलील के एक पहाड़ पर शिष्यों के सामने प्रकट हुए जहाँ उसने उन्हें नियुक्त किया था (मत्ती 28:16) क्योंकि हम पढ़ते हैं:

"और ग्यारह चेले गलील में उस पहाड़ पर गए, जिसे यीशु ने उन्हें बताया था। और उन्होंने उसके दर्शन पाकर उसे प्रणाम किया, पर किसी किसी को सन्देह हुआ" (मत्ती 28:16-17)।

पाँच सौ लोगों ने एक और अवसर पर प्रभु को देखा और याकूब ने उसे एक और अन्य अवसर पर देखा, परन्तु और भी बहुत से स्थान है जहाँ वह दिखाया दिया जिसे दर्ज नहीं किए गए हैं (प्रेरितों के काम 1:3; यूहन्ना 21:25; 1 कुरि. 15:6-7)।

अंत में, चेले पिन्तेकुस्त के पर्व से दस दिन पहले यरूशलेम लौट आए। यीशु फिर प्रकट हुए और उन्हें शहर से बाहर जैतून के पहाड़ के पास बैतनिय्याह तक ले गए, जहाँ लाजर रहता था। उसने उनसे कहा कि जब तक पवित्र आत्मा उन पर न उतरे तब तक वे यरूशलेम में रहें और फिर *"यरूशलेम, यहूदिया, सामरिया और पृथ्वी की छोर तक"* गवाही दें (प्रेरितों के काम 1:8)। ये बातें कहते हुए वह स्वर्ग पर उठा लिया गया और एक बादल ने उन्हें उनकी आंखों से ओझल कर लिया। फिर, जैसे ही यीशु उठाया गया, दो स्वर्गदूत चेलों से कहते हुए प्रकट हुए, *"यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा"* (प्रेरितों के काम 1:11)।

पुराने और नए नियम के युग में कब्र से परे

समय को दो मुख्य भागों में विभाजित किया गया है: मसीह के मरने से पूर्व और मसीह के मरने के बाद। मसीह की मृत्यु से पहले परमेश्वर ने मनुष्य के लिए जो कुछ भी किया वह मसीह के पहले आगमन की प्रत्याशा में किया गया था और मसीह की मृत्यु के बाद से परमेश्वर ने जो कुछ भी किया है वह मसीह के क्रूस पर किये गये कार्य को दिखाता है।

आदम से लेकर मसीह तक के पुराने नियम के सभी बलिदान *"समय की परिपूर्णता"* में आने वाले बातों की छाया मात्र थे (गलातियों 4:4)। *"क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे"* (इब्रानियों 10:4)।

मसीह के जी उठने से पहले कोई भी स्वर्ग नहीं जा सकता था क्योंकि वह "जो सो गए हैं, उन में पहिला फल हुआ" (1 कुरिं. 15:20)।

हनोक "परमेश्वर के साथ साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया" - स्वर्गलोक में गया।
एलिय्याह बवंडर में स्वर्ग तक उठा लिया गया। यह स्वर्ग आकाश का स्वर्ग था लेकिन उसकी आत्मा स्वर्गलोक में चली गई। परमेश्वर ने उसके शरीर को वैसे ही दफनाया जैसे उसने मूसा के लिए किया था। उन्होंने खोजा लेकिन वह नहीं मिला।

मसीह के जी उठने से पहले बचाए गए लोगों की आत्माएं स्वर्गलोक के (इब्रानी) भाग में जाती थी जिसे यीशु ने "अब्राहम की गोद" के रूप में वर्णित किया (लूका 16:22) और न बचाए गए लोगों की आत्माएं की पीड़ा भाग में जाती थी (लूका 16:23)। इन दोनों के बीच एक बड़ी अगम्य खाई थी।

जब यीशु की मृत्यु हुई तो वह क्रूस पर पश्चाताप करनेवाले चोर के साथ शीओल के स्वर्गलोक हिस्से में गए (लूका 23:43)।

दाऊद ने पहले ही बताया था कि मसीह अधोलोक में तीन दिन तक होगा (भजन 16:10) और पतरस ने इस भविष्यवाणी को पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों के सामने उद्त किया।

> *"...मेरा शरीर (मसीह का शरीर) भी आशा में बसा रहेगा: क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक (इब्रानी) में न छोड़ेगा; और न अपने पवित्र जन को सड़ने ही देगा"* (प्रेरितों के काम 2:26-27)।

पुराने नियम के सभी संत मसीह के साथ जी उठे और उनके साथ ऊपर चढ़े (मत्ती 27:52-53); वह उन्हें स्वर्ग में ले गया (इफि. 4:8-10)। *"वह ऊँचे पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बान्ध ले गया ...और जो उतर गया यह वही है जो सारे आकाश से ऊपर चढ़ भी गया, कि सब कुछ परिपूर्ण करे।)"*

अब, उद्धार पाए लोगों की आत्माएं मृत्यु के समय स्वर्ग में जाती हैं और उद्धार न पाए हुओं की आत्माएं अधोलोक की पीड़ा में जाती हैं, जो परमेश्वर का दंड स्थान है, कि वे महान श्वेत सिंहासन से मिलने वाले न्याय की प्रतीक्षा करें जिसके बाद जिस हद तक उन्होंने पाप किया है उसके अनुसार उन्हें हमेशा के लिए आग की झील में दंडित किया जाएगा, *"उनके कामों के अनुसार"* (प्रका. 20:11-15)।

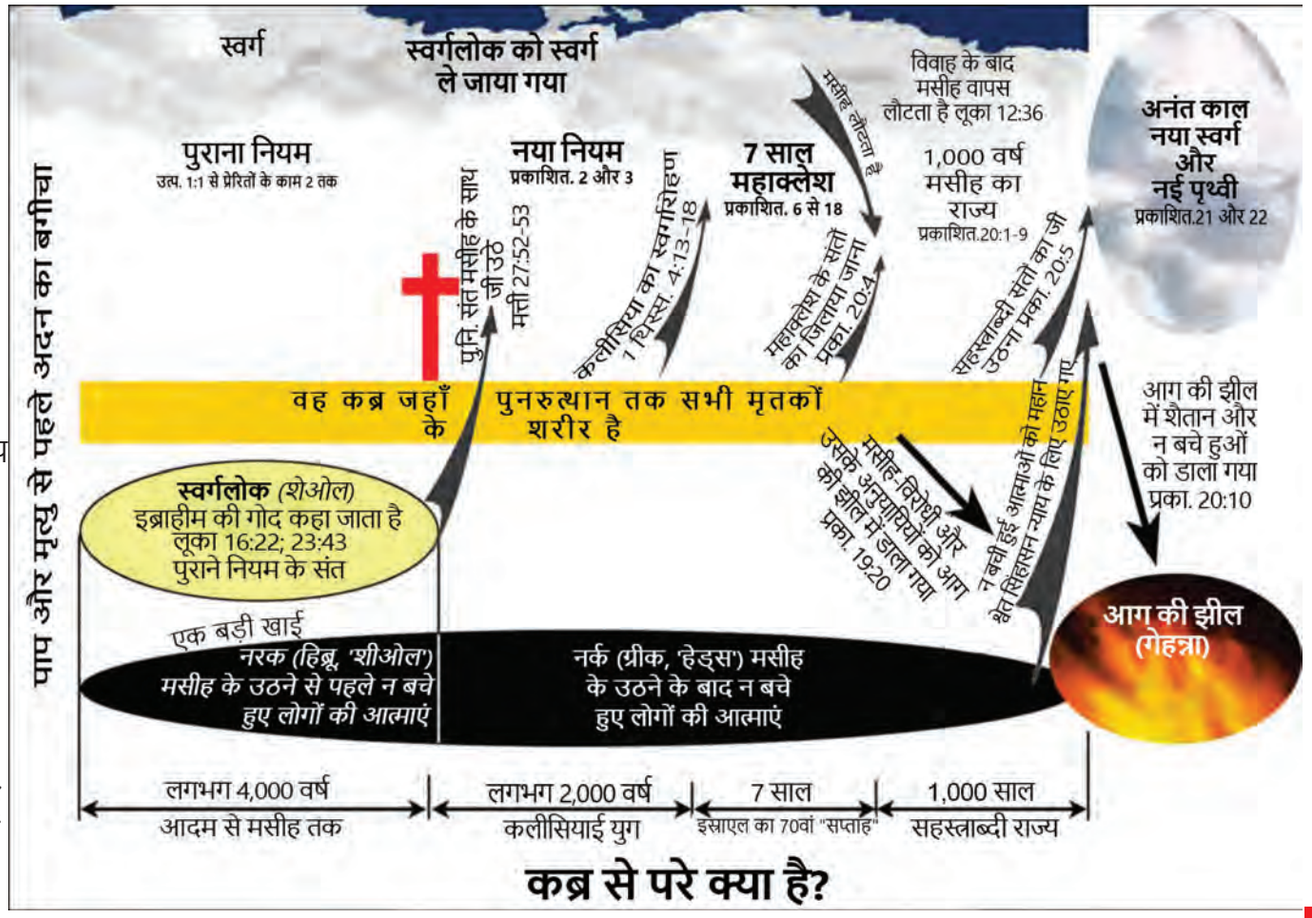

कब्र से परे क्या है?

जैतून पहाड़ी प्रवचन

यीशु के क्रूस पर जाने से ठीक पहले वह मंदिर में अपने शिष्यों के साथ हेरोदेस और उसके पुत्रों द्वारा निर्मित संरचना के बड़े-बड़े पत्थरों को देख रहा था। यीशु ने चेलों को यह कहते हुए चौंका दिया कि ये सभी पत्थर गिरा दिए जाएँगे और यहूदियों को बंदी बना लिया जाएगा *"जब तक अन्य जातियों का समय पूरा न हो, तब तक यरूशलेम अन्य जातियों से रौंदा जाएगा"* (लूका 21:23-24)। चेलों ने पूछा, "यह सब कब होगा और ये बातें जब पूरी होने पर होंगी, तो उस समय का क्या चिन्ह होगा? 70 ईसवीं में यहूदियों को बंधुआई में ले जाया गया था, लेकिन "समय के अंत" का चिन्ह 7 साल का महाक्लेश होगा जो दो भागों में विभाजित है:

क) *"कष्टों की शुरुआत"* (पीड़ा), जिसके बाद वह उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को पवित्र स्थान (मंदिर) में खड़ा किया जाएगा,

ख) सात साल के दूसरे भाग में जब *"ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा"* (मत्ती 24:21)।

" उन दिनों के क्लेश के तुरंत बाद " मसीह अपनी महिमा और सामर्थ के साथ मसीह-विरोधी और उसके पीछे आने वाले राष्ट्रों का न्याय करने के लिए आएगा।

तीन संकेत दिए गए हैं कि उसका आगमन कब होगा।

i) अंजीर के पेड़ के दृष्टांत के रूप में इस्राएल की पुनर्स्थापना।

ii) "नूह के दिन" जैसी परिस्थितियाँ प्रबल होंगी। परमेश्वर के वचन की अज्ञानता, अत्यधिक दुष्टता और भौतिक चीज़ों के प्रति आकर्षण बढ़ जाएगा।

iii) वैश्विक रूप से लोगों का अचानक गायब हो जाना।

हमें याद रखना चाहिए कि कलीसिया के शुरू होने से पहले सुसमाचार व्यवस्था के युग की घटनाओं को दर्ज करता है और इसलिए ये संकेत इस्राएल के लिए हैं। जो "उठा लिए गये" वे न्याय के लिए नहीं उठाये गए। "उठाये जाने" के लिए ग्रीक शब्द इंगित करता है कि वे "स्वयं को प्राप्त" करते हैं। वे जो "छूट" गये वह ग्रीक में "दूर" किया जाना हैं, जिसका अनुवाद "तलाक" के रूप में भी किया जाता है। चेले नहीं जानते थे कि यह कलीसिया का उठाया जाना था, क्योंकि उस समय कलीसिया मौजूद नहीं थी लेकिन हम जानते हैं कि यह कलीसिया होगी जो अचानक अदृश्य हो जाएगी; हमारे पास पौलुस की पत्रियाँ हैं और स्वर्गारोहण युग के अंत का संकेत देगा।

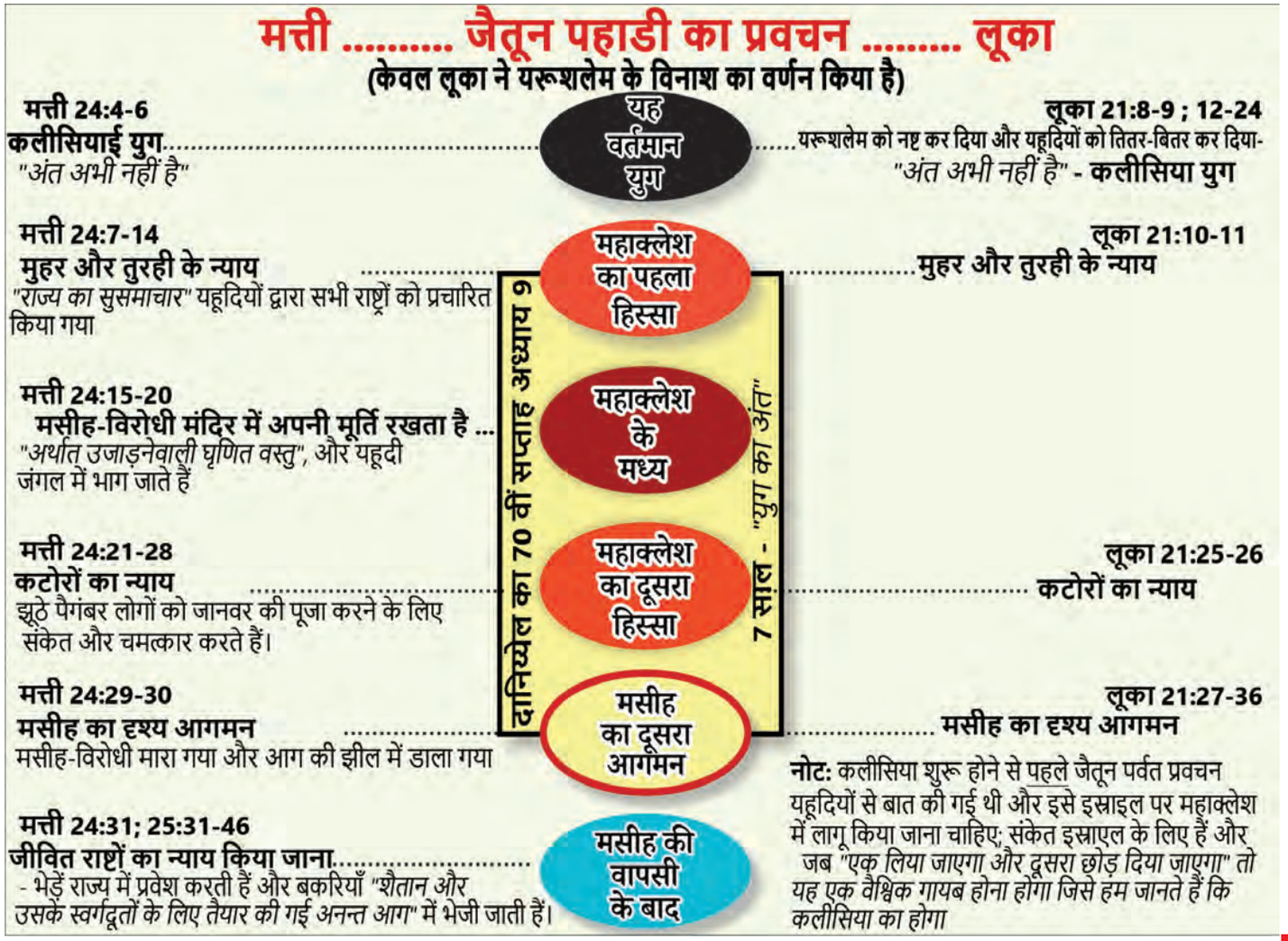

राज्य कब प्रकट होगा?

"जब फरीसियों ने उस से पूछा, कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा? तो उस ने उन को उत्तर दिया, कि परमेश्वर का राज्य प्रगट रूप से नहीं आता" (लूका 17:20)।

यूहन्ना बपतिस्मादाता, यीशु और चेले सभी ने यह प्रचार किया, "मन फिराओं: क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है" (मत्ती 3:2; 4:17; 10:7) और इसलिए फरीसियों ने पूछा, "कब?" इस स्तर पर राष्ट्र ने राजा को अस्वीकार कर दिया था और यीशु ने उनसे कहा था, "परमेश्वर का राज्य **प्रगट रूप से नहीं आता"**।

"प्रगट" के लिए अनुवादित शब्द एक मिश्रित शब्द "पैरा" है जिसका अर्थ "निकट" है,और तेरोस, जिसका अर्थ है "देखना"। इसका अर्थ है "निकट देखना" अर्थात् यीशु ने उनसे कहा, राज्य निकट भविष्य में नहीं देखा जाएगा।

यीशु ने फरीसियों से कहा, "परमेश्वर का राज्य तुम्हारे अन्दर है "। उसने यह चेलों से नहीं कहा! यह शब्द "तुम्हारे अन्दर" का अनुवाद "आपके बीच" किया जाना चाहिए। वह, राजा, उनमें से एक था, लेकिन उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया था! यह निश्चित रूप से फरीसियों के बीच नहीं था।

यीशु फिर **चेलों** की ओर मुड़ा और कहा,

"वे दिन आएँगे, जिन में तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन को देखना चाहोगे, और नहीं देखने पाओगे। लोग तुम से कहेंगे, देखो, वहाँ है, या देखो यहाँ है; परन्तु तुम चले न जाना और न उन के पीछे हो लेना। क्योंकि जैसे बिजली आकाश की एक ओर से कौन्धकर आकाश की दूसरी ओर चमकती है, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में प्रगट होगा" (लूका 17:22-24) ।

असहस्त्राब्दिवादी सिखाते हैं कि राज्य अब यहाँ है लेकिन यीशु ने कहा कि चेले इसे नहीं देखेंगे; इसे स्थगित कर दिया गया था! झूठे मसीहा जैसे कि बार कोखबा (132-135 ईसवीं) राज्य की स्थापना करना चाहते थे, लेकिन यीशु ने कहा, "तुम उनके पीछे न जाना" ।

राज्य की स्थापना तब होगी जब यीशु आकाश में बिजली की तरह आएंगे। यह उसकी वापसी के बाद होगा *"लेकिन पहले उसे कष्ट उठाना होगा... "* दूसरे शब्दों में, राज्य के प्रकट होने से पहले समय में अंतराल होगा।

तब कई संकेत यह बताने के लिए दिए गए थे कि राज्य कब निकट था ; यह नूह के दिनों और लूत के दिनों की तरह होगा। उस समय हिंसा और समलैंगिकता थी और मनुष्य ईश्वरीय न्याय के गंभीर खतरे से बिल्कुल बेखबर थे। तब एकाएक नूह को जहाज की सुरक्षा में ले जाया गया, और लूत को सदोम से जबरन निकाला गया, और फिर जलप्रलय और आग आई।

बाइबल स्पष्ट बताती है कि कलीसिया को स्वर्ग में उठा लिए जाने के बाद महाक्लेश आएगा। वैश्विक रूप से लोग अदृश्य होंगे, और इसलिए यीशु ने कहा:
"मैं तुम से कहता हूँ, उस रात दो मनुष्य एक खाट पर होंगे, एक ले लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। दो स्त्रियाँ एक साथ चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी। दो जन खेत में होंगे एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ा जाएगा।" (लूका 17:34-36)।

शब्द "ले लिया " का शाब्दिक रूप से ग्रीक मूल में है, "स्वयं को प्राप्त करना" और "छोड़ा जाएगा" का अर्थ "दूर करना" है जो "ले लिया" जाएगा उसे न्याय के लिए नहीं बल्कि दया के लिए लिया जाता है और जो शेष रह जाते हैं वे न्याय के लिए "छोड़े" जाते हैं।

शिष्यों ने पूछा, *"हे प्रभु, यह कहाँ होगा?"* और यीशु ने कहा, *"जहाँ लोथ हैं, वहाँ गिद्ध इकट्ठे होंगे॥"* "लोथ" के लिए यूनानी शब्द टोमा नहीं है जिसका अर्थ एक शव होता है, बल्कि सोमा है जिसका अर्थ एक जीवित शरीर है। यह शब्द सोजो से आया है जिसका अर्थ है, "मैं बचाता हूँ"। जैसे चील ऊपर उड़ते हैं, वैसे ही कलीसिया का उठाया जाना विश्वासियों के लिए उद्धार का कारण होगा और साथ ही इस बात का भी संकेत होगा कि स्वर्गराज्य इस्राएल और संसार के निकट है।

लूका 17:20-37

फरीसियों ने पूछा,
कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा?
यीशु ने उत्तर दिया;
कि परमेश्वर का राज्य **प्रगट रूप से** नहीं आता।
परमेश्वर का राज्य तुम्हारे **बीच** में है।
(यानी: राजा यहाँ है!)

चेलों से यीशु ने कहा:
वे दिन आएंगे, जिन में तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन को देखना चाहोगे, और नहीं देखने पाओगे। लोग तुम से कहेंगे, देखो, वहां है, या देखो यहां है; परन्तु तुम चले न जाना और न उन के पीछे हो लेना। क्योंकि जैसे बिजली आकाश की एक ओर से कौन्धकर आकाश की दूसरी ओर चमकती है, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में प्रगट होगा।

परन्तु पहिले अवश्य है, कि वह बहुत दुख उठाए, और इस युग के लोग उसे तुच्छ ठहराएं।

वे संकेत कि स्वर्गराज्य निकट है
जैसा नूह के दिनों में हुआ था...जैसा लूत के दिनों में हुआ था...मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन **भी ऐसा** ही होगा...उस रात दो मनुष्य एक खाट पर होंगे...दो स्त्रियाँ एक साथ चक्की पीसती होंगी...दो जन खेत में होंगे एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ा जाएगा। यह सुन उन्होंने उस से पूछा,
हे प्रभु यह कहाँ होगा?

यीशु ने उत्तर दिया, जहाँ कहीं
(जीवित) शरीर होगा, वहां उकाब इकट्ठे होंगे।

"जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे, तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।" (1 थिस्स. 4:16-17)

रहस्यमय कलीसिया

कलीसिया का सिद्धांत अंत समय की भविष्यवाणियों को समझने के लिए केंद्रीय बिंदु है। मसीही जगत द्वारा बनाई गई कलीसिया की छवि नए नियम में सिखाई गई छवि से अलग है। मसीही जगत कलीसिया को एक कलीसिया संगठन के रूप में देखता है जिसका नेतृत्व याजकों और बिशपों के एक पदानुक्रम द्वारा किया जाता है जो एक धार्मिक व्यवस्था के अनुष्ठानों और व्यवस्थाओं को संचालित करते हैं। प्रार्थना पुस्तकें बताती हैं कि धार्मिक कैलेंडर के प्रत्येक सत्र में प्रत्येक आगंतुक को क्या पढ़ना चाहिए।

कई परंपराओं को आराधना की रीति में जोड़ा जाता है और कई उदाहरणों में ये पवित्रशास्त्र के समान महत्व रखती हैं। नेतृत्व के प्रत्येक स्तर के लिए लिपिकीय पहनावा निर्धारित है। बड़ी संपत्तियाँ कलीसिया के लिए वित्तीय लाभांश का उत्पादन करती है और केवल उसे बनाए रखने और विकसित करने के लिए बहुत अधिक समय लेती है। जब धन की आवश्यकता होती है तो अपील की जाती है और विशिष्ट परियोजनाओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए धन इकठ्ठा करने के तरीके अपनाए जाते हैं। कई मामलों में, सरकारी अनुदान माँगा और प्राप्त किया जाता है। पादरियों के वेतन को कर मुक्त लाभों के साथ वरिष्ठता के स्तर के अनुसार विनियमित किया जाता है।

पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों द्वारा स्थापित यीशु मसीह की कलीसिया काफी अलग थी; इसमें परमेश्वर के आत्मा से भरे हुए लोग शामिल थे जो विश्वास से जीते थे और जहाँ आवश्यक हो वहाँ अपने हाथों से काम करते थे, और कोई वेतन प्राप्त नहीं करते थे; वे कोई धार्मिक परिधान नहीं पहनते थे, किसी प्रार्थना पुस्तक का पालन नहीं करते थे, कोई राजनीतिक एहसान नहीं माँगते और संदेश से समझौता करने की बजाय उनके द्वारा घोषित विश्वास के लिए पीड़ित होने का चुनाव किया। सभी प्रेरितों ने सताव का सामना किया और अधिकाँश ने मसीह के सुसमाचार के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। हालाँकि केवल एक छोटा झुण्ड था, लेकिन कुछ वर्षों में ही प्रेरितों ने दुनिया को उलट कर रख दिया, भीड़ को मसीह पर व्यक्तिगत विश्वास के लिए प्रेरित किया और स्थानीय कलीसियाओं की स्थापना की।

मसीही जगत में एक सामान्य दृष्टिकोण यह है कि इस्राएल पुराने नियम में कलीसिया थी और नए नियम में कलीसिया "आत्मिक" इस्राएल है, लेकिन यह पवित्रशास्त्र के विपरीत है। बाइबल सिखाती है कि कलीसिया "अतीत में प्रगट नहीं किया गया" और इसका अस्तित्व पुराने नियम में नहीं था (इफि.3:1-10; कुलु. 1:18-27; रोमियों 16:25-26)।

जब यीशु आया तो उसने इस्राएल राष्ट्र को प्रचार किया और पूरे सुसमाचार में चेलों की शिक्षा *"इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़"* की ओर निर्देशित की गई थी (मत्ती 10:6)।

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को कलीसिया के बारे में कुछ भी नहीं पता था और उन्होंने कलीसियाई युग के लंबे अंतराल की समझ के बिना मसीह के पहले और दूसरे आगमन की भविष्य की घटनाओं को देखा, जो बीच में एक महान घाटी की तरह थी। यह तथ्य कि इस्राएल को आंशिक रूप से अंधा कर दिया जाएगा उसे यशायाह (अध्याय 6) में पहले से बताया गया था, लेकिन यह ईश्वरीय यहूदियों के साथ भी जुड़ा हुआ नहीं था। यहां तक कि प्रेरितों के काम अध्याय 1 में भी, कलीसिया के स्थापना से कुछ ही दिन पहले, चेले अभी भी एक सांसारिक राज्य की तलाश में थे जिस पर इस्राएल राज्य करेगा। लेकिन यीशु ने चेलों से कहा था कि वे इसे नहीं देखेंगे (लूका 17:22)।

कलीसिया इस्राएल राष्ट्र से काफी अलग है। कलीसिया एक स्वर्गीय लोग है जो *"मसीह यीशु में स्वर्गीय स्थानों में सभी आत्मिक आशीषों"* से आशीषित है (इफिसियों 1:3)। मसीह इस्राएल के राजा हैं लेकिन वह कलीसिया का दूल्हा है। जब विश्वासियों की पूरी संख्या कलीसिया में जुड़ जाएगी, तो मसीह अपनी दुल्हन को लेने के लिए बादलों में आएगा और मेमना का विवाह स्वर्ग में होगा जबकि उसी दौरान इस्राएल पृथ्वी पर प्रभु की ओर फिरेगा।

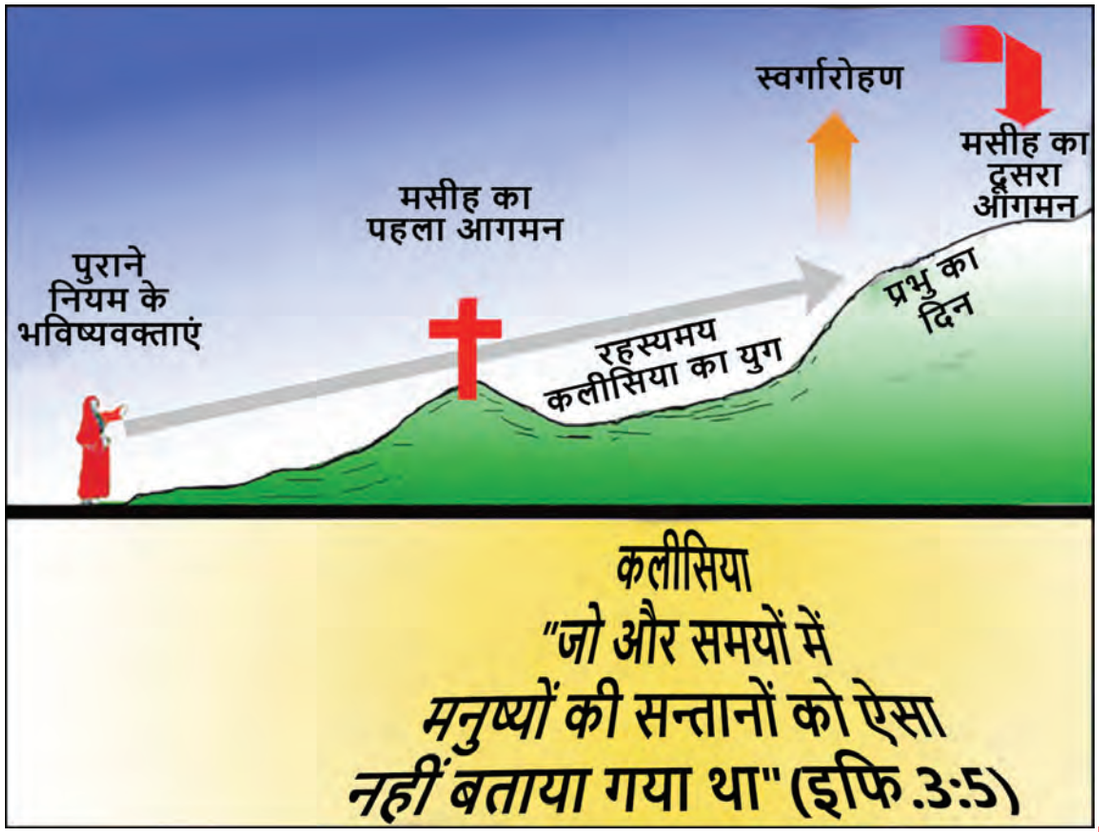

पहला पुनरुत्थान या जीवन का पुनरुत्थान

मसीही जगत में एक सामान्य दृष्टिकोण है कि युग के अंत में एक सामान्य पुनरुत्थान होगा जब मसीह वापस आएगा और सभी मनुष्यों का, बचाए गए और न बचे हुओं का, न्याय उस समय किया जाएगा। ऐसा एक दृष्टिकोण 1,000 वर्षों के लिए एक सांसारिक राज्य की किसी भी संभावना को तुरंत खारिज कर देता है। यह भविष्यवाणीय शास्त्रों में से इस्राएल के लिए किसी भी भविष्य को भी खारिज करता है और इसे असहस्राब्दिवाद, प्रतिस्थापन धर्मशास्त्र, या सुधारित धर्मशास्त्र के रूप में जाना जाता है।

यीशु ने स्पष्ट रूप से कहा कि बचाए गए और न बचाए गए आत्माओं के लिए एक अलग पुनरुत्थान है। यूहन्ना 5:28-29 में हम पढ़ते हैं:
"इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।"

जब यीशु मरे हुओं में से जी उठा तो पुराने नियम के संत **आदम से लेकर मसीह** तक, सभी जी उठे। मत्ती ने लिखा:

> *"और देखो मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया: और धरती डोल गई और चटानें तड़क गईं। और कब्रें खुल गईं; और सोए हुए पवित्र लोगों की बहुत से शव जी उठें। और उसके जी उठने के बाद वे कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में गए, और बहुतों को दिखाई दिए।"* (मत्ती 27:51-53)।

मसीह के जी उठने से पहले, बचाए गए लोगों की आत्माएं "शीओल" के स्वर्गलोक हिस्से में जाती थी। न बचाए गए सभी लोगों की आत्माएं भी " शीओल " में गईं, लेकिन "शीओल" की पीड़ा वाले हिस्से में गईं (लूका 16:19-31)।

यीशु ने क्रूस पर पश्चाताप करनेवाले चोर से कहा, *''आज तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा''* (लूका 23:43)।

मसीह के जी उठने से पहले कोई भी मरे हुओं में से नहीं जी उठ सकता था क्योंकि वह *"प्रथम फल" था जो सो गए थे"* (1 कुरिं.15:20,23)। पुराने नियम के संत *"उसके पुनरुत्थान के बाद"* अपनी कब्रों से बाहर आए और यीशु स्वर्गलोक को स्वर्ग में ले गया। आज, विश्वासियों की आत्मा मृत्यु के समय स्वर्ग में मसीह के पास जाती है (फिलिप्पियों 1:23)।

स्वर्गारोहण के समय, कलीसिया युग के मृतक संत (जो *"मसीह में थे"*) पहले उठाए जाएँगे, और जीवित संत *"बदले जाते"* हैं और एक पुनरुत्थान शरीर को प्राप्त करते हैं (1 थिस्स. 4:13-18; 1 कुरिं. 15:51-56)

जब मसीह महाक्लेश के अंत में वापस आएगा, तो महाक्लेश के संत जो शहीद हो गए थे, उन्हें मसीह के साथ 1,000 वर्ष तक राज्य करने के लिए जिलाया जाएगा (प्रका. 20:4)।

पृथ्वी पर मसीह के राज्य के 1,000 वर्ष के अंत में, *"शेष मरे हुए"* (प्रका. 20:5), अर्थात् सहस्राब्दी संत, पृथ्वी को आग से पुनर्निर्मित करने और एक नया स्वर्ग होने से पहले पुनरुत्थान की सामर्थ में जी उठेंगे तब एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी होगी।

न बचे हुए लोगों की आत्माएं समय के अंत में महान श्वेत सिंहासन के न्याय में दंड के पुनरुत्थान की प्रतीक्षा कर रही हैं; उन्हें आग की झील में डाल दिया जाएगा (प्रका. 20:14)।

जब मसीह वापस आएगा, तो मसीह-विरोधी और उसके पीछे चलने वाले सभी लोगों को आग की झील में डालने से पहले पुनरुत्थान का शरीर प्राप्त होंगे (प्रका. 19:20; दान.12:2; मत्ती 25:41)। केवल न बचाये गये पुनरूत्थित लोग ही "आग की झील" में जाएंगे।

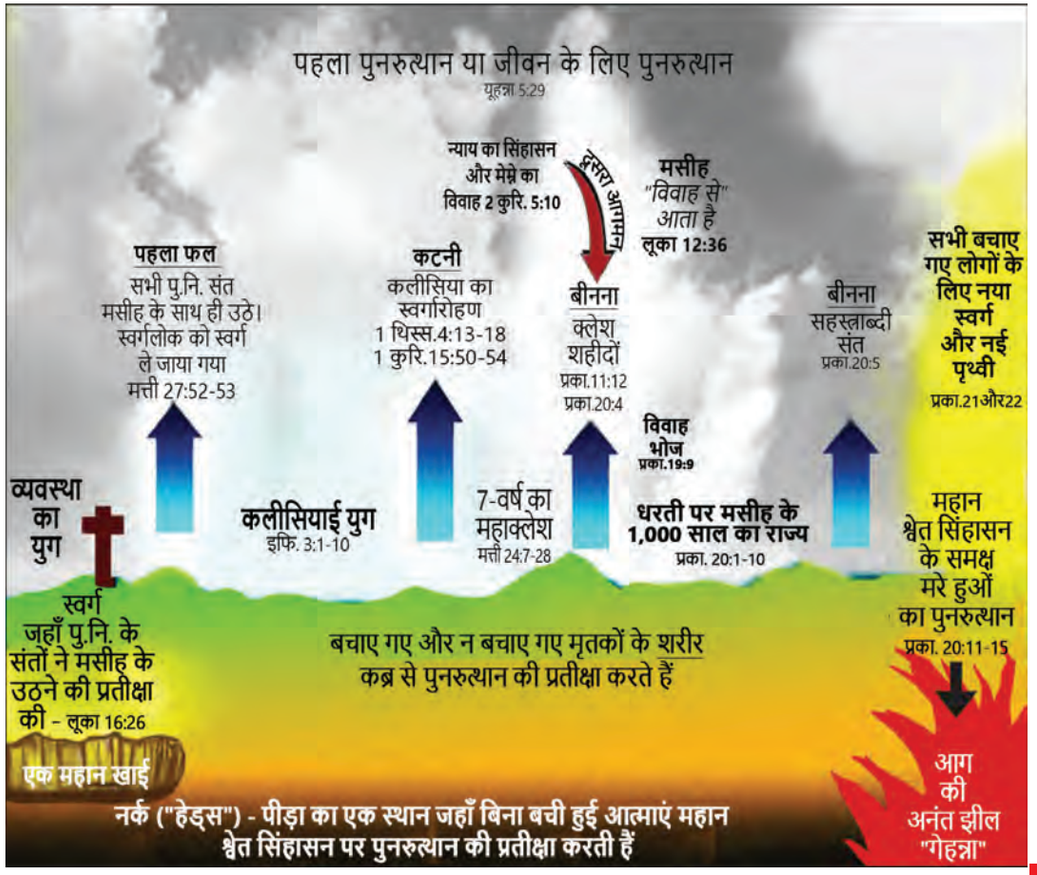

मसीही जगत के सात चरण, जैसा कि सात कलीसियाओं के लिए सात पत्रियों में पहले से बताया गया था

(प्रका. 2और 3)

ई.32

इफिसुस
"वांछित"
प्रारंभिक कलीसिया

ई.313 कॉन्सटेंटाइन की सहनशीलता का आदेश

स्मुरना
"मुर"
पीड़ित कलीसिया

ई. 54 से 305 तक नीरो से डायोक्लेटियन तक 10 मूर्तिपूजक उत्पीड़न

ई.600 पोप ग्रेगरी मानते हैं सियासी सत्ता

पेरगामोस
"विवाहित"
राज्य कलीसिया

ये कलीसियाएँ अब अस्तित्व में नहीं हैं फिर भी यीशु ने उनसे कहा कि "मेरे आने तक थामे रहो" (प्रका. 2:25)। इसलिए वे स्वर्गारोहण तक कलीसिया के विषय में भविष्यवाणी कर रहे हैं

ध्यान दें:
प्रत्येक चरण में *"जय पाने वाले"* मसीही जगत में **बचाए** गए लोग हैं। उन्हें जीवन की पुस्तक से *"मिटाया"* नहीं जाएगा और उन्हें *"सारे जगत पर आने वाली परीक्षा के समय से बचाया जाएगा।.. "* (प्रका. 3:10)

"यहाँ ऊपर आओ!"
प्रका.4:1

कलीसिया का स्वर्गारोहण

यीशु मसीह का दूसरा आगमन

थुआतीरा
"निरंतर बलिदान"
रोमी कैथोलिक कलीसिया

सरदीस
"बचे हुए थोड़े"
परिष्कृत कलीसिया

1517
लूथर का विरोध

फिलेदिलफिया
"भाईचारे की प्रीति"
मिशनरी कलीसिया

1700
मोरावियों की बेदारी

लौदीकिया
"लोगों का शासन"
करिश्माई उगती कलीसिया

1906
अज़सा सेंट मिशन, लॉस एंजिल्स

7 साल के क्लेश को "प्रभु का दिन" कहा जाता है, याकूब के कष्ट का समय और दानिय्येल का 70वां "सप्ताह"।

यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन से मसीह का 1,000 वर्ष का शासन

सात कलीसियाओं में कलीसिया के इतिहास की भविष्यवाणी

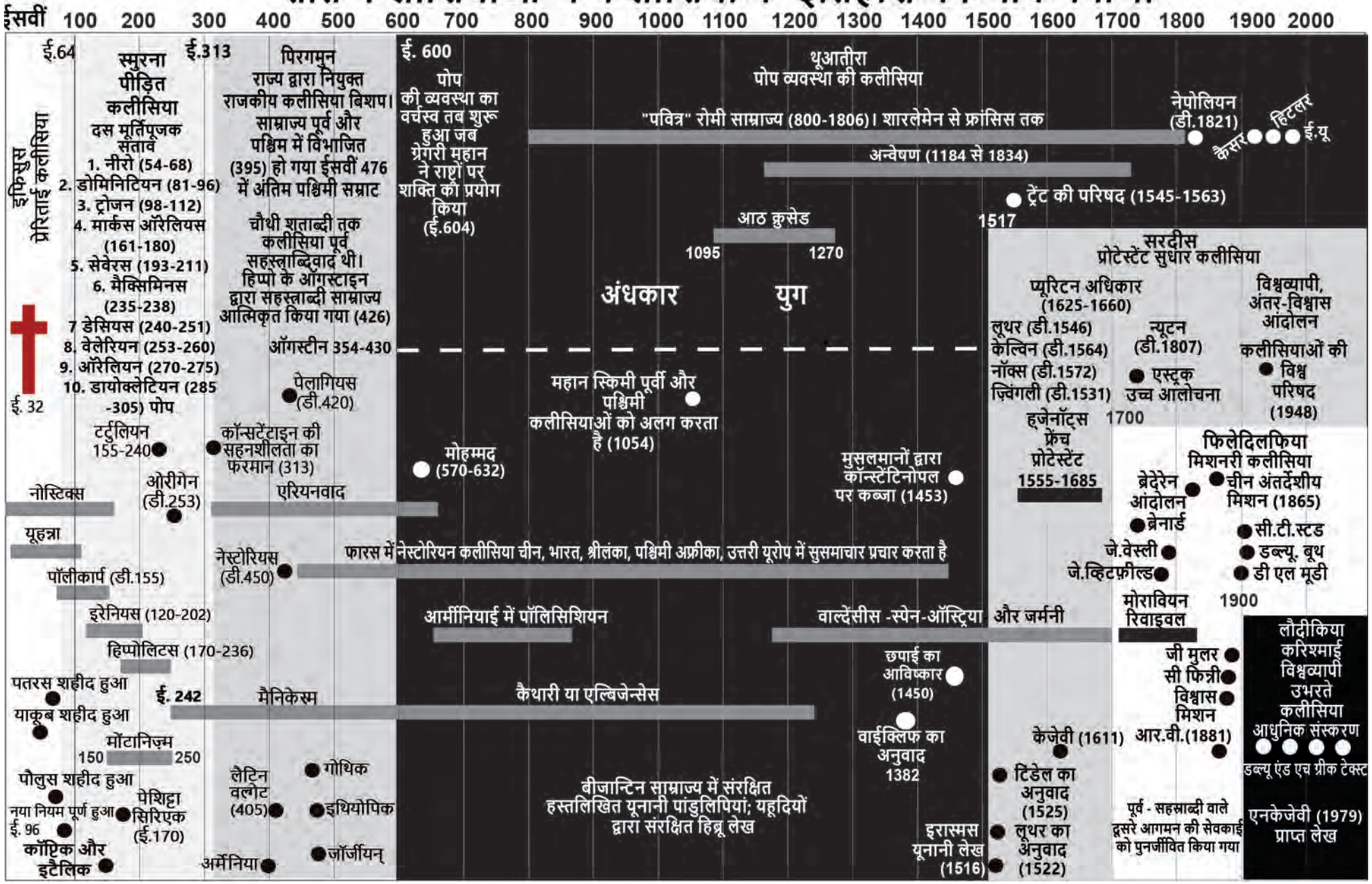

महाक्लेश से पहले स्वर्गारोहण

मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले सात वर्ष की महाक्लेश की अवधि होगी (मत्ती 24:29-30); यह *"प्रभु का दिन "* और *"याकूब के संकट का समय"* है (यिर्म 30:7)। इस्राएल के राज्य में आशीष दिए जाने से पहले यह महाक्लेश इस्राएल के इतिहास का 70वां "सप्ताह" है (दानि 9:27)। इसलिए यह इस्राएल के लिए है न कि कलीसिया के लिए।

1 थिस्सलुनीकियों के अध्याय 4 में, पौलुस ने कलीसिया के स्वर्गारोहण का वर्णन किया - जो *"मसीह में"* हैं। केवल कलीसिया *"मसीह में "* है अर्थात् मसीह की देह में है, क्योंकि *"क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या युनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब (मसीहियों) को एक ही आत्मा पिलाया गया।"* (1 कुरिं. 12:13)। स्वर्गारोहण के समय *"जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे..."* (1 थिस्स. 4:16-17)। देखें 1 कुरिं.15:52.

जब पौलुस ने *"मसीह में"* उन लोगों के स्वर्गारोहण का वर्णन किया तो उसने यह भी चर्चा की कि यह कब होगा। उसने चेतावनी दी कि *"जैसा रात को चोर आता है, वैसा ही प्रभु का दिन (महाक्लेश) आने वाला है। जब लोग कहते होंगे, कि कुशल है, और कुछ भय नहीं, तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा; और वे किसी रीति से न बचेंगे। पर हे भाइयों, तुम तो अन्धकार में नहीं हो, कि वह दिन तुम पर चोर के समान आ पड़े"* (1थिस्स.5:2-4)।

क्योंकि...

"क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं, (प्रभु के दिन के लिए नहीं) परन्तु इसलिये ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें। वह हमारे लिये इस कारण मरा, कि हम चाहे जागते हों, चाहे सोते हों: सब मिलकर उसी के साथ जिएँ" (1 थिस्स. 5:9-10)।

यीशु ने फिलेदिलफिया की कलीसिया से कहा:

"तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिये मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय बचा रखूँगा, जो पृथ्वी पर रहने वालों के परखने के लिये सारे संसार पर आने वाला है। मैं शीघ्र ही आनेवाला हूँ; जो कुछ तेरे पास है, उसे थामें रह, कि कोई तेरा मुकुट छीन न ले" (प्रका. 3:10-11)।

महाक्लेश इस्राएल का समय है जब 1,44,000 यहूदी पुरुष (प्रका. 7:1-8) राज्य के सुसमाचार का प्रचार *"सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा"* (मत्ती 24:14)। यहूदी मंदिर की आराधना यरूशलेम में पुनः शुरू होगी और जब *"एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा"* तो यह इस्राएल के लिए एक चिन्ह होगा कि युग का अंत आ चुका है। यीशु ने यहूदी शिष्यों से कहा कि वह *"विवाह से लौटेगा "* (लूका 12:36)। इसलिए दुल्हिन दूसरे आगमन से पहले स्वर्ग में विवाह में शामिल है - विवाह भोज पृथ्वी पर होगा (प्रका. 19:7-9; लूका 12:37)।

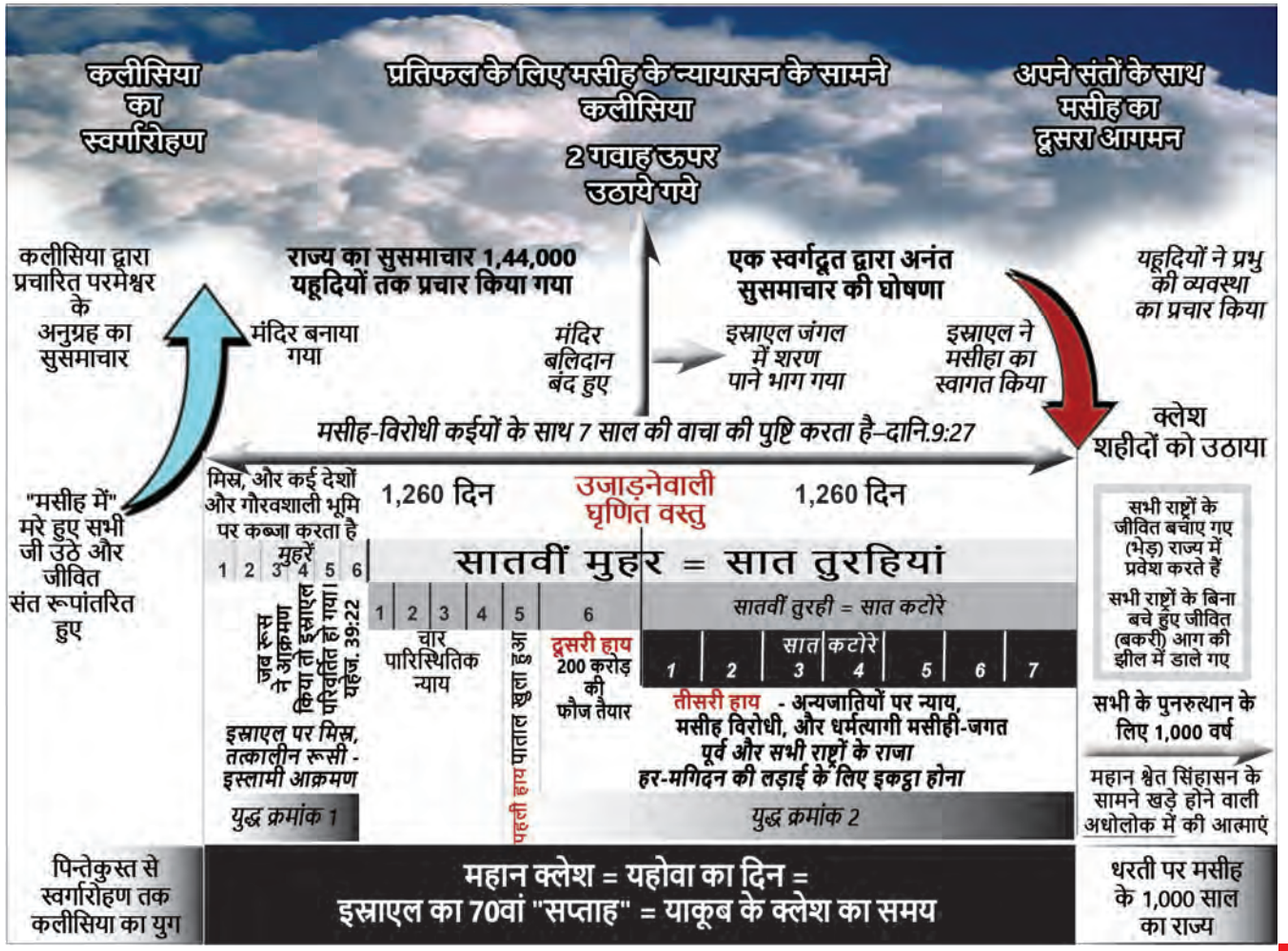

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को समझना

"इसलिये जो बातें तू ने देखीं हैं और जो बातें हो रही हैं; और जो इस के बाद होने वाली हैं, उन सब को लिख ले।" (प्रका. 1:19)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ईश्वरीय प्रकाशनों की समाप्ति है और जो भविष्यवानियाँ पूरे पुराने और नए नियम में बिखरी हुई हैं उन्हें क्रमानुसार एक साथ लाती है। यूहन्ना को एजियन सागर के पतमुस नामक एक टापू पर निर्वासित कर दिया गया था और वहीं पर उसने डोमिनिटियन (दूसरी शताब्दी में रहने वाले आइरेनियस के अनुसार) के शासनकाल के अंत में 96 ईसवीं में क़यामत (प्रकाशितवाक्य) को लिखा था । यूहन्ना ने लगभग उसी समय अपने पत्रियों और सुसमाचार को लिखा था।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में तीन भाग हैं:

1) पतमुस टापू पर **यूहन्ना** ने जो चीजें देखीं (अध्याय 1);

2) वे चीजें जो हैं अर्थात् वे चीजें जो **इस** वर्तमान कलीसिया युग में विद्यमान हैं जैसा कि एशिया के सात कलीसियाओं को लिखे गए पत्रों में वर्णित है (अध्याय 2 और 3);

3) वे चीजें जो इस वर्तमान **कलीसिया** युग के बाद होंगी , जैसा कि अध्याय 4 से 22 में वर्णित है।

मसीह के दर्शन को देखने के बाद, यूहन्ना को एशिया के सात कलीसियाओं को लिखने के लिए संदेश दिया गया था। ये संदेश यूहन्ना के दिनों में मौजूद प्रत्येक कलीसिया के लिए उपयुक्त थे और पेंतिकोस्त से कलीसिया के स्वर्गारोहण तक मसीही जगत के सात चरणों की भविष्यवाणी भी करते थे।

स्वर्गारोहण से पहले मसीही जगत के अंतिम चरण का वर्णन लौदीकिया की कलीसिया को लिखे पत्र द्वारा किया गया है। अध्याय 4 में यूहन्ना ने देखा कि स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है और उसने तुरही के शब्द के समान यह कहते हुए एक शब्द सुना:

"यहाँ ऊपर आ जा: और मैं वे बातें तुझे दिखाऊँगा, जिन का इन बातों के बाद पूरा होना अवश्य है" (प्रका. 4:1)।

यूहन्ना ने स्वर्ग में अपने स्वयं के भविष्य में उठाये जाने का पूर्वाभास किया, जिसका उसने अध्याय 4 और 5 में वर्णन किया।

महाक्लेश का वर्णन अध्याय 6 से 18 में किया गया है: 7 वर्षों का पहला भाग अध्याय 6 से 9 में है; 7 वर्षों के मध्य बिंदु पर होने वाली घटनाओं को अध्याय 10 से 14 में दर्ज किया गया है और 7 वर्ष के महाक्लेश के दूसरे भाग की घटनाओं को अध्याय 15 से 18 में दर्ज किया गया है।

मसीह के दूसरे आगमन के बाद मेमने का विवाह भोज होता है जैसे कि प्रकाशितवाक्य 19:7-9 में वर्णित है। प्रभु के आने पर मसीह-विरोधी का न्याय किया जाता है।

मसीह के **1,000 साल के सहस्राब्दी राज्य** को अध्याय 20 में देखा गया है, जो खोए हुए लोगों के विनाश के लिए पुनरुत्थान के साथ समाप्त होता है।

प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और 22 में नए आकाश और नई पृथ्वी में अनंत अवस्था के साथ समाप्त होता है। कलीसिया नए यरूशलेम पर राज्य करेगी, इस्राएल नए यरूशलेम के आसपास स्थित होगा, और बचाए गए अन्यजाति नई पृथ्वी पर राज्य करेंगे।

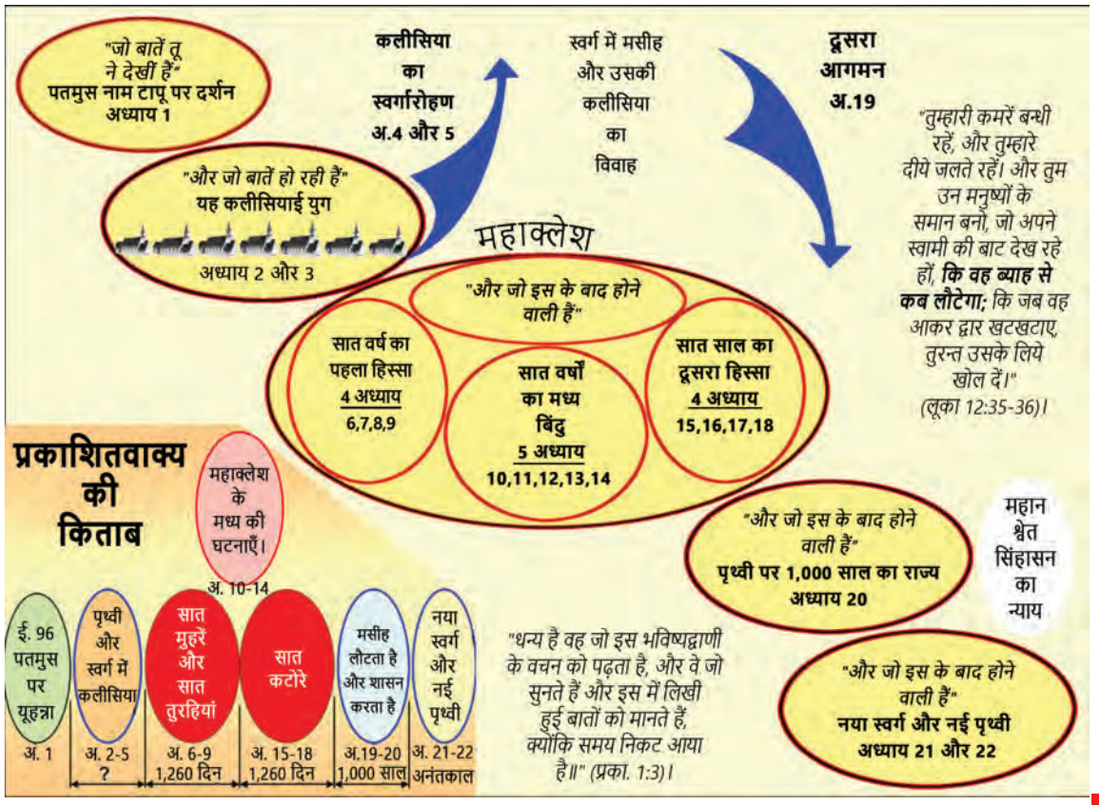

महाक्लेश के दौरान घटनाओं का क्रम

महाक्लेश के सात वर्षों के दौरान होने वाली घटनाओं को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है।

1) 7 साल का पहला भाग या 1,260 दिन
2) 7 वर्षों के मध्य बिंदु पर घटित होने वाली घटनाएँ और,
3) 7 साल का दूसरा भाग या 1,260 दिनों की दूसरी अवधि।

जितना अधिक हम प्रकाशितवाक्य के पाठ से परिचित होते हैं उतना ही यह स्पष्ट होता है कि यह हमें उन प्रमुख घटनाओं का एक निरंतर विवरण प्रदान करता है जो पिन्तेकुस्त के दिन से लेकर समय के अंत तक और अनंत काल तक घटित होंगी।

पहले 1,260 दिनों के बाद पूरा दृश्य बदल जाएगा जब मसीह-विरोधी, जो कि 7 वर्षों के पूर्वार्द्ध में पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य का राजनीतिक प्रमुख है, वह पशु बन जाएगा और शैतानी रूप से ग्रस्त हो जाएगा।

7 वर्षों के पहले भाग के दौरान, इस्राएल पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जिस पर रूस और इस्लामी राष्ट्रों द्वारा आक्रमण किया जाएगा, लेकिन वह अपनी बड़ी मुसीबत के समय में, प्रभु को पुकारेगा और "सारा इस्राएल बच जाएगा" (रोमियों 11: 26-33)।

पहले 1,260 दिनों में, इस्राएल को सुसमाचार की गवाही सौंपी जाएगी और 1,44,000 यहूदी युवक, थोड़े समय के लिए (मत्ती 10:23) राज्य के सुसमाचार की घोषणा "सारे जगत में सभी जातियों पर गवाही के लिए" करेंगे (मत्ती 24:14) इससे पहले कि आखिरी 1,260 दिनों का समय समाप्त हो।

पहले भाग के 1260 दिनों के अंत में, पृथ्वी पर खुली गवाही को खामोश कर दिया जाएगा और 1,44,000 यहूदी स्वर्ग में सिंहासन के सामने दिखाई देंगे।

7 वर्ष के दूसरे भाग में, राष्ट्रों का बंटवारा हो जाएगा; जो मसीह के पक्ष में हैं और जो पशु और उसके अनुयायियों के साथ है। पशु के पास अपने अनुयायियों के माथे या दाहिने हाथ में स्वामित्व का चिन्ह होगा। इस समय के दौरान परमेश्वर जो क्रोध का कटोरा दण्ड के रूप में उंडेलेगा, वह पशु, उसके राज्य और उसके चिन्ह को प्राप्त करने वालों के विरुद्ध निर्देशित किया जाएगा।

सात साल की अवधि में दो शक्तिशाली अगुवों की पहचान की गई है; गोग, जो मागोग (रूस) की भूमि में मेशेक और त्यूबल का मुख्य हाकिम है और वह पशु (मसीह-विरोधी) जो पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य का अगुवा है। 7 साल के पहले भाग में गोग और मागोग की भूमि को नष्ट की जाती है और 7 साल के दूसरे भाग के अंत में पशु का नाश हो जाता है।

पूरी अवधि कलीसिया के स्वर्गारोहण के तुरंत बाद शुरू होती है और तब समाप्त होती है जब मसीह अपने सभी संतों के साथ महिमा और सामर्थ में आता है।

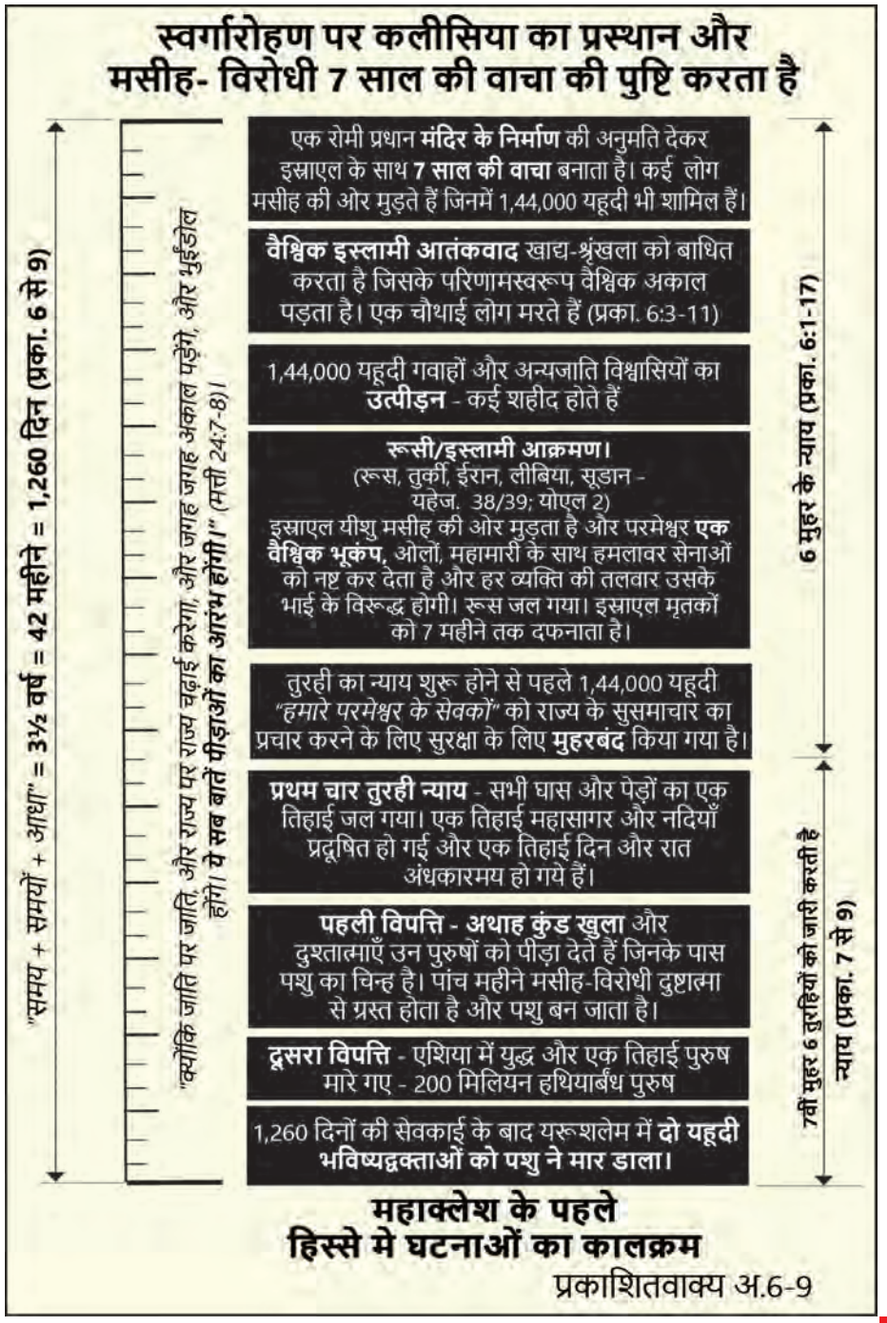

रूस और इस्लाम को नष्ट कर दिया गया, इस्राएल बचाया गया, मसीह-विरोधी निचले स्थल से दुष्टात्मा ग्रस्त होकर निकलता है

सात बड़े शब्दों के न्याय को मुहर्बंध कर दिया गया और एक स्वर्गदूत ने घोषणा की कि *"अब और देरी नहीं होगी"*।

मसीह-विरोधी **यहूदी बलिदानों को मंदिर में बंद कर देता है** और वहाँ अपनी मूर्ति रखता है - *"उजाड़ने वाली घृणित वस्तु"*।

स्वर्ग में युद्ध होता है और माइकल और उसके स्वर्गदूत ड्रैगन (शैतान) और उसके स्वर्गदूतों को पृथ्वी पर फेंक देते हैं।

यरूशलेम में पशु द्वारा मारे गए दो यहूदी भविष्यवक्ताओं को **ऊपर उठाया गया** और 3½ दिनों के बाद स्वर्ग में ले लिया गया।

इस्राएल यरूशलेम से भाग जाता है, जिसे *"एक महान उकाब के दो पंख"* वाले राष्ट्र द्वारा मदद की जाती है - संभवतः संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा।

परमेश्वर के 1,44,000 यहूदी सेवक स्वर्ग में **सिंहासन के सामने** प्रकट होते हैं। पृथ्वी पर इस्राएल की गवाही खामोश हो जाती है।

स्वर्ग के द्वारा उड़ने वाले स्वर्गदूत ***"अनंत सुसमाचार"* की घोषणा** करते हैं और आने वाले क्रोध और महाक्लेश की चेतावनी देते हैं।

पशु पर एक **हत्या का प्रयास** किया जाता है और उसके सिर पर तलवार से लगी *"भारी घाव"* ठीक हो जाता है।

प्रभु और स्वर्गदूत पृथ्वी की **फसल काटने** और राष्ट्रों को परमेश्वर के क्रोध के कुण्ड में डालने की तैयारी करते हैं।

एक स्वर्गदूत चेतावनी देता है कि **पशु का निशान** न लें। *"प्रभु में"* मरना उस आग की झील में हमेशा के लिए तड़पने से बेहतर है।

महाक्लेश के मध्य भाग में होने वाली घटनाएँ

प्रकाशितवाक्य 10-14

7वीं तुरही ने 7 "आखिरी विपत्तियों" की घोषणा की

"समय + समयों + आधा" = **3 ½ वर्ष = 42 महीने = 1,260 दिन (प्रका. 16 से 18)**

"क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरंभ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा। और यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएंगे।" (मत्ती 24:21-22)।

पशु को शैतान और पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य (ईयू) के **दस राजाओं** द्वारा संप्रभु शक्ति दी गई।

लोग पशु, उसकी मूर्ति और शैतान की पूजा करते हैं जो पशु को सामर्थ देता है।

सात स्वर्गदूत सात कटोरे (पात्र) के साथ दिखाई देते हैं जो मुख्य रूप से पशु और उसके अनुयायियों पर निर्देशित *"सात अंतिम विपत्तियाँ"* हैं।
पहले कटोरे उन सभी पर एक *"गंभीर पीड़ा"* का कारण बनती है **जो पशु की पूजा करते हैं**। पाँचवा कटोरा उसके पशु के राज्य में *"अंधेरा"* लाती है यानि पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य में।

महाक्लेश के पहले हिस्से में पृथ्वी के एक तिहाई हिस्से पर जो न्याय आए थे, वे अब वैश्विक रूप से समुद्र और नदियों को प्रदूषित करने वाले और भीषण गर्मी की लहरों को ला रहे हैं।

इस्राएल को परमेश्वर द्वारा तैयार किए गए स्थान पर संरक्षित किया जाएगा और एक महान बाज के दो पंखों के रूप में वर्णित राष्ट्र द्वारा पोषित किया जाएगा – शायद यू.एस.ए?

इस्राएल अस्तित्व के लिए लड़ रहा होगा और चूँकि वे परमेश्वर पर भरोसा कर रहे हैं, इसलिए वह पड़ोसी राष्ट्रों के बीच *"लकड़ी के ढेर में आग भरी अंगेठी"* और *"पूलें में लती हुई मशाल"* की तरह होगा (ज़कर्याह 12:6)।

रोम में 10 राजा *भेद बेबीलोन (वैटिकन)* को जला देंगे

पशु हर-मगिदोन की लड़ाई के लिए, यरूशलेम के विरूद्ध *"सभी राष्ट्रों"* को इकट्ठा करने के लिए शैतानी शक्तियों का उपयोग करेगा।

मसीह अपनी दुल्हन के साथ जैतून के पर्वत पर आते हैं और राष्ट्रों को मारते हैं। पशु और झूठे भविष्यवक्ता के मारे जाने और आग की झील में डाल दिए जाने पर एक **दूसरा वैश्विक भूकंप** आता है

7वीं तुरही सात कटोरों के न्याय को जारी करती है (प्रका. 16 से 18)

महाक्लेश के दूसरे हिस्से में घटनाओं का कालक्रम (प्रका. 15 से 19)

(प्रकाशितवाक्य. 15 से 18)

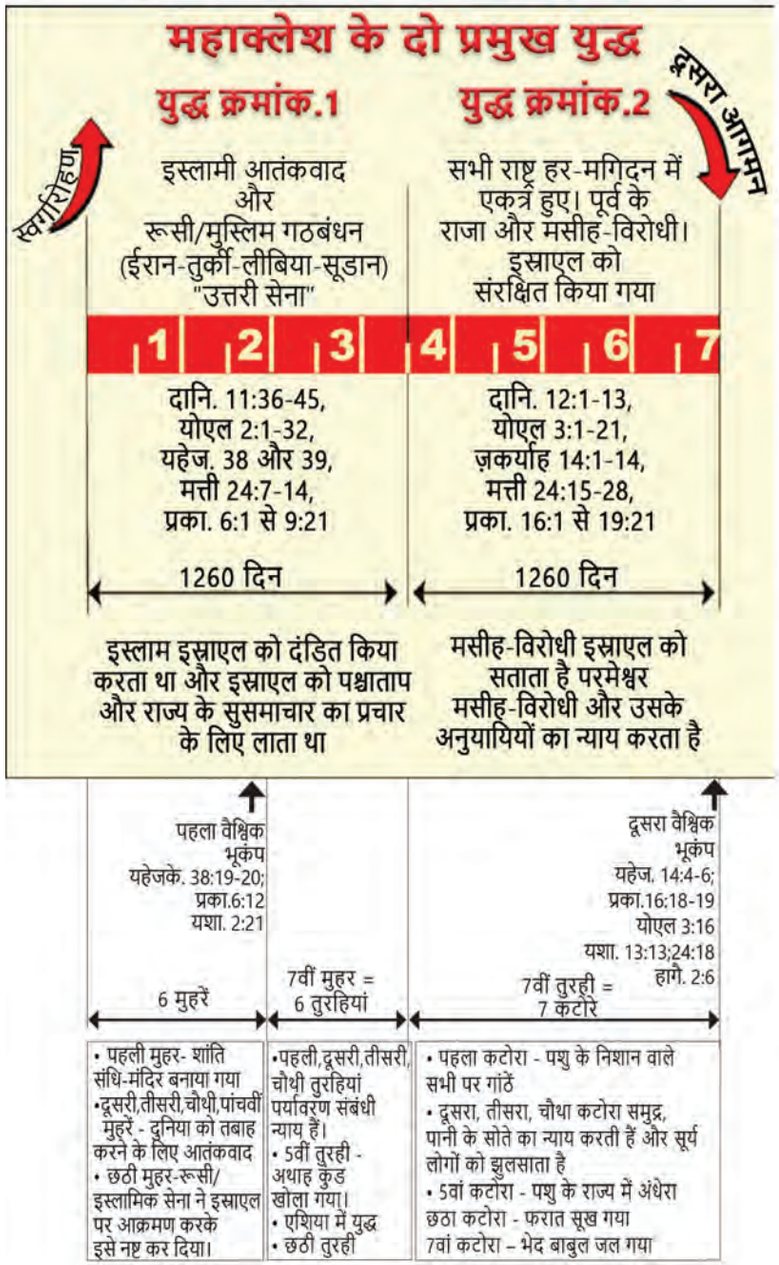

महाक्लेश में युद्ध और भूकंप

महाक्लेश केवल सात वर्ष के लिए रहता है और सात साल साढ़े तीन साल की दो अवधियों में विभाजित होता है। महाक्लेश के पहले भाग के दौरान मसीह-विरोधी पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य पर एक राजनीतिक अगुवा होता है और इस तरह स्वर्गारोहण के तुरंत बाद इस्राएल के साथ एक वाचा बाँधता है। महाक्लेश के पहले भाग के अंत में अथाह कुंड खोले जाने के बाद और शैतान को जब स्वर्ग से पृथ्वी पर फेंक दिया जाता है, तो अथाह कुंड में से निकले एक दुष्टात्मा से मसीह-विरोधी ग्रस्त हो जाता है। इस लिए उसके बारे में कहा जाएगा कि वह *"अथाह कुंड में से निकलेगा"* (प्रका. 17:8)।

पहले भाग के दौरान लाल घोड़े के सवार (दूसरी मुहर) को "यह अधिकार दिया गया, कि पृथ्वी पर से मेल उठा ले, ताकि लोग एक दूसरे को वध करें; और उसे एक बड़ी तलवार दी गई" (प्रका. 6:4)। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आतंकवाद दुनिया में इतना उथल-पुथल मचाएगा कि अकाल और मृत्यु दुनिया के एक चौथाई हिस्से पर हावी हो जाएगी (प्रकाशितवाक्य 6:5-8) और जो लोग मसीह की ओर मुड़ते हैं उन पर इतना सताव होगा कि कई लोगों को शहीद कर दिया जायेगा (प्रका. 6:9-11)। छठी मुहर का न्याय (प्रका. 6:12-17) एक वैश्विक भूकंप का वर्णन करता है; महाक्लेश के दौरान दो वैश्विक भूकंपों में से पहला।

पहला वैश्विक भूकंप तब आता है जब इस्राएल पर महाक्लेश के पहले भाग में एक रूसी/इस्लामी सेना द्वारा आक्रमण किया जाता है जैसा कि यहेजकेल 38:18-20 और प्रका. 6:12- 17 में वर्णित है। यह हर-मगिदोन नहीं है ।एक दूसरा और इससे भी बड़ा भूकंप महाक्लेश के दूसरे भाग के अंत में आता है जब प्रभु अपनी महिमा में लौटता है (प्रका. 16:18; ज़कर्याह 14:1-5)।

महाक्लेश के पहले भाग में 1,44,000 यहूदी मसीह की ओर मुड़ेंगे और स्वर्गराज्य के सुसमाचार का प्रचार करेंगे और रूसी आक्रमण से बचे हुए राष्ट्र के एक तिहाई लोग प्रभु की खोज करेंगे (जेक.13:9)।

यह राष्ट्रीय स्तर पर इस्राएल का एक परिवर्तन होगा, जिसके कारण मसीह- विरोधी अपनी वाचा को तोड़ देता है और मंदिर पर कब्जा कर लेता है, जिससे *"वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा"* (दानिय्येल 9:27)।

जब इस्राएल प्रभु की ओर मुड़ेगा, तब रूस और उसके इस्लामी सहयोगी नष्ट हो जाएंगे; रूस (मागोग की भूमि) को जला दिया जाएगा (यहेजकेल 39:6) और पहले भाग के अंत में, मसीह-विरोधी पशु के रूप में, और उसका झूठा भविष्यद्वक्ता दुनिया को चमत्कारों के साथ बहकायेगा और ईश्वरीय राष्ट्र इस्राएल को पूरी तरह से नष्ट करने की कोशिश करेगा और साथ ही उन सबको भी जिन्होंने उस सुसमाचार पर विश्वास किया जिसका उन्होंने प्रचार किया था।

वह पशु परमेश्वर के लोगों को पूरी तरह से नष्ट करने के लिए यरूशलेम के विरोध में *"सभी राष्ट्रों"* को इकट्ठा करेगा (प्रका. 16:12-14; योएल 3:2) लेकिन *"यहोवा अपनी प्रजा के लिये शरणस्थान और इस्राएलियों के लिये गढ़ ठहरेगा"* (योएल 3:16)।

यह इतिहास के इस बिंदु पर है जब दूसरा वैश्विक भूकंप आएगा; द्वीप गायब हो जाएँगे, पहाड़ चौरस हो जाएंगे, महान शहर, रोम, तीन भागों में विभाजित हो जाएगा और बड़े बड़े आकार के (100 पाउंड) ओले गिरेंगे, जिससे शैतान की पूजा करने वाले लोग परमेश्वर की निंदा करेंगे। इस्राएल में, जैतून का पहाड़ दो भागों में विभाजित हो जाएगा जिससे वहाँ एक बड़ी घाटी बन जायेगी और मसीह अपने लोगों को आकर छुड़ाएगा और उस पशु को उसके सभी लोगों के साथ नष्ट कर देगा।

धर्मत्यागी मसीहियत - "भेद बेबीलोन" का न्याय किया जाएगा

अन्यजातियों का समय उस समय की अवधि है जिसमें अन्यजातियों ने यरूशलेम पर कब्जा कर लिया है। यह 606 ईसा पूर्व में शुरू हुआ था जब बेबीलोनियों ने यहूदियों को बंदी बनाकर बेबीलोन ले जाना शुरू किया और फारसी साम्राज्य (538-332 ईसा पूर्व), और फिर यूनानी साम्राज्य (332-63 ईसा पूर्व) के समय तक जारी रहा। तब से इस पर रोमी, अरब, तुर्क और अंग्रेजों का कब्जा है। पुराना रोमी साम्राज्य विभिन्न रूपों में अब भी जारी है: राज-शाही, बीजान्टिन, पवित्र रोमी साम्राज्य, और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से, यूरोपीय संघ (ईयू) के झंडे तले पुनर्जीवित किया जा रहा है। दानिय्येल 9:25 के अनुसार, मसीह-विरोधी पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य से उठेगा, जो अन्यजातियों के समय में अंतिम राज्य होगा (लूका 21:24) क्योंकि यह उसके लोग थे जिन्होंने 70 ईसवीं में यरूशलेम को नष्ट कर दिया था। मसीह के आगमन पर मसीह-विरोधी को नष्ट कर दिया जाएगा।

मसीह-विरोधी को *"दस सींगों"* (राजाओं) के बीच एक *"छोटे सींग"* के रूप में वर्णित किया गया है जो अंत के दिनों में पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य का नेतृत्व करेगा (दानिय्येल 7:8,23-26)। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक (प्रकाशितवाक्य 13:1-2; 17:3) में उसे सात सिर और दस सींग (राजाओं) वाले *"पशु"* के रूप में भी वर्णित किया गया है ।

प्रकाशितवाक्य 17 में, उस पशु पर एक वेश्या स्त्री द्वारा सवार होते हुए दिखाया गया है जिसका नाम "भेद - बड़ा बेबीलोन पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता " है (प्रका. 17:5)। यह स्त्री स्पष्ट रूप से रोम में स्थित है क्योंकि वह सात पहाड़ों पर बैठी है और 96 ईसवीं में, यूहन्ना ने कहा कि वह "वह बड़ा नगर है, जो पृथ्वी के राजाओं पर राज्य करता है " (प्रका. 17:18)। रोम को सात पहाड़ियों का शहर कहा जाता है।
उसकी पहचान के अन्य संकेत इस प्रकार हैं:
1) वह *"बहुत से पानियों "* (अंतर्राष्ट्रीय v.15) पर बैठती है।
2) उसके पास ईशनिंदा और घृणा (मूर्तिपूजा) से भरा एक सोने का कटोरा है।
3) वह बैंजनी और बहुत ही मूल्यवान लाल रंग के वस्त्र पहिने हुई है; और सोने और बहुमोल मणियों और मोतियों से सजी हुई थी *"वह "*यीशु के गवाहों के लोहू पीने से मतवाली है (प्रका. 17:6)।

समय, दिसंबर 9,1991

केवल पॉप-व्यवस्था ही इन संकेतों से सही रूप से मिलते हैं: वह रोम में स्थित है, उसके हाथ में अनुष्ठान वाला सोने का प्याला है जो मूर्तिपूजा से भरा हुआ, क्योंकि वह दावा करती है कि ब्रेड और प्याले के माध्यम से मसीह के शरीर और लहू की आराधना की जाती है; उसके सेवकगण बैंगनी और लाल रंग के कपड़े पहने हुए हैं, और वेटिकन की संपत्ति का अनुमान लगाना बहुत ही कठिन है। सदियों से यहाँ लाखों बाइबल पर विश्वास करने वाले मसीहियों को धर्मयुद्ध और धर्म-प्रयोगों के नाम पर मार डाला गया, जला दिया गया और प्रताड़ित किया गया है। अपने सांसारिक बाजु, यानि पवित्र रोमी साम्राज्य और कैथोलिक राजाओं के माध्यम से, उसने किसी भी व्यक्ति के खिलाफ संघर्ष किया जिसने उसके सामने झुकने से इनकार किया। अब, पर्दे के पीछे, वह पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य के गठन का मार्गदर्शन कर रही है, जिसकी स्थापना 1958 में रोम की संधि द्वारा की गई थी। पुर्तगाल में एक कैथोलिक मठ में लिस्बन संधि (2009) पर हस्ताक्षर किए गए थे । जर्मनी का क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक यूनियन (सीडीयू) एक कैथोलिक राजनीतिक दल है।

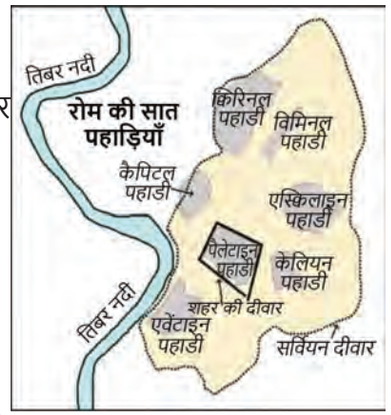

यह सही है कि उसका नाम "भेद बेबीलोन" है। शैतान प्राचीन बेबीलोन के राजा के पीछे की आत्मा थी, जहाँ से मूर्तिपूजा शुरू हुई (यशायाह 13) और जब बेबीलोन के मंदिरों को नष्ट कर दिया गया तो वह सोर के राजा (यहेजकेल 28) के पीछे चला गया; जब सोर को नष्ट कर दिया गया तो शैतान का मुख्यालय एशिया में पिरगमुन में था (प्रका. 2:13)।अब पोप मूर्तिपूजक महायाजकीय पदवी पोंटिफेक्स मैक्सिमस धारण करते हैं। अंत के दिनों में, जानवर के सिर पर

अंत के दिनों में, पुनर्जीवित रोमन साम्राज्य का मुखिया पशु, शैतान द्वारा ग्रस्त होकर यरूशलेम और दुनिया भर में पुनर्निर्मित मंदिर में अपनी मूर्ति स्थापित करने के द्वारा कब्जा करेगा। पोप मसीह-विरोधी नहीं है, लेकिन पोप उसे सत्ता में लाएंगे। टाइम पत्रिका दिसम्बर 9, 1991 ने यूरोपीय संघ को एक वेश्या द्वारा पशु पर सवारी करते हुए के रूप में चित्रित किया है।

जब यूरोपीय संघ ने स्ट्रासबर्ग में अपना $400 मिलियन का संसद भवन बनाया तो वास्तुकार को बाबेल के टॉवर की तरह एक अधूरा टॉवर डिजाइन करने को कहा गया! एक पशु की सवारी करने वाली महिला की छवि यूरोप में सिक्कों पर होती है और यूरोपीय संघ के बारे में छपी पेंगुइन पुस्तक के कवर पर भी है। यह छवि यूरोपा के मिथक से उत्पन्न हुई है , जो कि सोर के राजा की बेटी थी, जिसे यूनानी देवताओं के पिता ज्यूस विवाह करना चाहता था। लेकिन उसने मना कर दिया, इसलिए उसने खुद को एक सफेद बैल में बदल दिया और जब वह उस पर सवार हुई, तो वह भूमध्य सागर में कूद गया और उसे पीठ पर बिठाए हुए क्रेते तक तैरकर गया, जहाँ वह वापस एक पुरुष में बदल गया और उससे शादी कर ली।अधिकार में आने पर मसीह-विरोधी पोप व्यवस्था को जला देगा (प्रका.18)। जब वह यरूशलेम के मन्दिर में परमेश्वर होने का दावा करने के लिए बैठेगा, तो उसका उसके लिए और कोई उपयोग नहीं रहेगा (2 थिस्सु. 2:4)।

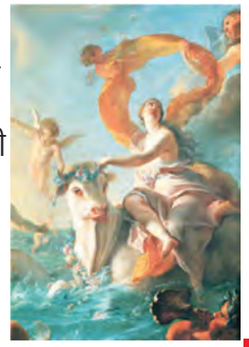

अनंत राज्य - नया स्वर्ग और नई पृथ्वी

हज़ार वर्ष के शासन के अंत में, शैतान अथाह कुंड से मुक्त किया जाएगा और उन राष्ट्रों को बहकाने के लिए आगे बढ़ेगा जो स्वर्गराज्य युग के दौरान मसीह के शासन के अधीन रहे हैं। बहुत से लोग जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा नए जन्म को नहीं जाना है, वे धोखा खाएँगे और वे मसीह के विरुद्ध विद्रोह करेंगे। गोग और मागोग (रूस) यरूशलेम के विरूद्ध एक सेना का नेतृत्व करेंगे, लेकिन परमेश्वर उन्हें स्वर्ग से आग भेजकर नष्ट कर देंगे और शैतान हमेशा के लिए आग की झील में डाल दिया जाएगा (प्रका. 20:7-10)।

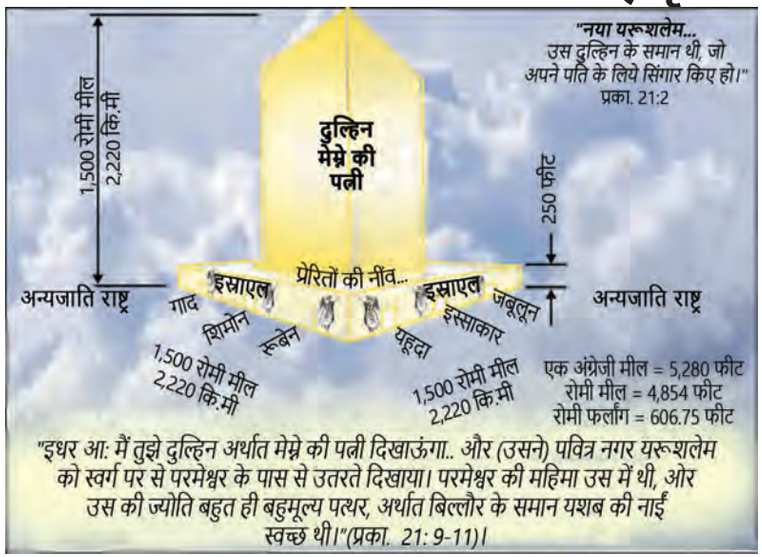

पृथ्वी पर मसीह के 1,000-वर्ष के शासन के बाद, सभी युगों में से न बचाए गए "मृत छोटे और बड़े" को कब्रों (शरीर) और अधोलोक (प्राण) से "महान श्वेत सिंहासन" के सामने खड़े होने के लिए जिलाया जाएगा जहाँ उनके कार्यों के अनुसार उनका न्याय किया जाएगा। कोई भी बचा हुआ व्यक्ति कभी भी "महान श्वेत सिंहासन " के सामने खड़ा नहीं होगा क्योंकि उनके पापों का न्याय यीशु मसीह में पहले ही किया जा चुका है जब वह क्रूस पर मरा।

दो किताबें खोली गई हैं; जीवन की पुस्तक और कार्यों की पुस्तक (प्रका. 20:11-15)। "दुनिया की नींव" से पहले ही प्रत्येक जीवित व्यक्ति का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ है और केवल वे जो परमेश्वर की दया को अस्वीकार करते हैं, उनका नाम मिटा दिया गया हैं। सरदीस की कलीसिया से मसीह ने कहा: "जो जय पाए (बचाए गए), उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा, और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूँगा" (प्रका. 3:5)। कार्य की पुस्तक आग की झील में न बचे लोगों के दंड की मात्रा को निर्धारित करने के लिए खोली जाएगी।

अधोलोक बिना बचे लोगों की आत्माओं के लिए दंड केंद्र है, जब तक कि वे अपने अनंत दंड को पाने के लिए न्यायी के सामने पेश नहीं हो जाते। पिता ने "उसे (मसीह को) न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिये कि वह मनुष्य का पुत्र है" (यूहन्ना 5:27)। "और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए; यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है। और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया" (प्रका. 20:14)।

तब पृथ्वी को आग से पुनर्निर्मित किया जाएगा। पतरस ने लिखा कि "परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करना चाहिए; जिस के कारण आकाश आग से पिघल जाएँगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएँगे। पर उस की प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिन में धार्मिकता वास करेगी" (2 पतरस 3:12-13)।

यूहन्ना ने भी कहा कि उसने "नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा' (प्रका. 21:1)।

नए आकाश (वायुमंडलीय आकाश) और पृथ्वी में सभी युगों के पुनरुत्थित छुडाये हुओं और "परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन" का वास होगा। (मसीह) नई पृथ्वी पर निवास करेगा (प्रका. 22:3)। यूहन्ना ने लिखा: *"फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो। फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा"* (प्रका. 21:2-4)।

नया यरुशलेम कई भवनों वाला *"पिता का घर"* है जो वर्तमान में प्रभु यीशु द्वारा तैयार किया जा रहा है (यूहन्ना 14:2)। जब यूहन्ना ने शहर को उतरते देखा तो वह *"वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो"* (प्रका. 21:2) । एक स्वर्गदूत ने कहा, *"इधर आ: मैं तुझे दुल्हिन अर्थात मेमने की पत्नी दिखाऊँगा। और वह मुझे आत्मा में, एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया"* (प्रका. 21:9-10)।

नया यरूशलेम कलीसिया का अनंत निवास होगा, जो मसीह की दुल्हन है; इसे प्रेरितों की नींव पर बनाया गया है, क्योंकि उनके नाम उन बहुमूल्य पत्थरों पर हैं जो उसकी नेव पर रखे गये हैं (प्रका. 21:14; इफि. 2:20)।

इस्राएल से छुड़ाए गए लोग उस शहर के चारों ओर होंगे जिसकी शहरपनाह *"बड़ी ऊंची थी, और उसके बारह फाटक और फाटकों पर बारह स्वर्गदूत थे; और उन पर इस्राएलियों के बारह गोत्रों के नाम लिखे थे"* (प्रका. 21:12)।

आदम के समय से लेकर अन्यजातियों से छुड़ाए गए लोग नई पृथ्वी पर निवास करेंगे। *"और जाति जाति के लोग उस की ज्योति में चले फिरेंगे, और पृथ्वी के राजा अपने अपने तेज का सामान उस में लाएँगे"* (प्रका. 21:24)।

भविष्यवाणी एक नज़र में - इसे मिलाकर देखें

"और हमारे पास जो भविष्यद्वक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा है और तुम यह अच्छा करते हो, कि जो यह समझ कर उस पर ध्यान करते हो, कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे, और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे। पर पहले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे" (2 पतरस 1:19-21)।

बाइबल की भविष्यवाणी को समझने के लिए किसी विशेष विषय से संबंधित सभी आयतों पर विचार करना आवश्यक है। पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी की निजी व्याख्या नहीं है; अलग-अलग लेखों में कई गलत विचार गढ़े गए हैं।

उन अद्‌त भविष्यवाणियों की पहचान करने के लिए इतिहास का कुछ ज्ञान होना भी महत्वपूर्ण है जो पहले ही पूरी हो चुकी हैं और पुराने नियम के ऐतिहासिक खंडों का अध्ययन किया जाना चाहिए। पतरस ने लिखा कि भविष्यवाणी पवित्रशास्त्र के कई हिस्सों में पाई जाती है और हमें आयतों की तुलना आयतों से करने की आवश्यकता है। बाइबल स्वयं अपना अनुवादक है।

ऊपर दिया गया चार्ट दिखाता है कि कैसे बाइबल की भविष्यवाणी का हर पहलू एक साथ जुड़ा हुआ है। इस्राएल, अन्यजातियों और कलीसिया के बारे में भविष्यवाणियाँ हमें इस संसार के लिए परमेश्वर के उद्देश्य और योजना को समझाने के लिए एक साथ मिलकर सामने आती हैं।

इस्राएल परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं जिनके द्वारा उसने अपने वचन को सुरक्षित रखा है। पौलुस ने लिखा:

"सो यहूदी की क्या बड़ाई... हर प्रकार से बहुत कुछ। पहले तो यह कि परमेश्वर के वचन (पवित्रशास्त्र) उन को सौंपे गए" (रोमियों 3:1-2)।

परमेश्वर ने इस्राएल को उस माध्यम के रूप में चुना जिसके द्वारा वह अपने प्रिय पुत्र को संसार में लाया और यरूशलेम वहाँ था जहाँ उसने अपना नाम सदा के लिए स्थापित किया है (व्यवस्थाविवरण 12:5)। जब परमेश्वर ने अब्राहम को चुना तो उसने प्रतिज्ञा की कि, उसके वंश में, "पृथ्वी की सारी जातियाँ आशीष पाएंगी " जो इस्राएल को आशीष देंगे वे स्वयं आशीष पाएंगे और जो इस्राएल को शाप देंगे वे स्वयं शापित होंगे। अन्यजाति राष्ट्र परमेश्वर के चुने हुए लोगों के प्रति अपने मनोभाव के अनुसार उठते और गिरते हैं।

आज इस्राएल मसीह को अस्वीकार करने के कारण परमेश्वर की ओर से ताड़ना के अधीनता में है और यशायाह 6:9-12 की पूर्ति के अनुसार आत्मिक रूप से अंधता में हैं। परन्तु पौलुस ने लिखा:

"क्योंकि जब कि उन का त्याग दिया जाना जगत के मिलाप का कारण हुआ, तो क्या उन का ग्रहण किया जाना मरे हुओं में से जी उठने के बराबर न होगा?" (रोम.11:15)।

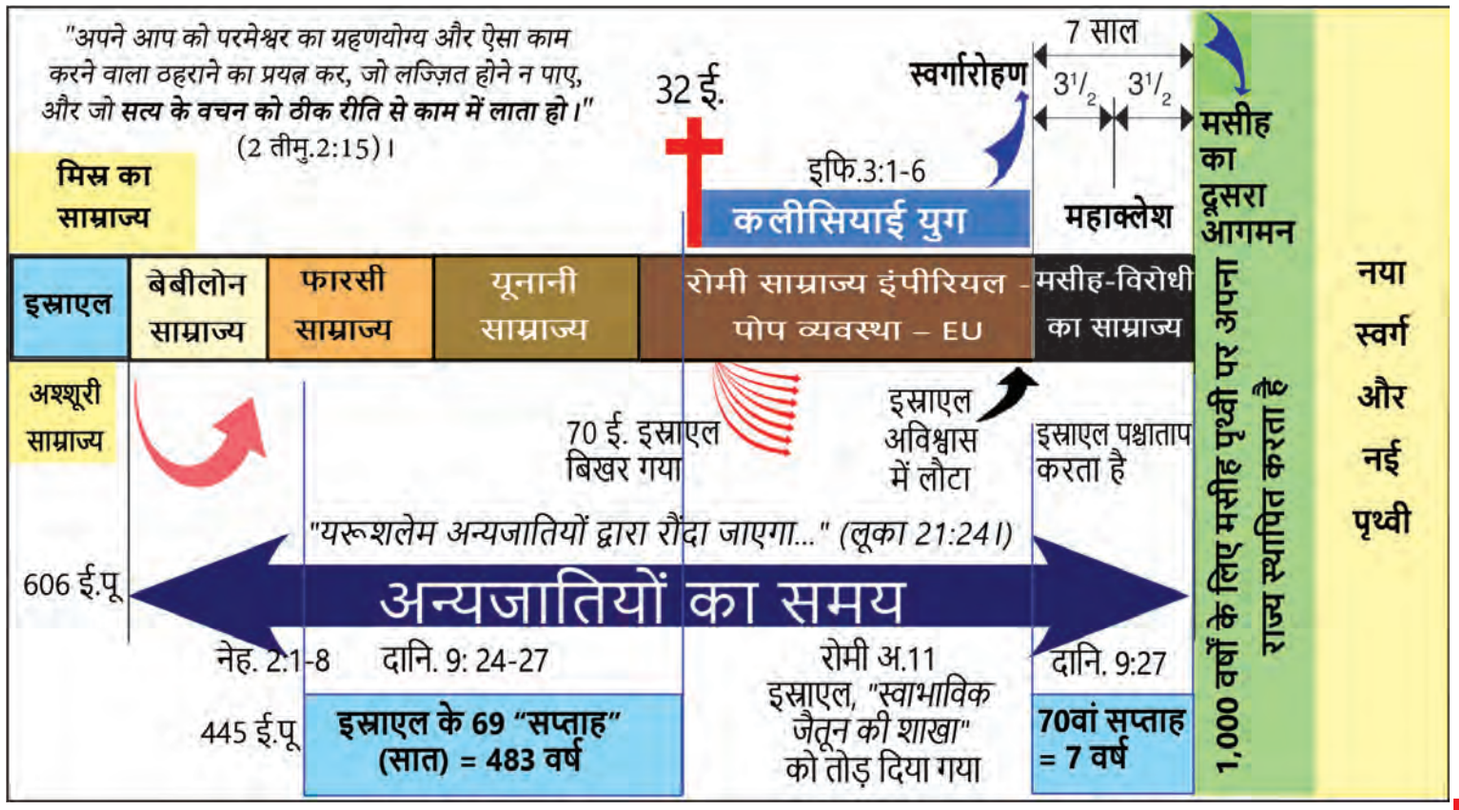

हम स्वर्गारोहण के कितने निकट हैं?

"और प्रेम, और भले कामों में उकसाने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें। और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो" (इब्रा. 10:24-25)।

यीशु ने कहा: "उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र; परन्तु केवल पिता" (मरकुस 13:32)। पिता ने समय और कालों को "अपने अधिकार में" रखा है (प्रेरितों के काम 1:7) और इसका कारण यह है कि हम उस दिन या उस घड़ी को नहीं जान सकते कि कब स्वर्गारोहण होगा, क्योंकि यह कलीसिया के पूर्ण होने की प्रतीक्षा कर रहा है। जब अंतिम आत्मा मसीह की दुल्हन में जुड़ जाती है, तो पिता पुत्र से कहेगा, "जाओ, और अपनी दुल्हन को ले आओ"। मसीह कलीसियाई-युग के मृतक विश्वासियों की आत्माओं को लेकर उन्हें उनके शरीर के साथ फिर से मिला देगा; तब *"हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।"*

मसीह के महिमा और सामर्थ के साथ लौटने से पहले के अंतिम सात वर्ष इस्राएल के हैं और पौलुस ने लिखा:

"हे भाइयो, कहीं ऐसा न हो, कि तुम अपने आप को बुद्धिमान समझ लो; इसलिये मैं नहीं चाहता कि तुम इस भेद से अनजान रहो, कि जब तक अन्यजातियाँ पूरी रीति से प्रवेश न कर लें, तब तक इस्राएल का एक भाग ऐसा ही कठोर रहेगा। ***और इस रीति से सारा इस्राएल उद्धार पाएगा;*** *जैसा लिखा है, छुड़ानेवाला सिय्योन से आएगा, और अभक्ति को याकूब से दूर करेगा; और उनके साथ मेरी यही वाचा होगी, जब कि मैं उनके पापों को दूर कर दूँगा"* (रोमियों 11:25-27)।

"अन्यजातियों की परिपूर्णता" इस्राएल की अंधता के वर्षों के दौरान अन्यजातियों में से मसीह की दुल्हन की पूर्णता का समय है। कलीसिया के उठा लिए जाने के बाद इस्राएल सात वर्षों के महाक्लेश के पहले भाग में प्रभु की खोज करेगा। एक बार स्वर्गारोहण होने के बाद, भविष्यवाणी की घड़ी की सूई चलने लगेगी और यहूदी उन दिनों को गिनने में सक्षम होंगे कि मसीहा स्वर्ग में कब प्रकट होगा, जैतून के पहाड़ पर कब खड़ा होगा, हर-मगिदन की लड़ाई में मसीह-विरोधी और उसकी सभी सेनाओं को कैसे नष्ट कर देगा, और अपनी वाचा के लोगों अर्थात् इस्राएल को छुड़ा लेगा।

आज, हम स्वर्गारोहण के दिन या घड़ी को नहीं जानते, लेकिन हम उस दिन को निकट आते देख सकते हैं :

1) हम कलीसिया के युग के अंत में जी रहे हैं; करिश्माई, विश्वव्यापी और उभरते हुए मसीही जगत अपने लौदीकिया युग में। धर्मत्याग की उच्चस्तर पर है।

2) वेश्या स्त्री (पोप व्यवस्था) द्वारा सवार रोमी साम्राज्य को पुनर्जीवित किया जा रहा है। मसीह-विरोधी के लिए एक राज्य तैयार करने के लिए यूरोपीय संघ (ईयू) यूरोप को एक साथ ला रहा है जिसे अंततः **दस भागों में विभाजित किया जाएगा। इसकी स्थापना रोम की संधी 1957, मास्ट्रिच संधि 1993 और लिस्बन संधि 2009 द्वारा की गई थी।**

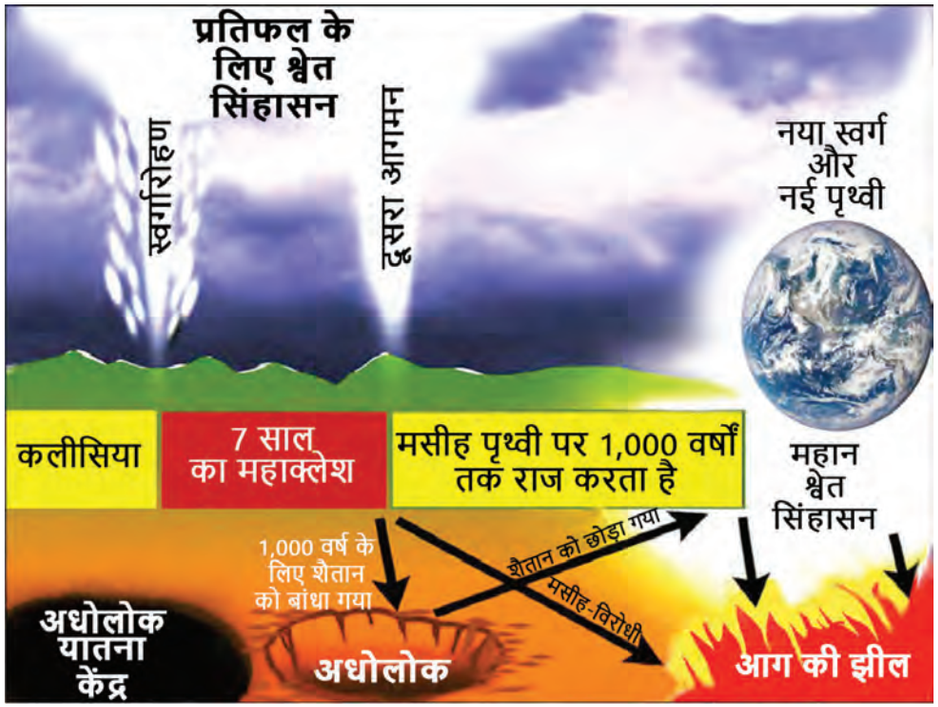

3) रूस मुस्लिम राष्ट्रों के साथ अपनी पहचान बना रहा है और ,महाक्लेश में ईरान, तुर्की, लीबिया और सूडान के साथ मिलकर इस्राएल पर आक्रमण करेगा (यहेजकल 38 और 39; योएल 2)। सीरिया में युद्ध ने इन सेनाओं को इस्राइल की सीमा पर ला खड़ा किया है।

4) दानिय्येल ने लिखा है कि अंत के दिनों में, "और बहुत लोग पूछ-पाछ और ढूँढ-ढाँढ करेंगे, और इस से ज्ञान बढ़ भी जाएगा" (दानि. 12:4)।

5) मसीही जगत अत्यधिक धर्मत्यागी हो गया है: विश्वव्यापी और अंतर-विश्वास आंदोलन अब मूर्तिपूजक धर्मों को गले लगा रहे हैं और सन 1900 से करिश्माई आंदोलनों में 1 तीमु. 4:1-2 को पूरा करते हुए दुष्टात्मा नियंत्रण को स्पष्ट देखा गया है: "परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है, कि आने वाले समयों में कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे।"

6) यीशु ने कहा कि उसके आगमन से पहले के दिन नूह और लूत के दिनों की तरह होंगे जब जनसंख्या विस्फोट हुआ था, और पृथ्वी हिंसा से भर गई थी, और आक्रामक समलैंगिक व्यवहार आम था।

हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि प्रभु के आगमन का दिन निकट आ रहा है। **आप तैयार हैं? क्या आपने यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण किया है ?**

मैं कैसे तैयार हो सकता हूं?

इतने सारे प्रमाणों के साथ कि हम युग के अंत की ओर बढ़ रहे हैं, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर से मिलने के लिए तैयार हैं। मसीह में सच्चे विश्वासियों का स्वर्गारोहण किसी भी समय हो सकता है और फिर उसके बाद 7 वर्ष का भयानक महाक्लेश शुरू हो जाएगा। यीशु ने उस समय के बारे में कहा: "और यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी न बचता" (मत्ती 24:22)। यीशु ने यह भी कहा, "क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह जगह अकाल पड़ेंगे, और भूकम्प होंगे" (मत्ती 24:7)।इस समय के दौरान मसीह-विरोधी एक "एकल-विश्व सरकार" के माध्यम से दुनिया को नियंत्रित करेगा और सभी को उसे परमेश्वर के रूप में पूजा करनी होगी; सभी को अपने माथे या दाहिने हाथ पर उसका निशान लगाना होगा नहीं तो वे खरीद या बिक्री नहीं कर पाएँगे।यह जितना भयानक होगा, यह हर उस व्यक्ति की भयावह स्थिति की तुलना में कुछ भी नहीं है जो उद्धार के लिए मसीह पर भरोसा किए बिना मर जाता है। शैतान और उसके दूतों के लिए और यीशु मसीह में मिलने वाली परमेश्वर की दया और अनुग्रह को अस्वीकार करने वाले सभी लोगों के लिए आग की एक अनन्त झील तैयार की गई है। परमेश्वर पापियों को दण्ड देना नहीं चाहते; वास्तव में वह चाहते हैं कि सभी लोग अपने पापों से पश्चाताप करें और मसीह में प्रदान की जाने वाली दया को स्वतंत्र रूप से स्वीकार करें। बाइबल कहती है: *"इसलिये कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुःख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुँचायें"* (1 पतरस 3:18)। *"प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नष्ट हो; वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले"* (2 पतरस 3:9)।

यदि हम स्वयं के प्रति ईमानदार हैं तो हम स्वीकार करेंगे कि हम पापी हैं और परमेश्वर के संमुख गलत कार्य करने के लिए दोषी हैं। बाइबल कहती है कि "यदि हम कहें, कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आप को धोखा देते हैं: और हम में सत्य नहीं" (1 यूहन्ना 1:8)। यह इसलिए है क्योंकि हम पापी हैं, कि परमेश्वर ने अपने प्रेम और दया में प्रभु यीशु को स्वर्ग से एक मनुष्य के रूप में रहने और क्रूस पर चढ़ने के लिए भेजा, जहाँ उसने सभी मानवीय पापों के लिए परमेश्वर के क्रोध को सह लिया। यह केवल शारीरिक कष्ट ही नहीं था जिसे उसने मनुष्यों के हाथों से सहा था, बल्कि जब वह उस क्रूस पर लटका हुआ था, तो पृथ्वी तीन घंटे के लिए अन्धकारमय हो गई थी जब परमेश्वर का पापरहित पुत्र अर्थात् हमारा बलिदान, हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए हमारे स्थान पर दंड सह रहा था। बाइबल कहती है, *"बिना लहू बहाए (पापों की) क्षमा नहीं होती "* इसलिए यीशु ने हमारे पापों के लिए अपना बहुमूल्य लहू बहाया।

"परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)।

सभी झूठे धर्म हमें बताते हैं कि यदि हम अच्छे काम करते हैं तो परमेश्वर हम पर दया करेंगे लेकिन बाइबल कहती है , *"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे"* (इफि. 2:8-9)। अपराध-बोध और पाप की सामर्थ से मुक्ति उन सभी के लिए मुफ़्त रूप से उपलब्ध है जो अपने पूरे हृदय से प्रभु की खोज करते हैं।

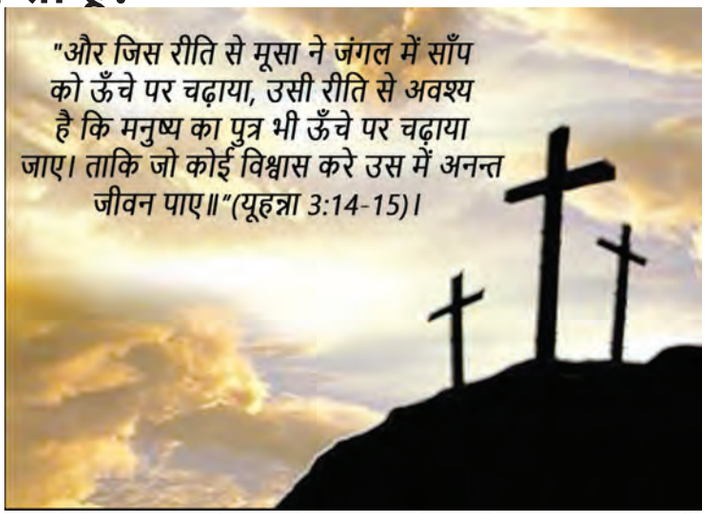

बाइबल कहती है: *"तुम मुझे ढूँढ़ोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे"* (यिर्म. 29:13)। मसीह ने माफ़ी, ईश्वरीय जीवन जीने की सामर्थ और स्वर्ग में एक घर प्रदान करने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है वह सब किया है लेकिन वह अपने उद्धार को किसी पर जबरन नहीं थोपेगा।

आपको अपने पाप से मुड़कर मसीह की ओर आना होगा और अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में उस पर अपना भरोसा रखना होगा । जब हम मसीह पर भरोसा करते हैं तो न केवल परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करते हैं, बल्कि वह अपने पवित्र आत्मा को हमारे अन्दर इसलिए देता है ताकि हमें उसके लिए दिन-प्रतिदिन जीने की सामर्थ पा सके। इसके अलावा, वह हमें स्वर्ग में एक घर प्रदान करने का भरोसा भी देता है"अर्थात एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिए...जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है, जिनकी रक्षा परमेश्वर की सामर्थ्य से, विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये, जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है, की जाती है" (1 पतरस 1:4-5)।

लेकिन अभी और भी है। हमारे पास परमेश्वर के वचन की प्रतिज्ञा है कि जब महाक्लेश आयेगा, तो प्रभु यीशु पर विश्वास रखने वाला हर सच्चा विश्वासी जो उस समय जीवित होगा, "उन के साथ बादलों पर उठा लिए (स्वर्गारोहण) जाएँगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे " (1 थिस्स. 4:17). "क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं, परन्तु इसलिये ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें" (1 थिस्स. 5:9)। यीशु ने वादा किया है:

"तू ने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिये मैं भी तुझे परीक्षा (महाक्लेश) के उस समय बचा रखूँगा, जो पृथ्वी पर रहने वालों के परखने के लिये सारे संसार पर आने वाला है" (प्रका. 3:10)। **यदि आपने उद्धार नहीं पाया है, तो क्या आप अभी मसीह पर विश्वास करेंगे?**

क्या बाइबल की भविष्यवाणी के बारे में आप और जानना चाहते हैं?

द हेराल्ड ऑफ होप एक द्वि-मासिक, 36-पृष्ठ पत्रिका है, जिसमें बाइबल प्रदर्शनी और प्रभु की वापसी से संबंधित विश्व समाचार शामिल हैं।

यह सदस्यता द्वारा उपलब्ध है। अनुरोध पर ओ/सीज एयरमेल दरें प्रदान की जाती है। कई प्रतियों को एक साथ लेने पर रियायती दरें उपलब्ध हैं। सब्सक्रिप्शन का भुगतान वेब साइट पर क्रेडिट कार्ड डायरेक्ट डिपॉज़िट या हेराल्ड ऑफ़ होप को दिए गए चेक द्वारा किया जा सकता है।

बाइबल भविष्यवाणी श्रृंखला - बाइबल भविष्यवाणी में सभी प्रमुख विषयों को शामिल करता है। बाइबल अध्ययन समूहों के लिए उत्कृष्ट। अनुरोध पर मुफ़्त उपलब्ध है।

हमारी वेब साइट पर जाएँ जहाँ आप-

- हेराल्ड ऑफ होप पत्रिका की सदस्यता लें या अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करें
- मुफ्त किताबें, लेख, कविताएं, भविष्यवाणी चार्ट और मानचित्र डाउनलोड करें जिनका उपयोग आप पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन में कर सकते हैं।

www.heraldofhope.org.au

ADDRESS TO CONTACT:
THE LIGHT OF HOPE
MERCY HOME
Cheppad P.O.,
Alappuzha Dist 690 507, Kerala State.
0479-2412459/9207976381
hopemsn@hopemsn.org

अन्य मुफ़्त साहित्य

1) **प्रभु का दिन** - योएल की भविष्यवाणी महाक्लेश के दो युद्ध (48 पृष्ठ)

2) **कलीसियाई इतिहास की बड़ी तस्वीर** (44 पृष्ठ)

3) **अन्यभाषाएँ बंद हो जाएगी** - प्रारंभिक चर्च के पिता क्या कहते हैं - (60 पृष्ठ)

4) **असहस्त्राब्दिवाद का तौल** - (80 पृष्ठ)

5) **भूतकालीन का तौल** (60 पृष्ठ)

6) **सेवेंथ डे एडवेंटिज्म का तौल** (44 पेज)

7) **कब्र से परे** - मृत्यु के बाद जीवन (68 पृष्ठ)

8) **1 और 2 थिस्सलुनीकियों** (78 पृष्ठ)

9) **कैथोलिकों के लिए परंपरा या सच्चाई** (86 पन्ने) ।

10) **संस्करण, पांडुलिपियां और 19वीं सदी के आलोचक** (60 पृष्ठ)

11) **मेरा भवन बनाया जाएगा** जकर्याह की भविष्यवाणी की एक व्याख्या

12) **यूनाइटेड चर्च ऑफ़ गॉड और ब्रिटिश इज़राइल थ्योरी का उजागार** (48 पृष्ठ)

13) **सुसमाचारीय पत्रिकाएँ:** परमेश्वर की भविष्यवाणी योजना; आने वाला वैश्विक प्रलय; मसीह उत्तर है; श्री अनंत काल की कहानी; कैथोलिक संकट; परित्यक्त, प्रताड़ित और छुड़ाया गया; लापता (स्वर्गारोहण); कोरोना वायरस, क्या हम स्वर्ग के विषय में सुनिश्चित हो सकते हैं? क्या हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व है?